मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य



डा. रामदेवझा

एहि पोथीसँ...

- लोकवृत्त पूर्वापर श्रुति-स्मृति- प्रयुक्ति-परम्परा द्वारा निरन्तर प्रवहमान रहैत अछि । मौखिकता ओ पारम्परिकता एकर सबसँ महत्त्वपूर्ण लक्षण थिक एवं यैह एकर प्रमाणिकताक कसौटी थिक । एहि कसौटी पर जे कोनो सामाजिक तत्त्व आओत से लोकवृत्त मानल जायत ।

- शिष्ट साहित्यमे जे स्थान महाकाव्यक छैक सैह महत्त्व ओ स्थान लोकसाहित्यमे लोकगाथाकँ छैक । वास्तवमे लोकगाथाकँ लोकसाहित्यक महाकाव्य कहल जा सकैत अछि। महाकाव्यक नायक इतिहास प्रसिद्ध होइत छथि आ लोकगाथाक नायक लोकप्रसिद्ध ।

- ई लोकगाथा मिथिलाक भाषा, साहित्यक क्षमता, समाजक अतीतकालीन स्वरूप, लोकसंस्कृति, विश्वास-परम्परा, रुढ़ि-अवधारणा, जीवन-दर्शन, आचार-विचार, माटि-पानि इत्यादिक मूल संरक्षित स्वरूपक मंजूषा थिक ।

- जनिका काव्य ओ मैथिली काव्येतिहासक बोध नहि से भनहि विद्यापतिक काव्यक संगीत वा राग-भासक संग-संयोजनकँ दुर्घटना मानथि, परन्तु ऐतिहासिक शुभ सत्य यैह अछि जे संगीत ओ राग-भासहिक दोला पर चढ़ि मैथिली काव्य गोसाउनिक सीरा-आगूसँ लऽ कऽ सुदूर जनपदान्तर धरिक यात्रा कऽ चिरंजीवी भऽ गेल ।

●

मैथिली लोक साहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य

डा० रामदेवझा

मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर
लहेरियासराय, दरभंगा - 846001

Maithili Lok Sahitya : Swaroop o' Saundarya
By Dr. Ramdeo Jha : (2002). Rs. ....

* प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा - 846001

* संस्करण : पहिल (कार्त्तिक धवल त्रयोदशी– 2002)

* दाम : 250/- टाका

* पोथी प्राप्ति स्थान :
शंकरदेवझा
कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा–846 001
दूरभाष– 06272-240842

* मुद्रक : प्रिंटवेल, दरभंगा

सुभे हे सुभे

मैथिली लोकसाहित्य अत्यन्त समृद्ध अछि, अत्यन्त व्यापक अछि । मैथिली लोकसाहित्यक महत्त्वक अभिज्ञान कतोक शताब्दी पूर्वहि कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ओ महाकवि विद्यापतिकेँ भऽ गेल छलनि से ऐतिहासिक तथ्य अछि । विद्यापतिहिक समयसँ मैथिलीक अभिजात साहित्य ओ लोकसाहित्य, विशेषतः लोकगीतक मध्य आदान-प्रदान चलैत रहल अछि । लोकगीतक बहुतो प्रभेदक छन्द-भास पर अजस्र साहित्यिक गीतक रचना मैथिली भाषामे अनवरत होइत रहल अछि । **रसना-रोचन श्रवण-विलास**क गुणसँ पूर्ण ई **रुचिरपद** जनसमुदायक कण्ठमे बसैत-रसैत जयबाक संगहि मिथिलाक सकल संस्कारादिक विविध विधि-व्यवहारक अवसर पर गेय लोकगीत सभक सदृशे गाओल जाइत रहल अछि। यैह कारण अछि जे विभिन्न लोकगीत-संग्राहक लोकनि विवेक-बुद्धिएँ बिनु बिकछौनहि शिष्ट साहित्यिक गीतहु सबकेँ लोकगीतहिक श्रेणीमे भ्रमवशात् वा अज्ञतावश राखि दैत छथि ।

मैथिली लोकसाहित्यक दोसर महत्त्वपूर्ण वर्ग लोकगाथाकेँ लोकगीत सदृश साहित्यिक मर्यादा पूर्वमे नहि भेटलैक । आधुनिक कालमे, बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे लोकगाथाक कथावस्तुकेँ उपजीव्य सामग्रीक रूपमे आहरण कऽ अभिनव काल्पनिक तत्त्वक समावेशपूर्वक उपन्यास, नाटक, कथा, काव्य आदिक सर्जनक प्रवृत्ति उपकल । एहन कृति सब अवश्ये रोचक साहित्यक रूपमे गृहीत भेल परन्तु एहन कृति सब लोकगाथाक मौलिक कथानकक स्वरूपकेँ विकृतो करबामे कम योगदान नहि कयलक अछि । आब मैथिली लोकगाथाक सम्बन्धमे अनुसन्धान-आलोचना कयनिहार बहुतो महानुभाव मूल लोकगाथाक रूप ओ प्रकृतिसँ अपरिचित रहबाक कारणे लोकगाथाधृत आधुनिक कृति सभक स्वकल्पित-प्रक्षिप्त अंशहुकेँ लोकगाथाक मूल वस्तु मानि लैत छथि । एहनमे प्रतिपादित विचार, निष्पन्न सिद्धान्त ओ निष्कर्ष केहन वायवीय होयत से सहज अनुमेय ।

वास्तविकता ई अछि जे मैथिली लोकसाहित्यक प्रसंगमे अनुसन्धान, आलोचना वा निबन्धादिक रचना कयनिहारमे बड़ अल्पजन धरती पर आबि सामान्य जनसमुदायक मध्य जाय सामग्री संकलन करबाक प्रयास कयल अछि । अधिकांश व्यक्ति विशेषतः एम्हरे-ओम्हरसँ सूचना-सामग्री लोढ़ि-बटोरि कऽ अपन विद्वत्तापूर्ण आलेख तैयार कऽ लैत छथि ।

हमरा एकटा अनिर्वचनीय सन्तुष्टिक अनुभूति एहि बात लऽ कऽ होइत अछि जे एकटा बीजांकुरक क्रमिक वृद्धिक सदृश हमरा मैथिली लोकसाहित्य, विशेषतः लोकगीत विषयक चेतनाक संस्कार, परिष्कार ओ विस्तारक क्रमिक अवसर ओ परिवेश, बोधक प्राप्ति आ

वृद्धिक संगहि संग सहज रूपमे भेटैत रहल । बाल्यकालक आरम्भिक वर्ष मातृकेमे व्यतीत भेल छल । हमर मातामही (मैञा) **सीतासुन्नरि** लोकव्यवहार, गीत-नाद, लूरि-भासमे अत्यन्त वितपन्नि छलीह । हुनकहि स्नेहिल कोर आ आँचरक शीतल छायामे हमर अबोध बाल-मानसमे बहुत किछुक संग लोकगीत विषयक संस्कार सेहो पड़ल । हुनकहि कन्यामे सबसँ जेठि छलीह हमर माय **देवजती** प्रसिद्ध **बच्चादाइ** । हमर मामक नाम रामजतनमिश्रक पूर्वपद हमरहु नामक पूर्वपद बनल आ मायक नामक पूर्व पद हमर दुहू भाइक नामक उत्तरपद बनि गेल। से हमर माय, **माय गुन धीकेँ** चरितार्थे नहि करैत छलीह, अपितु हुनकासँ किछु बेसिए छलीह। ओ लौकिकज्ञान, लोकव्यवहार, लोकगीत ओ पारम्परिक साहित्यिक गीतक-मने, लोकवृत्तक विश्वकोष सदृश छलीह ।

हमर शैशवकालमे, मूड़न, उपनयन, विवाह आ ओकर विभिन्न पाबनि-तिहार, दुरागमनक क्रममे हकार पुरबाक लेल, मातृकमे मैञा आ पैतृकमे माय गेले करथि आ हम हुनक गोझनौट धयने जाइ । विविध विधि-विधानक प्रयोग-प्रक्रिया ओ तत्प्रसंगक गीत सब देखबा-सुनबाक प्रचुर अवसर भेटैत रहय । लिखबा-पढबाक थोड़ेक अवगति भेल तँ माय कोनो नव सुनल-अख्यासल गीतकेँ लीखि लेबा लेल कहथि अथवा अपन गीत-कोषक कोनो-कोनो गीत आन गितगाइनकेँ देबा लेल लिखा देल करथि । ई सब हमरा मानसमे लोकगीत विषयक चेतनाक परिष्कार करैत रहल ।

कोनो लोकगीत सूनि ओकरा लीखि लेबाक प्रवृत्ति बढैत गेल आ हाइस्कूल एवं कालेजमे अध्ययनक अवधिमे लोकगीत-संकलन **हॉबी** भऽ गेल । पारिवारिक सम्बन्धक लड़ी जोड़ि गामेगाम कतेको नानी-बाबी, मामी-काकी, पीसी-मौसी, बहिनि-भाउजि सबसँ लोककण्ठमे संचित गीत सबकेँ लिपिबद्ध करैत रहलहुँ । क्रमहि एहि सम्बन्ध-परिधिसँ बाहर जाय, अन्यत्रहु, अन्यहु वर्गक स्त्री-पुरुषसँ लोकगीतक संकलन करबाक उत्साह भेल । लोकसाहित्यक महत्त्वक अभिज्ञान भेला पर आ बादमे अपन अनुसन्धानक क्रममे साक्षरा गितगाइनि लोकनिक अपन हाथक लिखल गीतक कापी सभक संग्रह करैत गेलहुँ जाहिमे कतोकक नामक साभार उल्लेख अपन ग्रन्थ **मैथिली शैव साहित्य**मे कयने छी । आ एहि रूपमे लोकसाहित्यक वैविध्यपूर्ण अकृत्रिम गुरु संचय बनल जे हमर मैथिली लोकसाहित्य विषयक चेतनाकेँ विस्तार देलक ।

कालेजमे अध्ययनक अवधिमे हिन्दीक प्रसिद्ध साहित्यकार **देवेन्द्रसत्यार्थी**क लोकसाहित्य ओ लोकगीत पर आधृत, ओकर सौन्दर्य-सन्दोहसँ आपूरित काव्यात्मक ओ लालित्यपूर्ण कृति सब पढबाक अवसर भेटल । बङलाक सेहो किछु लोकगीत-लालित्य-प्रतिपादक रचना पढ़ल। एहि सबसँ निश्चिते मैथिलीयो लोकगीतक सौन्दर्यानुसन्धान ओ तद्विषयक ललित निबन्ध लिखबाक प्रेरणा भेटल । दोसर दिस, अन्यान्य भारतीय भाषामे भेल लोकसाहित्य सम्बन्धी अनुसन्धान विषयक ग्रन्थ सबसँ मैथिलीयो लोकवृत्त, लोकसाहित्य ओ लोकगीतक सम्बन्धमे चिन्तन करबाक प्रेरणा भेटल ।

गत शताब्दीक छठम दशकसँ मैथिलीक लोकसाहित्य ओ लोकगीत विषयक ललित

निबन्ध ओ अनुसन्धान–आलोचना विभिन्न प्रसंग–प्रयोजने लिखाइत रहल । ललित निबन्धमे अधिकांश तँ पत्र–पत्रिकामे प्रकाशितो होइत रहल किन्तु अनुसन्धान–आलोचना विषयक आलेख सबमे किछुए प्रकाशमे आबि सकल । हमर लोकवृत्त, लोकसाहित्य ओ लोकगीत विषयक निबन्ध–आलेख सब पत्र–पत्रिकाक फाइलमे, कटिंग ओ हस्तलेख रूपमे यत्र–तत्र विखरल–बिरहायल रहि जाइत, यदि हमर माझिल आत्मज लेखक–पत्रकार **चि० शंकरदेवझा** एकरा सबकेँ सश्रम ताकि–हेरि–समेटि कऽ व्यवस्थित रूपमे सम्पादित कऽ प्रेस कापी नहि तैयार करितथि । ग्रन्थक वर्त्तमान स्वरूपक सकल श्रेय हुनकहि छनि ।

मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य ग्रन्थमे नामानुरूपे दुइ पटल अछि । पूर्व पटलमे मैथिली लोकसाहित्यक विभिन्न भेद–प्रभेदक स्वरूप पर विचार कयल गेल अछि । उत्तर पटलमे मैथिली लोकगीतक अनुभूत सौन्दर्यक उत्प्लवन भेल अछि । स्वभावतः प्रथममे वस्तुनिष्ठता अछि तँ द्वितीयमे आत्मनिष्ठता अछि, वैयक्तिकता अछि । प्रकाशनमे किछु अपरिहार्य सीमा–संकोचक कारणे मैथिली लोकसाहित्यक किछु महत्त्वपूर्ण पक्ष, यथा–मैथिली लोकनाट्य, मैथिली पिहानी, मैथिली लोकमन्त्र, मैथिलीक बाल–लोकसाहित्य इत्यादि स्थान पयबासँ वंचित रहि गेल । कतोक ललित निबन्धो स्थान नहि पाबि सकल । मुदा से सब पुनः अवसर भेटला पर । जे आलेख आ निबन्ध सब एहि ग्रन्थमे आयल अछि से सब दीर्घ कालावधिमे अन्तरालक संग लिखल गेल छल । अतः ओहि सबमे यथोचित संशोधन, परिवर्त्तन ओ परिवर्द्धन कयल गेल अछि ।

मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य ग्रन्थक प्रकाशनसँ पूर्व हम श्रद्धा निवेदित करैत छियनि ओहि पूजनीया महिला लोकनिकेँ जे हमरा लोकचेतनाक संस्कार, परिष्कार आ विस्तार देलनि आ जाहिमेसँ आब बहुतो परलोक चल गेलीह । हम स्मरण करैत छियनि अपन सहपाठी **स्व० महेश्वरठाकुर 'समोलिया'** (आत्मज- **स्व० सुरेश्वरठाकुर**, भीठभगवानपुर)केँ जे हमरा हेतु अपना गामसँ कापीमे भरि कऽ लोकगीत सब लिखबा कऽ अनने रहथि आ जे कापी एखनो हमरा लग स्मारक रूपमे सुरक्षित अछि ।

मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य मैथिली लोकसाहित्यक अभिज्ञान ओ ओकर सौन्दर्य–संवेदमे किंचितो योगदान कऽ सकत तँ हम अपन श्रमकेँ सार्थक बूझब ।

श्रीरामदेवझा
सदस्य, साहित्य अकादेमी
नई दिल्ली

कार्त्तिक धवल त्रयोदशी
17 नवम्बर, 2002
कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

आलेख-क्रम | पृष्ठ-संख्या



मैथिली लोकसाहित्यक भूमिका

प्ररोचना

लोकजीवनमे प्रचलित श्रुति साहित्यकेँ **लोकसाहित्य** कहल जाइत छैक । एकर दीर्घकालीन परम्परा ओ अपरिमित विस्तारमे लोकजीवनक वास्तविक झाँकी भेटैत अछि । अभिजात सभ्यताक प्रभावसँ विरत निरक्षर ग्रामीण जनताक दैनन्दिन जीवनक उपभुक्त सुख-दुख, भावानुभाव, लाभ-हानि, आचार-व्यवहार, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा आदिक सहज ओ अकृत्रिम अभिव्यञ्जना लोकसाहित्यमे सहजोपलब्ध रहल अछि । ई साहित्य अनभिज्ञात सामान्यजन द्वारा रचित, सामान्यजनक हेतु, सामान्यजनक साहित्य थिक; शिष्ट साहित्यसँ पृथक्, दूर, उन्मुक्त; जकरा ने छन्द-पिङ्गलक बन्धन छैक, ने क्रम-अनुक्रमक बाध्यता । परम्पराक प्रवाहमे निर्मित; विस्तृत, संकुचित ओ विस्मृत भऽ जायवला एहि साहित्यमे एकरूपता ओ समरसताक अभाव होइतो रूढ़ क्षेत्रीयताक सुमधुर आस्वादक कारणेँ एकरा प्रति जनसामान्यक विशिष्ट आकर्षण ओ व्यामोह दृष्टिगोचर होइत अछि । दैनन्दिन लोकजीवनक क्रम-उपक्रम एहि साहित्यक आधार भूमि रहैछ आ जातीय संस्कृतिक उच्छल अनुराग भाव-भूमि । लोकजीवन ओ लोकसंस्कृतिकेँ अपन समस्त आरोह-अवरोहक संग एहिमे अभिव्यक्त होयबाक अवसर भेटैत छैक । फलतः लोकजगतक भाषा, वेश, मनोवांछा, कल्पना-जल्पना, रूढ़ि-विश्वास अपन प्रकृत स्वरूपमे लोकसाहित्यमे प्रस्फुटित होइत अछि । एकरा ओ लोकरंजनी साहित्य कहल गेल अछि जे सर्व साधारण समाजक मौखिक रूपमे भावमय अभिव्यक्ति करैछ ।[1]

लोकवाङ्मय ओ ओकर विशिष्ट लोकसाहित्यक अध्ययन, विश्लेषण ओ अन्वेषणक प्रवृत्ति पछिला दू-तीन शताब्दीसँ बेस गति पकड़ने अछि । एहि क्रममे लोकवाङ्मयक अध्ययन एकगोट पृथक शास्त्रहिक रूपमे अपन परिचिति बना लेलक अछि । मिथिला ओ मैथिलीक लोकसाहित्य सेहो अत्यन्त समृद्ध ओ वैविध्यपूर्ण अछि, मुदा एतऽ एखन धरि गम्भीरतापूर्वक एकर संकलन-अध्ययनक कार्य नहि भऽ सकल अछि । तेँ मैथिलीमे ई शास्त्र ओतेक विकसित नहि भऽ सकल अछि ।

पॉपुलर एण्टिक्विटिज् ओ फोकलोर

पाश्चात्य जगतमे वास्तवमे बहुत पूर्वहिसँ नागर सभ्यतासँ असम्पृक्त, अपन आदिम स्वरूपमे जीबैत जनजाति, जकरा सामान्यतः असभ्य बूझल जाइत छल तथा सभ्यो बूझल जायवला समाजमे निम्नस्तरक अशिक्षित-निरक्षर जन-समुदायक मध्य प्रचलित परम्परा, रूढि, विश्वास, आचार, शब्दबद्ध सम्पदा इत्यादिक संकलन-अध्ययनक प्रवृत्ति प्रबलतर होइत जा रहल छल । एहि प्रकारक सामग्रीकेँ **पॉपुलर एण्टिक्विटिज्** कहल जाय लागल छल।

ई अनुभव कयल जाय लागल जे मानव-सभ्यताक विकास-क्रमकेँ नीक जकाँ जनबाक हेतु तथा कोनो समाजक समग्र मानसिकता ओ भौतिकताक सम्यक् अभिज्ञान हेतु एहि **पॉपुलर एण्टिक्विटिज्** अर्थात् **लौकिक पुरातात्त्विक रिक्थक** व्यवस्थित ओ वैज्ञानिक अध्ययन अत्यावश्यक । अतः अन्ये समाज-विज्ञान जकाँ एकरहु सैद्धान्तिक व्यवस्था सहित एकटा शास्त्रक रूपमे स्थापित करबाक प्रयत्न कयल जाय लागल । एहि प्रकारेँ सामान्य जनक पारम्परिक संस्कृतिक विभिन्न उपादानक व्यवस्थित ओ वैज्ञानिक रीतिसँ अध्ययन करबाक श्रेय पाश्चात्ये विद्वान लोकनिकेँ छनि ।

विलियम जॉन थॉमस नामक एकटा अंगरेज विद्वान **पॉपुलर एण्टीक्विटिज्**क अन्तर्गत परिगणित विभिन्न अवयवक अध्ययनक अर्थव्यंजना हेतु 1846 इ.मे **फोकलोर** शब्द गढ़लनि जकरा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार कऽ लेल गेल ।

फोकलोर (Folk Lore) अंगरेजीक सामासिक शब्द थिक जे **फोक** ओ **लोर** शब्दसँ बनल अछि । **फोक**क अर्थ होइछ कोनो समाजक व्यक्ति, जन-से व्यष्टि वा समष्टि, उभय रूपमे । **लोर**क अर्थ होइछ- विद्या, ज्ञान, शिक्षा, जानकारी, जनतब । अतः **फोक लोर**क अर्थ भेल कोनो समाजक समग्र जनक समबन्धमे ज्ञान प्राप्त करबाक व्यापार, कार्य।

चैम्बर्स ट्वेंटिएथ सेंचुरी डिक्शनरीमे विलियम जॉन थॉमसक **फोकलोर** शब्दकेँ परिभाषित करैत कहल गेल अछि जे **फोकलोर** थिक **सामान्य जनक पुरातन प्रथा, आचार, धारणा, विश्वास, परम्परा, अन्धविश्वास ओ पूर्वाग्रहक अध्ययन-पुरातन विश्वास ओ रूढ़िक साम्प्रतिक कालमे उत्तरजीविताक विज्ञान ।**

प्रयोगातिशयताक कारणे एहि शब्दमे ज्ञान वा अध्ययनक जे अर्थ सन्निहित छल, से शिथिल होइत गेल तथा अध्ययनक जे विषय वा क्षेत्र छल, सैह प्रधान भऽ उठल । अतः आगाँ चलि **फोक लोर**क दुहू अर्थ मान्य भऽ गेल । **स्टैंडर्ड डिक्शनरी ऑफ फोकलोर, माइथोलोजी एण्ड लीजेंड**मे दुहू अर्थकेँ मान्यता देल गेल अछि- **प्रथम, समाजक सामान्य जनक अनभिलिखित परम्पराक अर्थमे जे (आभिजात्य सभ्यतासँ इतर जनमे) प्रचलित कथा, रीति-व्यवहार, विश्वास, जादू-टोना तथा अनुष्ठानादिमे दृष्टिगोचर होइछ तथा द्वितीय, ओहि विज्ञानक अर्थमे जे एहि उपादान सभक अध्ययन करऽ चाहैछ ।**

पुनः **फोकलोर**क क्षेत्रक व्याख्या करैत कहल गेल अछि- **एहन समग्र पुरातन विश्वास, रीति ओ परम्पराक सम्पूर्ण योग जे सभ्य समाजक अल्पशिक्षित जनक मध्य अद्यापि प्रचलित अछि, फोकलोर थिक । एकरा सीमामे परीकथा, जनानुभूति, पुरागाथा, अन्धविश्वास, उत्सव-रीति, पारम्परिक क्रीड़ा वा मनोरंजन, गीत, कहबी, कला-कौशल, नृत्य-नाट्य आ एहन समग्र अन्य तत्त्व सम्मिलित भऽ सकैछ ।**

भारतमे फोकलोर

फोकलोरक विभिन्न अवयव ओ उपादान सभ शाश्वत परम्पराक अवदान थिक । भारतमे एकर परम्परा अनादिकालसँ रहल अछि । भारतीय वाङ्मयमे सामान्यजनक अशास्त्रीय रीति-आचार, विश्वास, मौखिक वाङ्मय सब, पुराण, स्मृति, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, संस्कार-पद्धति, व्रत-पर्वक महात्म्यमे स्थान पबैत रहल अछि । बहुतो तत्त्वकेँ तँ शास्त्रीय मर्यादा दऽ देल गेल आ जकरा से नहि देल जा सकल तकरहु सबकेँ लोकाचारक रूपमे,

अशास्त्रीय होइतहु, मान्यता देल जाइत रहल अछि । जन्म-संस्कार, उपनयन, विवाह, श्राद्ध इत्यादिमे वेद-स्मृति-धर्मशास्त्रक विधानक समानान्तर लोक-विधानहुक अनुसरण निर्बाध रूपमे होइत अछि । पुराणक बहुतो व्रत, व्रत-माहात्म्य ओ व्रतकथा सब वास्तवमे लोकवाङ्मयेक सुसंस्कृत रूप थीक ।

परन्तु ई मानऽ पड़त जे भारतीय जनसमाजक शास्त्र-वाह्य उपादानक संकलन, अध्ययन-अनुशीलनकेँ स्वतन्त्र रूप देबाक कोनो प्रयासक प्राचीन प्रमाण नहि भेटैत अछि। भारतीय **फोकलोर** एवं एकर एक गोट महत्त्वपूर्ण अंग **फोक लिटरेचर**क संकलन ओ अध्ययन-अनुशीलन आरम्भ भेल भारतमे आयल इसाइ मिशनरीक धर्मप्रचारक लोकनि द्वारा तथा पश्चात् महत्त्वपूर्ण योगदान भेल अंगरेजी सरकारक सिविल सर्वेंट लोकनि द्वारा।

1784इ०मे कलकत्तामे **रायल एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल**क स्थापना भेल जे भारतीय विद्याकेँ ओ भारत सम्बन्धी अध्ययनकेँ अपन उद्देश्य बनौलक । एहिसँ **फोक लोर** सम्बन्धी अध्ययनकेँ सेहो प्रोत्साहन भेटल । 1829 इ.मे कर्नल टाडक **एनल्स एण्ड एण्टीक्विटिज् ऑफ राजस्थान** प्रकाशित भेल जाहिमे राजस्थानक लोकसाहित्य ओ अवधारणाक प्रचुर आधार लेल गेल छल । 1854मे जे० एबट पंजाबक वीरगाथाक संग्रह कयलनि । 1866मे सर रिचार्ड टेम्पुल मध्यप्रदेशक जनजातीय आचार, विश्वास ओ लौकिक साहित्यक संकलन-प्रकाशन कयलनि । 1868मे मैरी फ्रेयरक ग्रन्थ **ओल्ड डेकन डेज ऑर हिन्दू फेयरी लीजेण्ड्स करेंट इन सदर्न इंडिया कलेक्टेड फ्रॉम ओरल ट्रेडीशन** प्रकाशित भेल जे एकटा महत्त्वपूर्ण कृति मानल जाइछ । एहि क्रममे भारतक विभिन्न क्षेत्रक **फोकलोर** विषयक अनेक विशिष्ट कृति सब प्रकाशमे अबैत रहल, यथा– चार्ल्स ई० ग्रोवरक **दि फोक सांग्स ऑफ सदर्न इंडिया**(1871), डाल्टनक **डिस्क्रिप्टिव एथ्नोलॉजी ऑफ बंगाल** (1872), आर.सी. टेम्पुलक **दि लिजेंड्स ऑफ दि पंजाब** (1884), रॉबिन्सन एडवार्ड जेविटक **टेल्स एण्ड पोएम्स ऑफ सदर्न इंडिया** (1885), जार्ज अब्राहम ग्रियर्सनक **दि बिहार पीजेंट लाइफ**(1885) तथा मैथिली, मगही, भोजपुरी एवं अन्य जनपदीय भाषाक लोकवाङ्मय विषयक अनेको वृहत् निबन्ध, विलियम सी. क्रुकके‌र विशिष्ट पत्रिका **नार्थ इंडियन नोट्स एण्ड क्वेरीज्**(1891सँ पाँच-छओ वर्ष धरि प्रकाशित)मे हुनक अनेक निबन्ध, **इंट्रोडक्शन टु दि पॉपुलर रेलिजन एण्ड फोकलोर ऑफ नॉर्दर्न इंडिया**(1894), तथा **कास्ट्स एण्ड ट्राइब्स ऑफ नॉर्थ-वेस्ट प्रोविन्सेज**(1896), जे. हिंटन नॉवलेकेर **डिक्शनरी ऑफ कश्मीरी प्रोवर्ब्स**(1885) तथा **फोक टेल्स ऑफ कश्मीर**(1893), फ्लोरा एनी स्टीलक **टेल्स ऑफ दि पंजाब टोल्ड बाइ दि पीपुल**(1894), ए.जे. दुबोइकेर **हिन्दू मैनर्स, कस्टम्स एण्ड सेरीमनीज्**(1897) इत्यादि । बीसमो शताब्दीक पूर्वार्द्धमे अंग्रेज विद्वान् द्वारा भारतक विभिन्न जनपद, जाति, भाषा, रीति-विश्वास सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सब प्रकाशमे अबैत रहल । विदेशी विद्वान् लोकनि द्वारा कयल गेल कार्य सबमे, धर्म प्रचारमे सौविध्य अथवा प्रशासनिक सौविध्यक उद्देश्य महत्त्वपूर्ण छल तथापि अनेक विद्वान् अध्ययनक रुचि ओ भारतीय समाजक सम्बन्धमे ज्ञानो प्राप्त करबाक उद्देश्यसँ एहि ठामक इतिहास, साहित्य, भाषा, आचार, व्यवहार, रूढ़ि, विश्वास, पर्व, उत्सव इत्यादिक अध्ययन कयलनि। ईस्टर्न प्रोवर्ब्स एण्ड एम्बलम्स(1872)क लेखक जेम्स लौंग तथा विलियम क्रुक तँ लन्दनक **फोकलोर सोसाइटी**क सदस्ये छलाह ।

विदेशी विद्वान् लोकनिक प्रयत्नशीलता ओ अनुसन्धानी प्रवृत्तिसँ भारतीय बुद्धिजीवीयो प्रेरित-प्रभावित भेलाह । अनेक भारतीय विद्वान् भारतीय समाजक पारम्परिक रिक्थक संकलन-अध्ययन निष्ठा, प्रामाणिकता ओ राष्ट्रीयभावनाक संग करबाक हेतु प्रवृत्त भेलाह ।

भारतीय विद्वान्मे सर्वप्रथम उल्लेखनीय छथि तरुदत्त जनिक **एंशिएंट बैलेड्स एण्ड लीजेंड्स ऑफ हिन्दुस्तान**1882 इ०मे प्रकाशित भेलनि । 1883मे लालबिहारीडे केर **फोक टेल्स ऑफ बंगाल** नामक प्रसिद्ध कृति प्रकाशित भेल तथा पश्चात् हुनकहि **बंगाल पीजेंट लाइफ** सेहो प्रकाशित भेल । एस्. महालिंगनटेशशास्त्रीक दुइ गोट ग्रन्थ **फोकलोर ऑफ सदर्न इंडिया**(1884) तथा **इंडियन फोक टेल्स**(1900) उनैसम शताब्दीमे भारतीय विद्वान् द्वारा प्रस्तुत महत्त्वपूर्ण कृतिमे मान्य अछि । बीसम शताब्दीक पहिल दशकमे दक्षिणारंजन मित्रमजुमदारक **ठाकुरमार झुलि, ठाकुरदादार झुलि, थानदीदीर थोले** तथा योगीन्द्रनाथक **खुखुमानीर छद** बंगालक विद्वान्कें लोकवाङ्मय दिस विशेष आकृष्ट कयलक । विशेषत: विश्वकवि रवीन्द्रनाथठाकुरक कृति **लोकसाहित्य** लोकवाङ्मयक नैसर्गिक काव्यसौन्दर्य ओ गरिमाकेँ प्रतिष्ठित कयलक । पश्चात् दिनेशचन्द्रसेनक अनेक महत्त्वपूर्ण कृति सब प्रकाशमे अबैत गेल, यथा– **सती**(1917), **दि फोक लिटरेचर ऑफ बंगाल**(1920), चारि भागमे प्रकाशित **मैमनसिंह गीतिका** ओ ओकर अंगरेजी अनुवाद **ईस्टर्न बंगाली बैलेड्स**(1923-32), **बांगलार पुरा नारी**(1939) । गुजरातमे झवेरचन्द कालिदास मेघाणी गुजरातक लोकसंस्कृति ओ लोकवाङ्मयक सम्बन्धमे गम्भीर अनुसन्धान ओ समालोचना प्रस्तुत कयल । हुनक एतद्विषयक एक सोड़हि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित भेलनि जाहिमे प्रमुख छनि– चारि भागमे प्रकाशित **रढ़ियाली रातें**(1925-42), **हलर्दन**(1928), दुइ भागमे **चूँदड़ी**(1928-29), **सोरठी बहार बटिया**(1931), **दादाजी नी बातो**(1933), **लोकसाहित्य नूँ समालोचन**(1939) आदि । बिहार-उड़ीसा क्षेत्रक वनवासी लोकनिक सम्बन्धमे शरच्चन्द्ररायक अनेक उल्लेखनीय कृति सब प्रकाशमे आयल । शरच्चन्द्रराय एकगोट त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित करबैत छलाह जाहिमे मुण्डा, उराँव, संथाल इत्यादि जातिक सम्बन्धमे हिनक निबन्ध सब प्रकाशित होइत छल । एकरा अतिरिक्त हिनक ग्रन्थ सब छनि **दि बिरहोर्स**(1925), **ओराँव रेलिजन एण्ड कस्टम्स**(1928), **दि भुइयाँज् ऑफ ओड़ीसा**(1936), **खारीज्**(1936) । रामनरेशत्रिपाठी हिन्दीक्षेत्रमे 1925मे कार्यारम्भ कयलनि । हिनक लोकगीतक वृहत् संग्रह **कविता कौमुदी**, पंचम भाग(1929)क रूपमे प्रकाशित भेल । हिनक **हमारा ग्राम साहित्य**(1940) सेहो महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ मानल जाइत अछि ।

वर्त्तमान शताब्दीक पाँचम दशकसँ भारतीय **फोकलोर** तथा विशेष रूपसँ एकर साहित्य पक्ष दिस भारतीय विद्वान् लोकनि अधिक प्रयत्नशील भेलाह आ शताब्दीक उत्तरार्द्धकालमे भारतक विभिन्न जनपद, भाषा, लोकभाषाक क्षेत्रमे उत्साही विद्वान् सब अनुसन्धान-आलोचनामे प्रवृत्त भेलाह आ हुनका लोकनिक परिश्रमक परिणामो प्रकाशमे अबैत जा रहल अछि । उनैसम शताब्दीक प्राय: समग्र कार्य एवं बीसम शताब्दीक अधिकांश कृति अंगरेजीएमे बहराइत रहल । परन्तु क्रमहि भारतीय भाषाक माध्यमसँ सेहो लोकसंस्कृति ओ लोकवाङ्मयक परिचय प्रस्तुत कयल जाय लागल । आब सम्प्रति भारतक समग्र साहित्यिक भाषामे एतद्विषयक समालोचना प्रकाशित भऽ रहल अछि ।

'फोकलोर'क भारतीय पर्याय

फोकलोरक विकास एकटा शास्त्रक रूपमे भेल। स्वभावतः एहि शास्त्रमे अनेको पारिभाषिक शब्द सभक रचना होइत गेल। ई शब्द सब अंगरेजी भाषाक थिक। जखन भारतीय भाषामे **फोकलोर** विषयक समालोचना होमऽ लागल तँ एकर पारिभाषिक शब्दावलीक भारतीय पर्यायवाची शब्दक संरचना आवश्यक भऽ गेल।

फोकलोरक प्राचीन पर्याय **पॉपुलर एण्टीक्विटिज्**मे प्रयुक्त **पॉपुलर** शब्द **सामान्य जनक** (Suited to the understanding or the means of ordinary people) अर्थक द्योतन करैत अछि। ई लैटिनक **पॉपुलस** (Populus)सँ व्युत्पन्न अछि जकर अर्थ होइछ सामान्य लोकक समुदाय (People)। **फोकलोर**क **फोक** (Folk) शब्दहुक अर्थ **सामान्यजन** होइछ। भारतीय भाषामे एहि **फोक** शब्दक हेतु दुइ गोट समीचीन शब्द भेटैत अछि– **जन** ओ **लोक**। एहिमे **जन**क अपेक्षा **लोक** शब्द अधिक अर्थवान् अछि। **फोकलोर**मे **फोक**क जे अर्थ सन्निहित अछि तकर अनुरूपता **लोक** शब्दमे विशेष अछि।

भारतीय वाङ्मयमे **लोक** बड़ प्राचीन शब्द अछि। एकर अनेक अर्थ होइछ, यथा– पृथ्वी, संसार, विश्वक विभिन्न प्रभाग, दृष्टि, दर्शन, मानव जाति, प्रजा, राष्ट्रक व्यक्ति, समुदाय, सामान्य व्यवहार, सामान्य प्रचलन इत्यादि। प्रजा, सामान्य जनसमुदायक अर्थमे **लोक** शब्दक प्रयोगक निरन्तरता भारतीय वाङ्मयमे देखल जाइछ। प्राचीने कालसँ **लोके वेदे च** कहि कऽ शास्त्रसम्मत अभिजात पद्धति ओ ओहिसँ भिन्न सामान्य जनसम्मत पद्धतिक अन्तरकेँ व्यक्त कयल जाइत रहल अछि। संस्कृत कोषमे **लोक** पूर्वपद युक्त बहुतो समस्त पदक निर्देश देखल जाइछ जाहिमे **लोक** सामान्य जन वा **फोक**क भाव ओ अर्थ व्यंजित करैत अछि, यथा– लोकापवाद, लोकाचार, लोकोक्ति, लोककथा, लोकगाथा, लोकधर्मी, लोकपथ, लोकपद्धति, लोकप्रवाद, लोकवार्त्ता, लोकविधि, लोकहास्य इत्यादि। एहिमे बहुतो शब्द वर्त्तमान सामान्य प्रयोगमे सेहो श्रुतिगोचर होइछ।

मैथिलीमे **लोक** शब्दक प्राचीन अर्थक संगहि कतोक विशिष्ट अर्थ होइछ, जेना– व्यक्ति, समाज, समाजक व्यक्ति, सम्बन्धीजन, पति, पत्नी, सामान्यजन इत्यादि। **लोक-वेद** उपलक्षणमे प्राचीन **लोके वेदे च** केर अवशेष भेटैछ तँ लोकसँ बनल विशेषण **लौकिक** ओ **लौकित**मे सामान्यजनमे प्रचलित आचार-व्यवहारेक अर्थ व्यंजित होइछ।

अतः डा०सत्येन्द्रक अभिमत सर्वथा उपयुक्त अछि जे– **मानव समाजक ओहि वर्गकेँ लोक कहब उपयुक्त अछि जे अभिजात संस्कार, शास्त्रीयता ओ पाण्डित्य-चेतना अथवा अहंकारसँ शून्य अछि आ एकटा परम्पराक प्रवाहमे जीवित रहैत अछि।**[2]

भारतीय विद्वान् लोकनिमे अधिकांश **फोक**क पर्यायक रूपमे **लोक** शब्दकेँ मान्यता दैत **फाकलोर**क हेतु अनेक पर्यायवाची शब्दक प्रस्ताव-प्रयोग करैत देखल जाइत छथि। बंगलामे आर.पी.चाँद-**लोकविद्या**, डा०सुनीतिकुमारचटर्जी **लोकायन**, मुहम्मद शहीदुल्ला–**लोकविज्ञान**, डा०सुकुमारसेन **लोकचर्या** शब्दक प्रयोग कयने छथि। बंगलामे किछु औरो शब्दक प्रयोग देखल जाइछ, जेना– **लोकसंस्कृति, लोकायत्त संस्कृति, लौकिक ऐतिह्य** इत्यादि। मराठीमे **लोकवाचा** ओ **लोकवाङ्मय** शब्द गढ़ल गेल अछि। हिन्दी क्षेत्रमे कृष्णदेवउपाध्याय **लोकसंस्कृति** शब्दक प्रयोग कयलनि अछि तँ वासुदेवशरण

अग्रवाल **लोकवार्त्ता**कें उपयुक्त मानने छलाह । हिन्दीक विद्वान् अग्रवालहिक अनुसरण विशेष रूपसँ करैत छथि । भारतक विभिन्न भाषामे किछु औरो शब्दक प्रयोग देखल जाइत अछि, यथा– **लोकज्ञान, लोकशास्त्र, लोकप्रवाह, लोकपरम्परा, लोकविधान, लोकरीति** इत्यादि । मैथिलीमे एहि क्षेत्रमे कार्य कम भेल अछि तें **फोकलोर** ओ एकर विभिन्न अवयवक सुविचारित शब्द-संरचनाक कोनो प्रयास नहि भेल अछि । आवश्यकता भेला पर हिन्दीए शब्दावलीक प्रयोग कऽ लेल जाइछ ।

ऊपर जतेक प्रस्तावित शब्द सब उल्लिखित भेल अछि ताहिमे कोनोमे अतिव्याप्ति, कोनोमे अव्याप्ति आ कोनोमे अर्थक सुनिश्चितताक अभाव देखना जाइछ । कतोक शब्द अर्थतः अक्षम होइतो ओहि पर **फोकलोर**क अर्थ बलात् थोपि देल गेल अछि । इहो बात ध्यानमे रखबाक चेष्टा नहि कयल गेल जे **फोकलोर**क अर्थमे कालक्रमे विकासो भेल अछि। जखन अपन पारिभाषिक शब्दक संरचना कयल जाइत हो तँ किएक ने **फोकलोर**क मूल अर्थद्वैधताकें दुइ भिन्न पारिभाषिक शब्द द्वारा स्पष्ट रूपें विभाजित कऽ देल जाय ।

फोकलोरक पर्याय : लोकवृत्त

मैथिलीमे हिन्दीक देखादेखी **फोकलोर**क हेतुं **लोकवार्त्ता** शब्दक प्रयोग होइत देखल जाइछ । हिन्दीयोमे **लोकवार्त्ता** मूलशब्दक समष्टिगत अर्थसँ हटि लोकसाहित्यक अर्थमे विशेष रूपें प्रयुक्त होइछ जे वास्तवमे **फोकलोर**क एक अंगमात्र थिक । किन्तु गम्भीरतासँ विचार कयने स्पष्ट होयत जे **लोकवार्त्ता** शब्द **फोकलोर**क सम्यक् अर्थ-व्यक्तिमे सर्वथा असमर्थ अछि । कोषक आधार पर **वार्त्ता**क अर्थ होइछ–समाचार, गुप्तबात, आजीविका, व्यवसाय एवं **लोकवार्त्ता**क अर्थ होइछ– किंवदन्ती, अफवाह, गुलंजर । एहिमे सामान्यजनक पारम्परिक रूढ़ि, विश्वास, आस्था, आचार-व्यवहार, साहित्य इत्यादिक समग्र भावक अभिव्यक्ति नहि भऽ पबैत अछि ।

भारतीय वाङ्मयमे **फोकलोर**क अर्थक समकक्षता रखनिहार शब्द ताकब पूर्ण सम्भव अछि । जहिना **फोक**क हेतु उपयुक्त शब्द **लोक** अछि, तहिना **फोकलोर**क हेतु **लोकवृत्त** शब्द सर्वथा उपयुक्त अछि । संस्कृत कोषमे वृत्त शब्दक अर्थ देल अछि– घटना, इतिहास, समाचार, आचरण, व्यवहार, रीति, मान्य नियम इत्यादि । सामासिक शब्द **लोकवृत्त**क अर्थ देल गेल अछि– लोकव्यवहार, सांसारिक प्रचलित प्रथा, एमहर-ओमहरक गप्प-सप्प इत्यादि । **लोकवृत्त**क प्रयोग अछियो अति प्राचीन तथा सामान्य जनक स्वभाव, प्रवृत्ति ओ आस्थाहिक अर्थमे ।

नाट्यशास्त्रमे **नाट्य**क स्वरूप-विवेचन करैत नाना भाव ओ नाना अवस्थासँ युक्त **लोकवृत्त**क अनुकरणकें नाट्य कहल गेल अछि–

नाना भावोपसम्पन्नं नानाभावावस्थान्तरात्मकम् ।
लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम् ॥[3]

एहि अनुकरण-व्यापारमे अर्थात् नाट्यप्रयोगमे **लोक**हि प्रमाण होइछ–

लोक सिद्धं भवेत् सिद्धं नाट्यं लोक स्वभावजम् ।
तस्मात् नाट्यप्रयोगे तु प्रमाणं लोक इष्यते ॥[4]

रस, भाव ओ सत्त्वसँ युक्त लोकवृत्तक अनुकरण अर्थात् नाट्य करबाक कारणे

अनुकर्त्ता पात्रकेँ **नट** कहल जाइछ–

नाट्यति धात्वर्थोऽयं नट्यति च लोकवृत्तानाम् ।
रसभावसत्त्वयुक्तं यस्मात् तस्मात् नटो भवति ।।[5]

आचार्य वामन[6] काव्यहेतुक रूपमे तीनगोट वस्तुक विधान कयल अछि– **लोको विद्याप्रकीर्णंचकाव्यांगानि।** पुनः **लोकक** व्याख्या करैत कहैत छथि– **लोकवृत्त अयं लोकः।**

लोकवृत्तक एहि प्रयोग सबमे एकर अर्थ अछि सामान्य जनक मानसिक, कायिक आ वाचनिक कार्य–व्यापार । **फोकलोरक** सन्दर्भमे एहि शब्दक व्यापक अर्थमे किंचित अर्थ–संकोच कऽ शास्त्रीय परिष्कार, शिक्षाक आधार, शिष्ट जन समुदायक आचार–विचारसँ असम्पृक्त सामान्य जनक परम्परा, मानसिकता, अनुश्रुति, रूढ़ि–विश्वास, आचार–व्यवहार, पाबनि–तिहार, क्रीड़ा–मनोरंजन, गीत–नृत्यक अलेखबद्ध पारम्परिक उपादान समुच्चयकेँ **लोकवृत्त** कहब सर्वथा उपयुक्त अछि । मैथिलीमे एहि शब्दक प्रयोगक आधारो सबल अछि। सामान्य जनक आचार–व्यवहारक **अर्थमे लोकवृत्त** शब्द मिथिलामे अज्ञात नहि अछि । राज्य विभाज्य वा अविभाज्य थीक, एहि विवादक समाधानमे वीरेश्वर अपन **नीतिसार** ग्रन्थमे, चण्डेश्वर **राजनीति रत्नाकरमे** एवं विद्यापति **विभागसारमे** वृहस्पतिकेँ उद्धृत करैत छथि– **लोकवृत्तात् राज वृत्तमन्यदाह वृहस्पतिः ।** स्मृतिकार वृहस्पति ओ निबन्धकार वीरेश्वर, चण्डेश्वर ओ विद्यापतिक अभिमत छनि जे सामान्य जनक आचार–व्यवहारसँ राजाक आचार–व्यवहार भिन्न होइछ । राजाक आचार–व्यवहारकेँ **राजवृत्त** कहल गेल ओ सामान्य जनक आचार–व्यवहार **लोकवृत्त** । राजन्य वर्गसँ इतर समाजक आपामर सकल जनसमुदाय **लोक** शब्दमे समाहित अछि जकर सकल आचार–व्यवहार **लोकवृत्त** कहल जाइछ ।

लोकवृत्त पर आधृत सामान्य जनक संस्कृति **लोकसंस्कृति** अथवा **लोकायत्त संस्कृति** होयत । **फोकलोरक** पहिल अर्थ **लोक–सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करबा** लेल **लोकवृत्त–विज्ञान** किंवा **लोकवृत्त–विद्या** कहल जा सकैत अछि । **लोकवृत्तक** अवयव जन्य विशिष्टता–सूचक तत्त्वकेँ **लोकतत्त्व** शब्देँ व्यक्त कयल जा सकैछ ।

लोकवृत्त पूर्वापर श्रुति–स्मृति–प्रयुक्ति–परम्परा द्वारा निरन्तर प्रवहमान रहैत अछि । मौखिकता ओ पारम्परिकता एकर सबसँ महत्त्वपूर्ण लक्षण थिक एवं यैह एकर प्रामाणिकताक कसौटी थिक । एहि कसौटी पर जे कोनो सामाजिक तत्त्व आओत से **लोकवृत्त** मानल जायत। आब **लोकवृत्त–विज्ञानक** क्षेत्र विस्तृत भेल जा रहल अछि । सामान्यतः लोकविश्वास ओ रूढ़ि, मान्यता ओ अवधारणा, आचार–व्यवहार, चास–बास, भोजन–छाजन, उपकरण–उपचार, लोकचिन्तन ओ लोकचेष्टा, उत्सव ओ पाबनि–तिहार, खेल–धूप, लोककला ओ पारम्परिक हस्तकला (लूरि–भास), लोक–संगीत (राग–भास) आ नृत्य–नाट्य (नाच–गान), कथा, गाथा, गीत, पिहानी, कहबी, किंवदन्ती इत्यादि लोकवृत्त–विज्ञानक सीमामे समेटि लेल जाइछ ।

लोकवृत्तक वर्गीकरण

लोकवृत्तक वर्गीकरणमे लोकवृत्त–विद् सोफिया वर्नक विचारक अनुसरण करैत देखल जाइछ छथि । हुनक अनुसार **लोकवृत्त जाति–बोधक शब्द जकाँ प्रतिष्ठित भऽ गेल अछि, जकरा अन्तर्गत पछुआयल जातिमे प्रचलित अथवा तुलनात्मक दृष्टिएँ समुन्नत वर्गक असंस्कृत समुदायक मध्य वर्त्तमान विश्वास, रीति–व्यवहार, कथा, गीत ओ कहबी इत्यादि अबैत अछि ।**[7]

एहि आधार पर डा०सत्येन्द्र[8] लोकवृत्तक तीन वर्ग मानलनि अछि– 1. विश्वास ओ आचरण-अभ्यास सम्बन्धी 2. रीति-व्यवहार सम्बन्धी 3. कथा, गीत, कहबी इत्यादि

डा०त्रिलोचनपाण्डेय[9] लोकवृत्तकेँ सातवर्गमे विभक्त कयलनि अछि–

1. लोक-साहित्य 2. लोकाचार ओ रीति-व्यवहार 3. लोक-विश्वास ओ मान्यता 4. लोककला 5. लोकमनोरंजन 6. लोक-भाषा प्रयोग 7. गौण विषय

औरो अनेक विद्वान् एहि वर्गीकरणकेँ पल्लवित करबाक प्रयास कयलनि अछि। किन्तु सबमे किछु ने किछु त्रुटि देखल जाइछ। ऊपर देल गेल सात वर्गमे पारम्परिक व्यवसाय, भोजन-छाजन, वेश-भूषा-प्रसाधनकेँ छोड़ि देल गेल अछि। दोसर दिस लोकभाषा-प्रयोग ओ लोक-साहित्यकेँ फराक-फराक राखल गेल अछि जकरा एकहि वर्गमे राखब उचित।

सोफियावर्न जे तीन गोट अंग-अवशिष्ट विश्वास, रीति-व्यवहार ओ कथा-गीत-कहबी कहलनि अछि तकरा पल्लवित कऽ व्यापक आधार देल जा सकैछ। विश्वास थिक मानसिक वस्तु। रीति-व्यवहार मानसिक विश्वासक आधार पर आचार ओ कार्य-व्यापारक रूपमे व्यक्त होइछ जे कायिक व्यापार थिक। कथा-गीत-कहबी मानसिक विश्वास ओ कायिक व्यापारक वागभिव्यक्ति थिक। अतः लोकवृत्त चारि रूपमे प्राप्त होइछ, जकरा निम्नलिखित नाम देल जा सकैछ– 1. लोकमानस 2. लोकचर्या 3. लोककला 4. लोकवाङ्मय

लोकमानसक अन्तर्गत सामान्य जनक पारम्परिक आस्था, विश्वास, रूढ़ि, अवधारणा, मान्यता अबैत अछि। लोक मानसहिसँ सामान्य जनक रीति-व्यवहार, उत्सव-अनुष्ठान एवं अन्य जीवन-यापन सम्बन्धी पारम्परिक क्रिया-कलाप निर्देशित होइछ। एहि सभ क्रिया-कलापकेँ **लोकचर्या** कहब उपयुक्त होयत। **लोकमानस** ओ **लोकचर्याक** विभिन्न अवयवक प्रयोजन, अनुभूति ओ सौन्दर्यबोध लोक-मूर्त्ति-चित्र-कलादि एवं वाक् द्वारा अभिव्यक्त होइछ। एहिमे वागभिव्यक्तिक समवायिक रूपकेँ **लोकवाङ्मय** कहब।

लोकवाङ्मय

लोकवृत्तक समस्त भेदोपभेदक मध्य लोकवाङ्मय अत्यन्त व्यापक ओ महत्त्वपूर्ण अछि। कारण, लोकवृत्तक समग्र तत्त्व बोध-विचार ओ सम्प्रेषणक स्तर पर सर्वथा शब्दाश्रित अछि। लोकवृत्तक जे कोनो स्थिति, भाव, वस्तु वा कार्य-व्यापार अछि से लोकवाङ्मये द्वारा एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीकेँ अन्तरित होइत रहैत अछि। किन्तु सुसंस्कृत समुदायक शिष्ट ओ श्रेण्य वाङ्मयसँ ई भिन्न प्रकृतिक होइछ। लोकवाङ्मय शास्त्र वा कोष-व्याकरणसँ नियमित-निर्देशित नहि होइछ। एकर तँ अपन स्वच्छन्द प्रवाह रहैत छैक जकर प्रेरणा, नियामक, निर्देशक होइछ लोकचेतना, लोकमानस ओ लोकचर्या। शिष्ट सुसंस्कृत वाङ्मयमे जे तत्त्व दोष मानल जाइछ से लोकवाङ्मयक सहज विशेषता होइत अछि। परिमार्जन वा संशोधन-परिवर्त्तन भेलासँ ओकर लोकवृत्तत्व क्षत-विक्षत भऽ जाइछ।

लोकजीवनमे शब्द ओ अर्थक जतेक विस्तार अछि ततेक दूर धरि लोकवाङ्मयक परिधि अछि। एहि लोकवाङ्मयक तीन गोट वर्ग अछि। पहिल वर्गमे शब्द केवल अर्थ मात्र प्रदान करैत अछि। दोसर वर्गमे ओहन शब्द-गुच्छ अबैछ जे वाक्य-प्रयोगमे लक्ष्यार्थ वा व्यंग्यार्थ दैछ। तेसर वर्ग ओ अछि जे केवल शब्दार्थे नहि अपितु समुच्चय रूपमे विविध भाव ओ विचारकेँ अभिव्यक्त करैत अछि। अतः लोकवाङ्मयक ओ तीन गोट वर्ग थिक–

(क) लोकभाषिक शब्दावली (ख) वाग्धारा / मोहाबरा वा चतकार (ग) लोकसाहित्य

लोकभाषिक शब्दावली थिक लोकवृत्तक विभिन्न वस्तु, स्थिति, भाव, गुण इत्यादिक विशिष्ट अभिधान एवं विविध अनुष्ठान ओ कार्य-व्यापारक विशिष्ट धातु जे शिष्ट साहित्यमे सामान्यतः अप्रचलित ओ कोषमे अग्राह्य रहैत अछि, किन्तु लोकजीवन ओ लोकवृत्तक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दक रूपमे विद्यमान रहैत आयल अछि ।

लोकभाषिक शब्दावलीसँ ऊपर किछु सुनिश्चित शब्द-समुच्चय वा खण्डवाक्य होइछ जकर शाब्दिक अर्थ नहि होइछ, अपितु ओहिसँ भिन्न, विशेष अर्थ होइछ जकरा **लक्ष्यार्थ** वा **व्यंग्यार्थ** कहल जाइछ । एहन शब्द समुच्चयक खण्डवाक्यक लेल कोनो विशेष शब्द नहि अछि । संस्कृत काव्यशास्त्रमे शब्दशक्ति प्रकरणमे लक्ष्यार्थ ओ व्यंग्यार्थक प्रतिपादनमे एहन वाक्य-खण्ड स्वतः विवेचित भऽ जाइछ, तेँ स्वतन्त्र अभिधानक प्रयोजन नहि रहि जाइछ । परन्तु आधुनिक भारतीय भाषामे एहन वाक्यखण्डकेँ **वाग्धारा, उपलक्षण, मोहाबरा** इत्यादि कहल जाइछ । मैथिलीमे एकरा **चतकार** कहल जा सकैत अछि । ई चतकार सब लोकजीवनक सामान्य व्यवहारक क्रममे अनायास निर्मित होइत रहैत अछि आ कालक्रमे शिष्ट साहित्यमे अपन विशिष्ट अभिव्यक्ति-सामर्थ्यक कारणे गृहीत-प्रयुक्त होइत रहैत अछि । अतः **चतकारकेँ** मूलतः लोकवाङ्मयहिक वर्ग मानल जयबाक चाही ।

लोकसाहित्य ओ विशिष्ट शब्द-समुच्चय थिक जे अलिखित रूपमे श्रुति-स्मृति-प्रयुक्ति-परम्परा द्वारा सामान्य जनसमुदायमे प्रवहमान अछि तथा लोक मानसमे सहज भावसँ उद्भूत-अनुभूत भाव, विचार, कल्पना, आकांक्षा, हर्ष, विषाद, आस्था, विश्वास, रूढ़ि ओ अवधारणाकेँ अभिव्यक्त करैत अछि ।

मैथिली लोकवाङ्मय

लोकवृत्तक किछु एहन विशेषता होइछ जे व्यापक रूपमे संसारक सभ लोकवृत्तमे समान रूपसँ भेटैत अछि । तथापि विभिन्न जनपद एवं ओहिमे बसैत लोक-समाजक लोकवृत्तक अपन विशेषता सेहो होइछ । लोकवृत्तक विशिष्ट प्रभेद **लोकवाङ्मय** थिक । इहो प्रत्येक जनपद ओ समाजक अपन-अपन विशिष्ट स्वरूपक होइत अछि । एहि विशिष्टताक कारण होइछ जनपदक भौगोलिक परिवेश ओ पर्यावरण, सामाजिक संरचना, समाजक रूढ़ पारम्परिक मानसिकता । लोकवाङ्मय अभिव्यक्त होइछ जनपदक भाषामे । मिथिला वैदिक कालसँ एक स्वतन्त्र जनपद रहल अछि । एहू ठामक भौगोलिक परिवेश ओ पर्यावरण, सामाजिक संरचना एवं लोक-समाजक मानसिकतामे विशिष्टता छैक जे भारतक अन्य जनपदसँ अनेक दृष्टिएँ भिन्न प्रकारक अछि । एकर जनसमाजक अपन स्वतन्त्र भाषा छैक मैथिली । अतः मिथिला जनपदक लोकवृत्तक अभिव्यक्ति होइत रहल अछि मैथिली भाषाक माध्यमे । अतः मिथिलाक लोकवाङ्मय मैथिली लोकवाङ्मय थिक । भारतक अन्य भाषाक लोकवाङ्मयक संग एकर तुलना कयला पर सामान्य समता अवश्य भेटैत अछि । किन्तु कतोक एहन वैषम्य ओ वैशिष्ट्य देखल जाइछ जे एकरा अन्य भारतीय लोकवाङ्मयसँ फराक करैत अछि ।

मैथिली लोकवाङ्मयक दिस सर्वप्रथम उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे ग्रियर्सन महोदयक ध्यान गेल छलनि । हुनका द्वारा मिथिला क्षेत्रक लोकगीत, लोकगाथा ओ

लोकभाषिक शब्दाबलीक संकलन-प्रकाशनमे महत्त्वपूर्ण योगदान भेल । परन्तु स्वयं मिथिलावासी लोकनिक ध्यान एहि दिस त्वरित गतिसँ नहि गेल । से, जखन भारतक अन्यान्य क्षेत्रमे लोकवृत्त ओ लोकवाङ्यक संकलन-अध्ययन वैज्ञानिक रीतिसँ करबाक कार्य पूर्ण गतिमान छल, तखनहुँ मैथिली क्षेत्रमे केओ विद्वान् श्रीगणेश करबाक हेतु अग्रसर नहि भऽ सकलाह।

मिथिलाक लोकवाङ्यक विपुलता, महत्ता आ विशिष्टता दिस मैथिल विद्वान्क ध्यान बीसम शताब्दीक चारिम दशकक पश्चाते जा सकल । 1942इ०मे **मैथिली-साहित्य-परिषद्क** दरभंगा अधिवेशनक अध्यक्ष पदसँ देल गेल डा०अमरनाथझा महोदयक भाषण मैथिली लोकवाङ्मयक लेल ऐतिहासिक महत्त्वक मानल जा सकैछ ।

डा०अमरनाथझा मैथिली लोकवाङ्मयक प्राचीनता, विविधता ओ महत्ता पर प्रकाश दैत मैथिली-साहित्य परिषद्कें तथा परिषद्क माध्यमे मिथिलाक विद्वद्वर्गहुकेँ मैथिली लोकवाङ्मयक संकलन, प्रकाशन ओ अध्ययन-अनुशीलनक दिशामे अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य-योजनाक परामर्श देने छलाह । हुनक विचार निम्नलिखित उद्धरणसँ स्पष्ट होयत-

बहुत शब्द एहन अछि जे बनिआँ, लोहार, सोनार, कुम्हार, चमार, डोम, कमार, खेतिहर, पजियाड़, पुरोहित, नटुआ, बजनिआँ, धोबि, नापित इत्यादि अपन-अपन व्यवसाय विशेषमे व्यवहार करैत छथि- तकरो संग्रह आवश्यक ।... खीसा कहानिओक संग्रह करबाक चाही ।.... मिथिलाक गामक नामक उत्पत्तिक अन्वेषण ओकर प्राचीन इतिहास प्रामाणिक रूपमे लिखएबाक चाही ।... प्रान्तान्तरमे, ग्राम्य-गीतक सुन्दर संग्रह भेल अछि- मराठीक, बंगालीक, हिन्दीक, राजस्थानीक ।... मिथिलामे कतेकटा गीतक भंडार अछि से सबहि कएँ विदित अछि । परन्तु हमरा ई आशंका अछि जे ई बहुत शीघ्र नष्ट भए जाएत । सिनेमाक गीत, गजल, कव्वाली इत्यादि जनप्रिय भेल जाइत अछि, आओर हमर चिरसंचित साहित्यिक धन लुप्तप्राय भेल जाइत अछि । कोबर, समदाउनि, गौरीक गीत, गोसाउँनिक गीत, इत्यादि जे हम बाल्यावस्थामे वयोवृद्धा कुटुम्बिनीक मुहेँ सुनइत छलहुँ से आबक स्त्रीगण बिसरल जाइत छथि । परिषद्कें चाही जे प्रत्येक गाममे किच्छु सज्जनकेँ नियुक्त कए पढ़ल-लिखल अथ च निरक्षरो पुरुष-स्त्रीसँ गीत सुनि लिखने जाथि आओर जहिँना लिखल भेल जान्हि परिषद्क कार्यालयमे पठाए देथि । संग्रह अएला पर कोनो योग्य विद्वान् एकर सम्पादन करथि, उचित रूपेँ विभाग करथि । जनताक गृहस्थ-जीवन-सम्बन्धी गीत, चरबाहक आओर खेतिहरक गीत, राज-दरबारक गीत- इत्यादि कइएक विभागमे एकरा प्रकाशित करथि । काव्यकलाक दृष्टिएँ एहि गीत सबमे चमत्कार हो वा नहिँ समाजक, जनस्थितिक, दैनिक जीवनक प्रतिविम्ब तँ एहिमे अवश्य भेटत । एहिमे एक अपूर्व मौलिकता, सरलता, स्वाभाविकता भेटत । एहिमे जनसाधारणक विलाप, करुणोद्रेक, आह्लाद भेटत; एहिमे भेटत हृदयक उद्गार, चित्तक नैराश्य, सन्तानक ममता ।[10]

डा०झा मिथिलाक सभ जातिक अध्ययन करबाक हेतु एक गोट जन-विज्ञान-समितिक स्थापनाक सेहो प्रस्ताव कयने छलाह जकरा **फोकलोर-सोसाइटी** बूझल जा सकैत अछि। अवश्ये ई मिथिलाक लोकवृत्तक अध्ययनक दिशामे एकटा महत्त्वपूर्ण योगदान होइत ।

डा०अमरनाथझाक उपर्युक्त परामर्श सब मैथिली लोकवाङ्मयक विभिन्न पक्ष दिस

सूत्रात्मक संकेत थिक । एहिमे मैथिली लोकवाङ्मयक लोकभाषिक शब्द-सम्पदा ओ लोकसाहित्य-सम्पदाक प्रति समान रूपसँ ध्यानाकर्षण कयल गेल अछि ।

एहि भाषणक प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ल हो वा नहि, परन्तु पाँचम दशक बितैत-बितैत मिथिलाक अनेक विद्वान् मिथिलाक लोकवृत्त ओ लोकवाङ्मयक संकलन ओ अध्ययनमे प्रवृत्त होइत गेलाह । एहि क्रममे विशेष सक्रियता मैथिली लोकसाहित्यहिक प्रति रहल जाहिमे लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, व्रतकथा, कहबी, शिशुगीत, झाड़-फूकक मन्त्र, कृषि सम्बन्धी वचन इत्यादिक संकलन कयल जाइत रहल अछि । किन्तु एकर सभक बड़ अल्पभाग व्यवस्थित रूपमे प्रकाशमे आबि सकल अछि ।

मैथिली लोकसाहित्यक वर्गीकरण

मैथिली लोकसाहित्यक पहिल संक्षिप्त किन्तु व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत कयने छलाह डा०जयकान्तमिश्र । 1951मे दुइ भागमे हिनक एक गोट पुस्तक प्रकाशित भेल **इंट्रोडक्शन टु दि फोकलिटरेचर ऑफ मिथिला** । एहि पुस्तकमे डा०मिश्र मैथिली लोकसाहित्यक साधार विवेचन-पूर्वक वर्गीकरणक कोनो प्रयास नहि कयल । पुस्तकमे केवल मैथिली लोकसाहित्यक विभिन्न प्रभेद सभक सोदाहरण परिचय देने छथि । पुस्तकक पहिल भागमे मैथिलीक लोककाव्यक विभिन्न प्रभेदक परिचय देल गेल अछि एवं दोसर भागमे मैथिली गद्याश्रित लोकसाहित्यक विभिन्न प्रभेद विवेचित अछि । एहि विवेचनक आधार पर मैथिली लोकसाहित्यक वर्गीकरणक प्रसंग डा०जयकान्तमिश्रक अवधारणाक परिचय भेटि सकैत अछि। तदनुसार मैथिली लोकसाहित्यक दुइ मुख्य वर्ग अछि (क) **पद्य** ओ (ख) **गद्य** । डा. मिश्र गद्यमे लोककथा ओ मन्त्रकेँ विस्तार देने छथि । पद्य साहित्यमे विस्तीर्ण रूपमे निम्नलिखित भेदोपभेद परिगणित कयलनि–

1. गीत साहित्य : (क) भजन (ख) देवी देवताक गीत (ग) पाबनिक गीत (घ) जन्मगीत (ङ) संस्कार गीत– (i) मुण्डन गीत (ii) उपनयनक गीत (iii) विवाह गीत (कन्याक विवाह / वरक विवाह / द्विरागमन) (iv) गोदनागीत (च) ऋतुगीत– (i) चैतावर (ii) फागु (iii) फागु वा होरी (iv) पावस (v) मलार (vi) वसन्त (छ) लगनी
2. गाथा ओ कथात्मक गीत
3. प्रकरण-परक सामयिक कथात्मक गीत
4. शिशुगीत, पिहानी, कहबी ओ सूक्ति
5. नाट्य गीत

मैथिली लोकवृत्त ओ लोकसाहित्यक विशिष्ट विद्वान् डा०पूर्णानन्ददास अपन शोधप्रबन्ध **मैथिली लोककाव्य** (अप्रकाशित)मे मैथिली लोकसाहित्यक केवल काव्यपक्ष पर विचार कयने छथि, ओकर गद्य ओ प्रकीर्ण प्रभेदकेँ, विषय-सीमामे नहि रहबाक कारणे छोड़ि देने छथि । डा०दास काव्यपक्षक निम्नलिखित वर्गीकरण देने छथि–

1. भजन ओ धार्मिक गीत 2. संस्कार विषयक गीत 3. ऋतु सम्बन्धी गीत 4. प्रकीर्ण (क्रियागीत, नाट्यगीत, लोरी, फकड़ा, पिहानी, कृषि सम्बन्धी सूक्ति आदि) 5. लोकगाथा

एहि वर्गीकरणमे प्रथम तीन भेद ओ चारिमक किछु उपभेद गीतहिक अन्तर्गत समाहित भऽ सकैछ । अतः मुख्य भेद तीनिए गोट होइत अछि– गीत, लोकगाथा ओ प्रकीर्ण ।

डा०अणिमासिंह अपन एक गोट निबन्धमे मैथिली लोकसाहित्यकेँ सात वर्गमे विभक्त कयलनि अछि[11] – 1. लोकगीत 2. लोकगाथा 3. लोककथा 4. लोकनाट्य 5. बुझौअलि 6. फकरा 7. वचन

प्रो०रमानाथझा, डा०दुर्गानाथझाश्रीश, डा०योगानन्दझा प्रभृति सेहो अपन-अपन दृष्टिसँ मैथिली लोकसाहित्यक वर्गीकरण प्रस्तुत कयने छथि । सब वर्गीकरणमे किछु ने किछु अव्याप्ति दोष, अतिव्याप्ति दोष, प्रभेदलोप-दोष इत्यादि देखल जाइत अछि । एक वर्गक वस्तु दोसरहु वर्गमे समाहित भऽ सकैत अछि । मैथिली लोकसाहित्यक वर्गीकरणमे एहि प्रकारक त्रुटि होयब सर्वथा स्वाभाविके अछि तथापि अधिकतम सीमा धरि वर्गीकरणकेँ वैज्ञानिक, तर्कसंगत ओ निर्दुष्ट करबाक बौद्धिक प्रयास तँ कयले जा सकैत अछि । विषयवस्तु, वाग्रीति, प्रयोगावसर, प्रयोक्तावर्ग इत्यादिकेँ समवायिक रूपमे ध्यानमे राखि मैथिली लोकसाहित्यक वर्गीकरण करब अपेक्षित अछि । समग्र मैथिली लोकसाहित्यकेँ प्रयोक्ता-भोक्ताकेँ ध्यानमे राखि सामान्यतः दुइ वर्ग कयल जा सकैत अछि (क) **बाल वर्गक मैथिली लोक साहित्य** ओ (ख) **प्रौढ़ वर्गक मैथिली लोकसाहित्य** । चलित भाषा मे कहल जाय तँ **बचकानी मैथिली लोकसाहित्य** ओ **सेयानी मैथिली लोक साहित्य** कहि सकैत छी ।

मैथिली लोकसाहित्यक वर्णन-विवेचनमे **शिशुगीत** सन संकुचित अर्थक शब्द द्वारा अभिहित कऽ बाल वर्गीय लोकसाहित्यक चर्चा कऽ देल जाइछ परन्तु लोक-साहित्यक वर्गीकरणमे ओकरा क्वचिते स्थान देल जाइछ । मानव शिशुकेँ सर्वप्रथम जाहि भाषा-संगीतसँ प्रबोधना भेटैछ, जे वर्ण सूनि बोल फुटैछ, जे शब्द सूनि वस्तु-बोध होइतछ, जे अटपट वाक्यांश वा वाक्य सूनि बौद्धिक स्फुरण होइछ आ ओ स्वयं उच्चारण करऽ लगैत अछि– क्रीडनीयक बोल, फकड़ा, गीत, पिहानी, कथा इत्यादि, से बालवर्गक लोकसाहित्य कथमपि उपेक्षणीय नहि अछि । सामान्य प्रौढ़जन-प्रयुक्त लोक साहित्यसँ बालवर्गीय लोकसाहित्य सर्वथा भिन्न स्तरक ओ भिन्न प्रकृतिक होइत अछि तथापि ओहूमे बहुशः प्रभेदात्मकता देखल जाइत अछि एवं प्रौढ़वर्गक लोकसाहित्यक कतोक प्रभेद नामतः एहूमे भेटैत अछि । बालवर्गक साहित्य दुइ रीतिक होइत अछि– वयः ज्येष्ठ द्वारा बालवर्गक निमित्त प्रयुक्त ओ स्वयं बालवर्ग द्वारा प्रयुक्त। अर्थहीन शब्दयोजना, अर्थ संगतिसँ निरपेक्ष पदयोजना, वाक्यार्थक हेतु अपेक्षित आकांक्षा-आसत्ति-योग्यतासँ विरहित बालवर्गीय लोकसाहित्यमे जे लयात्मकता, रंजकता, सम्मोहकता, तन्मय करबाक गुण ओ शिशुमनकेँ मुग्ध करबाक अपरिमित क्षमता छैक से प्रत्येक पारिवारिक जनक हेतु अनुभवसिद्ध तथ्य थिक ।

प्रौढ़वर्गक मैथिली लोकसाहित्यकेँ पाँच गोट सामान्य वर्गमे राखल जा सकैछ–

(क) लयात्मक मैथिली लोकसाहित्य
(ख) वाचनात्मक मैथिली लोकसाहित्य
(ग) कथनात्मक मैथिली लोकसाहित्य
(घ) अभिनयात्मक मैथिली लोकसाहित्य
(ङ) अनुष्ठानात्मक मैथिली लोकसाहित्य

एहि सबमे प्रत्येकक अपन-अपन प्रभेद-उपभेद सब छैक, यथा–

(क) लयात्मक मैथिली लोकसाहित्य– एहि वर्गमे ओहन लोकसाहित्य परिगणनीय अछि जाहिमे कोनो यथार्थ वा काल्पनिक व्यक्ति विशेषक जीवनक अथवा कोनो घटनाक सांगोपांग वर्णन युक्त दीर्घकालिक गेयपद–योजनामे निबद्ध कथात्मकता रहैछ जे लय आ भासक संग गाओल जाइत अछि । एहि वर्गमे अबैत अछि–

(i) कथा–प्रधान लोकगाथा सब जे अतिदीर्घ, दीर्घ ओ लघु आकारक होइछ । लोरिक, सलहेस, बिहुला, दीनाभद्री इत्यादि एही कोटिमे अबैछ जकरा लयक संग गाओल जाइछ ।

(ii) विभिन्न संस्कार, अवसर, प्रसंग, ऋतु, मास, पाबनि–तिहारमे निश्चित प्रकारक भास–पूर्वक गाओल जाय वला लघुकालिक गेयपद सब जकरा लोकगीत कहल जाइछ।

(ख) वाचनात्मक मैथिली लोक साहित्य– एकरा अन्तर्गत ओहन लोक साहित्य अबैछ जकर अवसर ओ प्रसंग उपस्थित भेला पर वाचन कयल जाइछ । कथनकेँ, प्रसंग ओ प्रयोजनकेँ सम्पुष्ट करबाक लेल एकरा प्रमाण रूपमे उपस्थित कयल जाइछ । गोटेक भेदमे जिज्ञासाक भाव सेहो रहैछ । एकरा **पाठ्य लोकसाहित्य**क अभिधान सेहो देल जा सकैछ जे गद्य नहि थिक, परन्तु गेय सेहो नहि थिक । एहिमे **यति**क प्रधानता रहैत छैक जाहिमे लयात्मकता तँ रहैत छैक परन्तु गेयता नहि होइत छैक । एहिमे अधिकांश सुनिश्चित स्वरूपक पद्यात्मके होइछ । क्वचित् गद्य रूपमे अपवादो भेटि जाइछ । एहि वर्गक तीन गोट भेद अछि–

i. **लोकवचन–** शिष्ट साहित्यक सूक्ति ओ सुभाषित सदृश लोकानुभूत सत्यक सूत्रवद्ध रूप थिक– **लोकवचन** । ई दुइ कोटिक होइछ– **ज्ञात कर्त्तृत्वक** ओ **परम्परित** ।

ii. **लोकोक्ति–** लोकानुभूत सत्यसिद्ध लघु वाक्य थिक ई, जकर प्रयोग प्रस्तुत प्रसंगकेँ सम्पुष्ट करबाक लेल होइत अछि । एकर तीन गोट प्रभेद होइत अछि– **कहबी, फकड़ा** ओ **लौकिकन्याय** ।

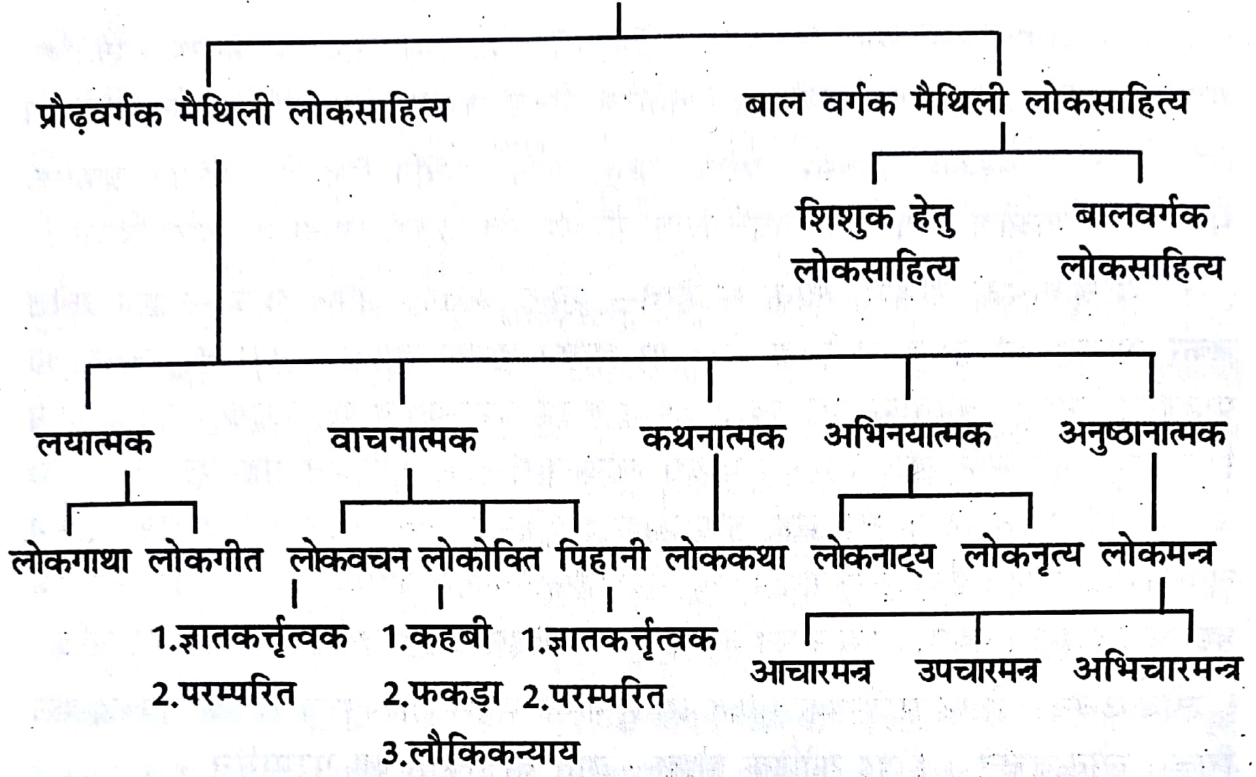
iii. **पिहानी–** वाचनात्मक लोकसाहित्यक एहन भेद थिक जाहिमे एक व्यक्ति जिज्ञासामय प्रश्न करैत अछि आ दोसर व्यक्तिकेँ ओकर उत्तर देबाक रहैत छैक ।

(ग) कथनात्मक मैथिली लोकसाहित्य– एहि वर्गमे ओहन गद्यात्मक लोकसाहित्य अबैत अछि जकरा वक्ता कहैत अछि आ श्रोता सुनैत अछि । एहि वर्गक अन्तर्गत **लोककथा** सब अबैत अछि । लोक कथाक दस गोट भेद होइत अछि ।

(घ) अभिनयात्मक मैथिली लोकसाहित्य– एहि वर्गमे ओहन लोकसाहित्य परिगणनीय अछि जकर प्रयोगमे अभिनयक कोनहु ने कोनहु रूपमे संयोग रहैत अछि । एहि वर्गक दुइ भेद होइत अछि– **लोकनाट्य** ओ **लोकनृत्य** ।

(ङ) अनुष्ठानात्मक मैथिली लोकसाहित्य– एहि वर्गक अन्तर्गत अबैत अछि परम्परासँ चल अबैत **लौकिक मन्त्र** सब । ई मन्त्र सब गद्य ओ पद्य दुहू कोटिक होइत अछि । एकर कतिपय भेद सब होइत अछि, यथा– आचारमन्त्र, उपचार मन्त्र, अभिचार मन्त्र इत्यादि ।

मैथिली लोकसाहित्यक वर्गीकरणकेँ निम्न रूपमे सेहो देखाओल जा रहल अछि–



सन्दर्भ-संकेत

1. भोजपुरी लोकगाथा; डा. सत्यव्रतसिन्हा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1957, भूमिका
2. लोकसाहित्य विज्ञान; डा. सत्येन्द्र, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं, दिल्ली, 1962, पृ. 3
3. नाट्यशास्त्र; भरत, 1/112
4. तत्रैव 26/113
5. तत्रैव 35/26
6. काव्यालंकार सूत्रवृत्ति, 1/3/1
7. द हैण्डबुक ऑफ फोकलोर-सोफिया वर्न, पृ. 4
8. ब्रजलोक साहित्यका अध्ययन; डा. सत्येन्द्र, पृ. 6-7 (टिप्पणी)
9. लोकसाहित्य का अध्ययन; डा. त्रिलोचनपाण्डेय, पृ. 96-98
10. भाषणत्रयी; मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 13-14
11. मैथिली लोकसाहित्य- डा०अणिमासिंह; मैथिली साहित्यक रूपरेखा भाग-2, चेतना समिति, पटना, 1974, मे संकलित निबन्ध पृ. 6

(रिसर्च इंस्टीच्यूट ऑफ फोककल्चर-वेस्टबंगाल, कलकत्तामे 11 दिसम्बर, 1994कें देल गेल भाषण ।)

●

मैथिली लोकगाथा

प्रावेशिकी

मैथिली लोकगाथा अत्यन्त समृद्ध ओ विविधता-पूर्ण अछि । ई समाजक ओहि वर्गमे विशेष प्रचलित अछि जे अभिजात संस्कृति, सभ्यता ओ शिक्षासँ असम्पृक्त रहल अछि । लोकगाथा श्रुति-स्मृतिक परम्परामे विशुद्ध श्रव्य लोक-काव्यक रूपमे अद्यापि लोकानुरंजन करैत आबि रहल अछि । पूर्वकालमे तँ सहजहि ई अभिलेखबद्ध होयबाक योग्य नहि मानल गेल, आधुनिको कालमे दीर्घ अवधि धरि लोकगाथा काव्यकेँ लिपिबद्ध करबाक गम्भीर प्रयास नहि भेल । अतः एकर परिचिति-विरलतासँ समुचित अध्ययन-अनुशीलन, समालोचन-मूल्यांकनक दिशामे सार्थक प्रगतियो नहि भऽ सकल ।

अवश्ये उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे अंगरेज विद्वान् जॉर्ज अब्राहम गियर्सन मैथिलीक अस्पृष्ट क्षेत्रक दिशामे बढ़बाक पहिल प्रयास कयलनि । ओ मैथिली भाषाक भाषातात्त्विक अध्ययन, प्राचीन साहित्यक अन्वेषण-संकलन ओ मैथिलीक शब्द-सम्पदाक संचयनक संगहि एकर लोकसाहित्यहुक संकलन-प्रकाशन करौलनि जाहिमे मैथिलीक कत्तोक प्रसिद्ध लोकगाथाकेँ सेहो महत्त्वपूर्ण स्थान देलनि ।

मैथिली लोकगाथा ओ बैलेड

सामान्य जनमे मौखिक परम्परामे प्रचलित आख्यान मूलक गेय काव्यकेँ लोकवृत्त-शास्त्रमे लोकगाथा अभिधान देल गेल अछि । अंगरेजीमे एहि प्रकारक गेय लोककाव्यकेँ **बैलेड** कहल जाइत अछि । बैलेडक व्युत्पत्ति लैटिनक **बेलारे** शब्दसँ भेल अछि, जकर अर्थ होइत छल नृत्य करब । विद्वान् लोकनिक धारणा छनि जे आरम्भिक समयमे नृत्यक संग जे गीत गाओल जाइत छल तकरा **बैलेड** कहल जाय लागल । कालक्रमे एहिमे कथातत्त्वक समावेश होइत गेल ओ नृत्यक अनिवार्यता लुप्त होइत गेल तथा पश्चात् जनप्रचलित मौखिक गेयकथाक हेतु ई शब्द रूढ़ भऽ गेल ।

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका (**बैलेड**, पृ० 993)मे कहल गेल अछि जे– **बैलेड एकटा एहन पद्य-रीतिक नाम थिक जकर स्रष्टा अज्ञात होथि, जाहिमे सामान्य आख्यान हो, सरल मौखिक परम्पराक हेतु उपयुक्त हो एवं ललितकलाक सोष्ठवसँ रहित हो** ।' (**The name given to a style of verse of unknown authorship dealing with episode or simple motive rather than sustained theme written in stanzoic form more or less fixed and suitable for the oral transmission and treatment showing little or nothing of fineness deliberate art.**)

विभिन्न विद्वान् अपना-अपना रीतिसँ बैलेडक परिभाषा देलनि अछि जकर निष्कर्ष ई होइछ जे **बैलेड कथानक युक्त काव्य थिक जकर रचयिता अज्ञात रहैछ, परम्परा द्वारा मौखिक रूपमे एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीकेँ प्राप्त भऽ समग्र समाजक सामूहिक रिक्थ भऽ जाइछ । काव्य-चातुर्यसँ हीन, सरल भाषामे सहज अभिव्यक्तिसँ सम्पन्न रहैछ ।**

यूरोपीय लोकसाहित्यक रूपमे जे बैलेड सब संकलित होइत रहल अछि तकर सभक आकार लघु देखल जाइछ । कोनो एकहि लघु वा किंचित् दीर्घ कथानकक घटनाक्रमक विन्यास रहैत अछि । आकारक दृष्टिएँ देखब जे उत्तरी अमेरिकाक अत्यन्त विख्यात बैलेड **लॉर्ड रैण्डल**मे दस गोट मात्र छन्द अछि । दोसर दिस यूरोपक **रॉबिन हुड** नामक बैलेड दीर्घ बैलेडमे परिगणित अछि । किन्तु एहिमे अस्सी-नब्बे गोट छन्द मात्र अछि । यूरोपीय बैलेड सब सामान्यतः तीससँ पचास छन्दमे सम्पन्न भऽ जाइत अछि ।

एहि **बैलेड** शब्दक पर्यायवाची शब्दक रूपमे **लोकगाथा** शब्दक प्रयोग कयल जाइछ । आ एहि शब्दकेँ भारतीय लोक साहित्यक सन्दर्भमे मान्यता सेहो भेटि गेल छैक । परन्तु **लोकगाथा**क समक्ष स्वयं **बैलेड** शब्द अर्थसंकोचसँ ग्रस्त बूझि पड़ैत अछि । कारण, भारतीय लोकसाहित्यमे, ओ मैथिली लोकसाहित्यमे तँ सहजहिँ; यूरोपहुक लोक साहित्यमे कतोक एहनो आख्यानमूलक गेय काव्य अछि जाहिमे अनेक कथाक्रम ओ घटनावलीक संक्रान्त विन्यास देखल जाइछ जकरा **बैलेड**क परिभाषामे अँटायब कठिन बूझि पड़ैछ । अतः एहन वृहत् आख्यान मूलक लोककाव्यकेँ **एपिक-ले** (Epic-Lay) अथवा **फोक-एपिक** (Folk-Epic) कहल जाय लागल अछि । ओना सामान्यतः एकरहु बैलेडे कहि देल जाइछ। भारतीय लोकसाहित्यक परिप्रेक्ष्यमे आख्यान मूलक गेय लोककाव्यक हेतु **लोकगाथा** अत्यन्त समीचीन ओ अर्थवान् अछि ।

गै धातुसँ निष्पन्न **गाथः/गाथा/गाथिका** शब्द भारतीय वाङ्मयमे अत्यन्त प्राचीन अछि । कोषमे **गाथा**क अर्थ कहल गेल अछि— गीत, भजन, धार्मिक श्लोक, वेदक सूक्तसँ सम्बन्ध नहि रखनिहार छन्द । ब्राह्मण ग्रन्थ सबमे **गाथा**क अर्थ छल **ऋक्, साम** ओ **यजुस्**सँ भिन्न आख्यान मूलक पद्य । **मैत्रायणी संहिता**मे एक प्रकारक गाथा **गाथानाराशंसी**क उल्लेख भेटैत अछि जकर अर्थ छल मनुष्यक प्रशंसामूलक गीत जे वास्तवमे छल धर्म्मनिष्ठ नृपतिगणक प्रशंसा-व्यंजक संगीत विशेष । अतः **गाथा**केँ **स्तुतिरूपवाक्** कहल जाइत छल। अन्यत्रहु कहल गेल अछि, **गाथं गातव्यं स्तोत्रम् गाथाभिः मन्त्ररूपभिः वाग्भिः, गाथास्तु पितृ पृथ्वी प्रभृति गीतयः** इत्यादि । एहि सबसँ सिद्ध होइत अछि जे गाथा वैदिक सूक्तसँ भिन्न गेय पद्य होइत छल जाहिमे विशिष्ट पुरुष, पितृगण, पृथ्वी इत्यादिक प्रशस्ति, स्तुति ओ आख्यान रहैत छल । अतः ओहि कालक लोकवृत्तक समावेश एहि गाथा सबमे रहैत छल से अनुमान कयल जा सकैछ । सार रूपमे कहल जा सकैत अछि जे **गाथा**मे धार्मिकता, गीतात्मकता, स्तुति, आख्यान-सन्दर्भत्व, पितृवर्ग ओ विशिष्ट पुरुषक प्रशस्तिक भाव सन्निहित छल । पश्चात् काल लौकिक भाव-सम्पन्न छन्द विशेष **गाथा** ओ **गाहा** नामे प्रशस्त भेल जकर प्रमाण थिक **गाथा सप्तशती** । दोसर दिस प्रशस्ति-परक आख्यानक अर्थमे सेहो **गाथा** शब्द वेश प्रशस्त भऽ गेल । कीर्त्तिगाथा, यशोगाथा, वीरगाथा इत्यादिमे ई अर्थ देखल जाइछ।

ऊपर **गाथा**मे जे अर्थक ऐतिहासिकता अछि से मैथिलीयोक आख्यानमूलक लोककाव्यमे देखल जाइत अछि । एहिमे गेयधर्मिताक संगहि पूर्वज, विशिष्ट पुरुष इत्यादिक चरित-कथाक वर्णन रहैत अछि जकरा प्रति गायक-श्रोताकेँ श्रद्धा-भक्ति रहितहि अछि । अतः मैथिलीक आख्यानमूलक गेयधर्मी लोककाव्यकेँ **लोकगाथा** नामे अभिहित करब समीचीन अछि । वस्तुतः **बैलेड**क अपेक्षा **लोकगाथा** अधिक अर्थगर्भित अछि ।

मैथिली लोकगाथाक पारम्परिक अभिधान

मिथिलामे प्रचलित आख्यानमूलक गेयधर्मी लोककाव्यकेँ सामान्यतः गीते कहल जाइत अछि । ग्रियर्सन सेहो एकरा हेतु **गीत** शब्दक प्रयोग कयने छथि– **गीत सलहेसक गीत दीना-भद्रीक, गीत नेबारक** । अंगरेजीमे एकरा सबकेँ **पॉपुलर सौंग** कहने छथि । एकरा विद्वान लोकनि **लोकप्रिय गीत** अर्थ करैत छथि । परन्तु **पॉपुलर** शब्दसँ ग्रियर्सनक ओ अर्थ अभीष्ट छलनि जे **पॉपुलर एण्टीक्विटिज्**मे निहित अछि । अतः ग्रियर्सनक **पॉपुलर सौंग**क अर्थ होयत **लोकप्रचलित गीत** अथवा **लौकिक गीत** । मिथिलामे गाथाक नायक अथवा नायिकाक नाममे **गीत** शब्द जोड़ि गाथाक समग्र रूपक बोध कराओल जाइत अछि, यथा– **लोरिकक गीत, दुलरा दयालक गीत, श्यामसिंहक गीत, बिहुलाक गीत, सोंठी कुम्मरिक गीत** इत्यादि । दोसर दिस लघुप्रकारक कथात्मक लोककाव्य जाहि गीत-प्रभेदमे निबद्ध रहैछ तकरा नायक-नायिकाक नामक संग तत्तत् गीत-प्रभेदक नाम जोड़ि अभिधान देल जाइछ, जेना-**उतिमाक लगनी, जिरबाक लगनी, जगरनाथक सम्मर, सीता सम्मर** इत्यादि । असमी ओ बंगला लोकसाहित्यमे सेहो एतादृश काव्यकेँ **गीते** कहल जाइत अछि । गेयताक कारणे **गीत** कहल जायब स्वाभाविक अछि । शास्त्रीय अध्ययनमे कोनो गाथाक बोध ओ निर्देश हेतु गाथाक नायक-नायिकाक नामक संग गीत जोड़ि उल्लेख कयल जा सकैत अछि किन्तु गाथा-वर्गक समग्र काव्यक हेतु **गीत**क प्रयोग समीचीन नहि । कारण, ओहिमे जे कथातत्त्व अछि तकर अभिव्यंजना **गीत** द्वारा नहि भऽ पबैत अछि ।

मिथिलामे पमरिया नर्त्तक सब वृहत् कथानक वला लोककाव्यक गान करैत अछि जकरा **पमारा** कहल जाइत अछि । संभव अछि जे **पम्मार** (परमार) क्षत्रिय वीरपुरुषक यशोगाथाक गान करबाक कारणे ई सब **पमरिया** नामे अभिहित भेल हो एवं **पम्मार** (परमार) लोकनिक वीरगाथा **पमारा** नामे प्रसिद्ध भेल हो । **पमारा** होइत अछि वीररसात्मक। पमरिया सब **अल्हा-रुदल**क गाथाक अतिरिक्त **रैयारणपालक गीत, बखतौरक गीत, विजयमलक गीत** गबैत अछि । किन्तु लोरिक, सलहेस, दीनभद्रीक गीत गबैत नहि सूनल गेल अछि । अतः **पमारा**सँ मैथिलीक समग्र लोक गाथाक बोध नहि भऽ पबैत अछि ।

मिथिलाक लोकजीवनमे लोकगाथासँ सम्बद्ध एकटा और शब्द प्रचलित अछि– **महराइ** । **महराइ** गओनिहारकेँ **महरैया** कहल जाइत अछि । सामान्यतः लोरिकक गीतक गायनकेँ **महराइ** कहल जाइत अछि । प्रायः महर जातिमे उत्पन्न एक पराक्रमी पुरुषक रूपमे लोरिकक कथाक गान होयबाक कारणे, अथवा **महर** वा **महरा** जातिक द्वारा गान कयल जयबाक कारणे **महराइ** कहल जाय लागल । परन्तु सम्प्रति **महराइ** गायब कोनो जाति विशेष धरि सीमित नहि अछि । तहिना **महराइ** गओनिहार अन्यहु शृंगार अथवा वीररसपूर्ण गाथाक

गान करैत अछि । अतः **महराइक** तात्पर्य **लोरिकक गाथाक** गान मात्र नहि रहि गेल अछि। क्वचित् सलहेस, बखतौर, रैयारणपाल, नैका बनिजाराहुक सदृश लोकगाथाक बोध एहि शब्दसँ भऽ जाइत अछि । परन्तु मैथिलीक आख्यानमूलक समग्र लोककाव्यक एक वर्गक रूपमे अर्थबोध **महराइ** शब्दसँ नहि भऽ पबैत अछि । **महराइ** गयबाक शैलीयो विशिष्ट प्रकारक होइछ जाहिमे मैथिलीक अन्यान्य लोकगाथाक गान नहि भऽ सकैछ आ नहि होइछ। **गीत, पमारा, महराइ**सँ मैथिली लोक साहित्यक विशिष्ट प्रभेद आख्यानमूलक गेय लोककाव्यक आंशिक अर्थबोध मात्र भऽ पबैछ । तेँ एकर समग्रता-बोधक हेतु **लोकगाथा** शब्द सर्वथा उपयुक्त अछि ।

मैथिली लोकगाथाक परिगणन

मैथिली लोकसाहित्यक क्षेत्रमे अनुसन्धान कयनिहार विद्वान् लोकनि मैथिली लोकगाथा सभक उल्लेख करबाक, सूची देबाक अथवा ओकर कथा-रूपक परिचय एवं ओकर यथासंभव उद्धरण देबाक प्रयास करैत रहलाह अछि । परन्तु वास्तवमे मैथिलीमे कतेक लोकगाथा विद्यमान अछि, तकर सर्वैकत्व सूची कतहु नहि देखल गेल अछि ।

डा०जयकान्तमिश्र अपन मिथिलाक लोकसाहित्य विषयक अंगरेजी पुस्तकमे **बैलेड्स एण्ड टेल्स इन वर्स** शीर्षकक अन्तर्गत निम्नलिखित गाथा सभक सोदाहरण परिचय देलनि अछि— 1. लोरिकक गीत 2. सलहेसक गीत 3. दीना-भद्रीक गीत 4. कमला मैयाक गीत 5. जलेछक कथा 6. बिहुलाकथा 7. कुमर ब्रजभानक गीत अथवा सुट्ठी कुमरिक गीत 8. गोपीचन्द-मयनावती कथा 9. आजुरक कथा 10. नेवारक कथा ।[1]

डा०मिश्र निम्नलिखित लोकगाथाक उल्लेख मात्र कयलनि अछि— 1. रानीढोँरुअनि, 2. राजाढोढनसिंह ओ रानीमरुअनि, 3. मरछुआ, 4. बंसीधर, 5. मीरा, 6. गइया, 7. रघुनाथसिंह, 8. बुलाकीगोप, 9. बखतरसिंह, 10. दामोदरसिंह, 11. झंगरू, 12. मनसागोप, 13. जिवइ, 14. गोरइया, 15. दुलहा, 16. दयालसिंह, 17. सरबनियाँ गोआर 18. गुदरिया एवं 19. नाका ।[2]

डा०पूर्णानन्ददास लोकप्रियताक क्रममे मैथिलीक निम्नलिखित लोकगाथा पर विचार कयलनि अछि— 1. लोरिक 2. बिहुला 3. सलहेस 4. दीना-भद्री 5. दयालसिंह 6. जैसिंह 7. अमरसिंह 8. कुमरबृजभान 9. नाकावनजारा 10. लवहरि-कुशहरि 11. विजयमल 12. गुगुलिया 13. वंशीधरबाभन 14. गांगो एवं 15. कारिखपजियार । एहिमे विजयमल लोकगाथाक अतिरिक्त चौदह गोट लोकगाथाक मूल पाठ सेहो देलनि अछि । एकरा अतिरिक्त छओ गोट लोकगाथाक उल्लेख कयलनि अछि— 1. जमुना बढ़िअरि 2. सीता बोनस (बोनसार ?) 3. नूजागढ़ 4. धर्मराज 5. गोपीचन्द एवं 6. भरथरी ।[3]

डा०अणिमासिंह लोरिक, दीना-भद्री, सलहेस, छेछन ओ नयकाबनजाराक उल्लेख बहुप्रचलित लोकगाथाक रूपमे कयलनि अछि । एहि सूचीमे **छेछन** लोकगाथाक सूचना नवीन अछि जकरा सम्बन्धमे हुनक कथन छनि जे **छेछनक गाथा डोम और चमारक बीच अधिक प्रचलित अछि** ।[4]

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना द्वारा प्रकाशित **लोकगाथा परिचय** नामक पुस्तकमे बिहारक विभिन्न क्षेत्रसँ प्राप्त बाइस गोट लोकगाथाक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहिमेसँ बीस गोट गाथाक मैथिली पाठ प्राप्त होयबाक सूचना देल गेल अछि । प्रत्येक गाथाक संक्षिप्त कथावस्तु ओ अन्य भाषाक संग नमूनाक रूपमे मैथिली पाठक अंश सेहो देल गेल अछि । एहि पुस्तकमे मिथिलामे प्रचलित मैथिली पाठवला गाथा सब अछि– लोरिकायन, घुघुली–घटमा, नैकाबनिजारा, राजाविजयमल, राजाढोलनसिंह, राजासलहेस, दीना–भदरी, मनसाराम ओ छेछनमल, मीरायण, लालामहराज, गरबीदयालसिंह, राजाहरिचन, अमरसिंहबरिया, कुमारवृजभान, हिरनी–विरनी, लुकेसरीदेवी सहित किछु सर्वथा नवीन गाथाक सेहो सूचना भेटैछ यथा–नूनाचार कालिदास पूर्वार्द्ध, कालिदास : जोतिक अवतार एवं भाजा ।[5]

प्रो०प्रफुल्लकुमारसिंहमौन अपन विभिन्न निबन्ध सबमे निम्नलिखित लोकगाथा सभक उल्लेख कयने छथि– अनंगकुसमा, अमरसिंह, कनकसिंह, कारिखपजियार, कारूभुँइयाँ (कारूखिरहरि), कालूराम, किसनाराम, कुमरबिजोभान, गनीनाथ, गोपीचन, घुघली–घटमा, चम्पाडगराइन, झुरइ, दयाराम, दीना–भद्री, दुलरादयाल, धनपाल, फेकूराम, बखतौर, बसाओनभुँइयाँ, बंसीधरबाभन, बिच्छू, बिजयमल, भैरवधामि, मरुअनि, महली सुलतान, माधोसिंह (माधोलाल), रइयारनपाल, रघुनाथ, राहु, लवहरि–कुसहरि, सतीमाँजरि, सलहेस, सरियो, संभूबनिजारा, सुब्बइ, सोखा, सोभाबनिजारा ।

डा०योगानन्दझा अपन पुस्तक **लोकजीवन ओ लोकसाहित्य**मे निम्नलिखित लोकगाथाक परिगणना कयने छथि– श्यामसिंह, लालबनबाबा (लालाजी), गरीबनभुँइयाँ, मोतीदाइ, गनिनाथ–गोविन्द, फेकूराम, कारिख, केबलमहराज, दुलरादयाल, अमरसिंह, जैसिंह, गाङोदेवी तथा बेनीराम ।

एहि सब सूचीक पारस्परिक तुलना कयला पर ओ वास्तविक लोकगाथाक अनुसन्धान कयला पर देखल जाइछ जे किछु नाम लोकगाथाक नहि भऽ लोकदेवताक नाम थिक । दोसर दिस एकहि गोट लोकगाथा, गाथाक विभिन्न पात्रक नामसँ भिन्न–भिन्न नामे अभिहित अछि।

डा०जयकान्तमिश्रक सूचीमे कतिपय अवास्तविक गाथाक नाम देल गेल अछि, जेना– कमला मैया, गैया, गोरइया, गुदरिया, दुलहा । **कमलामैया** जलदेवीक रूपमे मिथिलामे मान्य छथि । हिनक भाओ होइछ । गोहारिक गीत होइछ । विभिन्न लोकगाथामे पात्रहुक रूपमे हिनक वर्णन भेल अछि । कोसी ओ कमलाक सन्दर्भमे रानू सरदार ओ कोहिला वीरक चर्चा विभिन्न लोकगीतमे अवश्य भेटैत अछि । परन्तु कमलासँ सम्बद्ध कोनो आख्यानमूलक लोकगाथा नहि भेटैत अछि । एहिना **गोरइया** सेहो एकटा लोकदेवताक नाम थिक जकर पूजा ओ पूजाक गीत प्रचलित अछि किन्तु गोरइयाक कोनो गाथा नहि सूनल जाइछ । **गैया** नामसँ सेहो कोनो लोक गाथा सूनल–जानल नहि अछि । **गुदरिया** कोनो गाथा नहि थिक अपितु गाथा–गायक थिक । गोरखपन्थी बाबाजीकेँ **गुदरिया** कहल जाइछ जे सारंगी नामक वाद्ययन्त्र पर भरथरी, गोपीचन्द इत्यादिक गाथा–गान करैत गाम–घरमे भीख ओ पुरान वस्त्र (गुदरी) मङैत अछि । **दुलहा** वास्तवमे दयालसिंहक विशेषण थिक जकरा विशेष काल **दुलरा** सेहो कहल जाइछ ।

डा०पूर्णानन्ददास एहि सन्दर्भमे डा०जयकान्तमिश्रक आलोचना करैत कहैत छथि– 'एहिमेसँ किछु, जेना आजुरक कथा, जलेछक कथा, रानीढोँढुअनिक कथा आदि आइ–काल्हि गाथाक रूपमे नहि प्राप्त होइछ। ई कथाक रूपमे भेटैत अछि, एकर किछु अंश कथाकारक सुविधानुसार गाओलो जाइत अछि। एकर सभक प्रचारो विशेषतः नारिये लोकनिक मध्य अछि। अतः लोककथाक रूपमे आब एहि पर विचार होयबाक चाही। **कमला मैयाक गीत** कोनो गाथा नहि थिक, ई गीत मात्र थिक। खास कमलाक नाम पर कोनो गाथा नहि भेटैछ। अमरसिंह, जैसिंह, ओ दयालसिंहक गाथा सैह कमलाक गाथा कहल जाइछ। **दुलहा** आ **दयालसिंह** दुइ गाथा नहि थिक। दयालसिहेकेँ दुलहा दयालसिंह वा नटुआ दयालसिंह कहल जाइछ। जेना कि पूर्वहि उल्लेख कयल गेल अछि जे कोनो परिवार अथवा जातिक कोनो प्रतिष्ठित व्यक्ति मृत्युक बाद पूजाक अधिकारी भऽ जाइछ आ **गैयाँ** कहबैछ। बंसीधर, मीरा, रघुनाथसिंह, बुलाकीगोप, बखतरसिंह, दामोदरसिंह आदि एही प्रकारक गैयाँ थिकाह। एकरा अतिरिक्तो अनेक औरो **गैयाँ** छथि जनिक पूजा आब क्रमशः कम भेल जा रहल अछि आ परिणामतः हुनका लोकनिसँ सम्बद्ध गाथा सभ सेहो विस्मृतिक गर्भमे विलीन भेल जा रहल अछि। एहि प्रकारक बहुतो गाथा आधा–छिधा भेटैत अछि। गायक ओतबे स्मरण रखैत अछि जतेक घंटा भरिक पूजाक लेल पर्याप्त हो। बहुत रास गाथाक नामे शेष बचल अछि, किछु दिनक बाद ओहो लुप्त भऽ जायत।'[6]

डा०दास **धर्मराजक** गाथाक आ मौनजी **राहु** ओ **सोखाक** गाथाक उल्लेख कयने छथि। **धर्मराज** ओ **सोखा, चौदह देवान** नामे प्रसिद्ध लोकदेवता–समूहमे स्थान रखैत छथि। **राहु** सेहो एकटा लोकदेवता थिकाह। हिनका लोकनिक पूजा–भाओ होइछ आ एहि अवसर पर गीतो गाओल जाइछ। परन्तु हिनका सबसँ सम्बद्ध कोनो लोकगाथा नहि भेटैत अछि।

एकहि गाथाकेँ भिन्न–भिन्न नामे अभिहित कयल जयबाक कारणे मैथिली लोकगाथाक परिगणनमे भ्रान्ति होइत देखल जाइत अछि। प्रो०मौन रइयारनपाल तथा घुघली–घटमा नामक गाथाक उल्लेख कयने छथि। घुघलीकेँ घुघुलिया ओ गुगुलिया सेहो कहल जाइछ। दुहू नामसँ उल्लिखित वास्तवमे एकहि गोट लोकगाथा थिक। पुहपीनगरक रइयारनपाल दौरीपुरक राजाविसंभरकेँ हरा कऽ ओकर बेटी वारी अथवा यशोदाकेँ अपन पत्नी बना लेलक। विसंभरक गंगाराम इत्यादि सात बेटा जे घटमा नामे प्रसिद्ध छल, से एहि अपमानक बदला लेबाक लेल रइयारनपालकेँ छलसँ आमन्त्रित कऽ बध कऽ देलक। गर्भवती वारी विधवा भऽ गेलि। अपन भाइ सभक लांछन, अपमान ओ उत्पीड़नसँ त्रस्त वारी हेमूक आश्रयमे जाइत अछि। ओकरा गर्भआन्हर पुत्र होइत छैक, जकर नाम घुघली पड़ैत छैक। घुघली चेतन भेला पर अपन मामा सभसँ पिताक बधक बदला लैत अछि। शोभा बनिजार ओ शम्भु बनिजार वास्तवमे एकहि लोकगाथाक नायकक नामान्त थिक, जकर गाथाक किछु अंशक संकलन ग्रियर्सन, **गीत नेबारक** नामसँ कयने छलाह। डा०जयकान्तमिश्र **मीरा** गाथाक उल्लेख कयलनि अछि आ राष्ट्रभाषा परिषद्सँ प्रकाशित लोकगाथा परिचयमे **मीरायण** गाथाक सूचना अछि। एहिना पूर्णानन्ददास **नूजागढ़** आ प्रो०मौन **सतीमाँजरि** गाथाक वर्णन कयलनि अछि। एहि पंक्तिक लेखकक निजी संग्रहमे सेहो एकगोट **मीराबालापीर नामक** गाथाक संग्रह

अछि। वास्तवमे मीरगंजक सूबेदार ओ नूजागढ़क युद्धक विजेता मीरसैयदक पत्नी छलि माँजरि तथा मीरसैयदक छोट भाइ मोमरत नूजागढ़क नबाबक बेटी लालमतिसँ वियाह कयने छल । अतः मीरा, मीरायण, मीराबालापीर, नूजागढ़ एवं सतीमाँजरि एकहि गोट लोकगाथाक नाम थिक । एहिना छेछन ओ मनसाराम तथा लुकेसरी देवीक गाथाक सूचना भेटैत अछि । मुदा वास्तवमे ई तीनू एकहि गाथाक नाम थिक । छेछनमल जातिसँ डोम छल जे सिरीराजखंडक रक्षक छल । मनसारामचमार मोरंग राजक सिपाही छल । मोरंगक राजा सिरीराजखंडकेँ अपना अधीन करऽ चाहैत छल, एही क्रममे एहि दुनू वीर नायकक आमना-सामना होइत छैक । एही गाथाक अग्रिम भागमे लुकेसरी देवीक कथा अछि जे छेछनमलकेँ अपन पतिक रूपमे प्राप्त करबाक हेतु कठिन तपस्या करैत अछि । वस्तुतः छेछन, मनसाराम ओ लुकेसरीदेवी तीनूमे देवत्व छैक । तीनू डोम, चमार आदि जातिमे लोकदेवताक रूपमे पूजित अछि तेँ एहि गाथाकेँ तीन गोट नामसँ जानल जायब स्वाभाविके अछि । मुदा मनसागोप एहिसँ पृथक अछि जकर गाथा अहीर जाति मध्य प्रचलित अछि । **लोकगाथा परिचय** नामक पोथीमे लालामहाराज ओ डा०योगानन्दझा अपन पोथी **लोकजीवन आ लोक साहित्य**मे लालबनबाबा गाथाक उल्लेख कयलनि अछि । कथामे अन्तर होइतो ई दुनू एकहि गाथा थिक । कुमारब्रजभान (बिजोभान)– सोंठीकुम्मरिक लोकगाथा सेहो दुइ नामसँ जानल जाइत अछि– ब्रजभानक गीत आ सोंठीकुम्मरिक गीत । ढोढ़नसिंह-मरुअनिक गाथाकेँ ढोलाकुम्मरक गीत, मरुअनिक गीत अथवा ढोला-मरुअनिक गीत सेहो कहल जाइत अछि । बंसीधरबाभनक गाथा ओ श्यामसिंहक गाथा वास्तवमे एके गोट गाथा थिक । कारण बंसीधरबाभन ओ श्यामसिंह प्रतिद्वन्द्वी पात्र थिक जकर मल्लयुद्ध ओ बधक वर्णन गाथामे भेल अछि । कारूभुँइयाँ ओ कारूखिरहरि एकहि गाथा-नायकक नाम थिक । एहिना बख्तरसिंह, बखतौरसिंह आ बखतौर भिन्न नाम नहि थिक । अमरसिंहक गाथा ओ केबलमहराजक गाथा भिन्न-भिन्न गाथाक रूपमे गाओल जाइत अछि । परन्तु केबल महराजक गाथामे अमरसिंहक ओ केबलक प्रतिद्वन्द्विता होइछ, युद्ध होइछ आ अमरसिंहक हाथेँ केबलक बधक संग समाप्त भऽ जाइछ गाथा । लगैत अछि जे दुहू प्रायः एके गोट गाथाक भाग छल जे पश्चात् दुइ भागमे विभक्त भऽ गेल । जनसमाजमे प्रचलित एकटा गाथाकेँ दुइ नामसँ जानल जाइत अछि– जोतिकक गीत ओ कारिखपजियारक गीत । जोतिकपजियारक बेटा छल कारिखपजियार । अतः दुहू पिता-पुत्र एकहि गाथाक पूर्वापर नायकक रूपमे वर्णित भेल अछि । गनिनाथ-गोविन्द पिता-पुत्र छलाह । हिनक वृहत् लोकगाथा स्वतन्त्र रूपमे प्रचलित अछि । महत्त्वपूर्ण बात ई अछि जे गनिनाथ-गोविन्दक गाथा ओ कारिखपजियारक गाथा अन्तमे जा कऽ मीलि जाइत अछि । गोविन्द आ कारिख छल बाल-सखा । कारिख कामरूपमे जोगिन सभक बनिसारमे बारह बरख बन्द रहैत अछि । गोविन्दकेँ ई बात ज्ञात होइछ । गोविन्द जा कऽ कारिखकेँ मुक्त करबैत अछि । मुक्तिक पश्चात् कारिख गनिनाथ-गोविन्दक देवानक स्थान प्राप्त कऽ पूजित होमऽ लगैछ । **लोकगाथा परिचय**मे वर्णित **कालिदासः जोतिक अवतार** नामक गाथाक कथावस्तु कने भिन्न होइतो ई **कारिखपजियार** गाथाक पूर्वभाग थिक ।

प्रो०मौन फेकूराम तथा दयाराम नामक दुइ गोट गाथाक चर्चा कयने छथि । लछमिनक बेटा छल फेकूराम । फेकूरामक मीत छल दयाराम ओ मनसाराम । कोसिका धारक

वनमे खैरा चरबैत काल फेकूरामकेँ सातसय बाघिन घेरि लेलक । फेकूराम लड़ैत-लड़ैत मारल गेल । मित्र-वियोगमे दयाराम ओ मनसाराम सेहो प्राण त्यागि देलक आ पश्चात् गनिनाथ-गोविन्दक देवानक रूपमे प्रतिष्ठित भेल । एहि ठाम फेकूरामक गाथाकेँ सेहो गनिनाथ-गोविन्दसँ सम्बद्ध होइत देखल जाइत अछि । दयारामक कोनो स्वन्त्र गाथाक अस्तित्व तखने मान्य भऽ सकैछ यदि ओ कतहु सूनल ओ संकलित कयल जा सकय । चम्पाडगराइनक सेहो कोनो स्वतन्त्र गाथा नहि अछि । ई मैथिली लोकगाथाक एकटा महत्त्वपूर्ण नारी पात्री थीक जकर अवतरण अनेक गाथा-नायकक जन्मक अवसर पर भेल करैत अछि ।

उपर्युक्त तर्क-वितर्कमे देखल गेल अछि जे मैथिली लोकगाथाक परिगणनमे अनेक एहनो नामक उल्लेख कयल जाइत रहल अछि जकर अस्तित्व सिद्ध नहि भऽ पबैछ अथवा सन्दिग्ध अछि । दोसर दिस बहुतो ज्ञात-अज्ञात लोकगाथा सब सुदूर ग्रामांचलमे प्रचलनमे अछि किन्तु ओतऽ धरि पहुँचल नहि जा सकल अछि । कतोक छोट-पैघ लोकगाथा एहनो अछि जे प्रसिद्ध रहितो कतहु परिगणित नहि भऽ सकल अछि, जेना- हंसराज-बछराज (बंसराज)क गाथा, सीत-बसन्तक गाथा, सरबनपूतक गाथा, उतिमाक लगनी, जिरबाक लगनी, रेसमाक लगनी, हिरनी-बिरनी नटिनियाँ, रानीसुरुंगा, सीताहरण, अर्जुन सम्मर, लक्ष्मी सम्मर, जग्रनाथक सम्मर, सुदामा सम्मर, हरसोँ कथा, हसल-हुसैल इत्यादि ।

उपर्युक्त विश्लेषणक सारांश रूपमे कहल जा सकैत अछि जे मैथिली लोकसाहित्यमे दीर्घ-लघु, स्थानीय ओ बहुजनपदीय मिलाय बहत्तरि गोट लोकगाथाक अस्तित्व अछि । भविष्यक अनुसन्धानसँ ई संख्या न्यूनाधिक भऽ सकैत अछि । अस्तित्वसिद्ध लोकगाथाक सूची निम्नरूपक अछि-

1. अमरसिंह, 2. अर्जुन सम्मर, 3. आजुर कथा, 4. उतिमाक लगनी, 5. कनकसिंह, 6. कारिखपजियार (जोतिकपंजियार), 7. कारूभुँइयाँ (कारूखिरहरि), 8. कालिदास, 9. कालूराम, 10. किसनाराम, 11. केबलमहराज, 12. गनिनाथ-गोविन्दनाथ, 13. गरीबनभुँइयाँ, 14. गांगोदेवी, 15. गोपीचन्द-मयनावती, 16. छेछन-मनसाराम (लुकेसरीदेवी), 17. जग्रनाथक सम्मर, 18. जमुना बढ़िअरि, 19. जयसिंह, 20. जलेछ (जयलच्छी), 21. जिबाइ, 22. जिरबाक लगनी, 23. झङरू, 24. झुरइ, 25. ढोलाकुमर-मरुअनि (राजाढोलनसिंह-रानीमरुअनि), 26. दामोदरसिंह, 27. दीना-भद्री, 28. दुलरादयालसिंह, (दुलहा/नटुआ/गरबीदयालसिंह), 29. धनपाल, 30. नूनाचार, 31. नैकाबनिजारा, 32. फेकूराम, 33. ब्रजभान-सुठ्ठीकुम्मरि (कुमर बिर्जभान-सोंठी कुमरि), 34. बंसीधरबाभन - श्यामसिंह, 35. बखतरसिंह (बखतौर), 36. बसाओनभुँइयाँ, 37. बिच्छु, 38. बिजयमल, 39. बिहुला, 40. बेनीरामू, 41. बुलाकीगोप, 42. भरथरी, 43. भाजा, 44. भैरवधामि, 45. मनसागोप, 46. मरछुआ, 47. महलीसुल्तान, 48. माधोसिंह (माधोलाल), 49. मीराबालापीर (मीरा/मीरायण/नूजागाढ़/सतीमाँजरि), 50. मोतीदाइ, 51. रइया-रनपाल (घुघली घटमा/गुगुलिया), 52. रघुनाथसिंह (राघोनाथ), 53. रानीढोरुअनि, 54. रानीसुरुंगा, 55. लक्ष्मी सम्मर, 56. लवहरि-कुशहरि, 57. लालबनबाबा (लालाजी/लालामहराज),

58. लोरिकमनियार, 59. सम्भूबनिजार (सोभाबनिजार/गीत नेबारक), 60. सरबनपूत, 61. सरबनियाँगोआर, 62. सरियो, 63. सलहेस, 64. सीत-बसन्त, 65. सीता बनसार (सीता बनवास ?), 66. सीता हरण, 67. सुदामा सम्मर, 68. हंसराज-बछराज (बंसराज), 69. हरसोँ कथा, 70. हरिचन्दरदानी (राजाहरिचन), 71. हिरनी-बिरनी नटिनियाँ, 72. हसल-हुसैल

एहि सब गाथामे लगभग चालिस-पैंतालिस गोट गाथाक मूलपाठ देखबाक, सुनबाक अथवा कथावस्तुसँ परिचित होयबाक अवसर भेटि सकल अछि। शेषक सम्बन्धमे अनकहि सूचनाकेँ प्रमाण मानि लेल गेल अछि। अत: मैथिली लोकगाथा सम्बन्धी निष्कर्ष-निष्पत्ति कतोक अव्याप्ति-अतिव्याप्ति दोषसँ ग्रस्त भऽ जा सकैछ।

मैथिली लोकगाथाक वर्गीकरण

मैथिली लोकगाथामे आकार, वर्ण्यवस्तु, नायक-नायिका, उपयोग इत्यादिक दृष्टिएँ बहुविधता अछि। तेँ कोनो एक आधार पर वर्गीकरण सम्भव नहि अछि। विभिन्न दृष्टिकोणसँ विभिन्न प्रकारक वर्गीकरण भऽ सकैत अछि।

एहि लोकगाथा सभक वर्गीकरणक सम्बन्धमे डा०जयकान्तमिश्र अत्यन्त सामान्य रूपसँ विचार कयने छथि। ओ मैथिली लोकगाथाकेँ दुइ वर्गमे रखलनि अछि। एक वर्गमे ओहन गाथाकेँ रखलनि अछि जे छन्दोबद्ध नहि अछि। गद्यात्मक रहितो गद्य नहि थिक, कारण एकरा लयपूर्वक गाओल जाइत अछि। दोसर वर्गमे रखलनि अछि ओहि कोटिक कथात्मक गीत जे पद्यात्मक अछि तथा भास सहित गाओल जाइत अछि (Ballads or Gita-Kathas are of two kinds. Some like Salahesa and Dina-Bhadri Gitas, are not in rhymed or even versified language, though they are not in prose; They are chanted or sung rather than recited. Others like Jalecha and Rani Dhonruani Gitas are in melodious verse. The folk Literature of Mithila, part - I, P. 21) पहिल कोटिक लोकगाथाकेँ **बैलेड सौंग्स** कहैत छथि आ एहिमे सलहेस, दीना-भद्री, लोरिक, कमला मैयाक गीतकेँ रखैत छथि। दोसर कोटिक कथात्मक गीतक बंगला गीत-कथाक संग साम्य देखबैत एकरा **टेल्स-इन-वर्स**, कहैत छथि। एहि कोटिमे जलेछ, रानीढोँरुअनि, बिहुला, कुमरब्रजभान, सुठ्ठीकुम्मरि, गोपीचन्द-मयनावती, आजुरक कथा, नेबारक गीत इत्यादिकेँ रखैत एकरा सबकेँ **गीतकथा** कहब उपयुक्त मानैत छथि।

डा०मिश्रक अनुसार प्रथम कोटिक गाथामे अर्द्ध-धार्मिक लोकनायक लोकनिक कीर्त्तिकथा वर्णित रहैत अछि जकर गानमे धार्मिकता ओ पवित्रताक भाव सम्बद्ध रहैछ।[7] दोसर कोटिक गीतमे श्रोतालोकनिक मनोरंजनक उद्देश्य प्रधान रहैत अछि एवं लयपूर्ण गीत-कथाक माध्यमसँ श्रोताक हृदय ओ मस्तिष्कमे त्याग, औदात्त्य,कोमलता ओ नारीक, मायक वा बहिनिक स्नेहकेँ उद्‌बुद्ध कयल जाइत अछि।[8]

डा०पूर्णानन्ददास एहि वर्गीकरणकेँ गाथाक बाह्य रूपक आधार पर कयल गेलाक कारणे अमान्य करैत छथि। ओ उपयोगिताक आधार पर मैथिली लोकगाथाकेँ दुइ वर्गमे रखैत छथि- 1. धार्मिक उपयोगिताक लोकगाथा 2. मनोरंजन उपयोगिताक लोकगाथा।

पहिल वर्गमे ओ गाथा सब अबैत अछि जकर धार्मिक उपयोग होइत अछि । खास देवी-देवताक **भाओ**क समय ओकर गान होइत अछि— सलहेस, दीना-भद्री, दयालसिंह, जैसिंह ओ अमरसिंहक गाथा एहन कोटिमे अबैत अछि । दोसर वर्गमे ओ गाथा सब अबैत अछि जकर उपयोग विशेषतः मनोरंजनक लेल होइत अछि । अन्य सब गाथा एहि कोटिमे अबैत अछि । हुनका मतेँ मनोरंजक गाथामे सेहो किछु एहन अछि जकर कतहु-कतहु धार्मिक उपयोग होइछ, जेना-बिहुला, बखतौरसिंह इत्यादि । एहि वर्गीकरणमे डा जयकान्तमिश्रक वर्गीकरणक छाया देखि पड़ैत अछि । कारण डा०मिश्रो अपन पहिल वर्गमे धार्मिकता ओ दोसर वर्गमे मनोरंजनकता होयबाक संकेत देने छथि ।

डा०पूर्णानन्ददास नायक अथवा नायिकाक विशेषताक आधार पर सेहो मैथिली लोकगाथाक वर्गीकरण संभव मानैत छथि । एहि आधार पर मैथिली लोकगाथाक छओ गोट वर्ग भऽ सकैत अछि— 1. पौराणिक अथवा अर्द्धपौराणिक 2. जातीय नायक 3. वीर नायक 4. प्रेमी नायक 5. भक्त नायक 6. जादूगर नायक । किन्तु एहि प्रकारक वर्गीकरणमे अनेक अन्तर्विरोध भऽ सकैछ । प्रायः यैह सोचि ई अवधारणा पल्लवित नहि भेल अछि ।

डा०दास सर्वाधिक बल देलनि अछि वर्ण्यवस्तुक आधार पर वर्गीकरण करबा पर । हुनका विचारेँ एहि आधार पर मैथिली लोकगाथा चारि भागमे बाँटल जा सकैछ— 1. पौराणिक वा अर्द्धपौराणिक गाथा, 2. वीरकथात्मक गाथा, 3. प्रेमकथात्मक गाथा, 4. विविध गाथा (भक्ति, जादू-टोना आदि) ।

पौराणिक वा अर्द्धपौराणिक गाथामे लवहरि-कुसहरि ओ बिहुला गाथाकेँ राखल गेल अछि । बिहुलाक कथानक पूर्णतः लौकिक होइतो नागपूजासँ सम्बद्ध रहने ओ शिव-पार्वतीक सम्बद्धता कारणे अर्द्धपौराणिक मानि लेल गेल अछि । वीरकथात्मक गाथामे बिजयमल, लोरिक, बखतौर, गुगुलिया ओ बंसीधरबाभनक गाथा राखल गेल अछि । प्रेमकथात्मक गाथामे सलहेस, कुमरवृजभान, नाकाबनिजारा तथा गांगोकेँ परिगणित कयल गेल अछि । विविध गाथाक अन्तर्गत एहन गाथा सबकेँ राखल गेल अछि जाहिमे जादू-टोना अथवा भक्ति-भावनाक कोनहु रूपमे समावेश भेल अछि । एहन लोकगाथा सबमे परिगणित अछि— दयालसिंह, अमरसिंह, जयसिंह, दीना-भद्री ओ कारिखपजियार ।

स्थूल रूपमे ई वर्गीकरण ठीक लागि सकैत अछि । परन्तु सतर्क दृष्टिसँ देखला पर एकरा निर्दोष कहब कठिन अछि । सबसँ पैघ बात ई अछि जे एहि वर्गीकरणक आधार-सामग्रीक परिधि बड़ संकुचित अछि । केवल सोलह गोट लोकगाथाक सीमामे ई वर्गीकरण भेल अछि। **मोतीदाइ** लोकगाथामे वात्सल्य भाव मात्र प्रधान अछि । **गोपीचन्द-मयनावती** ओ **भरथरी**मे वैराग्य अछि । एहन लोकगाथा सभकेँ कोन वर्गमे राखल जायत ! दोसर दिस उपर्युक्त वर्गीकरणक एक वर्गमे राखल गेल गाथा अन्यहु वर्गमे समाविष्ट भऽ सकैत अछि । **लोरिक** लोकगाथाकेँ वीरकथात्मक वर्गमे स्थान देल गेल अछि । परन्तु एहि गाथाक समस्त कथानकक मूल कारण थिकैक लोरिक ओ चनैनक प्रेम । लोरिकक विवाह माँजरिक संग भेल छल ताहूमे मुख्य कारण छल परोक्ष रूपेँ माँजरि द्वारा लोरिकक वरण । तेँ ई

प्रेमकथात्मक गाथामे सेहो परिगणित भऽ सकैछ । प्रेमकथात्मक वर्गमे परिगणित **कुमरब्रजभानक** गाथामे नायकक दुस्साहसिक यात्रा सुठ्ठीकुम्मरिकेँ पयबाक लेल होइत अछि अवश्य किन्तु ओ प्रेमक कारणे नहि अपितु अपन निःसन्तान मामाक उपकारार्थ । अन्तमे गोरखनाथक सम्पर्कसँ वैरागी भेल ब्रजभान अपन माय ओ पत्नी लग भीखक हेतु अबैछ तँ अत्यन्त मार्मिक परिस्थिति उपस्थित भऽ जाइछ । एहि गाथाकेँ प्रेमकथात्मक वर्गमे राखब कहाँ धरि समीचीन भऽ सकैछ ? विविध गाथावर्गमे परिगणित **अमरसिंह, जयसिंह, दीना-भद्री** तँ युद्धमे वीरत्वे प्रदर्शन करैछ । युद्धमे की तँ विजयी होइछ वा निहत । एहि गाथा सबमे जादू-टोना आनुषंगिक रूपमे अबैछ । अतः एहन गाथाकेँ वीरकथात्मक वर्गमे सहज भावसँ राखल जा सकैछ ।

वास्तविकता ई अछि जे एहि गाथा सभक कोनो एक आधार पर वर्गीकरण सर्वथा निर्दुष्ट नहि भऽ सकैत अछि । प्रत्येक आधार पर कयल गेल वर्गीकरणमे अनेक अपवाद दृष्टिगोचर होयत । ओहि अपवादकेँ स्वीकार करब अनिवार्य विवशता अछि ।

मैथिली लोकगाथामे आयल पात्र, कथानक ओ घटनाक ऐतिहासिकता एवं गाथाक प्रचारक भौगोलिक विस्तार पर विचार करैत सेहो वर्गीकरण कयल जा सकैत अछि । मैथिली लोकगाथामे कतोक पात्र सब ओ विवृत कथानक पौराणिक वाङ्मय पर आधृत अछि । दोसर दिस, बहुतो एहन गाथा सब अछि जकर नायक वा अन्य पात्र सब पुराण वा इतिहास प्रसिद्ध नहि अछि । एकर कथानक लौकिक अछि । किछु ऐतिहासिक पात्र अछियो तँ ओकर ऐतिहासिकता सर्वथा अस्पष्ट अछि । ओकर लौकिके स्वरूप अधिक मुखर तेँ मैथिली लोकगाथाक प्रथमतः दुइ वर्ग भऽ सकैछ– 1. **पौराणिकी लोकगाथा** 2. **लौकिकी लोकगाथा**

पौराणिकी लोकगाथाक अन्तर्गत लवहरि-कुसहरि, सीता-हरण, अर्जुन सम्मर, जग्रनाथक सम्मर, सरबनपूत, हरिचन्दरदानी इत्यादि लोकगाथा आबि जायत । लौकिकी लोकगाथामे पौराणिकी लोकगाथासँ भिन्न समस्त लोकगाथा परिगणित होयत ।

मैथिली लोकगाथाक कथानकक समता रखैत लोकगाथाक प्रचारक भौगोलिक विस्तारक आधार पर दुइ वर्ग कयल जा सकैत अछि–

1. **बहुजनपदीय मैथिली लोकगाथा** 2. **मिथिला-जनपदीय मैथिली लोकगाथा**

पौराणिकी मैथिली लोकगाथाक आधार थिक पौराणिक वाङ्मय । अतः पौराणिक कथानक वा पौराणिक पात्र पर आधृत लोकगाथा भारतक अन्यहु जनपदमे होयब सर्वथा सम्भव अछि । सामान्यतः एकरा सबकेँ बहुजनपदीय गाथाक कोटिमे राखल जा सकैत अछि । एहनो संभव अछि जे किछु पौराणिकी लोकगाथा केवल मिथिलहिमे प्रचलित हो ।

लौकिकी लोकगाथामे स्पष्टतः दुइ वर्गक लोकगाथा देखल जाइत अछि । मैथिलीमे कतोक लोकगाथा एहनो अछि जकर कथानक पर आधृत लोकगाथा भारतक अन्यान्य जनपदक लोकभाषामे सेहो प्रचलित अछि । लोरिक, बिहुला, बिजयमल, गोपीचन्द, भरथरी, ढोला-कुमर-मरुअनि, ब्रजभान-सुठ्ठीकुम्मरि, नैकाबनिजारा, रानीसुरुंगाक गाथाक प्रचार आनहु प्रान्त ओ भाषामे देखल जाइत अछि । लोरिकक गाथा लोरिकायन, लोरक, लोरकी, लोर इत्यादि नामसँ भोजपुरी, मिर्जापुरी, छत्तिसगढ़ी इत्यादिमे तँ भेटितहि अछि, एकर विस्तार

पूर्वमे बंगाल ओ दक्षिणमे हैदराबाद धरि देखल जाइत अछि । गोपीचन्द एवं भरथरीक गाथा बंगालसँ लऽ कऽ गुजरात धरि विभिन्न रूपमे प्रचलित अछि । विहुलागाथा नागपूजासँ सम्बद्ध होयबाक कारणे बंगालमे लोकप्रिय अछिए, संगहि मिथिलासँ पश्चिमहुक प्रान्तमे ई एकटा लोकप्रिय गाथा मानल जाइत अछि । एहि गाथा सबमे स्थान भेदसँ घटना, घटनाक्रम, पात्रक नाम, स्थानक नाम, परिवेश इत्यादिमे अन्तर देखल जाइत अछि तथापि मूल कथासूत्रमे साम्य अछि । एहि प्रकारक गाथाकेँ बहुजनपदीय लोकगाथाक वर्गमे राखब समीचीन अछि।

पौराणिकी ओ बहुजनपदीय लोकगाथासँ इतर अवशिष्ट समग्र गाथा मिथिलाजनपदीय गाथा थिक । एहि गाथा सभक उद्भव, विकास ओ प्रचार मिथिलाक सीमान्तर्गत होइत, रहल अछि । ओहन गाथा सब अवश्ये मिथिलामूलक थिक जकर नायक वा अन्य पात्र सब मिथिलाक लोकदेवताक रूपमे प्रतिष्ठित अछि अथवा जाहि गाथामे मिथिलाक लोकपूजित देवता गहिल, कमला, लुकेसरी, बघेसरी, असावरी इत्यादिक प्रभाव गाथाक कथानकक वा नायकक जय-पराजयक नियामक अछि । एहि वर्गमे दीना-भद्री, दयालसिंह, बखतौर, गनिनाथ-गोबिन्द, बेनीराम, अमरसिंह, गांगो, मोतीदाइ, रैयारनपाल इत्यादि अबैछ ।

गाथाक कथानकक सरलता-जटिलता, आकार ओ गान अवधिकेँ आधार बनाय मैथिली लोकगाथाक वर्गीकरण विशेष उपयुक्त होयत । एहि दृष्टिएँ मैथिली लोकगाथा तीन प्रकारक अछि— 1. **लघु लोकगाथा वा लोकगाथिका** अथवा **गीतात्मक कथा** 2. **मध्यम लोकगाथा**,3. **वृहत् लोकगाथा ('गाथा' ओ 'गाथिका' समानार्थक शब्द अछि । किंचित अर्थ संकोच कऽ 'लघुलोकगाथा' वा 'गीतात्मक कथा'क हेतु 'लोकगाथिका' पदक प्रयोग कयल जा सकैछ ।)**

लघु लोकगाथा वर्गमे लघु आख्यानमूलक गीत ओ पद्य सब अबैत अछि । एहने गाथाकेँ डा० जयकान्तमिश्र गीतिकथा कहने छथि । एहिमे सरल कथानक ओ कोनो एकमात्र घटनाक वर्णन रहैत अछि । अन्य घटना यदि वर्णितो होइछ तँ ओ गौण मुदा मुख्य घटनाक सम्पोषक रूपमे रहैत अछि । एकर गान बड़ अल्पसमयमे सम्पन्न भऽ जाइछ । एक बैसकमे अनेक गाथाक गान सम्भव होइत अछि । एहि रूपक गाथामे छन्द-योजना, अन्त्यानुप्रासक निर्वाह अधिक ठाम देखल जाइछ । एकरा सभमेसँ अधिकांशक सुनिश्चित भास ओ लय होइत छैक । विभिन्न सम्मर ओ कथानकगर्भित लगनी सब एही कोटिमे अबैत अछि । किछु गाथामे छन्दक अभाव रहैत अछि आ ओकरा लहरक जकाँ गाओल जाइछ, जेना 'हरसोँ कथा' । परन्तु 'मोतीदाइ' 'गांगो' सन गाथा सस्वर गाओल जाइत अछि । लोक गाथिकाकेँ सामान्यतः महिला लोकनि एकसरि वा सामूहिक रूपसँ गान करैत छथि । महिला लोकनि कोनो वाद्यक प्रयोग नहि करैत छथि । गानक अवसर जन्मोत्सव, मूड़न, उपनयन, विवाह, द्विरागमन, पाबनि-तिहार, पूजादि अनुष्ठान होइत अछि । मनोरंजनार्थ ओ स्वान्तः सुखाय सेहो एकर सभक गान होइत अछि । धार्मिक अवसर पर धार्मिक ओ भक्तिभाव विषयक लोकगाथिका गाओल जाइत अछि । धार्मिक ओ भक्ति भाव युक्त लोकगाथिकाक गाान भिक्षुक-संन्यासी सेहो भिक्षाटनक क्रममे करैत अछि । सरबनपूत, सीताहरण, हरिचन्दरदानी, देवादिविषयक सम्मर सन पौराणिकी लोकगाथिका गबैत भिक्षुककेँ एखनो गामघरमे देखल जा सकैत अछि।

मध्यम लोकगाथाक कथानक लोकगाथिकाक अपेक्षा जटिलतर होइत अछि । अनेक

घटनाक शृंखला बनल रहैत अछि जे क्रमिक रूपमे सम्बद्ध रहैत अछि अथवा नायकक क्रिया-कलापसँ सम्बद्ध रहैत अछि । कोनो-कोनो गाथामे एकहि उद्देश्यक पूर्त्यर्थ दुइ पीढ़ीक क्रिया-कलापक सेहो वर्णन रहैत अछि, तथापि कथानक-विस्तार अधिक नहि भऽ पबैत अछि । मध्यम लोकगाथाक गान एक पहरसँ चारि पहर धरिमे सामान्यतः सम्पन्न भऽ जाइत अछि । एहि वर्गक अधिकांश गाथाक उपयोग लोकदेवताक अनुष्ठान, भाओ इत्यादिक कालमे होइत अछि । एहि गाथा सभक मनोरंजनार्थ गायनमे कोनो बाधकता नहि अछि । किन्तु एहि वर्गक कतिपय गाथाक गान केवल मनोरंजनेक हेतु होइत अछि । एहि वर्गक गाथाक गान पुरुषे द्वारा होइछ । एकल गान ओ सामूहिक गान-उभयरूपमे कयल जाइछ । सामूहिक गानमे अवश्ये, किन्तु एकलहु गानमे क्वचित् मृदंग, झालि, करताल इत्यादि वाद्ययन्त्रक प्रयोग होइछ।

मध्यम लोकगाथा वर्गमे मनोरंजनोपयोगी गाथा जयलच्छी, मीराबालापीर, रानीसुरुंगा, शम्भूबनिजार इत्यादिकेँ राखल जा सकैत अछि । अनुष्ठानोपयोगी गाथामे अबैत अछि- अमरसिंह, कारूभुँइयाँ, गरीबनभुँइयाँ, जयसिंह, बंसीधरबाभन-श्यामसिंह, केबलमहराज, लालबनबाबा इत्यादि ।

वृहत् लोकगाथा वर्गमे ओहन गाथा सब अबैत अछि जकर आकार अत्यन्त दीर्घ अछि। एहिमे एकटा प्रधान नायक रहैत अछि आ ओकरा संग कतोक उपनायक, प्रतिनायक ओ खलनायक होइत अछि । कोनो-कोनो गाथामे पूर्वापर दुइ गोट नायक होइत अछि । एकटाक गतिविधि सम्पन्न भेलाक पश्चात् दोसर नायकक गतिविधिक वर्णन होमऽ लगैत अछि । रइया रनपालमे पहिने रनपाल नायक रहैत अछि । ओकर बधक पश्चात् रनपालक बेटा घुघुलिया नायक बनि जाइछ । गनिनाथ-गोविन्दमे सेहो यैह बात देखल जाइछ । कारिख पजियारक पूर्वखण्डमे जोतिख नायक रहैछ आ उत्तर खण्डमे कारिख । वास्तवमे अधिकांश वृहत् गाथामे दुइ अथवा तीन पीढ़ीक चरितक वर्णन रहैत अछि । कतोक गाथामे नायकक पूर्वजन्म ओ वर्त्तमान जीवनक वर्णन रहैछ अथवा वर्त्तमान जीवन तथा मृत्यूपरान्त प्रेत योनिक घटनाक वर्णन रहैत अछि । कथानकक अनेक खण्ड रहैत अछि जे एक दोसरासँ सम्बद्ध रहैत अछि । कथानकक विस्तृत फलक रहबाक कारणे विविध रसक अभिव्यंजना ओ वर्णन-विस्तारक पूर्ण अवसर रहैत अछि ।

एहि कोटिक गाथा सभक गान कतेको बैसकमे सम्पन्न होइत अछि । अतः एकर गान खण्डशः होइत अछि । गान होइत अछि पुरुषवर्ग द्वारा, एकसर अथवा सामूहिक रूपमे। गाथा-गान सवाद्य ओ निर्वाद्य दुहू होइत अछि । वृहत् लोकगाथामे किछु केर प्रयोग भाओ इत्यादि अनुष्ठानमे होइत अछि । किछु गाथा-गान लोक रंजनार्थ मात्र होइछ ।

डा०ब्रजकिशोरवर्मा मणिपद्म वृहत् लोकगाथा वर्गमे केवल पाँच गोट गाथाक गणना करैत छथि- लोरिक, सलहेस, नैकाबनिजारा, दयालसिंह ओ रायरनपाल । ओ एकरा सबकेँ गाथारत्न अथवा महागाथा कहब पसिन्न करैत छथि । किन्तु वृहत् लोकगाथा वर्गकेँ एतबहि धरि सीमित राखब समीचीन नहि अछि । एहि वर्गमे अन्य-कारिखपजियार, गनिनाथ-गोविन्द, गोपीचन्द-मयनावती, ढोलाकुमर-मरुअनि, दीना-भद्री, ब्रजभान-सुठ्ठीकुम्मरि, बिहुला, भरथरी, लवहरि-कुसहरि तथा हंसराज-बंसराज इत्यादि सन गाथा सभ सेहो वृहत् लोकगाथा वर्गमे

परिगणनीय अछि । एहि वर्गमे किछु एहनो गाथा सब आबि सकैत अछि जकर समग्र रूप एखन धरि लिपिबद्ध नहि भऽ सकल अछि । परन्तु उपर्युक्त उल्लिखित पन्द्रहो गोट वृहत् लोकगाथा प्रसिद्धि, प्रचार, लोकप्रियता ओ आकारक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि ताहिमे सन्देह नहि ।

मैथिली लोकगाथाक विशेषता

लोकसाहित्यक महत्त्वपूर्ण विधा थिक लोकगाथा । हमरा विचारेँ शिष्ट साहित्यमे जे स्थान महाकाव्यक छैक सैह महत्त्व ओ स्थान लोक साहित्यमे लोकगाथाकेँ छैक । वास्तवमे-लोकगाथाकेँ लोकसाहित्यक महाकाव्य कहल जा सकैत अछि । महाकाव्यक नायक इतिहास प्रसिद्ध होइत छथि आ लोकगाथाक नायक लोकप्रसिद्ध । महाकाव्यक नायक उच्चकुल सम्भूत होइत छथि । लोकगाथाक नायक सामान्य जनसमुदायमे उत्पन्न भेल रहैत अछि । मिथिलामे जतेक जाति अछि, सबमे कोनो ने कोनो एहन नायकक गाथा प्रचलित अछि । ई गाथा-सब श्रुतिपरम्परासँ पुस्ति-पुस्तैनी चल आबि रहल अछि । गेयधर्मिता ओ कथातत्त्व रहितो ई लोकमहाकाव्य शास्त्रीयताक आडम्बर, नियम-परिनियम, व्याकरण ओ छन्द-बन्धसँ मुक्त अछि । तेँ एकर कोनो सुस्थिर स्वरूप नहि प्राप्त होइछ । गायकक प्रभावसँ ई परिवर्त्तित, परिवर्द्धित-संबर्द्धित होइत रहैछ । तेँ एकरा व्यक्ति विशेषक साहित्य नहि कहल जा सकैछ, अपितु ई सम्पूर्ण समाजक धरोहर होइछ । क्षेत्र विशेषक प्रथा, परम्परा ओ व्यवहार आदिक प्रभावान्वितिक कारणेँ एकटा लोकगाथा विभिन्न क्षेत्रमे विभिन्न स्वरूपमे भेटि सकैछ, मुदा ओहिमे मौलिक एकता बुझना जाइछ । एतावता सूत्र रूपमे मैथिली लोकगाथाक किछु प्रमुख विशेषताकेँ देखल जा सकैछ-

1. लोकगाथाक रचयिता ओ रचनाकाल दुहू अज्ञात रहैछ । श्रुति परम्परामे एक कंठसँ दोसर कंठमे पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होइछ । अतएव ई कोनो व्यक्ति विशेषक सम्पत्ति नहि अपितु सामूहिक सम्पत्ति थिक ।
2. लोकगाथाक कोनो सुस्थिर प्रमाणिक पाठ नहि होइछ । जाति, स्थान ओ कंठ-भेदसँ प्रभावित गाथाक अनेकशः पाठ पाओल जाइछ । प्रत्येक पाठक शब्द-योजना, कथा-क्रम ओ पात्र आदिमे आधारभूत अन्तर देखबामे अबैछ ।
3. लोकगाथाक कथानक अत्यन्त लघु, लघु ओ दीर्घ होइत अछि ।
4. लोकगाथाक नायक कोनो जातीय प्रतापी पुरुष रहैछ जकरा देवत्व प्राप्त रहैत छैक, ओकरे शौर्य-पराक्रम ओ अद्‌भुत क्रियाकलापक तानी-भरनीसँ लोकगाथाक संरचना भेल रहैत छैक, तथापि नायकसँ इतर अन्य पात्र-पात्रीक अतिरिक्त अधिकांश लोकगाथामे देवता ओ पशुपक्षी पात्र रूपमे रहितहिँ अछि ।
5. लोकगाथामे सर्वत्र अतिरंजना ओ अतिशयोक्तिक निदर्शन रहैछ । यैह अतिरंजना लोकगाथा-नायककेँ सामान्य जनसँ फराक कऽ कऽ ओकरा अलौकिक शक्तिसम्पन्न देवताक रूपमे प्रतिष्ठापित करैछ ।
6. लोकगाथाक ऐतिहासिकता ओ घटना-काल सर्वथा सन्दिग्ध रहैछ । ओकर नायक वास्तविक अछि वा काल्पनिक, से कहब कठिन । मुदा गाथाक परिवेश, स्थान, नाम

ओ घटनास्थल बहुशः प्रामाणिक भेटैछ । यथा सल्हेस, लोरिक, दीनाभद्री आदि कतोक गाथामे आयल स्थान-नाम सब ओही रूपमे एखनो चीन्हल-जानल जाइछ ।

7. लोकगाथाक भाषा पाण्डित्यसँ रहित सर्वथा सरल ओ लौकिक होइछ । गाथामे काव्यशास्त्रीय कलात्मकताक अभाव, छन्द ओ अन्त्यानुप्रासक प्रति अनाग्रह रहैछ । शब्द, पद, वाक्य ओ सन्दर्भक आवृत्ति एकर प्रमुख वैशिष्ट्य अछि ।

8. लोकगाथामे गेयधर्मिता तँ रहैछ, मुदा एहिमे संगीतक शास्त्रीयताक सर्वथा अभाव रहैछ। सामान्य रूपमे गायनक चलन गद्यहिक अनुरूप रहैछ, मुदा गायक अपन विशिष्ट पारम्परिक गायन ओ भास पद्धतिक अनुरूप एकरा गाबि लैत अछि ।

9. लोकगाथामे प्रायः समस्त **रस** ओ **भाव**क परिपाक रहैत अछि तथापि वीर, शृंगार, करुण, शान्त ओ अद्भुत रसक प्रमुखता रहैत अछि ।

मैथिली लोकगाथाक किछु विशेष शब्दावली

मैथिली लोकगाथा-गानक सन्दर्भमे गाथाक प्रकृति ओ गाथाक खण्ड विशेषक प्रकृति ओ वर्ण्य विषयक अवधारणाक हेतु किछु अपन शब्दावली छैक । ओकर सभक चर्चा करब एहि ठाम प्रसंग संगत होयत । कोनो लोकगाथामे कथानकक पाँच गोट प्रकृति लोकगायकक दृष्टिमे होइत अछि– **सपनौती, जनमौटी, बिअहुती, गओनौती** तथा **मरौटी** । स्वप्न वृत्तान्तवला प्रसंग **सपनौती** कहल जाइछ । नायक वा नायिकाक जन्मक वृत्तान्त **जनमौटी** कहल जाइछ। जाहि ठाम विवाहक प्रसंग अबैत अछि तँ ओहिसँ सम्बद्ध सकल वृत्तान्तकेँ **बिअहुती** कहल जाइछ । **गओनाक** प्रसंगकेँ गओनौती कहल जाइछ । नायक, उपनायक, प्रतिनायकक मृत्युक वृत्तान्तकेँ **मरौटी** कहल जाइछ ।

मरौटीक एक गोट और तात्पर्य होइछ । जाहि लोकगाथामे अन्ततः नायकक मृत्यु भऽ जाइत छैक, ओहि समग्र गाथाकेँ सेहो **मरौटी** कहल जाइछ । एहि दृष्टिएँ दीना-भद्री, दुलरादयाल, बंसीधरबाभन-श्यामसिंह, लालबनबाबा, गरीबनभुइयाँ, फेकूराम, केबलमहराजक गाथा **मरौटी** गाथा थिक । **मरौटी** गाथाक विशेषता ई अछि जे एकर नायक सभ ओ नायकक संग निहत ओकर मित्र सब मनुसदेवाक रूपमे जातीय देवता बनि गेल अछि।

एहि लोकगाथा सभक कथारूप सेहो प्रचलित अछि जकर ज्ञाता **कथक्कर** कहल जाइछ । एकर वाचन मनोरंजने लेल हो, तेँ कथक्कर अपन भाषामे कथाक सारांश रूप कहैत अछि । किन्तु विशेष प्रशस्त अछि एकर गान । एकर गान मनोरंजन लेल सेहो होइछ ओ जातीय देवताक वृत्तान्तवला गाथाक तत्तत् देवताक पूजा-भाओक अवसर पर सेहो होइत अछि । ई अवश्य जे जातीय देवताक वृत्तान्तवला गाथा-श्रवणमे श्रोतामे श्रद्धा-भक्तिक भाव रहैत छैक । शेष गाथामे मनोरंजने प्रधान रहैत छैक ।

मिथिलाक सकल समाजमे अपन-अपन कुलदेवता होइछ, ग्रामदेवता होइछ । परन्तु सवर्णेतर समाजमे प्रत्येक जातिक अपन-अपन जातीय देवता होइछ । लोकजीवनमे पूजित देवी-देवता सब अछि– अन्हेरबाँट, अमरसिंह, अलखिया, कमलाक्षत्री, कलाली, काली, कालीदास, कारिख, किरंची, कुमर-विनोदी, कुसियारमल, केबलमहराज, कोइला, कोरल, गणिनाथ, गरीबनभुइयाँ, गोबिन्द, गहिल, गांगो, गौरबाबा, गौरैया, जलपा, जयसिंह, झम्मन

मरड़, झालाराम, ठीठामल, डीहबाबा, दयाराम, दीना-भद्री, दुलरादयाल, धर्मराज, नरसिंह, नाग, पचपिढ़िया, पीरबाबा, फेकूराम, बहरियाबाबा, बहिरूतीयर, बरहम, बन्दीबालापीर, बौधूराम, भगवत्ती, भैरव, मनसाराम, मनुसदेवा, महमाया, महिषासुर, मातर, मीरसैयद, मीरा, मोतीदाइ, रइयारनपाल, रकतमाला, रामठाकुर, राहु, लालबन, लुकेसरि, बिहुला-विसहरि, बेनीराम, श्यामसिंह, सलहेस, ससिया, सहोदरा, सुल्तानखाँओ, सुठ्ठीकुम्मरि, सुरजाउ, सोखा, हुलहुली इत्यादि । एहिमे अनेक देवी-देवताक गाथा प्रचलित अछि । लोकगाथाक नायक गणमे के कोन जतिक देवता अछि से सूचीसँ स्पष्ट होइछ- अमरसिंह-मलाह / कारिखपजियार-हलुआइ, धोबि / केबलमहराज-मलाह / गणिनाथ गोबिन्द-हलुआइ / गरीबनभुइयाँ-धोबि / गाङो-मलाह / जयसिंह-मलाह / दीना-भद्री-मुसहर / दुलरादयालसिंह-मलाह / फेकूराम-हलुआइ / बिहुला-तेली (क्वचित् अन्यो) / बेनीराम-नौआ, कुरेड़ी / मोतीदाइ-धोबि / रइयारनपाल-मलाह / लालबनबाबा-चमार / श्यामसिंह-डोम / सलहेस-दुसाध ।

एहि गाथा सबमे धार्मिकताक भाव रहैत अछि । एहि देवताक पूजा-भाओक समयमे समग्र गाथा वा अंश विशेषक गान अवश्य होइत अछि ।

मैथिली लोकगाथा गौनिहारकेँ **महरैया/गितहर/भगत** कहल जाइत अछि । एहि गाथा गौनिहारकेँ गाथा-गानक योग्यता-प्राप्ति होइत छैक दुइ तरहेँ । किछु गोटेकेँ कोनो लोकगाथा अनासुरती स्मृतिमे आबि जाइछ । एहन विश्वास कयल जाइछ जे लोकदेवता अपन गाथा व्यक्ति विशेषकेँ स्वप्नमे अनायास प्रदान कऽ दैत छथिन । अन्यो गाथा एहि रूपमे प्राप्त भऽ सकैत छैक । डा०पूर्णानन्ददासकेँ बिहुला गाथाक जे पाठ भेटल छलनि तकरा अन्तमे गायकक आत्मोक्ति कहल गेल अछि- **सोमन मुखिया लगमा गाँके ई कविता ओएह बनौलैन्ह विषहरि विसकरमा देने छल ई सम्पत्ति सपनमे** । एकरा सपनौती कहल जाइछ ।

सपनौती गाथाक अवधारणा कतेक दूर धरि सत्य भऽ सकैछ से कहब कठिन । परन्तु दोसर कोटिक गाथा-गान-क्षमता ओ थिक जे ककरोसँ सूनि कऽ प्रयत्नपूर्वक सीखल जाइछ। एहन गान-क्षमताकेँ **सीख** / **सिखौती** / **सिखनौती** कहल जाइछ ।

गाथा-गान वैयक्तिक ओ सामूहिक दुनू रीतिएँ होइछ । जे सवाद्य ओ निर्वाद्य दुनू होइछ । पारम्परिक वाद्ययन्त्रमे मृदंग, मानरि, पखाउज, झालि, मजीरा इत्यादिक प्रयोग होइछ । मृदंग बजौनिहार **मिरदङिया**, मानरि बजौनिहार **मनरिया**, पखाउज बजौनिहार **पखउजिया** तथा झालि बजौनिहार **झलैता** कहल जाइत अछि। आधुनिक कालमे अभिनवो वाद्ययन्त्रक प्रयोग कयल जाइत अछि । सामूहिक गान बैसि कऽ एवं ठाढ़ भऽ कऽ- दूनू प्रकारेँ होइछ । ठाढ़ भऽ कऽ गान करबाक क्रममे गायक-वादक नृत्यक मुद्रामे तालपर पदसंचालन सेहो करैत रहैत अछि । भाओमे मुख्य पुजारी **भगत** कहल जाइत अछि । भगत पूजा कालमे पूजास्थलक चतुर्दिक नृत्यमृद्रामे पद-संचालन करैत भ्रमण करैत अछि आ गितहर एवं वादक सभ गाथा-गान करैत ताल पर पद-संचालन करैत अनुसरण करैछ ।

एकल गानमे वाद्य यन्त्रक सहयोग लेल जाइत अछि । गुदरिया बाबाजी सब गोपीचन्द, भरथरी, ब्रजभान-सुठ्ठीकुमरि गीतक गानमे **घूना/सारंगीक** प्रयोग करैत अछि ।

बंसीधरबाभन-श्यामसिंहक गाथाक गानमे **ओरिनी** नामक वाद्य यन्त्रक प्रयोग कयल जाइछ। **ओरिनी** एकतारा कोटिक वाद्ययन्त्र थीक । किन्तु आब ई बाजा विरल देखल जाइछ ।

सुमिरन ओ बन्हनी

गाथा सभक आरम्भमे विघ्नशमन हेतु विभिन्न देवताक स्तुति कयल जाइछ । एहिमे देवी-देवतासँ **चौखड़ि/आखड़ि** स्मरण दिऐबाक वा ओकरा जोड़ि देबाक प्रार्थना रहैछ । चौखड़ि वा आखड़ि (आखर) थिक गाथाक पद । एहि प्रकारक आरंम्भिक स्तुति अंशकेँ **सुमिरन** कहल जाइछ । निम्न उद्धरणमे ई सुमिरन द्रष्टव्य अछि–

इनती करै छी दुर्गा मिनती तोहार, छूटल चौखड़ि दिहऽ मन पाड़ि
जहिना मालिन गाँथै फूलक हार तहिना चौखड़ि दिहऽ निरमाय

(लोरिकमनियार, विवाह)

राम हे रामे बोलियौ सिरी भगवाने बोलियौ ना

(नाकाबनिजारा, निजी संकलनसँ)

राम केर नाम लइ छी, राम केर नाम भल हौ
राम केर नाम जपै छी पंचन, सभुआ बीँच माझ हौ
साकुल हो गौ दुर्गा मैया, करियौ रच्छपाले,
सत्त सुमरि के जपिऐ गौ, गुँगलाके लइ छी नामे
कंठ नहि कोकिल गौ मैया, मधुर नहि जा भावे
कोना के जापब गौ मैया, गुगलाक लेबै नामे
गावलो गीत हम भुललहुँ गौ मैया, सकल सभामे आवे
जाग-जाग गौ दुर्गा मैया, करियौ रच्छपाले

(गुगुलिया, पूर्णानन्ददास)

मुस्लिम पृष्ठभूमि वला लोकगाथा मीरबालापीरमे अल्ला मिञाँक सुमिरन अछि–

सुमिरन दिन हम नामे गे, सुमरोँ अल्ला मिञाँ केर नाम
सुमिरन दिन हम नामे गे, सुमरोँ अल्ला मिञाँ केर नाम
हकन कनैये हो अल्ला अस्टम बीबी हो नारि
चौकठि धेने कानैये हो अल्ला, दिल्ली सुन हो राजा

(निजी संकलनसँ)

गायन-स्थान ओ ओकर चारू दिशाकेँ विघ्नसँ रक्षित करबाक हेतु गाथा-गानक आरम्भमे जे गान कयल जाइछ, तकरा **बन्हनी** कहल जाइछ । बन्हनीक रूप द्रष्टव्य थिक–

अइ पुरुब बैसि के बान्हइ छी गे मैया उगला, उगला गै सुरुज ।
अइ पच्छिम बैसि के बान्हइ छी गे मैया मीर, मीर सुल गै तान ।
उत्तर पैसि के बान्हइ छी गै मैया धौलागिर, धौलागिर गै पहाड़ ।
दच्छिन पैसि के बान्हइ छी गै मैया गंगा, गंगाजी के गै धार ।
अइ डीह छड़ि के बान्हइ छी गै मैया डीह, डीह गै डिहवार।
गाम पइस के बान्हइ छी गै मैया तेलिया, तेलिया गै मशान ।
जिनकर तेल गै मैया, घर जरइया, जरइ छै गै चिराग ।
सवा हाथ धरती बान्हइ छी गै मैया मोफिल, मोहफिलमे गै आब ।

(लोरिक मनियार)

हे पुरुबे बन्धना करू हे उगला सुरूज
हुनी के चरण बान्धु हे सिरहु चढ़ाय
हे उतरे बन्धना करू हे, बड़ा भीमसेन
हे पछिमे बन्धना करू हे, पीर पाँचो भाइ
हे दछिने बन्धना करू हे, गंगा हलुमान
हे तब सुमिरो काली मइया, हे विपतिमे दिअ हे साथे
हे भूलल अखरिया सरोसती मइया, हे कंठा दिअ हे बासे (बिहुला)

पुरुबहि जब बान्है छी दुर्गा
पछिमो हे जब बान्हु गे दुर्गा मिरा सुलतान
उतरहु जे बान्हु दुर्गा राजा भीमसेन
दछिनहि जे बान्हु गे दुर्गा गंगा हलुमान
अकासहि जे बान्हु दुर्गा चारू कामिन
पातालहि जे बान्हु दुर्गा वासु छत्री नाग गे
अइनी गुन जब बान्हु दुर्गा, डैनी गुन आब गे
ओझा गुन जे बान्हु दुर्गा, सिरमाँ लगाय गे
डीह चढ़ि जे बान्हु दुर्गा, बाबा ने जे डिहवार गे
गाँव चढ़ि जे बान्हु दुर्गा, तेलिया मसान गे
भुललै जे चौखरिया दुर्गा, कन्ठा दियौ विलमाय गे
जहिना मालिन गुथै दुर्गा, फूल के हार गे
तहिना जे चौखरिया दुर्गा, कन्ठा दियौ विलमाय गे
(सोठीकुमरि, निजी संकलनसँ)

सुमिरन बन्हनीक स्थान लोकगाथाक गायनमे वैह मानल जाइछ जे स्थान महाकाव्यमे मंगलाचरण वा नाटकमे नान्दीक मानल जाइछ ।

लोकगाथाक नायक

लोकगाथाक किछु नायककेँ छोड़ि अधिकांश निम्नवर्गमे उत्पन्न भेल रहैछ । पौराणिक वा ऐतिहासिक दृष्टिएँ प्रख्यात व्यक्ति नहि रहैत अछि, तथापि लोकगाथाक कथा-सन्दर्भमे नायकोचित गुणसँ सम्पन्न रहैत अछि । तेँ ओकरा धीरोदात्त, धीरललित, धीरप्रशान्त वा धीरोद्धत कोटिक नायकमे परिगणित कयल जा सकैत अछि । जेना महाकाव्यक नायक इतिहास प्रसिद्ध रहैत अछि तहिना लोकगाथाक नायक लोकप्रसिद्ध । ओ सामान्य जन समुदायमे, सामन्य कुलमे उत्पन्न भऽ अपन शौर्य, पराक्रम, त्याग, बलिदान आ अन्य विशिष्ट कार्यक सम्पादनक कारणे गाथाक नायक बनि जाइछ । मिथिलामे जतेक जाति अछि, सबमे कोनो ने कोनो एहन नायकक गाथा प्रचलित अछि । एहन मान्यता अछि जे ई नायक सब दिव्य शक्ति-सम्पन्न छलाह । अपन जीवन कालमे अलौकिक कार्यक सम्पादन करबे कयलनि, अपार्थिवो रूपमे निरन्तर दुखियाक गोहारि करैत रहलाह आ औखन लोकविश्वासक अनुसार कऽ रहल छथि । सामान्य मनुष्यसँ **मनुसदेवा** आ मनुसदेवासँ अभ्युत्थित भऽ कऽ दिव्यकोटिमे स्थापित भऽ गेल छथि । तेँ अनेक गाथामे नायकक दिव्य अवतरणक वर्णन भेल अछि । इन्द्र, ब्रह्मा वा देवगण प्रयोजनवशात् विभिन्न नायकक सृष्टि कयल । मिथिलामे

प्रचलित विभिन्न लोकगाथाक नायकक जीवनमे तथ्यात्मक एकता देखल जाइछ । सभ गाथाक नायक अद्‌भुत पराक्रमशील होइछ । जनमिते मायसँ सबाल-जबाब करऽ लगैछ । नाड़ि-पुरैनि कटलो ने रहैत छैक, तखनेसँ सरोँ खेलयबाक योग्यतासँ सम्पन्न रहैछ । कतहु प्रस्थान काल मायसँ आशीष अवश्ये लैत अछि । आपत्ति अयबासँ पूर्व धरि सात निन्ने मुनहर घरमे सूतल रहैछ । गओनाक चारि दिनुक बादे अद्‌भुत ओ साहसिक कार्यक हेतु प्रस्थान करैत अछि । सब कोनो ने कोनो देवी-दुर्गा, असावरी, गहिल, कमला, बघेसरी इत्यादिक भक्त रहैत अछि । सबकेँ कोनो खास देवीक आशीष प्राप्त रहैछ । देवीक सहाय रहला पर विजय ओ विमुख रहला पर पराजय होइछ । कतोक नायक इन्द्रासन-कविलास जाय सत्त करैत अछि। मुइलाक बाद अपन संस्कार ओ श्राद्ध कर्मक व्यवस्था करैत अछि । अपन श्राद्धमे अपनहि पंचलोकनिक पात पर भात परसैत अछि । प्रेतरूपमे सेहो कतोक क्रिया-कलाप करैत अछि। कखनो प्रकट ओ कखनो अलोपित भऽ जाइछ । अलक्षिते रूपमे कतोक नायक अपन तिरियोसँ भेंट करैत अछि ।

मैथिली लोकगाथामे अन्यहु पात्रक संग एहन अद्‌भुत कथा-प्रसंगक एकटा पैघ शृंखला देखल जाइत अछि । एहि गाथा सबमे अतिरंजना ओ लोकरूढ़िक सन्निवेश व्यापक रूपमे भेटैत अछि । जे तर्क संगत ओ बुद्धिगम्य नहियो होइत, गाथाक धारक ओ श्रोता समाजकेँ अभिभूत कऽ दैत अछि ।

मैथिलीक गाथा सबमे नायक-नायिका वा कोनो आने पात्रक क्रिया-कलापक किछु निश्चित स्थान देखल जाइछ आ जकर उल्लेख विभिन्न गाथा सबमे होइछ, जेना- **उरसी डीह, उजेनीगाम, केदुलीवन, बोहा बथान, सिलहट अखाड़ा** इत्यादि । एहिना किछु विशिष्ट नामधारी जन्तु सब सेहो देखल जा सकैछ- जेना **कटरा घोड़ा, रहिमल बछेड़ा, तिलंगा बाछा, बाझिल कौआ, लुल्ही बघिनियाँ, फोटरा गीदर, फोटरी हरीन** इत्यादि । प्रत्येक गाथामे जादू-टोना, तन्त्र-मन्त्र ओ अलौकिक शक्तिक प्रदर्शन देखल जाइछ । नयना-मयना, हिरिया-जिरिया दुइ बहिन जोगिन वा जादूगरनी कतोक गाथामे देखल जाइत अछि ।

मैथिली लोकगाथाक अध्ययन-अनुशीलन : दशा-दिशा

मैथिली लोकगाथाक ज्ञात इतिहास अत्यन्त प्राचीन अछि । चौदहम शताब्दीक आदि भागमे मिथिलाक ग्राम-नगरमे गाओल जायवला लोकगानक विभिन्न प्रभेदकेँ कविशेखर ज्योतिरीश्वर नीक जकाँ लक्षित कयने छलाह जाहिमे **लोरिक नाचो** तथा **मएना बड़तीक** उल्लेख कयने छथि । एहिमे **लोरिक नाच** स्पष्टे लोरिक गाथा थिक जकर नाचक रूपमे प्रदर्शन तत्कालीन नगरमे होइत छलैक । **मएना बड़ती** सेहो कोनो लोकगाथाहिक दिस संकेत करैत अछि । मैथिली लोक गाथामे तीन गोट गाथामे **मएना** नामक नारी चरित देखल जाइछ। गोपीचन्द गाथामे गोपीचन्दक माय मयनावतीक महत्त्वपूर्ण भूमिका देखल जाइत अछि । कुमर ब्रजभान-सुठ्ठी कुम्मरिक गीतमे ब्रजभानक माय **मयना मन्त्री** सेहो तहिना महत्त्वपूर्ण अछि । लोरिक गाथामे लोरिकक छोट भाइ **साओर** अथवा **साबरक** पत्नी सती मयना नामसँ प्रख्यात अछि आ आगाँ लिखित साहित्यमे एकर विकसित कथा सेहो देखल जाइत अछि । अवश्ये एहि तीनूमेसँ कोनो एक गाथा दिस ज्योतिरीश्वरक संकेत छनि ।

लोरिक लोकगाथाक एकटा विशिष्ट काव्य-परम्परा लिखितो साहित्यमे भेटैत अछि। 1370-75इ.मे मुल्लादाउद नामक एक सूफी कवि लोरिक ओ चनैनक प्रेमकथाक आधार पर अवधीभाषामे **चन्दैनी** वा **चन्दायन** महाकाव्यक रचना कयने छलाह । साधन कविक **मैना-सत,** चतुर्भुजदासक **मधुमालती** लोरिकहिक गाथा पर आधृत काव्य थिक । हमीदी नामक सूफी कवि 1608 इ.मे साधन कृत **मैना-सत** केर आधार पर फारसीमे **अस्मतनामा** नामक काव्यक रचना कयने छलाह । दक्षिणभारतमे गोलकुण्डाक सुलतान (1626-72)क शासन कालमे राजकवि गवासी **मैना सतवन्ती** नामक काव्यक रचना कयने छलाह ।

बंगालमे लोरिक-चनैनक गाथाक साहित्यिक रूप देखबामे अबैत अछि । अराकान प्रदेशक राजा श्रीसुधर्म (1622-38 इ.)क राजकवि दौलतकाजी प्रधानमंत्री अशरफखाँक आदेशसँ बंगलाभाषा ओ पांचाली छन्दमे **मैना उ लोर चंद्रानी** काव्यक रचना कयल । किन्तु एकरा ओ सम्पन्न नहि कऽ सकलाह । पश्चात् श्रीचन्द्रसुधर्म (1652-84 इ.)क प्रधानमंत्री सुलेमानक आदेशसँ दोसर राजकवि आलाओल ओकरा पूर्ण कयलनि । किन्तु मिथिलामे लोरिके की, कोनहु लोकगाथाकेँ साहित्यिक आधार नहि भेटि सकल । बल्कि लोकगाथाक एहि समृद्ध धारा दिस कोनो कवि-विद्वान्क दृष्टि-संकेतो नहि भेटैछ ।

मैथिली लोकगाथाक संकलन-समालोचना दिस लोकक ध्यान आकृष्ट करबाक सर्वप्रथम श्रेय जार्जअब्राहमग्रियर्सनकेँ छनि जे 1881 इ.मे **पॉपुलर सौंग्स**नामसँ मिथिलाक **सलहेस** लोकगाथाकेँ संकलित कऽ प्रकाशित करौलनि । 1885 इ.मे यूरोपक एक पत्रिकामे **दीना-भद्री** लोकगाथा ओ **गीत नेबारक** शीर्षकसँ शम्भूबनिजाराक लोकगाथाक किछु अंशकेँ प्रकाशित करबाओल । परन्तु लोकगाथाक संकलन दिस मिथिलाक विद्वान लोकनिमे कोनो उत्साह नहि जागल । अवश्ये पाँचम दशकक लग-पासमे मधुबनीक रघुबरसिंह बुकसेलर द्वारा **बिहुलाक कथा, कुमारब्रजभानक कथा, सुठ्ठीकुमरिक गीत** प्रकाशित भेल छल ।

पाँचम दशकसँ मैथिली लोकगाथाक संकलन-समालोचना दिस विशेष विद्वान उन्मुख भेलाह । एहि क्षेत्रमे निरन्तर कार्य कयनिहार लोकनिमे विशिष्ट नाम सब अछि डा०जयकान्तमिश्र, प्रो०राधाकृष्णचौधरी, डा०ब्रजकिशोरवर्मा मणिपद्म, जयगोविन्दमिश्र डा०पूर्णानन्ददास, प्रो०प्रबोधनारायणसिंह, डा०अणिमासिंह, डा०तेजनारायणलाल, डा०ताराकान्तमिश्र, प्रो०धीरेन्द्र, पं०राजेश्वरझा, प्रो०प्रफुल्लकुमारसिंहमौन, डा०विश्वेश्वरमिश्र, डा०लोकनाथमिश्र, डा०नन्दनन्दनझा, डा०उर्मिलाराउत, डा०बालगोविन्दझाव्यथित, डा०मोतीलालयादव, डा०योगानन्दझा, डा०मनोजकुमारमिश्र, डा०तेजनारायणपण्डित इत्यादि । एहि सबमे अधिकांश विद्वानक लोकगाथा विषयक संकलन-अनुसन्धानक परिणामसँ विद्वद्-जगत् अनभिज्ञे अछि । अवश्य किछु विद्वानक कतोक निबन्ध सब प्रकाशित भेल अछि जाहिमे गाथाक विशेषता, संक्षिप्त कथावस्तुक परिचयक संग किछु प्रासंगिक उद्धरण सब देल जाइत रहल अछि ।

डा०जयकान्तमिश्रक 1951मे प्रकाशित अंगरेजी पुस्तक **इंट्रोडक्शन टु दि फोक लिटरेचर ऑफ मिथिलाक** पहिल भागमे मैथिली लोकगाथाक परिचय, वर्गीकरण ओ किछु प्रमुख गाथाक परिचय देल गेल छल । डा०ब्रजकिशोरवर्मा मणिपद्मक लोकगाथा विषयक अनुसन्धानक बड़ चर्चा रहल अछि । मणिपद्मजी मैथिली लोकगाथाक सामग्रीक उपयोग

कच्चा मालक रूपमे नैकाबनिजारा, लोरिक विजय, राजा सलहेस, रइया रनपाल, लवहरि–कुशहरि इत्यादि उपन्यास ओ अनेक एकांकी, कथा–चित्रक रचनामे कयने छथि । परन्तु एहि सबमे लोकगाथाक यथार्थ स्वरूपक परिचय प्राप्त करबाक अवधारणा निरर्थक होयत । मणिपद्मजीक मैथिली लोकगाथा विषयक तीस–चालिस गोट समीक्षात्मक निबन्ध देखबामे आयल अछि । पटनासँ प्रकाशित मिथिला–मिहिरमे लोरिक पर चौदह गोट, दुलरा दयाल पर नओ गोट, नैका बनिजारा पर सात गोट ओ लवहरि–कुशहरि पर दुइ गोट निबन्ध देखबामे आयल अछि । मैथिली लोकवृत्त ओ मैथिली लोकगाथाक परिज्ञानक दृष्टिएँ किछु निबन्धकेँ छोड़ि शेष अनुपयोगी अछि । कारण, एहि सभक विषय वस्तु अछि मणिपद्मजीक कल्पनाप्रसूत औपन्यासिक विषय–वस्तु, परिवेश, पात्र इत्यादि । कतहु–कतहु जे गाथाक मूल उद्धरण देल गेल अछि ताहिमे कृत्रिमता स्पष्ट अछि । लोरिक नृत्यक वर्णन सर्वथा काल्पनिक अछि । लोरिक गाथाक तान्त्रिक व्याख्यामे अतिरंजना अछि । परन्तु मैथिली लोकगाथाकेँ महिमा–मण्डित कऽ लोकक दृष्टिपथ पर आनि देबाक श्रेयक अधिकारी मणिपद्म छथि, एहिमे सन्देह नहि ।

प्रो०प्रफुल्लकुमारसिंहमौनक मैथिली लोकगाथा पर अनेक निबन्ध सब प्रकाशित होइत रहलनि अछि । एहिमे मैथिली लोकवृत्त ओ मैथिलीक विभिन्न लोकगाथाक कथावस्तु ओ वैशिष्ट्य पर प्रकाश देल गेल अछि । दीना–भद्री, चम्पाडगराइन, घुघुलिया, नूजागढ़ (मॉजरि–लालमति–मोमरत–मीरसैयदक प्रसंग गर्भित) रघुनाथ, कारूभुइयाँ, बसाओनभुइयाँ, सोखा, राहु, कारिख, गनिनाथ इत्यादि विषयक निबन्ध **मिथिला मिहिर** ओ अन्यान्य पत्रिका सभमे प्रकाशित भेल छनि । किछु लोकगाथा विषयक सामग्री हिनक **ब्रह्मग्राम** नामक ग्रन्थमे सेहो आयल अछि । एहि निबन्ध सबमे यद्यपि मौनजीक शैली वस्तुनिष्ठ नहि रहि वैयक्तिक अनुभूति–कल्पनाक संस्पर्शसँ आवेष्टित रहैत छनि, तथापि विभिन्न लोकगाथाक वस्तु, प्रकृति इत्यादिक परिचयमे सहायक होइछ । लोरिक, दीना–भद्री, उतिमाक लगनी, जिरबाक लगनी विषयक परिचयात्मक कतिपय निबन्ध हमरहु प्रकाशित भेल छल । मैथिली लोकगाथा पर तीन गोट स्वतन्त्र पुस्तक प्रकाशित भेल अछि, जकरा एहि क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण योगदान मानल जा सकैछ ।

1974 इ.मे पं०राजेश्वरझाक **लोकगाथाः विवेचन** नामक पुस्तक प्रकाशित भेल । ई वस्तुतः मिथिला मिहिरमे 1974मे प्रकाशित निबन्ध सभक संकलन थिक । एहिमे पाँच गोट लोक गाथा–लोरिकाइन, नैकाबनिजारा, राजासलहेस, दीना–भद्री ओ राजागोपीचन्द पर विचार कयल गेल अछि । प्रत्येक गाथाक कथावस्तुक संग ओकर ऐतिहासिकता, सामाजिक परिवेश ओ वैशिष्ट्य प्रस्तुत कयल गेल अछि । राजेश्वरझा अपन विवेचनमे लोरिकाइनमे मणिपद्मक उपन्याससँ प्रभावित भेल छथि । सलहेसक आधार ग्रियर्सनक पाठ रहल अछि। नैकाबनिजाराक विवेचनमे मणिपद्मक उपन्यास ओ ग्रियर्सन द्वारा संकलित भोजपुरी पाठ पर आश्रित रहलाह अछि । दीना–भद्री–विवेचनक आधार ग्रियर्सनक संकलित पाठ थिक । गोपीचन्दक विवेचनमे गाथाक ऐतिहासिकता ओ बहुजनपदीयत्व विशेष प्रमुख अछि । कथावस्तु–परिचय ओ उद्धरणमे बंगला–असमी पाठक आश्रय लेल गेल अछि । मिथिलामे प्रचलित लोकगाथाक स्वरूप ओ प्रचलित पाठक कोनो संकेत नहि अछि ।

मैथिली लोकवृत्तक क्षेत्रमे गम्भीर अनुसन्धान कयनिहार युवा लेखक डा०योगानन्द

झाक एक गोट पुस्तक **लोकजीवन ओ लोकसाहित्य** 1986मे प्रकाशित भेल । एहिमे दुइ खण्ड अछि । पहिल खण्डमे मिथिलाक छओ गोट जाति डोम, चमार, धोबि, हलुआइ, मलाह ओ कुरेड़ी जातिक समाजशास्त्रीय दृष्टिसँ परिचय देल गेल अछि । दोसर खंडमे एहि जाति सभक जातीय देवता सम्बन्धी बारह गोट गाथा-श्यामसिंह (बंसीधरबाभन), लालबनबाबा, गरीबनभुइयाँ, मोतीदाइ, गणिनाथ-गोबिन्द, फेकूराम, कारिख, दुलरादयाल, गाङोदेवी, जयसिंह, अमरसिंह ओ केबलमहराजक कथावस्तु सहित विवेचन अछि । एहिमे गाथाक प्रासंगिक उद्धरण सभ स्वसंकलित आधार पर देल गेल अछि । एहिमे एक-दू गाथा-नायककेँ छोड़ि शेष गाथा-नायक ओ तनिक गाथा सब सर्वथा अभिनव अनुसन्धान थिक । अभिनव मूल सामग्रीक संग्रथनसँ ई पुस्तक मैथिली लोकगाथे नहि, लोकवृत्तहुक क्षेत्रमे पथ-प्रदर्शक बनबा योग्य अछि ।

लोकदेवता कारिख पजियार पर डा०महेन्द्रनारायणरामक एकगोट पोथी **मैथिली लोकमहागाथा कारिख पजियार** 2002 इ.मे प्रकाशित भेल अछि । ई पोथी लेखक द्वारा पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोधप्रबन्धक पुस्तकाकार थिक । मिथिलाक कोनो एकटा लोकगाथाक सम्पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत कयल गेल एखन धरि मैथिली लोकसाहित्यक ई एकमात्र पोथी अछि । पोथीमे नओ गोट अध्याय अछि । एहिमे **कारिख पजियार**क मूल गेय गाथा संकलित कऽ देल गेल अछि जाहिसँ पोथी मूल्यवान भऽ गेल अछि । पोथीमे संकलित गाथा चारि खण्ड– क्रमशः ज्योति-प्रसंग, कारिख-प्रसंग, कारिख-बिआह-प्रसंग एवं विदाइ-प्रसंगमे विभाजित अछि । एहि गाथाक स्वरूप देखला उत्तर प्रतीत होइछ जे ई गाथा गद्य-पद्यमय अर्थात् चम्पूकाव्य जकाँ अछि । गायक पद्य अंश गाबि कऽ पुनः गद्यमे अग्रिम कथा कहैत अछि । पोथीमे गाथाक पद्य अंशकेँ तँ यथावत् राखल गेल अछि, मुदा गद्य अंशक भाषा लेखकक अपन लगैत छनि, जाहिसँ गाथाकेँ अपन मूल पाठसँ विचलित होयबाक सन्देह उत्पन्न होइछ । तथापि ई पुस्तक मैथिली लोकगाथाक अध्ययनक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण स्थान पयबाक अधिकारी अछि ।

मैथिली लोकगाथाक भविष्य

मैथिली लोकगाथाक संख्या कतेक अछि से पूर्वहि देखल गेल अछि । एते समृद्ध सामग्रीक रहितहु विश्वविद्यालय स्तर पर जे अनुसन्धान कार्य होयबाक चाही से नहि भेल अछि। तथापि किछु महत्त्वपूर्ण शोधकार्य अवश्ये उल्लेखनीय अछि । मैथिली लोकगाथाक दृष्टिएँ 1960 इ.मे बिहार विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच.डी. उपाधि हेतु स्वीकृत डा०पूर्णानन्ददासक शोध-प्रबन्ध **मैथिली लोककाव्य** सर्वप्रथम उल्लेखनीय अछि। एकर दशम अध्यायमे मैथिलीक सोलह गोट लोकगाथाक कथावस्तु, अन्यप्रान्तीय स्वरूपक संग तुलना, गाथाक विभिन्न पाठ, विभिन्न गाथाक पारस्परिक तुलना, गाथा सभक वैशिष्ट्य इत्यादि पक्ष पर विद्वत्तापूर्ण विचार भेल अछि । सबसँ मूल्यवान अछि परिशिष्टमे लोक गायक सभक मुहसँ सूनि कऽ उतारल गाथा सभक मूल पाठक संकलन । एहि संकलनमे प्रदत्त गाथा सब अछि– लोरिक (विवाह खंड, महुअरि, हरबा-बरबा संग युद्ध), विहुला, सलहेस, दीना-भद्री, दयालसिंह, जैसिंह, अमरसिंह, कुमरवृजभान, नाकाबनजारा, लवहरि-कुशहरि, विजयमल, घुघुलिया (रइयारनपाल), वंशीधरबाभन (श्यामसिंह), गांगो तथा कारिखपजियार ।

कोनो गाथा-विशेषकेँ अनुसन्धानक विषय बनाय शोधकार्य करबाक दिशामे सेहो किछु अध्येता अग्रसर भेलाह अछि । अन्य विश्वविद्यालयक तँ सूचना नहि अछि किन्तु ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालयमे पी-एच.डी. उपाधि हेतु स्वीकृत तीन गोट शोधप्रबन्ध उल्लेखनीय अछि । 1982मे डा०मोतीलालयादवक स्वीकृत शोध-प्रबन्ध **लोकगाथा सलहेसक अध्ययनमे** सात अध्याय अछि– सलहेस गाथाक अध्ययनक साधन स्रोत, सलहेस गाथाक ऐतिहासिकता ओ सम्बद्ध स्थान, गाथाक कथा वस्तु, गाथाक पात्र, गाथाक लोकतात्त्विक वैशिष्ट्य, गाथामे सामाजिक जीवन तथा गाथामे काव्यत्व ओ भाषा । परिशिष्टमे मूल गाथाक ग्रियर्सनक पाठ, डा०पूर्णानन्ददासक पाठक संगहि अनुसन्धाता द्वारा स्वयं संकलित पाठ ओ भौगोलिक मानचित्र देल गेल अछि जे शोधक हेतु अत्यन्त उपयोगी अछि । 1989मे डा०मनोजकुमारमिश्रक स्वीकृत शोध-प्रबन्ध **मिथिलाक लोरिक लोकगाथाक आलोचनात्मक अध्ययनमे** अध्यायशः विवेच्य विषय अछि– लोरिक गाथक साधन-स्रोत, ऐतिहासिकता ओ सम्बद्धस्थान, कथावस्तु, पात्र, लोकतात्त्विक वैशिष्ट्य, सामाजिक जीवन तथा काव्यत्व ओ भाषा । कथावस्तुक रूपमे अध्येता द्वारा संकलित लोरिक गाथाक अविकल रूप दऽ देल गेल अछि । गाथा-पाठक संकलनक दृष्टिएँ ई मूल्यवान् अछि । 1990मे डा०तेजनारायणपण्डितक स्वीकृत शोधप्रबन्ध **मैथिली लोकगाथामे सती विहुलामे** बिहुला गाथाक विभिन्न पक्ष पर विचार कयल गेल अछि। विवेचनक क्रममे विहुला गाथासँ जे उद्धरण सब देल गेल अछि तकर स्रोतक कोनो सूचना नहि अछि । यदि प्रकाशित स्रोतसँ गृहीत अछि तँ प्रकाशनादि सूचना अपेक्षित । यदि अप्रकाशित स्रोतक उपयोग भेल तँ बिहुला गाथाक समग्र पाठक सकल सूचना परिशिष्टमे दातव्य छल । दुहूक अभावमे शोध प्रबन्धक विवेच्य वस्तुक प्रामाणिकता सन्दिग्ध भऽ जाइछ ।

मैथिली लोकसाहित्यमे लोकगाथा पक्ष कतेक समृद्ध, कतेक वैविध्यपूर्ण ओ कतेक रोचक ओ लोकरंजक अछि तकर सहज ओ सम्यक् परिचय ओकर समग्ररूप ओ प्रभेदक संकलन ओ ओहिमे अवगाहनेसँ सम्भव अछि ।

ई लोकगाथा मिथिलाक भाषा, साहित्य-क्षमता, समाजक अतीतकालीन स्वरूप, लोक संस्कृति, विश्वास-परम्परा, रूढ़ि-अवधारणा, जीवन-दर्शन, आचार-विचार, माटि-पानि इत्यादिक मूल संरक्षित स्वरूपक मंजूषा थिक । मिथिलाक सामाजिक इतिहास ओ प्राकृतिक भूगोल, जेना– कमला, तिलजुगा, देबहा, गंगा इत्यादि नदी एहि गाथा सबमे समेटल अछि।

समाजक विकासक जे प्रवाह चलि रहल छैक, परिवर्त्तनक जे गति छैक, नवीनताक जे बसात बहि रहल छैक, आधुनिकताक जे रंग पसरि रहल छैक, ताहिमे एहि लोकगाथा सभक अस्तित्व कतबा दिन धरि रहि सकत से अनुमान करब कठिन नहि अछि । आवश्यकता अछि जे एकरा सबकेँ लुप्त होयबासँ पूर्वहि लिपिबद्ध कऽ लेल जाय । एहिमे प्रयोजन अछि नव, उत्साही, धैर्यवान् ओ संवेदनशील अनुसन्धाता लोकनिक ।

मैथिली लोकसाहित्यमे लोकगाथाक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । लोक साहित्यक सम्बन्धमे विचार कयनिहार प्रायः सब विद्वान् लोकगाथाकेँ एक स्वतन्त्र लोककाव्यक रूपमे स्थान देलनि अछि । वास्तवमे वर्ण्यवस्तु, वर्णन शैली, काव्यरूप ओ परिमाणक दृष्टिएँ मैथिली लोकगाथाकाव्य अत्यन्त समृद्ध अछि । एहिमे लोकवृत्तक विभिन्न उपादानक समायोजन

व्यापक रूपमे देखल जाइत अछि । ई मिथिलाक लोक-समाजक लोकमानस ओ लोकचर्याक सम्यक् अभिज्ञानक हेतु अद्वितीय आधार सिद्ध भऽ सकैत अछि । अतः मैथिली लोकगाथाक संकलन- अध्ययन व्यवस्थित रूपमे कयल जायब अत्यावश्यक ।

(मैथिली अकादमी, पटना द्वारा 22 अगस्त 1992इ.केँ पं०तन्त्रनाथझा-स्मारक-भाषणमालाक द्वितीय आयोजनमे **मैथिली लोकगाथा** पर पठित भाषणक अंश ।)

सन्दर्भ-संकेत

1. दि फोक सौंग्स ऑफ मिथिला, पार्ट-1, पृष्ठ- 21-38
2. तत्रैव, पृष्ठ 21-38
3. मैथिली लोक काव्य (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) डा०पूर्णानन्ददास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ 270-271, द्वितीय खण्ड, भूमिका, पृष्ठ-ग एवं पृष्ठ 103 सँ 282 पर्यन्त ।
4. मैथिली लोकसाहित्य (निबन्ध) डा०अणिमा सिंह, मैथिली साहित्यक रूप रेखा, खण्ड-2, पृष्ठ - 15
5. लोकगाथा परिचय; सम्पादक- आचार्य नलिनविलोचनशर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, द्वितीय संस्करण 1988
6. मैथिली लोक काव्य, प्रथम खण्ड, पृष्ठ-271 (पाद टिप्पणी)
7. द फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला, पार्ट-1, पृष्ठ-31
8. तत्रैव, पृष्ठ 39

●

मैथिली लोकगीत

भारतक अन्यान्य भाषाक लोकगीत सदृश मैथिलीयो लोकगीत जनकण्ठक सम्पत्ति थिक तथा श्रुति-परम्परासँ एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीकेँ प्राप्त होइत रहल अछि। एकर सभक रचयिता अनाम ओ अज्ञात अछि। एकर सभक रचना-काल सेहो अज्ञात अछि। लोकगीतक कोनो प्रभेद कहियासँ जनसमाजमे प्रचलित भेल, लोकप्रिय भेल ओ समाजक अनपढ़ वर्ग, विशेषतः स्त्रीगणक अन्तस्तलमे प्रवेश कऽ रूढ़ भऽ गेल, ताहि सम्बन्धमे किछु निश्चय पूर्वक नहि कहल जा सकैत अछि। ओहि सम्बन्धमे यथासाध्य अनुमाने टा करब सम्भव भऽ सकैछ।

मैथिली लोकगीतक वैदिक उत्स

मैथिली लोकगीतकेँ भारतक वा संसारक अन्य जातिक लोकगीतक सदृशे सामान्य अनपढ़ ओ असंस्कृत जनक परम्परित सम्पत्ति मानल जाइत अछि। परन्तु मिथिलामे लोक-गीतक परिज्ञान सुसंस्कृत होयबाक लक्षण मानल जाइत अछि। जाहि महिलाकेँ लोकगीत-गानमे पटुता रहैत छैक, विभिन्न अवसर ओ प्रयोजनक हेतु विहित गीत सभक ज्ञान रहैत छैक, तकरा व्यवहारकुशल, व्यवहारपटु ओ वितपन्नि मानल जाइछ। मिथिलाक कन्या लोकनिकेँ आरम्भेसँ विभिन्न प्रकारक लूरि-भास आ राग-भासक पारिवारिक प्रशिक्षण भेटैत रहैत छैक। जाहिमे भास थिक लोकगीत-गानक पारम्परिक सुनिश्चित पद्धति। एहन वर्ग अनपढ़-अशिक्षित भने रहओ परन्तु ओकरा असभ्य ओ असंस्कृत कोना कहल जा सकैत अछि!

वास्तवमे मैथिली लोकगीत वैदिक कर्मकाण्डक ऋचा-मन्त्रक प्रतिस्थानीय रूपमे व्यवहारतः प्रशस्त अछि। अतः वेदकालीन संस्कृति ओ सामाजिक आचार-व्यवहारमे अनिवार्य रूपसँ गाओल जायवला ऋचा, स्तोत्र, साम ओ अन्य लौकिक गानमे मैथिली लोकगीतक उत्स ताकल जा सकैछ।

वैदिक समाजमे विभिन्न प्रकारक यज्ञमे स्तोम, स्तोत्र ओ विशेष प्रकारक सामगान सब होइत छल जाहिमे वैदिक देवता लोकनिक स्तवन कयल जाइत छलनि। विवाहादि संस्कारमे वैदिक मन्त्रक वाचन, पाठ ओ सामगान होइत छल। विभिन्न लोकोत्सवक अवसर पर ऋचा ओ सामगानसँ इतर विशेष प्रकारक लौकिक गान होइत छल जकरा **गाथा, नाराशंसी, रेभ्य** इत्यादि कहल जाइत छल। वैदिक ऋचा ओ सामगान सदृशे एकरहु सभक मान्यता छल। ऋतु विशेषमे साम विशेषक गानक परिपाटी छल। निरन्तर श्रमसाध्य

व्यावसायिक कार्यमे श्रमहरण ओ रंजकगान प्रचलित छल । सहस्रो वर्षक अन्तरालमे ओहि गान सभक गान-परम्परामे मूल रूपमे सुरक्षित रहब सम्भव नहि । जे किछु बचल रहल से दुर्बोधरूपमे ग्रन्थमे ओ विद्वान् लोकनिक अध्यवसाय मात्रसँ । जकर लौकिक जीवनक सहज प्रयोगसँ सम्बन्ध नहि रहि गेलैक । जहिना-जहिना सामाजिक संस्कार, आचार, व्यवहारमे परिवर्त्तन होइत गेल, अनेक कृत्यक विलोपन ओ बहुतो कृत्यमे परिवर्त्तन होइत गेल; तहिना-तहिना ओहि अवसर पर गाओल जायवला गान सबमे परिवर्त्तन होइत गेल । भाषा बदलल, छन्द बदलल, विषय-वस्तु बदलल, गान-पद्धति बदलल । किन्तु गानक प्रवृत्ति, प्रयोजन ओ परिपाटी विद्यमान रहल । अतः वैदिक कालक कतिपय गानक अवशेष ओ वंशधरक रूपमे मैथिलीक कतोक लोकगीत-प्रभेदकेँ रेखांकित कयल जा सकैत अछि ।

परवर्त्ती काल-प्रवाहमे वैदिक देवताक स्थानमे पौराणिक देव-देवी ओ लोकदेवता सभ स्थापित भऽ गेलाह । यज्ञादिक स्थान लऽ लेलक पूजा, व्रत एवं पाबनि-तिहार । स्वभावतः स्तोत्र ओ सामगानक स्थान लऽ लेलक विभिन्न प्रकारक धार्मिक गीत ओ भक्ति गीत सब । षोडश संस्कारक संख्या घटि गेल । ओ जन्म, मुंडन-उपनयन, विवाह ओ अन्त्येष्टि-श्राद्ध धरि सीमित रहि गेल । एहि संस्कार सभक प्रक्रियामे संक्षेपण होइत गेल, तँ किछु नव विधान सब जोड़ाइतो गेल । परन्तु एहि अवसर सब पर गानक परिपाटी चलिते रहल आ उपनयन-विवाहादिमे कतोक प्रकारक गीत मन्त्रक सत्ता प्राप्त कऽ लेलक ।

वैदिक वाङ्मयमे सामगानमे स्त्रीयो गणक सहयोगक उल्लेख भेटैत अछि । किछु ठाम उल्लेख अछि जे विवाहक अवसर पर चारिसँ आठ धरिक संख्यामे सधवा स्त्रीकेँ सुरा पिआय नृत्यार्थ प्रेरित कयल जाइत छल । विवाहविधिमे पत्नी द्वारा गानक उल्लेख सेहो वैदिक वाङ्मयमे भेटैत अछि । सम्प्रति मिथिलामे विवाह विधि गीतमय होइतहि अछि जाहि पर स्त्रीगणहिक एकाधिकार रहैत छनि । एहिमे सधवा स्त्री लोकनिक महत्त्व रहितहि छनि । विवाहे किएक, सकल संस्कारमे गीत-पक्षक सम्पादन स्त्रीगणे करैत छथि ।

ऋग्वेदमे यमसूत्रमे अन्त्येष्टिक समयमे सामगान कयल जयबाक उल्लेख भेटैत अछि । पितृकर्ममे **भारुदण्ड** नामक सामगान कयल जाइत छल । साम्प्रतिक कालमे अन्त्येष्टि कालमे एवं श्राद्धकर्मक प्रकरणमे मिथिलाक **कबिराहा सम्प्रदायमे निर्गुण** प्रभेदक गीतक सामूहिक गान कयल जाइछ जे **भारुदण्डक** उत्तरजीवी रूप भऽ सकैछ ।

ऋग्वेदमे गीति-प्रबन्धक उल्लेख **गीति, गाथा, गायत्र** तथा **साम** नामसँ भेटैछ । **गाथा** एकटा विशिष्ट प्रकारक गान छल जाहिमे देव, राजा, वीर पुरुष इत्यादिक प्रशस्ति ओ कीर्त्तिकथा वर्णित रहैत छल । एकर सभक गान ब्राह्मण ओ क्षत्रिय गायक लोकनि द्वारा होइत छल जनिका गाथिन् कहल जाइत छल । एकर गान अश्वमेघयज्ञ, धार्मिक अवसर ओ विवाहादि लौकिक समारोहमे कयल जाइत छल । वैदिक कालक गेय एहि गाथा, नाराशंसी, रेभ्य प्रभृति गीति-प्रबन्धक अवशेष विभिन्न प्रकारक मैथिली लोकगाथामे ताकल जा सकैत अछि । कथक ओ पमारा गौनिहार **पमरियाक** रूपमे **गाथिन्**क अवशेष देखल जा सकैछ ।

महाव्रत नामक सोमयागमे दासी सभक समूह-नृत्यक आयोजन होइत छल । ओहिमे तीनसँ छओ गोट स्त्री होइत छल । सभक माथपर जलपूरित पुरहर रहैत छल । ओ सब गीतक

संग पदक्षेप करैत बामसँ दहिन वर्तुलाकार गतिमे नृत्य करैत छल । एहि नृत्य-गीतक छाह-छूह मिथिलाक **झिझिया नाच**मे भेटि सकैत अछि । दाहाक **झड़नी गान**-नाचमे गीतक संग बामसँ दहिन वर्तुलाकर गति देखल जाइत अछि । **डोमकछ** नाचमे सेहो ई रीति देखल जाइछ । वैदिक वाङ्मयमे ततमिन द्वारा वस्त्र बुनैत काल गीत गयबाक उल्लेख भेटैत अछि–

'तन्त्रमेके युवती विरूपे अभ्याक्रामं वयतः षण्मयूखम् ।
प्रान्या तन्तूंस्तिरते धत्ते अन्या नाप वृन्जाते न गमातो अन्तम् ।'
'इमे मयूखा उप तस्तमुर्दिवं चक्रस्तसराणि वातवे ।'

एहि स्त्रीगणक गीतक संग हाथ-पैरक चपल-तीव्र गति देखि कऽ वर्तुलाकार नृत्य करैत नर्त्तकीक चटुल पदक्षेपक भान होइत छल–

तयोरहं परिनृत्यन्तोरिव न वि जानामि यतरा पुरस्तात् ।

एहिसँ अनुमान करब सम्भव अछि जे वैदिक कालमे दीर्घ श्रमसाध्य काजमे श्रमापनोदन ओ मन बहटारबाक लेल स्त्रीगण गीत गबैत छलि । ई मानब सहज अछि जे साम्प्रतिक कालमे गाओल जायवला **लगनी** ओ **बटगवनी** प्रभेद वैदिक कालीन श्रमापनोदक गीतक वंशज थिक, जकरा एखनो स्त्रीए लोकनि कार्यसम्पादन क्रममे गबैछ ।

सामगानक किछु प्रभेदकेँ खास-खास ऋतुएमे गाओल जयबाक परिपाटी छल । **रथन्तर** सामकेँ वसन्तऋतुमे, **वृहत्साम**केँ ग्रीष्मऋतुमे, **वैरूप** सामकेँ वर्षाऋतुमे ओ **शाक्वर-रैवत** नामक साम हेमन्त ऋतुमे गाओल जाइत छल । ऋतु-सीमामे आबद्ध सामगानक छाया मैथिली लोकगीतक समैया प्रभेदक गीत, यथा- **फागु, चैतावर, बरहमासा, मलार** इत्यादिमे देखल जाइछ जे सुनिश्चित मास अथवा ऋतुमात्रमे गाओल जाइत अछि ।

मैथिली लोकगीतमे बौद्धकालीन अवशेष

ईसासँ पाँच शताब्दी पूर्व भारतमे बौद्धमतक आविर्भाव भेल जे वैदिक धर्मक विरोधी छल । एकर प्रभाव प्रायः डेढ़ हजार वर्ष धरि रहल । समाजमे एहि मतक तीव्र गतिसँ प्रचार भेल । कतेको बेर बौद्धमत राजधर्म सेहो बनि गेल । वैदिक धर्म उपेक्षित भऽ गेल । परन्तु क्रमशः बौद्धमतक पतन सेहो भऽ गेल । मिथिला यद्यपि कट्टर वैदिक धर्मावलम्बी रहल अछि, तथापि बौद्धमतक प्रभावसँ सर्वथा अवंच रहल से नहि कहल जा सकैत अछि । नहि तँ बौद्धदर्शनक प्रखरतापूर्वक खण्डन कयनिहार उदयन सन-सन नैयायिक ओ मीमांसक लोकनिक मिथिलामे आविर्भाव किएक भेल ?

तथागत बुद्धक जन्म मिथिलासँ सटले लुम्बिनीमे भेल छलनि । मिथिलाक पश्चिमी भागमे स्थित वैशाली बुद्धदेवक सर्वाधिक प्रिय प्रवास-स्थली छल, जतऽ कतोक शताब्दी धरि बौद्ध विहार सब बौद्धमतक केन्द्र बनल रहल । गंगाक ओहि पार बौद्धमतक केन्द्र मगध ओ ततहि स्थित छल नालन्दा महाविहार । मिथिलाक दक्षिण-पूबमे गंगापारमे छल विक्रमशिला महाविहार । चारू कातसँ बौद्धमतक गढ़सँ घेरल मिथिलापर बौद्धधर्मक प्रभाव पड़ब स्वाभाविके कहल जा सकैत अछि । बौद्धमतक प्रभाव मिथिलाक लोकगीत पर सेहो पड़ल । ओहि प्रभावक छाया मैथिली लोकगीतमे ताकल जा सकैत अछि । शून्यवादक माननिहार

बुद्धकेँ लोक मूर्त्ति बना कऽ पूजऽ लागल। बुद्धकेँ विष्णुक एक गोट अवतारक रूपमे स्तुति होमऽ लागल। महाकवि जयदेव कीर्त्तन कयलनि, केशवधृत बुद्धशरीर जय जगदीश हरे तँ मैथिली लोकगीतमे कहल गेल– **बौध रूप जहिया हम भेलहुँ पुरसोतमपुर रहिआ।**

तीन लोकमे ठाकुर कहौलहुँ घोघरो ने देखल तहिआ॥

लोरिक लोकगाथाक गायक जखन गाथा-गान आरम्भ करैत अछि तँ सर्वप्रथम दिग्वन्दना करैत अछि– **पूबे रे पुरैनियाँ पुजलिअइ पच्छिम रे बीहार।**

उत्तर रे नेपाल पुजलिअइ दच्छिन गंगाधार॥

एहि ठाम पच्छिमक बिहार वास्तवमे वैशालिएक बौद्ध विहारक स्मरण दियबैत अछि।

परवर्त्ती कालमे बौद्ध मतानुयायी चौरासी सिद्ध लोकनिक समाजमे प्रतिष्ठा भेल। बौद्धसिद्ध लोकनि वैदिक कर्मकाण्डक घोर विरोधी ओ आलोचक छलाह। जनसाधारण बौद्धसिद्ध लोकनिक चमत्कारसँ चकित रहैत छल तँ कर्मकाण्डमे ब्राह्मणक निष्ठा देखि मुग्ध रहैत छल। सिद्ध सरहपाद कर्मकाण्डी ब्राह्मणक आलोचना करैत कहलनि–

बाम्हणहि न जाणन्त बेउ। एँबउ पढ़िअउ ए चउ बेउ॥
मँटि पणि कुस लई पढन्त। घरही बइसी अग्गि हुणन्त॥
कज्जे विरहइ हुअबह होमेँ। अक्खि डहाबिअ कडुएँ धूमे॥

किन्तु दोसर दिस एकटा **ब्राह्मण गीतमे** कर्मकाण्डक निर्वहन कयनिहार कृशकाय ब्राह्मणक प्रति ममत्व ओ आस्थाक भाव देखल जाइत अछि। एकटा सेवक ब्राह्मणसँ पुछैछ–

एक तोहेँ दुबर ब्राह्मण दोसर सुकुमार, सेहो कोना सहऽ ब्राह्मण अगिनिक धाह॥

अपन कर्मक प्रति आस्थावान् ब्राह्मण उत्तर दैत छथिन–

तोरा लेखेँ आहो सेवक अगिनिक धाह, मोरा लेखेँ सीतल बसात॥

सिद्ध लोकनिक विचारक विपरीत सामाजिक अवधारणाक व्यंजना एहि गीतमे देखल जाइत अछि। अन्यान्यो ब्राह्मणक गीत सबमे बौद्धयुगीन छाया देखि पड़ैत अछि। बौद्धयुगमे मिथिलाक वैदिक कर्ममे निष्ठा रखनिहार ब्राह्मण लोकनि बौद्धमतक प्रभावसँ बचैत रहबाक प्रयास करैत छलाह। तथापि कतोक ब्राह्मणपुत्र, उपनीत वा अनुपनीत– बौद्धमतमे दीक्षित भऽ जाइत छल होयताह। यज्ञोपवीतसँ स्वभावतः वंचित भऽ जाइत होयताह। पश्चात् पुनः अपन पूर्वक वैदिक धर्ममे अयबाक उत्कट इच्छा भऽ जाइत छल होयतनि। ओहि इच्छाक अभिव्यक्ति कतोक **ब्राह्मण गीत**मे देखल जाइत अछि। एक गीतमे एकटा एहने अनुपनीत ब्राह्मण गंगापारसँ अपन अभिभावककेँ संवाद दैत छथि–

गंगाक पारसँ (फल्लाँ) बरुआ करथि पुकार हे।
आहे (फल्लाँ) बाबाकेँ कहिऔनि समाद नवहेरिया पठाय देता हे॥

आ अभिभावक उत्तर पठा दैत छथिन अपन धर्मच्युत पुत्रकेँ–

ने मोरा नाओ नवहेरिया ने मोरा करुआरि हे।
आहे जनिका जनउआ केर काज गंगा हेलि आबथु हे।
आहे जनिका जनउआ केर काज गरुड़ चढ़ि आबथु हे॥

ब्राह्मण-कुमार विवश भऽ गंगा हेलबाक साहस करैत छथि-

भीजल पाट पटम्मर आओर मृगछाला हे ।
आहे भीजल सिरिखण्ड चानन गंगा कोना हेलब हे ॥

एकटा अन्य **ब्राह्मण गीतमे** यज्ञोपवीत-विहीन ब्राह्मणक मालिन्य ओ संस्कार-हीनताक वर्णन करैत पुनः यज्ञोपवीत संस्कारक उत्कट इच्छा वर्णित भेल अछि-

घोड़बा चढ़ल अयला ब्राम्हण दुलरूआ, चलि भेला मगहा-मुङेर ।

बाटमे सेवक पुछैत छनि-

कथी बिनु आहे ब्राम्हण मुहमा मलिन भेल, कथी विनु सकतिक हीन ।

ब्राह्मण उत्तर दैत छथिन-

पान बिन आहो सेवक मुहमा मलिन भेल, जनउ बिना सकतिक हीन ॥

सेवक एकर समाधानमे **तमोलिनसँ** दस-पाँच बीड़ा पान आनि दैत छनि आ उत्तर भरसँ एकटा **ब्राम्हणी** आबि कऽ पीअर-पीअर जनउ देबाक प्रतिज्ञा करैत छथिन-

उतरेसँ अयलथिन ब्राह्मिन तिरिआ, पीअर कहकह देब जनउ ।

उत्तर दिशासँ आइलि ई **तिरिआ** कोनो मैथिले स्त्री रहल होयतीह, से सहजहि अनुमेय। यज्ञोपवीत-संस्कारं सामान्यतः पाँचमसँ बारहम वर्षक वयसक अभ्यन्तरे होयबाक विधान अछि । तकरा बाद व्रात्यत्व दोष मानल जाइछ । उपरिउद्धृत गीतक ब्राम्हण अवश्ये बालवयसक नहि अपितु चेतन प्रतीत होइत छथि । तखन यज्ञोपवीत रहित अवस्थाक कारण की छल होयत ? समाधान यैह जे ओ सब बौद्धमतानुयायी भेलाक कारणे यज्ञोपवीत-संस्कार वा यज्ञोपवीत धारण करबाक अधिकारसँ वंचित भऽ गेल होयताह । अतः कतोक शताब्दी बितलाक बादो एहि गीत सबमे बौद्ध युगीन छाप देखल जाइछ ।

इतिहासक पृष्ठमे मैथिली लोकगीत

मिथिलाक इतिहासमे मैथिली लोकगीत ओ एकर प्रभेद सब अनभिज्ञात नहि रहल अछि । काव्य-रसिक समुदायमे पूर्वहु मैथिली लोकगीतक प्रति आकर्षण छल । ओकर वैविध्य ओ रसात्मकताक प्रति रुझान छल । प्राचीनतम अभिज्ञात स्रोत सबमे मैथिली लोकगीतक प्रभेद सभक उल्लेख ओ मैथिलीक शिष्ट साहित्य पर पड़ल ओकर सभक प्रभावक आधार पर मैथिली लोकगीतक ऐतिहासिकताक संकेत भेटि सकैत अछि ।

सतरहम शताब्दीमे महामहोपाध्याय लोचन रागतरंगिणीमे गीतक दुइ भेद कहने छथि-

गीतं तु द्विविधं प्रोक्तं यन्त्र गात्र विभेदतः ।
यन्त्रंस्याद् वेणु वीणादि गात्रन्तु मुखमुच्यते ॥

पुनः **यन्त्र** ओ **गात्र** दुहू प्रकारक गीतक दू-दू भेद अछि **निबद्ध** ओ अनिबद्ध-
निबद्धमनिबद्धंच गीतं द्विविधमुच्यते । अनिबद्धं भवेद्गीतं वर्णादि नियमैर्विना ॥

अर्थात् अनिबद्ध गीत ओ थिक जाहिमे वर्ण-नियमन (छन्दनिर्वाह) नहि हो अथवा गमक, धातु, अंग, वर्ण इत्यादिक नियमन-निर्वाह नहि होइत हो । लोचन द्वारा निर्दिष्ट

अनिबद्ध गीत सब वास्तवमे लोकगीते सब थिक जाहिमे हुनक मतेँ संगीतक शास्त्र-सम्मत नियमक अनुपालन नहि होइत अछि ।

मैथिली लोकगीतक प्रभेद सभ लोचनसँ बहुतो पहिनहि प्रबुद्ध समाजमे चिन्हार छल। एकर सबसँ पैघ प्रमाण अछि कविशेखर ज्योतिरीश्वर रचित **वर्णरत्नाकर** । चौदहम शताब्दीक आदि भागमे विरचित मैथिली गद्यग्रन्थ-वर्णरत्नाकरमे, जे नव्य भारतीय आर्यमाषाहु मध्य प्रथम गद्यकृतिक रूपमे मान्य अछि, अनेक मैथिली लोकगीतक प्रभेदक उल्लेख भेटैछ । वर्णरत्नाकारक पहिल कल्लोलमे नगरक वर्णन कयल गेल अछि । परन्तु दुर्भाग्यवश नगरवर्णनक आरम्भिक अधिकांश खण्डित अछि । लोकगीतहुक वर्णनक उत्तरांश खण्डित अछि । तथापि जतबा अंश उपलब्ध अछि से अवश्ये महत्त्वपूर्ण अछि । वर्णरत्नाकरमे परिगणित लोकगीतक प्रभेद सब अछि– **डफिला, डलोरि, विरहा, वेलि, भिषना, सिरिया, देशइ, ठमरण, चउपइ, चेङ्गा, चाञ्चलि, लोरिकनाचो, नगनी, मएना, बड़ती** ।

एहिमे किछु प्रभेद, यथा–डफिला, विरहा, चाञ्चलि, लोरिक, नगनी, मएना तँ एखनो चिन्हार अछि, किन्तु किछु प्रभेदकेँ चीन्हब ओ परिभाषित करब कठिन । वर्णरत्नाकारमे **कुट्टनी वर्णना**मे कुट्टनी अपन सेहन्ताक-वर्णन करैछ– **मञि नगरक सोष-सोहर देषि जाञो** । मनबोधक **कृष्णजन्म**मे कृष्णजन्मक अवसर पर गोआरि द्वारा **सोहर** गयबाक ओ **डोमकछ** नचबाक उल्लेख अछि । विद्यापति ओ परवर्ती कविगण लोकगीतक कतोक प्रभेदक अनुकरण करैत गीत रचना कयलनि जाहिमे कतोकमे ओकर प्रभेदहुक नामतः उल्लेख भेटैछ ।

मैथिली लोकगीतक वर्गीकरण

मैथिली लोकगीतक वर्गीकरण ठीक ओहने कयल जा सकैत अछि जेना कि अन्य भाषाक लोकगीतक सम्भव भऽ सकैछ । एकर कारण अछि भारतीय समाजमे सांस्कृतिक परम्पराक आभ्यन्तरिक एकात्मकता । अवश्ये स्थानीय भौगोलिक परिस्थिति ओ स्थानीय आचार-व्यवहारमे अन्तर होयबाक कारणे लोकगीतक प्रयोग, भास, छन्द, ओ किछु-किछु विषयहुक अन्तर । भारत सन विशाल देशमे एकरा अस्वाभाविको नहि कहल जा सकैत अछि।

मैथिली लोकगीतक किछु प्रमुख वर्ग अछि, यथा– 1. **संस्कार गीत** 2. **उत्सवव्रतोपासना गीत** 3. **भक्तिपरक गीत** 4. **श्रमापनोदक गीत** 5. **समैया गीत** 6. **मनोरंजक गीत**

मैथिली लोकगीतमे संस्कार गीतक वर्ग सबसँ समृद्ध अछि । षोडश संस्कारक वैदिक वा पौराणिक अवधारणा यद्यपि अत्यन्त क्षीण भऽ गेल अछि तथापि मैथिली भाषी समाजमे व्यक्तिक जीवनक पाँचगोट घटनाकेँ संस्कारक रूपमे सर्वमान्यता छैक । ओ थिक **जन्म, मूड़न, उपनयन, विवाह** ओ **मृत्यु** । एहिमे बच्चाक जन्मक पश्चात् पहिल बेर केश काटल जाइछ समारोह पूर्वक । एकरा मूड़न कहल जाइछ आ एकरा संस्कार मानब एहि हेतु उचित जे ई अनिवार्य कर्तव्य बनि गेल अछि । दोसर दिस उपनयन संस्कार केवल द्विज वर्गहिमे सीमित अछि । प्रत्येक संस्कारक भिन्न-भिन्न विधिक हेतु गीत सब होइत अछि । विधिक दृष्टिसँ विवाह-संस्कार अत्यनत जटिल मानल जाइत अछि । कहबीयो अछि– **बियाहसँ विधि भारी** । सिद्धान्ततः विवाह तँ एकहि दिनमे सम्पन्न भऽ जाइछ । परन्तु व्यवहारतः विवाहक बहुत पूर्वहिसँ ओकर भूमिकाक रूपमे विभिन्न विधि सभक सम्पादन आरम्भ भऽ जाइछ तथा

विवाहक पश्चात् कमसँ कम एक वर्ष धरि चलैत रहैत अछि । मिथिलाक विभिन्न जाति ओ जनजातिमे एहि विधि सभमे साम्यक संग वैषम्यो देखल जाइछ । एहि सभ विधिक नामतः सूची बनाओल जाय तँ सभ वैवाहिक विधिक संख्या तीन-चारि सयसँ कम नहि होयत । सभ विधिक हेतु अपन-अपन निर्धारित गीत अछि जकर गानहिक संग ओ विधि सम्पन्न होइत अछि । अतः मैथिल महिलावर्गक मध्य प्रचलित लोकोक्ति अछि जे- **बियाहमे डेगे-डेगे विधि आ डेगे-डेगे गीत** ।

लोकगीत आनन्द ओ उल्लासक अभिव्यंजक होइत अछि । तँ जँ जन्म, मुंडन, उपनयन ओ विवाहक अवसर पर ई गाओल जाइत अछि तँ ओ उचिते अछि । परन्तु मृत्यु तँ शोकप्रद होइत अछि । ओहिमे उल्लासक कल्पना अप्राकृतिक होयत । तखन मृत्युक अवसर पर गीतक गान कोना सम्भव ! मुदा मिथिलामे ई सम्भव होइत देखल जाइत अछि। मिथिलामे कतोक द्विजेतर जातिक लोक कबीरपन्थी वा निर्गुण सम्प्रदायक अनुयायी छथि । हिनका लोकनिमे वयस्क लोकक मृत्यु भेलापर सामूहिक रूपसँ जे भजनक गान होइछ एकरा निरगुन गीत कहल जाइछ । एहि गीत सबसे रहस्यवादी भावनाक अभिव्यंजना रहैत अछि । संसारक अनित्यता, शरीरक नश्वरता, आत्माक अमरता इत्यादिक वर्णन करैत निर्वेद भावक निष्पत्ति देखल जाइछ ।

उत्सवव्रतोपासनागीत विभिन्न पाबनि, पूजा इत्यादिक अवसर पर गाओल जाइछ । एहि कोटिक गीतमे छठिक गीत, सामा-चकेबाक गीत, जटा-जटिन, झड़नी, झिझिया, भाओ इत्यादिक गीत सब अबैत अछि ।

भक्तिपरक गीत सभ दुइ कोटिक होइत अछि-**पौराणिक देवता विषयक** ओ **लोकदेवता विषयक** । पौराणिक देवतामे शिव-पार्वतीसँ सम्बद्ध नचारी-महेशवाणी सर्वाधिक प्रसिद्ध अछि । राधाकृष्ण ओ सीताराम विषयक गीत सब विष्णुपद रूपमे प्रख्यात अछि । देवीकेँ मिथिलाक कुलदेवताक रूपमे प्रतिष्ठा छनि । हिनका **गोसाउनि** कहल जाइछ । मिथिलाक जीवनमे कोनहु शुभ कर्म गोसाउनिक गीतक विना आरम्भ नहि कयल जा सकैत अछि । एहि गीतकेँ **मिनती / मनुहारि** कहल जाइछ । मिथिलामे बहुतो लोकदेवता सब छथि जाहिमे चौदह गोट प्रमुख छथि । हिनका **चौदह देवान** कहल जाइछ । हिनका लोकनिक पूजाकेँ **भाओ** कहल जाइछ । हिनका लोकनिक प्रति समर्पित गीतकेँ **अरधाना** (आराधना) गीत कहल जाइछ । एकर अतिरिक्त विभिन्न संस्कारक आरम्भमे गोसाउनिक गीतक बाद ब्राह्मणक वा ब्रह्मक गीत ओ पितरक गीतक गान अनिवार्य रहैत अछि । मिथिलाक प्राकृतिक परिवेशसँ उद्‌भूत नदी देवता-कोसी, कमला, जीबछ ओ गंगाक गीत, बिसहरि (नागदेवता)क गीत सभ भक्ति परक गीतक कोटिमे अबैत अछि ।

ऋतु ओ माससँ सम्बन्धित अथवा ओहि ऋतु ओ मासमे गाओल जाय वला गीत **समैया** गीत कहल जाइछ । फागुन मासमे **फगुआ** ओ चैतमासमे **चैतावर** प्रभेदक गीत गाओल जाइछ । दोसर दिस वर्षाऋतुमे **कजरी, मलार, बरहमासा,** छओमासा **चौमासा, झूलन** गाओल जाइछ । एकर सभक गयबाक समय निश्चित रहैत अछि तेँ ई सब **समैया** गीत कहल जाइछ।

मिथिलाक महिला लोकनि श्रमजन्य कष्टकेँ विस्मृत करबाक हेतु काजक संग गीतो गबैत रहैत छथि । जाँत पिसबाकाल जे गीत गाओल जाइछ से **लगनी** गीत कहल जाइछ ।

बाटमे चलैत कालक गीत **बटगवनी** होइत अछि । गोदना गोदबैत काल सूचीबेधन-पीड़ाकेँ कमसँ कम करबाक लेल जे गीत गाओल जाइछ से **गोदना गीत** कहल जाइछ । एहन गीत सबकेँ श्रमापनोदक गीत कहब उचित अछि ।

मनोरंजन ओ आनन्दक उद्देश्यसँ गाओल जायवला गीत सब होइत अछि **तिरहुति, मान, झुम्मरि, बिरहा** इत्यादि । एहि गीतक संग समय ओ अवसरक प्रतिबन्ध नहि रहैछ ।

एहि ठाम ई स्मरणीय अछि जे उपर्युक्त वर्गीकरण सामान्य प्रकारक अछि । गानक समय, अवसर, गानकर्त्ताक रुचि ओ गीतक विषय वस्तुक उपयुक्तताक अनुसार सब वर्गक गीत अन्तःमिश्रित भऽ सकैत अछि ।

मैथिली लोकगीतक वैशिष्ट्य

मैथिली लोकगीतक किछु विशिष्टता सब अछि जकर उल्लेख आवश्यक अछि । मैथिलीक संस्कार-गीतक विभिन्न संस्कारक विधि सबमे वैह स्थान छैक जे स्थान वैदिक, स्मार्त्त ओ पौराणिक मन्त्र सभक छैक । कोनो विधि-सम्पादनमे जहिना मन्त्र पढ़ल जाइछ, तहिना ओहि विधिक हेतु गीतक गान सेहो आवश्यक अछि । जेना, उपनयनमे एक स्थितिमे वटुक घरक मातृवर्गसँ भिक्षाक याचना करैछ । मन्त्रक पाठ कऽ कहैछ– **भवती भिक्षां देहि**। एहि पर **भीखिक गीत** होइछ, तखन मातृवर्ग वटुककेँ भीख दैछ । मैथिली लोकगीतक मन्त्रत्वक ई गरिमा चिरकालसँ मान्य अछि जकरा नव चाकचिक्यहुमे मान्यता प्राप्त छैक ।

मैथिली लोकगीतक किछु प्रकारकेँ छोड़ि प्रायः समस्त गीत महिला लोकनिए द्वारा गाओल जाइछ । निर्गुण प्रभेदकेँ छोड़ि समस्त संस्कार गीत पर जेना महिला वर्गहिक एकाधिकार मानल जाइछ । पुरुषवर्ग **नचारी, महेशवानी, विष्णुपद, निर्गुण, विरहा** इत्यादि गबैत छथि । **भाओ**केर गीत पुरुषहि गबैत छथि । समैया गीत, भक्तिगीत ओ मनोरंजक गीत महिला पुरुष दुहू स्वेच्छासँ गाबि सकैत छथि । जन्मोत्सवक अवसर पर **पमरिया** सब जन्मसंस्कारक गीत सब नाचि कऽ गबैत अछि जे सामान्यतः स्त्रीद्वारा गेय अछि ।

मैथिली लोकगीतक गान समूहमे होइत अछि । समैया गीत तथा भक्ति परक गीतमे **नचारी, महेशवाणी, साँझ, पराती, विष्णुपद** एकसरहु गयबाक परिपाटी अछि । जाँत पर गाओल जायवला गीत **लगनी** दुइ गोट महिला मीलि कऽ साधारणतः गबैत अछि । **गोदना गीत** एकसरे गाओल जाइत अछि । **चुमाओन गीत** ओ **बटगबनी** ठाढ़ भऽ कऽ वा बाट चलैतमे गेय अछि । सामूहिक गान-पद्धति मैथिली लोकगीतक एकटा महत्त्वपूर्ण विशेषता थिक ।

मैथिली लोकगीतक गान-मुद्रा

मैथिली लोकगीतक गानक किछु मुद्रा सेहो अछि । नटुआ-पमरिया सब नृत्य सहित लोकगीतक गान करैत अछि तँ शिर, आँखि, हाथ ओ चरणक विभिन्न मुद्रा, संकेत ओ गतिसँ गीतक भावकेँ व्यक्त करैत अछि । अभिव्यक्तिक एहि स्थितिकेँ **बतान** कहल जाइछ । पुरुष जखन **विरहा, लोकगाथा** वा **भाओ-भगति-मनुहारि** गीत तार स्वरमे गाबऽ लगैत छथि तँ साधारणतः बामा हाथक तरहत्थी बाम कान पर राखि लैत छथि । केओ-केओ दहिनो हाथक उपयोग करैत छथि । स्त्रीगण जखन गबैत छथि तँ दहिना (कखनहुँ बामा) हाथ मुँह पर रखैत

छथि जाहिमे मध्यमा आङुर ओ औंठासँ बनल वृत्त पर ठोड़ी (दाढ़ी) टेकल रहैछ आ तर्जनी उपरका ठोरक ऊपरमे रहैत छनि । एहिसँ भासक गानमे स्वर-लय पर नियन्त्रण रहैछ ।

लोकगीत-गान सम्बन्धी शब्दावली

मैथिली लोकगीतक गानसँ सम्बद्ध कतोक विशिष्ट शब्द सभक प्रयोग देखल जाइछ । एकरा सबकेँ भास सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावली कहल जा सकैछ । **राग-भास** ओ **लूरि-भास** अत्यन्त प्रचलित सहचर शब्द अछि । एहिमे द्वन्द्व समास अछि । अतः राग-भासमे, भासकेँ रागक समकक्ष मानल जयबाक अवधारणा व्यंजित होइछ । **लूरि-भासमे** भासक समानता वा समकक्षता, मिथिलाक पारम्परिक शिल्पकला ओ ललित कलाक संग व्यंजित होइछ । **गीत-नाद** सेहो प्रचलित सहचर शब्द थिक । एकर लाक्षणिक प्रयोग उपनयन-विवाहादि अवसरक भाव व्यक्त करबाक लेल होइछ जकर भान गीतादि सुनलासँ होइछ । परन्तु मूलतः एहि सहचर शब्दमे **गीत** शब्द-प्रबन्धक अर्थ ओ **नाद** संगीत शास्त्रमे परिभाषित **नाद** अथवा **धातु** शब्दक अर्थ द्योतित करैत अछि । एकटा और सहचर शब्द अछि **आहे-माहे** । एकर प्रयोग **चतकार** (मोहावरा)क रूपमे बहाना करब, प्रकारान्तरेँ अस्वीकार करब अथवा प्रयोज्य प्रसंगसँ अवान्तर गप्प करबाक अर्थमे होइछ । परन्तु मूलतः ई शब्द भास-गानमे आलापक हेतु प्रयुक्त भास-पूरक **आ-हे** ओ गोसउनिक गीतमे प्रयुक्त भास-पूरक **मा-हे** थिक । **आलाप** शब्दसँ विशेषण बनल अछि **अलापी** जकर अर्थ होइछ छोटो बातकेँ वा छोटो सन दुखकेँ बहुत बढ़ा कऽ कहनिहार (विशेषतः स्त्रीगण) । एहि शब्दक आधार पर एकटा कहबीयो अछि– **अलापी माउगिकेँ नओ मनक बुलाकी ।**

मिथिलामे कोनहु संस्कारसँ पूर्व ओहि निमित्त कोनो कार्य कयल जाइछ, तँ ओहि अवसर पर **शुभ** शब्दपूर्वक मंगलगीत गाओल जाइछ । एकरा **सुभे सुभे करब** (शुभ शुभ करब) कहल जाइछ । **सुभे-सुभे लोकगीतक गानक** एकटा विशिष्ट औपचारिकता थिक । ई मन्द्र स्वर ओ विलम्बित लयमे गाओल जाइछ–

सू (सो) - भए - लए - हे (शुभ लए हे)
सू (सो) - भए - ला - ई - हे
सू (सो) - भए - का - ई - लए - हे (शुभ कए लए हे)

पूर्व कालमे प्रायः **शुभ मंगल देहि** पदक सेहो प्रयोग होइत छल । मैथिल ब्राह्मणक एक वर्गमे एखनो ई चलैत अछि जकरा **मंगलदेइ/दए/दायि** कहल जाइछ । आब चलऽ लागल अछि– **ए-ल-ई-सु-भ-के-ल-ग-न-मा-सु-भे-हे-सु-भे** । सुभे-सुभे पदक अन्तिम वर्णक स्वर, स्वर-सप्तकक जाहि सूर पर समाप्त होइत छैक, ओही सूरसँ ईप्सित गीत आरम्भ कऽ देल जाइत छैक ।

शास्त्रीय गीत-गान कयनिहारकेँ **गबैया** कहल जाइछ । मुदा लोकगीत ओ लोकगाथा गौनिहार पुरुषकेँ **गितहर** कहल जाइछ । गीत गौनिहारि स्त्रीगणकेँ **गाइनि/गितगाइनि/गितहारि** कहल जाइछ । कोनो गाइनि द्वारा आगाँ भऽ कऽ गीत-गान आरम्भ करब **गीत उठायब** होइत अछि । अन्य गाइनि द्वारा ओकर अनुसरण करब **सङ पुरब / सङ देब** होइछ । गान-क्रममे कोनो गाइनि द्वारा विराम लेब **दम धरब** होइछ।

स्वरमे कर्कशता गानक अवगुण होइछ । एहन कर्कश स्वरकेँ **फट्ठा सन स्वर** कहल जाइछ । गानमे पूर्ण विवृत स्वर प्रयत्न पूर्वक नहि उच्चरित करब **ठोँठ जाँति कऽ गायब** कहल जाइछ । एकर विपरीत **कण्ठ फोलि कऽ गायब** होइत अछि । भासक नियमित गतिसँ अधिक द्रुतलयमे गायब **हबैया लूटब** कहल जाइछ । **हबैया** प्राय: सामगानक एक गोट स्तोभ **औहोवाक** अवशेष थिक । गान स्वरमे प्रकृत्या तीव्रता ओ झंकारक गुणकेँ **टाँसी** कहल जाइछ । अकस्मात् तार स्वरमे वा उच्च स्वरमे गान आरम्भ करब **टाहि/टाहि मारब** कहल जाइछ । तारस्वरमे वा उच्चस्वरमे भासक नियमित स्वरूपक गान **टहंकार** होइछ । आडम्बर पूर्वक गानकेँ प्रशंसा ओ व्यंग्य दुहूमे **टोप-टहंकार** कहल जाइत अछि ।

भास-गानमे एक वर्णक स्वर-कर्षणकेँ अग्रिम वर्णक उच्चारण धरि सातत्य बनौने रहब **रेघायब** कहल जाइत अछि । गायनक एहि क्रियाक वार्त्तालापक गद्यमे प्रयोग दोष मानल जाइत अछि । **रेघायब शब्द** वस्तुत: स्वर-सप्तकक नामक मुण्डाक्षर **रे** (ऋषभ) ओ **ग** (गान्धार) केर योगसँ बनल नामधातु थिक जकर विकासक्रम अछि– **रे-ग > रे-घ रे >घ् > रेघायब** । भास-गानमे दुइ वर्णक मध्य जे स्वर-सातत्य रहैछ तकरा संगीत शास्त्रक शब्दावलीमे **अवग्रह** कहल जाइछ । गाइनि लोकनि एहि अवग्रह स्वरमे कम्पन वा आन्दोलन उत्पन्न कऽ दैत छथि जाहिसँ सूक्ष्म स्वर-कणक सृष्टि भऽ जाइछ । आन्दोलन वा कम्पन उत्पन्न करबाक क्रिया **घहरायब** होइत अछि । रंजकताक सीमा धरि **घहरायब** गान-वैशिष्ट्य होइछ परन्तु औचित्य-सीमासँ अधिक भेला पर ओ गान-दोष भऽ जाइछ । तेँ **घहरायब** गान-गुण ओ गान-दोष, दुहूक हेतु प्रसंगानुसार प्रयोग भेल करैत अछि ।

होरी-फगुआक गीत ओ भाओ-भगति-मनुहारि गीतक । सवाद्य गान जखन तीव्रतम गति ओ लयमे पहुँचि जाइछ तँ ओहि स्थितिकेँ **धमाउर** कहल जाइछ । कीर्त्तन इत्यादि मे एहन तीव्र स्थितिकेँ **चलती** कहल जाइछ । चलतीक स्थिति उत्पन्न करबा क्रिया **झमकायब** होइछ । झमकयबाक क्रियासँ सम्पन्न कीर्त्तन **झमकौआ** कहल जाइछ । मिथिलामे उत्सवादि अवसर पर आयोजित संगीत सभा(मोफिल-महफिल)मे श्रोता लोकनि गबैयासँ अनेक प्रकारक **चीज** सुनबाक अभिरुचि देखबैत छथि, से दुइ कोटिक होइछ, **पक्की** ओ **कच्ची** । **पक्की** थिक शास्त्रीय राग आ कच्ची थिक लोकसंगीतक विभिन्न भास ।

मैथिली लोकगीत ओ वाद्ययन्त्र

वाद्ययन्त्रक प्रयोगक दृष्टिसँ सेहो अन्यप्रान्तीय लोकगीतक अपेक्षा एतऽ भिन्नता देखल जाइछ । पूर्वहि कहल अछि जे मैथिली लोकगीत मुख्यत: महिलागणक सामूहिक गानक रूपमे सम्पादित होइत अछि । हिनका लोकनिक गानमे कोनहु प्रकारक वाद्ययन्त्रक प्रयोग नहि होइछ । केवल **लगनी** गीतमे **जाँतक ध्वनि** तथा छत पिटबाकाल **थापीक ध्वनि** वाद्यध्वनिक पूरक होइछ । अवश्ये पुरुषद्वारा सामूहिक वा एकल रूपमे गाओल जायवला गीतमे वाद्ययन्त्रक प्रयोग होइत अछि । एहि सबमे पारम्परिक वाद्ययन्त्र अछि– **मानरि, मृदंग, पखाओज, ढोलक, ढोलकी, डफला, डम्फा, खुरदक (ढोलपिपही, बसुली) खजुरी, करताल, चुटकुल, मजीरा, झालि, ओरिनी, एकतारा, सरंङी, हुड़ुक** इत्यादि । वर्णरत्नाकारमे पन्द्रह गोट वाद्ययन्त्रक उल्लेख अछि जाहिमे किछु एखनो चीन्हल जाइछ मुदा किछुकेँ चीन्हब सम्भव नहि ।

लोकगीतक गान-पद्धति

गान-पद्धतिक दृष्टिएँ सेहो मैथिली लोकगीतक अपन विशेषता अछि, विशेष रूपसँ महिला लोकनि जे गीत गबैत छथि, ओहिमे प्रत्येक वर्ण बिकछायल रहैछ । प्रत्येक वर्णक उच्चारण गुरु वा प्लुत होइछ । उदाहरणार्थ गोसाउनिक गीतक एक गोट चरण द्रष्टव्य–

कमल फूल देखि अइली हे गोसाउनि दूधहि चरन पखारि हे

। । । ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । । । । । । ऽ । ऽ

एहि चरणमे 19 + 13 = 32 मात्रा अछि । परन्तु एकरा गयबा काल एकर रूप भऽ जायत–

कऽ – मऽ – लऽ फू – लऽ दे – खी अऽ – ई – ली हे गो–सा–ऊ–नी,

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ3 ऽ ऽ ऽ ऽ3

दू–धऽ – ही चऽ – रऽ – नऽ पऽ – खा – री हे

ऽ3 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ3

अर्थात् 32+22 = 54 मात्राक छन्द बनि जाइछ । गाइनिगणक गयबाक अपन अपन ढंगक अनुसार एहिमे अन्तरो होइत अछि । परन्तु प्रत्येक वर्णक स्पष्टता ओ गुरुता अक्षुण्ण रहैत अछि । अन्तर होइत अछि दीर्घ वर्णकँ प्लुत करबामे । जेना उपर्युक्त हे, नी, दू इत्यादिमे प्लुत नहियो भऽ सकैछ तथा कोनो दोसरहि दीर्घ वर्णकेँ प्लुत उच्चारण भऽ सकैछ । कतोक विद्वानक अनुमान छनि जे एहि पद्धतिमे वैदिक सामगानक पद्धतिक अवशेष सुरक्षित अछि ।

सामगान ओ मैथिली लोकगीत

सामगान-पद्धतिसँ मैथिली लोकगीतक गान-पद्धतिक, विशेषतः महिलावर्ग द्वारा गाओल जायवला गायन-पद्धतिक तुलना कयला पर अदभुत साम्य देखल जाइत अछि ।

सामगानक पाँच गोट भक्ति वा विभाग होइत छल– **प्रस्ताव, उद्‌गीथ, प्रतिहार, उपद्रव** ओ **निधन** । एहिमे एकटा मुख्य **उद्‌गाता** होइत छल आ किछु **उद्‌गाता** जे भिन्न -भिन्न खण्डक गान करैत छल **प्रस्तोता, प्रतिहर्त्ता, उपगाता** कहल जाइत छल । सामगायककेँ श्वास लेबामे अथवा एक खण्डक गानक पश्चात् अग्रिम खण्डक गानक मध्यवर्ती उन्तरालमे सामगानक स्वर-सातत्य खण्डित भऽ जयबाक सम्भावना छल जे सामगानकेँ दूषित कऽ सकैत छल । अतः एकर परिहार हेतु तीन गोट उपगाता रहैत छल जे निरनतर मन्द्र स्वरमे **हो** अथवा **ओम्** ध्वनि द्वारा संगति कयल करैत छल । एकरा **स्वरभरण** कहल जाइत छल ।

मैथिली लोकगीतक सामूहिक गानमे स्वरभरण ओ गान-सातत्यक अनायासे निरन्तर निर्वाह होइत रहैत अछि । मिथिलामे संस्कारादि अवसर पर गाओल जायवला गीतक गानकालमे खंडित होयब, विस्वरता अथवा भसिआयल भास नीक नहि, दोषे मानल जाइछ । एहन भेला पर ओहि गीतक गान छोड़ि दोसर गीत उठा देल जाइछ । परन्तु सामूहिक गानक कारणे एहि त्रुटिसँ रक्षा होइत छैक । सामगानमे उद्‌गाता, प्रस्तोता, प्रतिहर्त्ता ओ उपगायकक जे फराक-फराक कर्त्तव्य छल से एहि ठाम सामूहिक बनि गेल ।

सामगान ऋचापर आश्रित होइत छल । जाहि मूल ऋचापर सामगान होइत छल तकरा **सामयोनि मन्त्र** कहल जाइत छल । सामयोनि मन्त्रकेँ मूलरूपक सुरक्षा सहित

गानानुकूल बनयबाक निमित्त संगीतानुकूल किछु परिवर्त्तनक अपेक्षा होइत छल । एहि प्रकारक कयल जायवला संगीत-विकार छओ प्रकारक होइत छल— 1. **विकार** 2. **विश्लेषण** 3. **विकर्षण** 4. **अभ्यास** 5. **विराम** ओ 6. **स्तोभ** ।

सामगानक क्रममे पदक अक्षरक उच्चारणमे यत्किंचित् परिवर्त्तन होइछ तकरा **विकार** कहल जाइछ । जेना **अग्न** शब्दकेँ सामगानमे **ओग्नायि** उच्चारण कयल जाइत छल । मैथिली लोकगीतमे कतहु कतहु एकर उदाहरण स्वरभक्तिक रूपमे भेटैत अछि, जेना— श्रीरामकेँ **सी-री-रा-मऽ**, लक्ष्मणकेँ **लऽ-छू-मऽ नऽ**, माथाकेँ **मऽ-थऽ-हा**— दूभिकेँ **दू-बऽ-ही**, गान-कालमे उच्चरित कयल जाइछ । यद्यपि एकर उदाहरण बड़ थोड़, सेहो विशेषतः संयुक्त वर्ण ओ शब्दक मध्य ओ अन्तमे स्थित दीर्घ स्वरयुक्त महाप्राण वर्णमे भेटैत अछि । पूर्वमे विवेचित **सुभे-सुभे** गानमे एहि विकारक नीक दर्शन होइछ ।

कोनो पदक अक्षरक पृथक्करणकेँ **विश्लेषण** कहल जाइत छल । ह्रस्व वर्णक स्थान पर दीर्घ ओ दीर्घ स्वरक स्थान पर प्लुत उच्चारण सामगानमे भेल करैत छल जकरा **विकर्षण** कहल जाइत छल । दुहू विकार सम्मिलित रूपमे मैथिली लोकगीतक गानमे अनिवार्य रूपसँ देखल जाइत अछि । बल्कि ई मैथिली लोकगीतक गानक सबसँ प्रमुख वैशिष्ट्य थिक । एकर एकटा उदाहरण पूर्वहि देल गेल अछि ।

सामगानमे मूल ऋचा अथवा **सामयोनि मन्त्रक** किछु पदक आवृत्ति कयल जाइत छल जकरा **अभ्यास** कहल जाइत छल । ई पदकेँ दोहरायब वा पुनरुच्चारण सेहो कहल जा सकैत अछि । मैथिली लोकगीतमे ई प्रवृत्ति अछि आ से विशिष्ट रीतिक अछि । विभिन्न प्रकारक गीतक गानमे पदक आवृत्ति विभिन्न रीतिक होइत अछि । कतोक गीतमे पदक आवृत्ति गीत-प्रबन्धहिक अंग रूपमे विन्यस्त रहैत अछि । विद्यापतिक एकटा **झुम्मरि** गीतमे एहि आवृत्तिक नीक निदर्शन भेटैत अछि, यथा—

नगरक वानिनि ओरे पुछ हरि पुछा किए किए हाट बिकाए ।
बीकए हिर मनि मानिक ओरे अनुपम अनुपमा नाना रतन पसार । इत्यादि ।

पुछ-पुछा, अनुपम-अनुपमा सदृश पदक आवृत्तिक निर्वाह समग्र गीतमे कयल गेल अछि, जेना- **सिरिफर-सिरिफला, आञ्चर-आञ्चरा, गाबिह-गाबिहा, महेसर-महेसर** । एहिमे आवृत्त पदमे स्वर-विकार सेहो लक्षित करबा योग्य अछि ।

एकटा सोहर गीतक उदाहरण अछि—

पुरइन कहय हम **पसरब** अपने रङ **पसरब** हे
ललना रे **पसरब** देवकीक आङन अपने रङ **पसरब** हे

एहिमे **पसरब** पद प्रबन्धक अंगीभूत आवृत्ति थिक । एही रीतिएँ सौंसे गीतमे **चतरब, बाजब, रङब** पदक आवृत्ति होइत अछि ।

मूड़न, उपनयन ओ विवाह संस्कारमे गेय, पितरक गीत, विवाहमे वर-कनियाँ, वर-कनियाँक माता-पिता, पितामह-पितामही इत्यादिक नामोल्लेख पूर्वक कतोक प्रभेदक गीत गाओल जाइछ । जाहिमे चरणक आवृत्ति होइत अछि । जटा-जटिन नाट्य गीतमे एकहि चरणक वारंवार आवृति होइत अछि । एहि आवृत्ति वला चरणमे दू तरहक पद होइत अछि,

एकटा **स्थिर पद** ओ दोसर **चलित पद** । जाहि पदक यथावत् आवृत्ति होइछ से भेल **स्थिर पद** एवं जे पद बदलि देल जाइछ से भेल **चलित पद** । एकर निदर्शनार्थ द्रष्टव्य अछि–

कओने बाबा छुरिया गढ़ाओल हे मढ़ाओल हे ।
कओने आमा लेल जन्मकेश होरिला जगमूड़न हे ॥
(अपना/फल्लाँ) बाबा छुरिया गढ़ाओल हे मढ़ाओल हे ।
(अइहब/फल्लाँ) आमा लेल जन्मकेश होरिला जगमूड़न हे ॥

एहि ठाम **कओने** ओ **फल्लाँ** (व्यक्ति–नाम) चलित पद थिक, शेष पदक यथावत् आवृत्ति भेलासँ **स्थिर पद** कहल जायत । कतोक गीतक प्रभेद एहन अछि जाहिमे भासक अनुरूप खास खास चरणक वा चरण–खण्डक आवृत्ति कयल जाइत अछि । **स्नेहलताक** रचित ओठंगर भासक गीत एही रीतिमे गाओल जाइत अछि–

आजु धनमा कुटायब चारू बरबासँ । जेहि घुमि फिरि अयला अवधबासँ ॥
की बहिया की नृपकेर बालक, विवश भेला व्यवहरबासँ ।

गायनमे एहि गीतकरूप भऽ जाइत अछि–

आजु धनमा कुटायब चारू बरबासँ ।
चारू बरबासँ सँ, हे चारू बरबासँ । (आवृत्ति)
जेहि घुमि फिरि अयला अवधवासँ ॥
की बहिया की नृपकेर बालके विवश भेला व्यवहरबासँ ।
आहे विवश भेला व्यवहरबा सँ । (आवृत्ति)

पदक एहि प्रकारक आवृत्तिकेँ सामगानक **अभ्यास** नामक विकारक अवशेष वा रूपान्तर मानल जा सकैत अछि ।

सामगानमे गान–सौकर्यक हेतु कोनो–कोनो पदक मध्य शब्दच्छेद कऽ किंचित् विराम कयल जाइत छल । एहिसँ साम–गायककेँ श्वास लेबामे सौविध्य होइत छल । मैथिली लोकगीतक गायनमे जेँ प्रत्येक वर्णक उच्चारण फराक–फराक होइछ, तेँ विरामक प्रयोजन सहजहि सिद्ध भऽ जाइछ । तथापि गानकालमे कोनो–कोनो पदमे विराम कऽ देल जाइछ । परन्तु सामूहिक गानक कारणेँ ओ लक्षित नहि भऽ पबैत अछि ।

सामगानमे **स्तोभक** प्रयोग सबसँ महत्त्वपूर्ण भाग मानल जाइत अछि । **स्तोभ** थिक ऋक् अर्थात् सामयोनिमन्त्रक अतिरिक्त अवान्तर वर्णक प्रयोग । एहिसँ गानालापमे सुविधा ओ रंजकताक सन्निवेश होइत छल । सायण **स्तोभक** व्याख्या करैत कहने छथि–

'अधिकत्वे सति ऋग्विलक्षणवर्णस्तोभः ।'
'प्रकृतार्थानन्वितं कालक्षेप मात्र हेतुं शब्द राशिम् ।'

एकर तात्पर्य ई जे ऋक्सँ इतर वर्ण ओ प्रकृतार्थसँ असम्बद्ध तथा केवल कालक्षेपक लेल जाहि शब्दराशिक प्रयोग सामगानमे कयल जाइत अछि, सैह स्तोभ थिक । स्तोभ तीन प्रकारक कहल गेल अछि– **वर्णस्तोभ, पदस्तोभ** ओ **वाक्यस्तोभ** । स्तोभ सब छल– **अथ, इह, ई, ऊ, ए, औहाइ, औहोवा, हाइ, हाउ-हाउ, हिं, हुँ** इत्यादि । मैथिली लोकगीतमे सामगानक स्तोभक प्रतिरूप, प्रकृतार्थसँ भिन्न वर्ण ओ शब्द–राशिक प्रयोग प्रचुर परिमाणमे

होइत अछि । एहि शब्द-राशिसँ कोनो गीतक गान-शैली अर्थात् भासक सृष्टि होइत अछि। अतः एहन शब्द-राशिकेँ **भास-सर्जक**, **भास-निर्धारक** अथवा **भास-पूरक** अभिधान देल जा सकैत अछि । एहि **भास-पूरक** वर्ण वा शब्द-समुच्चयक प्रयोग गीतक चरणक आदि, मध्य, अन्त वा दुइ चरणक मध्य होइत अछि । एहिसँ गीतक प्रकृत अर्थमे कोनहु योगदान नहि होइछ परन्तु गायककेँ **भास-पूरक** शब्दक आलाप करबाक अवधिमे अग्रिम चरणक स्मरणक अवकाश भेटि जाइछ । भास-पूरक वर्ण वा शब्द-समुच्चयसँ सहजहि बोध भऽ जाइछ जे कोनो गीत कोन प्रभेदक थिक, जेना-लगनीमे **रे की**, **नारे की**; सोहरमे **ललना**, **ललना रे**; बटगबनीमे **सजनी**, **सजनी गे**, **सखि हे**; चैतावरमे **हो रे**, **होहो रे**, **हो रामा**; बरहमासामे यौ; तिरहुति, मान इत्यादिमे रे, **ओ रे**, **माधव**, **हरि हे**; नचारी-महेशवानीमे **हे**, **आहे**, **आगे माइ**, **माइ हे**, समदाउनिमे **आ आ रे** इत्यादि । लोकगीतक ई भास-पूरक वर्ण-शब्द साहित्यिको गीतमे समाविष्ट देखल जाइत अछि ।

मैथिली लोकगीतक भास

मैथिली लोकगीतक गानमे स्वर-संयोजन, ओकर क्रम-विन्यास तथा आरोह-अवरोहक समेकित स्वरूपकेँ **भास** कहल जाइत अछि । मैथिली लोकगीतक प्रत्येक प्रभेदक अपन-अपन सुनिश्चित भास होइत छैक । केवल भासहिक आधार पर कोनहु लोकगीत प्रभेदकेँ सरलतासँ चीन्हल जा सकैत अछि । एहि भास सभसँ गीतक केन्द्रीय भावक प्रभाव मानस-जगतकेँ सहजहि प्रभावित कऽ दैत अछि । भासहिसँ आनन्द, उल्लास, बिछोह-विषाद इत्यादिक भाव उदित भऽ जाइछ । **कोबर गीतक** भासमे मिलनजन्य औत्सुक्य झलकैत अछि, तँ **समदाउनि-उदासीक** भास प्रिय व्यक्तिक क्रमशः दूर होइत जयबाक विषाद उत्पन्न करैत अछि। **सोहर गीतक** भासमे सन्तान प्राप्तिक उछाहक आभास भेटैछ, तँ **लगनी**, **चैतावर**, **बरहमासा**मे चिरविरहक व्यथाक भाव उदित होइछ ।

'भास' शब्दक व्युत्पत्ति

भास शब्दक व्युत्पत्ति कोन मूल शब्दसँ भेल से अद्यापि स्पष्ट नहि भेल अछि । संस्कृतक तीन गोट शब्द-**भाषा**, **भाष्य** ओ **भास**सँ मैथिली **भास** शब्दक व्युत्पत्ति संभावित भऽ सकैत अछि । परन्तु संस्कृत कोषमे एहि शब्द सभक कोनो एहन अर्थ नहि भेटैत अछि जकरा गानक अर्थमे **भास**सँ जोड़ल जा सकय । अवश्ये वी.एस्. आप्टे **भाष्य** शब्दक एकटा अर्थ कहैत छथि- **सामान्य वा चलित भाषामे रचित कृति** । संगीत वा गानसँ एहि अर्थक कोनो सम्बन्ध नहि बैसैत अछि । किन्तु संगीत शास्त्रक प्राचीन वाङ्मयमे **भाषा** शब्दक प्रयोग रागादिक प्रकार विशेषक अर्थमे प्रयुक्त होइत देखल जाइछ ।

चतुर्थ शताब्दीमे मतंग द्वारा रचित **वृहद्देशीय** नामक संगीत विषयक ग्रन्थमे रागकेँ सप्तगीतिमे विभाजित कयल गेल अछि । एहिमे **ग्रामरागक** अन्तर्गत परिगणित पारम्परिक पाँच गोट प्रकार- **शुद्धा**, **भिन्ना**, **गौड़ी**, **बेसरा** ओ **साधारणी** कहि दुइ गोट और प्रकार कहल गेल अछि- **भाषा** ओ **विभाषा** । मतंगक मतानुसार ग्राम रागक गानक विभिन्न प्रकारे थिक **भाषा**, यथा- **ग्रामरागाणमेवालाप प्रकारा भाषा वाच्या** । **भाषा शब्दोऽत्र प्रकार वाची** । एकर अर्थ ई भेल जे संगीत शास्त्रमे **भाषा** शब्द गान सम्बन्धी विशेष अर्थक द्योतक छल ।

तेरहम शताब्दीमे शार्ङ्गदेव द्वारा रचित **संगीत रत्नाकर** ग्रन्थमे गान-रीतिकेँ दस वर्गमे विभाजित कयल गेल अछि– **ग्राम-राग, राग, उपराग, भाषा, विभाषा, अन्तर्भाषा, भाषांग, रागांग, उपांग** ओ **क्रियांग** । एहि ठाम **भाषा** शब्दक संगहि **विभाषा, अन्तर्भाषा** ओ **भाषांगमे** प्रयुक्त **भाषा** ध्यान देबा योग्य अछि । ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकरक **विद्यावन्त वर्णनमे** सोलह प्रकारक **गीत-प्रपञ्चमे भाषा-विभाषा** और **उपरिभाषाक** नाम सेहो गनौलनि अछि ।

मतंग, शार्ङ्गदेव ओ ज्योतिरीश्वर द्वारा कथित **भाषा** एवं **भाषा** शब्दसँ निर्मित यौगिक शब्द **विभाषा, अन्तर्भाषा, उपरिभाषा** एवं **भाषांग** संगीत विषयक कोन कोन अर्थक व्यंजक छल से स्पष्ट नहि होइछ, तथापि संगीतक गान पक्षक कोनो अर्थ विशेषक सूचक छल से स्पष्ट अछि । अतः हमर धारणा अछि जे मैथिली लोकगीतक विशिष्ट रीतिक गानशैलीक अभिधान **भास** प्राचीन संगीत शास्त्रमे प्रयुक्त **भाषासँ** व्युत्पन्न भेल अछि । **संगीत रत्नाकरमे राग** वर्गक अन्तर्गत बीस गोट रागक परिगणान कयल गेल अछि जाहिमे एक गोट अछि **भास**। एहि **भासमे** मैथिली लोकगीतक **भासक** प्राचीन स्रोत लक्षित कयल जा सकैत अछि ।

मैथिली लोकगीतक भास ओ विद्यापति

महाकवि विद्यापति मिथिलाक शास्त्रीय संगीत ओ लोक संगीतक क्षेत्रमे अभिनव प्रयोग द्वारा एकटा क्रान्ति आनि देलनि । ओ सामान्य जनमे प्रचलित विभिन्न **भासक** अनुरूप गीतरचना कयल तथा स्वयं अभिनव **भास** सभक परिकल्पना कऽ तदनुरूप अजस्र गीतरचना कयलनि जे कतेक लोकप्रिय भेल से कहबाक प्रयोजन नहि । म.म. परमेश्वरझा कहने छथि– **हुनक भाषा गीतक प्रचार मिथिलाक स्त्री पुरुष साधारणमे एतेक अछि जे ओकर निर्वचन हमरि लेखनीसँ होएब असम्भव । दैनिक वा प्रदोषकालिक शिवपूजामे कतेको स्त्री पुरुष हुनक महेशवा(णी)नी गीत गाबि परमानन्द सन्दोहक लाभ करैत छथि । विवाहकालमे हरगौरी विवाह सम्बन्धी हुनक गीत गयबाक रीति स्त्रीवर्गमे अधिक अछि तथा विवाहक वर्षमे जमाइक भोजन कालमे जे योग, उच्छती गीत गाओल जाइत अछि सेहो प्रायः हिनके पदावलीसँ विभूषित अछि । एहि देशमे तिरहुति (देशी) राग तथा कीर्तनिया नटुआक प्रचार हिनकहि समयसँ भेल** । (मिथिला तत्त्व विमर्श, पृष्ठ 182-83) ।

कीर्त्तिलताक प्रथम पल्लवमे विद्यापतिक गर्वोक्ति छनि–

बालचन्द विज्जावइ भासा । दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा ॥

विद्वान् लोकनि **भासाक** अर्थ भाषा ग्रहण करैत छथि । परन्तु हमर विश्वास अछि जे विद्यापति बोली-वाणीक अर्थमे **भासा** (भाषा)क प्रयोग नहि कयने छथि । अपितु हुनक तात्पर्य छनि नागर जनकेँ मुग्ध कयनिहार **देसिल बयना सब जन मिट्ठामे** रचित गीत-राशिक ओहि मधुर **भास** सबसँ जाहिमे ओ गीत सब गयबाक हेतु निबद्ध अछि, जे हुनका समयमे लोकसंगीतक रूपमे प्रचलित छल अथवा जकर सभक ओ परिकल्पना एवं सृष्टि कयने छलाह । जनिका काव्य ओ मैथिली काव्येतिहासक बोध नहि से भनहि विद्यापतिक काव्यक संगीत वा राग-भासक संग संयोगकेँ दुर्घटना मानथि, परन्तु ऐतिहासिक शुभ सत्य यैह अछि जे संगीत ओ राग-भासहिक दोला पर चढ़ि मैथिली काव्य गोसाउनिक सीरा-आगूसँ लऽकऽ सुदूर जनपदान्तर धरिक यात्रा कऽ चिरंजीवी भऽ गेल । ई विद्यापतिहिक गान-प्रतिभाक परिणाम थिक जे भासकेँ एक दिस जँ शिल्पकला सदृश एक गोट कला मानि **लूरिक संग**

राखल जाय लागल आ लूरि-भास सन सहचर शब्द बनल, तँ दोसर दिस भासकेँ रागक समकक्ष स्थान दल गेल जकर प्रमाण थिक राग-भास सन सहचर शब्द ।

भास ओ शास्त्रीय संगीत

मैथिली लोकगीतक भास सभ मिथिलाक शास्त्रीय संगीतकेँ सेहो प्रभावित करैत रहल अछि । संगीतशास्त्रानुसारी प्रसिद्ध राग-रागिणी सभ मिथिलामे प्रचलित लोकप्रिय भाससँ प्रभावित होइत रहल तथा एहि प्रभावक कारणे ओकर सभक रूप परिवर्तित भऽ गेल । एहि बातकेँ सतरहम शताब्दीमे लोचन उपाध्याय लक्षित कयलनि । ओ संगीत शास्त्रक अपन प्रसिद्ध ग्रन्थ **रागतरंगिणी**मे मिथिला देशीय प्रसिद्ध रागक विस्तारसँ परिचय देलनि अछि । ओ पन्द्रह गोट राग-भैरवी, बड़ारी, कौशिक, देशाख, रामकरी, ललिता, केदार, कामोद, श्रीराग, वसन्त, मालव, आसावरी, मलारी, भूपाली तथा गुजरीकेँ (जकर सभक उपभेदक संख्या 96 अछि) छत्तिस रागक अन्तर्गत मानितो लोचन मिथिलामे एकर भिन्न स्वरूपक निर्देश कयने छथि । हुनक मन्तव्य छनि जे ई राग सब तिरहुतमे विजातीय (विशिष्ट जातीय) गतिकेँ प्राप्त कयने अछि । यद्यपि ई सभ तिरहुतसँ भिन्न देशसँ तिरहुतमे भिन्न लयवला विशेष लक्षण युक्त होइत अछि तथापि एकर नाम एतहु वैह सब प्रसिद्ध अछि–

.......षट्त्रिंशद् राग मध्यगाः ।
तीरभुक्तौ विजातीयां गतिमासाद्य संस्थिताः ॥
तीर भुक्त्यन्यदेशेभ्यस्तीरमुक्तौ विलक्षणाः ।
स्वर भेदात् परं नाम्ना तेन तेनैव विश्रुताः ॥ (रागतरंगिणी,3/23,24)

लोचन एहि रागक स्वरूपक निर्धारण विद्यापति इत्यादि प्राचीन कवि द्वारा रचित मैथिली गीतहिक आधार पर निर्धारित कयलनि अछि । अवश्ये विद्यापति ओ अन्य प्राचीन कविक गीत-रचना पर लोकगीतक भाव, छन्द ओ भासक गम्भीर प्रभाव पड़ैत रहल अछि। ओकर भासक प्रभावसँ रागहुक स्वरूपमे परिवर्त्तन भेल । लोचन मिथिलामे प्रचलित विलक्षण गतिवला जाहि राग सभक मैथिली गीत-उदाहरण सहित परिचय देलनि अछि ओकर सभक गायकी-परम्परा विलुप्त भऽ गेल । ओकरा सबकेँ चीन्हब सम्भव नहि रहि गेल अछि । ओकर सभक निर्दिष्ट छन्द ओ तालक आधार पर ओकर गान-स्वरूपक अन्वेषण मैथिली लोकगीतक विभिन्न **भास**मे कयल जा सकैत अछि । उदाहरणार्थ, लोचन **माधवीय-वराड़ी**क निदर्शनमे विद्यापतिक प्रसिद्ध गीत उद्धृत कयने छथि–

ससन-परसँ खसु अम्बर रे देखल धनि देह ।
नव जलधर तर चमकए रे जनि विजुरी रेह ॥

एही छन्द पर विद्यापतिक **तिरहुति** भासपर गेय प्रसिद्ध गीत छनि–

सुतलि छलहुँ हम घरबा रे गरबा मोति हार ।
राति जखन भिनसरबा रे पहु आयल हमार ॥

कवीश्वर चन्दाझा अपन **मिथिला भाषा रामायण**मे एही छन्दक गीत देने छथि जकरा **माधवीय-वराड़ी** ओ **तिरहुति गीति**- दुहू अभिधान देने छथि । एहिसँ अनुमान कयल जा सकैछ जे **माधवीय वराड़ी** रागक गान-गति तिरहुति-भाससँ सादृश्य रखैत छल ।

एखनहुँ लोकगीतक कतिपय प्रसिद्ध ओ लोकप्रिय भासकेँ रागहि नामसँ अभिहित कयल जाइछ, यथा– राग तिरहुति, राग सोहर, राग समदाउनि, रागमलार इत्यादि । प्राचीन कीर्त्तनियाँ नाटकक अभिनेता, कथक इत्यादिक हेतु लोकगीतक प्रसिद्ध भासमे पटुता आवश्यक मानल जाइत छल । एखनहुँ कथक, नटुआ, पमरिया इत्यादि एहि भास ओ एहि भासपरक लोकगीत ओ साहित्यिक गीतक गान कऽ प्रशंसित होइत अछि । मिथिलाक प्रसिद्ध संगीत घराना ओ संगीतज्ञ–कलावन्त लोकनि सेहो शास्त्रीय रागपद्धतिक गानक संग भास–पद्धतिकेँ सेहो गान–वृत्तिक अनिवार्य अंग मानैत रहलाह अछि।

शिष्ट साहित्य पर लोकगीतक प्रभाव

मैथिली लोकगीत निरन्तर मैथिली साहित्यकेँ प्रभावित करैत रहल । महाकवि विद्यापति स्वयं लोकगीतक अनेक प्रभेदक साहित्यिक प्रयोग कयलनि । परवर्त्तीकालक **परिणय** विषयक नाटकमे विवाह–संस्कार विषयक ओ **कृष्णजन्म** विषयक नाटकमे जन्म– संस्कार विषयक लोकगीतक विषय–भास–छन्दक अनुकरण मूलक गीतक प्रयोग प्रचुर परिमाणमे भेल अछि । लोकगीतक विशिष्ट प्रभेद नचारी, महेशवाणी, रास, गोआलरी, झुम्मरि, सोहर, समदाउनि, उदासी, निर्गुण, परिछनि, चुमाओन, कोबर, तिरहुति, लगनी, चैतावर, मलार, बारहमासा इत्यादिक निरन्तर साहित्यिक प्रयोग विगत तीन–चारि शताब्दीसँ होइत रहल अछि। साम्प्रतिको मैथिली साहित्य लोकगीतक प्रभावसँ गुणवत्ता प्राप्त करबाक चेष्टा करैत रहल अछि । आधुनिक मैथिली साहित्यक अनेक विशिष्ट काव्य कृतिक प्रेरक पृष्ठभूमि लोकगीतहिक प्रभेद सब मानल जा सकैछ, यथा– आचार्य सुरेन्द्रझासुमन विरचित **साओन भादव,** श्रीचन्द्रनाथमिश्र अमर विरचित **ऋतुप्रिया** इत्यादि ।

मैथिली लोकगीतक दशा-दिशा

मैथिली लोकगीतक परिमाण ओ प्रकार अत्यन्त समृद्ध अछि । एकर अपन विशिष्ट गान– पद्धति रहल अछि । मिथिलाक शास्त्रीय संगीत ओ मैथिली साहित्यपर मैथिली लोकगीतक निरन्तर प्रभाव पड़ैत रहल अछि । लोकगीतक अनेक प्रभेद आब मैथिली साहित्यमे साहित्यिक विधाक रूपमे स्थापित भऽ गेल अछि । अवश्ये मैथिली लोकगीतकेँ समेटबाक प्रयास कयल गेल अछि किन्तु ओकरा सन्तोष जनक नहि कहल जा सकैछ । संग्रहकर्त्ता लोकनि मैथिली लोकगीत ओ शिष्ट साहित्यिक गीतक विभेदसँ सर्वथा अनभिज्ञ बूझि पड़ैत छथि तेँ लोकगीतक संग्रहमे विद्यापति ओ अन्यान्य कवि लोकनिक द्वारा रचित भास–परक गीत सबकेँ सेहो समाविष्ट कऽ लोकगीतक अवधारणाकेँ भ्रान्त बनबितहि छथि, संगहि मैथिलीक साहित्यिक गीत–परम्पराक गरिमाकेँ सेहो क्षरित करैत छथि । नवीन शिक्षा, सभ्यता, नवीन जीवन–पद्धति, शहरीकरण, रेडियो, सिनेमा, टी०वी०, पॉप म्युजिकसँ मैथिली लोकगीतक अस्तित्व शंकास्पद भऽ उठल अछि, तथापि ग्राम्य क्षेत्रक जनसमुदाय, विशेषतः महिला–समाज मैथिली लोकगीतक थातीकेँ जोगौने जा रहल अछि । मुदा से कतेक दिन !

[साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ओ मणिपुर स्टेट कला अकादेमी द्वारा इम्फालमे 15-17 जून, 1990मे आयोजित सेमिनार **फोक लिटरेचर इन ईस्टर्न इंडियन लैंग्वेजेजमे** पठित ।]

●

मैथिली लोककथा

पारिभाषिकी

कोनो यथार्थ वा कल्पना-प्रसूत घटना एवं परस्पर सम्बद्ध घटना-समूहक क्रमबद्ध विवरण **कथा** कहबैत अछि । कथा कहबाक उत्साह ओ सुनबाक औत्सुक्य मानव समाजक सहज प्रवृत्ति थिक जे सब कालमे, सब समाजमे सहज रूपमे विद्यमान रहल अछि । एहि प्रवृत्तिक सम्पोषणार्थ शिष्ट ओ लिखित साहित्यक रूपमे कथा-विधाक विकास भेल जकर स्रष्टा ओ भोक्ता साक्षर, शिक्षित ओ सुसंस्कृत जनसमुदाय रहल अछि । किन्तु सामान्य अशिक्षित एवं अभिजात संस्कारसँ विरहित जन-समुदायमे मुख-श्रुति-परम्परासँ रूढ़ रूपमे प्रचलित अजस्र कथा सब चल आबि रहल अछि ज़कर उद्‌भव कहिआ, कोना, ककरा द्वारा भेल, से सर्वथा अज्ञात अछि । ई कथा सब सामान्य जन-समुदायमे कोनो नदीक अनवरत अविच्छिन्न जलप्रवाह जकाँ कथन-श्रवण द्वारा एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ी धरि अबैत जा रहल अछि । एहने, मौखिक परम्परामे प्रचलित ओ शिष्ट-साहित्यिक कथासँ भिन्न कथा-समूह **लोककथा** कहल जाइत अछि ।

संसारक प्रत्येक जनपदक समाज़मे अपन-अपन लोककथा-समूह छैक जकर अभिव्यक्ति ओहि समाज सभक अपन-अपन मातृभाषामे भेल छैक ।

परस्पर सम्बद्ध घटना सभक शृंखलाकेँ **कथानक** कहब जे दुइ प्रकारेँ कहल जा सकैत अछि– **लय सहित गान** द्वारा तथा स्वाभाविक **कथ्य रूपमे वाचन** द्वारा । गान द्वारा जे कथानक विवृत होइत अछि से **लोकगाथा** कहबैत अछि आ जे कथानक स्वाभाविक बतियानक शब्दमे कहल जाइत अछि से **लोककथा** कहबैत अछि । एतऽ मैथिलीक गद्यात्मक लोककथा पर विचार करबाक प्रयत्न कयल गेल अछि ।

पूर्वकालमे लोककथा मैथिलीमे **कहिनी, कहानी, कथा, वृत्त, वृत्तान्त** ओ **हाल** कहबैत छल । सम्प्रति **कथा, खिस्सा, खिस्सा-पिहानी, कथा-पिहानी** कहल जाइत अछि। मैथिलीमे कथानकक साहित्यिको संरचना कथा कहबैत अदि। दोसर दिस लोकसाहित्यक क्षेत्रमे मौखिक परम्पराक ओहन कथानक कथा कहबैत अछि जाहिमे आस्था ओ धार्मिकताक भावना सम्पुटित अछि । मैथिलीमे **कथाक** हेतु दोसर पर्यायवाची शब्द प्रचलित अछि **खिस्सा**। ई अरबी भाषाक शब्द **किस्सः** केर तद्‌भव रूप थिक । **खिस्सा** लोकप्रचलित कथा अथवा लोककथाक अर्थमे विशेष रूढ़ देखना जाइत अछि । एहि ठाम लोकप्रचलित समग्र कथारूप लेल **लोककथा** अभिधाने उपयुक्त अछि ।

मिथिलामे लोककथा

मिथिला दर्शन ओ विभिन्न शास्त्रक चिन्तन-मननक भूमि रहल अछि । एहि ठामक शिक्षित जनक मनोरंजन तँ काव्य-शास्त्र-विनोदसँ (**काव्य-शास्त्र-विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्**) होइत रहलनि । परन्तु सामान्य निरक्षर जन-समुदायक मनोविनोद वा नीति-उपदेशक साधन लोककथाहिक श्रवण-कथन रहल अछि ।

महाकवि कालिदास मेघदूतमे मेघकेँ पथ-निर्देश दैत कहने छलथिन जे जखन अहाँ उज्जयिनी पहुँचब तँ ओतऽ उदयनक कथा कहनिहार गामक वृद्ध लोकनिकेँ देखब **–उदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्** । ई **कथाकोविद ग्रामवृद्ध** जन उज्जयिनिए नहि, भारतक प्रत्येक ग्राममे पूर्वहु छलाह आ एखनहु छथि । मिथिलहुमे ग्रामक वा परिवारक वृद्ध-वृद्धा लोकनि विशेष रूपसँ परम्परया लोककथा कहैत आबि रहल छथि । लोककथा कहबामे पटु लोक मैथिलीमे **कथक्कर** (पुरुष), **कथक्करि** (स्त्री), **खिसक्कर** (पुरुष), **खिसक्करि** (स्त्री) कहबैत अछि । खिस्सा कहबामे पटु स्त्री **खिसनी** कहल जाइछ । एहि शब्दक प्रयोग एक एक गोट फकड़ामे देखल जाइछ– **खिस्सा कहय खिसनी सुन भाइ मकड़ा** ।

मिथिलामे कथक्कर लोकनि मनोविनोदक हेतु कहल गेल लोककथाक समाप्ति एकटा फकड़ाक संग करैत छथि– **खिस्सा खतम, पैसा हजम** ।

एहिसँ अनुमान होइछ जे अतीत कालमे मिथिलामे खिस्सा कहब किछु गोटेक व्यवसाय छल होयत जे पारिश्रमिक लऽ कऽ लोकक मनोरंजन हेतु खिस्सा कहैत छल होयत। किन्तु सम्प्रति वृत्ति रूपमे खिस्सा कहनिहार नहि देखल जाइत अछि ।

गाम सबमे प्रौढ़ ओ वृद्ध पुरुष-स्त्री सब अवश्य छथि जे लोककथाक भंडार मानल जाइत छथि, जे राति-राति भरि रंग-बिरंगक लघु, दीर्घ वा अतिदीर्घ लोककथा सब अनवरत कहैत रहि जाइत छथि । महिला लोकनिक हेतु विभिन्न धार्मिक व्रतक कथाक वाचन महिलहि द्वारा होइत अछि । मिथिलाक प्रत्येक गाममे ओ गामक प्रत्येक टोलमे दू-एकटा एहन वृद्धा वा प्रौढ़ा महिला अवश्य रहैत छथि जे विभिन्न पाबनि ओ व्रतमे विहित व्रतकथा सभ कहैत छथि । परिवारक वृद्धा महिला सदस्य छोट-छोट बच्चा सबकेँ मनोरंजक ओ उपदेशात्मक बालकथा सब सुनबितहि छथि । ओ बच्चा सब अपन नानी-दादीसँ सूनल-सीखल नव कथा अपन बालसखा सभकेँ रुचिपूर्वक सुनबैत अछि । मिथिलामे सामान्य रूपसँ अधिकांश व्यक्तिकेँ दू-चारि गोट निदर्शनात्मक लोककथा, किंवदन्ती वा हास्य-व्यंग्यमूलक चुटुक्का स्मरण रहितहि छैक जकरा प्रसंगानुकूल सुनाओल करैत अछि । मिथिलामे श्रीमद्भागवत, रामायण, महाभारत एवं अन्य पुराणक संकल्पपूर्वक श्रवण धार्मिक कृत्य मानल जाइछ । एकर सभक वाचन कयनिहार व्यास कहबैत छथि । व्यास उपर्युक्त ग्रन्थ सभक अर्थसहित वाचन करैत छथि आ बीच-बीचमे प्रसंगकेँ स्पष्ट करबाक लेल छोट-छोट उपदेशात्मक ओ रोचक लोककथा अवश्य कहैत छथि ।

मैथिली लोककथा कहबा-सुनबाक परिपाटी विशेषरूपसँ गाम-देहातमे देखल जाइत अछि । दिन भरिक परिश्रमसँ थाकि कऽ किसान-मजदूर रातिमे विश्राम हेतु एकत्र होइत अछि, तखन मनोरंजन हेतु राजा-रानी, राजकुमार-राजकुमारी, देवता, दैत्य, भूत, पशु-पक्षी

इत्यादिसँ सम्बद्ध लोककथा कहि-सुनि श्रमपरिहार करैत अछि । जाड़ मासमे दलान वा खरिहानमे घूड़ तपैत काल, आमक मासमे गाछीक ओगरबाह सभक समूहमे, श्मशानमे, तीर्थयात्रा अथवा अन्यो यात्रापथमे समय कटबाक लेल, थाकनि बिसरबाक लेल लोककथा कहबा-सुनबाक प्रचुर ओ उपयुक्त अवसर भेटैत छैक । लोककथा कहबाक हेतु पटु कथक्करक संगहि सुननिहारो अपेक्षित जे एहन-एहन अवसर पर सहजहि भेटि गेल करैछ।

मैथिली लोककथाक वर्गीकरण

लोकवृत विशेषज्ञलोकनि (folk lorist) लोककथाक लक्षण-निरूपण करैत एकर आठ गोट मुख्य प्रभेद मानने छथि[1], यथा– 1. मिथ, 2. हीरोटेल्स, 3. फेयरीटेल्स, 4. लोकल ट्रैडीशन, 5. फेबुल, 6. जेस्ट ऑर एनेक्डोट, 7. एनिमल टेल्स, तथा 8. क्युमुलेटिव स्टोरी ।

मैथिलीमे एहि सभ कोटिक लोककथा अजस्र संख्यामे प्रचलित अछि जे लोककण्ठमे विद्यमान अछि । ई लोककथा सब श्रुति-परम्परा द्वारा एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीकेँ प्राप्त होइत रहल अछि आ एही पद्धतिसँ भविष्यहुमे जीवन्त रहत । किन्तु मैथिली लोककथाक वर्गाकरण उपर्युक्त आधार पर करब समीचीन रूपेँ सम्भव नहि अछि । मिथिलाक अपन दीर्घ सांस्कृतिक परम्परा छैक । एही परिवेशमे मैथिली लोककथाक संरचना होइत रहलैक अछि। अतः उद्देश्य, विषयवस्तु, प्रयोजन, प्रयोगावसर, वाचक ओ श्रोताक आधार पर मैथिली लोककथाक अनेक विशिष्ट प्रभेद सभ देखना जाइत अछि ।

सर्वप्रथम डा.जयकान्तमिश्र मैथिली लोककथा पर विचार करैत एकर निम्नलिखित आठ गोट प्रभेद मानलनि[2]–1. व्रतकथा, 2. परीकथा वा कल्पनाश्रित कथा (Fairy Tales or Romantic Tales), 3. भूत ओ डाइनिक कथा (Tales of Ghosts and witches), 4. उपदेशात्मक ओ यथार्थवादी कथा (Didactic and Realistic Tales), 5. वाग्वैदग्ध्य एवं हास्यकथा (Tales of Wit and Humour), 6. बालकथा (Nursery Tales), 7. उपासकक कथा, एवं 8. स्थान-नाम अथवा स्थानिक किंवदन्ती (Tales associated with place names or place-legends).

डा०अणिमासिंह मैथिली लोककथाक चरिए गोट वर्ग मानलनि अछि[3]–1. रूप-कथा (Supernatural Tales), 2. हास्य-कथा (Humorous Tales), 3. व्रत-कथा (Religious Tales), 4. नीति-कथा (Moral Tales)। ई वर्गीकरण पूर्ण संगत नहि लगैत अछि। रूप-कथाक अन्तर्गत ओहन सब कथाकेँ लेल गेल अछि जाहिमे अमानवीय वस्तु वा चरित्र सभ, जेना- भूत, प्रेत, देवता, दानव, जादू आदि रहैछ । एहि आधार पर व्रतकथा सभ सेहो एही कोटिमे चल आओत । Religious Tales मे केवल व्रतकथा परिगणित कयल गेल अछि जाहिमे अन्य धार्मिक कथा समाविष्ट नहि अछि । ऐतिहासिक व्यक्ति, स्थान, गाम इत्यादिसँ सम्बद्ध किंवदन्तीक कोनो वर्ग नहि राखल गेल अछि । एकरा अपेक्षा डा०जयकान्तमिश्रक वर्गीकरण अधिक व्यापक अछि । तथापि एहूमे मैथिली लोककथाक अनेक प्रकार वर्गीकरणसँ बाहरे रहि जाइत अछि । डा०मिश्र व्रतकथासँ इतर धार्मिक कथाकेँ कोनो स्थान नहि देलनि अछि। मैथिली लोककथाक एकटा विशिष्ट वर्ग अछि गेयधर्मी लोकगाथाक गद्यमय कथ्य स्वरूप जकर कोनहु रूपक चर्चा नहि भेल अछि ।

उपर्युक्त दुहू विद्वानक मैथिली लोककथा-वर्गीकरण मध्य सामंजस्य आ सम्मार्जन करैत निम्न रूपक वर्गीकरण करब उपयुक्त होयत-

1. **रम्यकथा** (Romantic Tales or Fairy Tales).
2. **धार्मिक कथा** (Religious Tales).
3. **उपदेशात्मक कथा** (Didactic Tales).
4. **हास्य-व्यंग्य कथा** (Tales of Wit and Humour).
5. **भूत-डाइनिक कथा** (Tales of Ghost and Witches).
6. **बालकथा** (Nursery Tales).
7. **ऐतिह्य** (Legends Related to historical Events and Persons).
8. **लोकश्रुति** (Popular Report)
9. **लोकगाथा-कथा** (Story of Folk-Epics and ballads).
10. **पिहानी-कथा** (Riddle Tales).

एहि वर्गसभमे कतोककेँ पुनः कतिपय उपवर्गमे विभक्त कयल जा सकैत अछि। आगाँ प्रत्येक वर्गक सामान्य परिचय देल जा रहल अछि।

मैथिली लोककथाक विविध वर्ग

1. रम्यकथा (Romantic Tales)

ई कथा सब मनोरंजनक उद्देश्यसँ कहल-सुनल जाइत अछि। एहि कथा सबमे राजा-रानी, राजकुमार-राजकुमारी, सौतिनि, सतमाय, भाय-बहिनि, डाइन, राकस, राकसक सुन्दरी कन्या, देवता, देवी, जन्तु-जानवर, चिड़ै-चुनमुन्नी इत्यादि पात्र रूपमे रहैत अछि। सौतिन ओ सतमाइक डाह, माइक वात्सल्य, भाय-बहिनिक स्नेह, सुन्दरी राजकुमारी ओ राजकुमारक प्रेम इत्यादि भावक अभिव्यक्ति होइत अछि। अद्‌भुत ओ रहस्यमय असम्भाव्य घटना सभक वर्णन सहज भावसँ भेल रहैत अछि। कथाक नायक अपन बुद्धि, विक्रम ओ कोनहु अन्य सहृदय व्यक्तिक सहयोगसँ अपन असम्भव उद्देश्यकेँ पूरा करैत अछि। एहि कोटिक कथा लघु ओ दीर्घ दुहू प्रकारक होइत अछि। एहि वर्गक मुख्य कथासब अछि: **इजोती रानीक कथा, आँझुलक कथा, हहय-फहय फूलक कथा, कचनाराक कथा, पनसज्जा कुमारीक कथा, हाहापुरक कोठाक कथा, हंसराज घोड़ाक कथा, झाँझी कुकुरक कथा, उड़न-खटोलाक कथा, हंसावती कुमारीक कथा** इत्यादि।

एहि कोटिक लोककथामे पात्र ओ घटना सभक वर्णनक भाषामे वाचकक अनुसार परिवर्त्तन भऽ गेल करैत अछि परन्तु किछु बात समान रूपेँ दोहराओल जाइत अछि, जेना- (i) कनगुरिआ आङुर चीरि अमृत छीटि मुइल व्यक्तिकेँ जिआ देब, (ii) मनुक्खकेँ काटि कऽ तरहारामे गाड़ि देब, (iii) भकसी झोँका देब, (iv) तीन बेर सत करब इत्यादि।

डा० जयकान्तमिश्र बाइस गोट रम्यकथाक सूची देने छथि। परन्तु मैथिलीमे रम्यकथाक संख्या एहूसँ अधिक अछि।

2. धार्मिक कथा (Religious Tales)

मैथिली लोककथाक एकटा महत्त्वपूर्ण प्रकार अछि धार्मिक कथा। मिथिलाक

धर्मप्राण जन-समुदाय श्रद्धा ओ भक्तिसँ एहि कोटिक कथाक वाचन-श्रवण करैत अछि। एकर चारि गोट प्रभेद मानल जा सकैत अछि : (i) **व्रतकथा**, (ii) **लोक-देवताक कथा**, (iii) **पौराणिकी कथा** ओ, (iv) **सृष्टि-तत्त्वक कथा** ।

(i) व्रतकथा– विशुद्ध रूपमे व्रतकथा महिला द्वारा कहल जाइत अछि आ महिला द्वारा सुनल जाइत अछि। मिथिलाक महिलालोकनि पुण्य, सौभाग्य, आयु, सन्तति, धन ओ परिवारक कल्याण-कामनासँ अनेक पाबनि ओ व्रतक अनुष्ठान करैत छथि। जाहिमे कथ्य-श्रव्य कथा **व्रतकथा** वा **पाबनिक कथा** कहल जाइछ। ई कथा सब ओहिना श्रद्धा ओ भक्तिक संग कहल-सुनल जाइछ जेना श्रीमद्‌भागवत, हरिवंश, रामायण वा अन्य पुराण अथवा पौराणिक माहात्म्य सब सुनल जाइत अछि। प्रत्येक व्रतक सुनिश्चित कथा अछि जकर वाचन-श्रवण अनिवार्य मानल जाइत अछि। मिथिलामे मुख्यत: आठ गोट एहन पाबनि-व्रत सब अछि जाहिमे व्रतकथा कहल-सुनल जाइत अछि। ओ सब थिक–

जितिआ व्रत– आश्विन कृष्ण अष्टमीकेँ ई व्रत सन्तानक कल्याणार्थ कयल जाइछ। एहिमे दुइ गोट कथा कहल जाइछ–**चिल्हो-सिआरोक** एवं **जितवाहनक** ।

कार्तिक व्रत– कार्तिक मासमे ई व्रत होइछ। मासो दिन अनेक कथा कहल जाइछ। देवोत्थान एकादशी दिन विशेष रूपेँ कथा होइछ।

छठि व्रत– कार्तिक शुक्ल षष्ठी-सप्तमीकेँ ई व्रत होइछ। एहिमे सूर्यक आराधना होइछ। छठिव्रतक कथा **आमा माइक खिस्सा** अथवा **रानामाइक कथा** कहल जाइछ। एहिमे दुइ गोट कथा होइछ–पहिल कथा षष्ठीक सन्ध्याकाल एवं दोसर कथा वा उत्तर कथा सप्तमीक प्रात:काल कहल जाइछ।

हरिसञो व्रत– कार्तिक शुक्ल प्रतिपदासँ अगहन शुक्ल प्रतिपदा धरि कुमारि कन्या द्वारा ई व्रत कयल जाइत अछि। एहि व्रतक कथाकेँ **हरिसञो कथा** कहल जाइछ। एकर वाचन लहरक जकाँ लयात्मक रीतिसँ होइछ। लयात्मकताक कारणे ई कथा लोकगाथामे सेहो परिगणणीय भऽ गेल अछि।

रवि-शनि व्रत– अगहनसँ बैसाख धरि प्रत्येक रविकेँ ई व्रत होइत अछि आ एकहि गोट कथाक वाचन-श्रवण प्रत्येक रविकेँ होइत अछि।

सपता-विपता व्रत– चैत ओ बैसाख मासक प्रत्येक रविकेँ सपताक पवित्र डोर बान्हि ई व्रत कयल जाइछ आ व्रत कयनिहारि सपता-बिपता (सम्पदा-विपदा)क कथा सुनैत छथि। मैथिली व्रतकथामे सपता-विपताक कथा सबसँ पैघ अछि। एकर नायक-नायिका छथि राजा नल ओ हुनक रानी। एहि कथाक नायकक नामटा पौराणिक अछि किन्तु कथामे वर्णित विपत्तिक घटना ओ ओहिसँ उबरबाक घटना सब लौकिक जीवनक थिक जे सर्वथा लोक-मानस-प्रसूत अछि।

बड़िसाइत व्रत (वटसावित्री)– जेठ मासक अमावास्या दिन ई व्रत वटवृक्षक पूजन-पूर्वक कयल जाइछ। पतिक दीर्घायु ओ अपन अखण्ड अहिबातक कामनासँ प्रत्येक सधवा सामान्य रूपसँ ई व्रत करैत छथि। नव-विवाहिता कन्या विवाहक वर्षाभ्यन्तर पहिल बेर बड़ समारोह पूर्वक करैत छथि। एहिमे जे कथा कहल जाइत अछि तकर कोनो सम्बन्ध

पौराणिक सावित्री-सतयवानक उपाख्यानसँ नहि छैक । बड़िसाइतक कथामे स्त्रीक पतिभक्ति एवं बुद्धि ओ भक्तिक द्वारा नागिनसँ पतिक प्राण-रक्षा वर्णित भेल अछि ।

मधुश्रावणी-व्रत– साओन कृष्ण पंचमी अर्थात् नागपंचमीसँ साओन शुक्ल तृतीया धरि ई व्रत कयल जाइछ । चौदह दिन धरि चलऽबाला एहि पाबनिमे प्रत्येक दिन एक वा दुइटा नवीन कथा कहल जाइछ । एहि तरहेँ सर्वाधिक व्रतकथा एहि व्रतमे प्रयुक्त होइत अछि । मधुश्रावणी-व्रतक कथा-समूहकेँ मधुश्रावणी-व्रत-कथा-मंडल कहि सकैत छी । डा०जयकान्तमिश्र एहि कथा-मंडल (Cumulative Series)क सम्बन्धमे कहने छथि– *The Madhushravani Vrata-Katha, perhaps the longest and most important of all Vrata-Kathas, is divided into fifteen chapters (called Khandas). It is a sort of a long vernacular prose Purana and has all the characteristics of a myth.*[4]

एहिमे मुख्य आख्यान अछि-सृष्टिक आरम्भक पश्चात् शिवक संग क्रमशः शची, संज्ञा, उमा ओ अन्ततः गौरीक विवाह, शिव ओ गौरीक दाम्पत्य ओ पारिवारिक जीवनक विभिन्न घटना, गौरीक सातगोट कन्या बिसहरि, बिसहरिक एक बहिनि लीलीक बैरसी संग विवाह, बैरसीक आन-आन विवाह, सौतिनि गोसाउनि द्वारा लीलीक प्रताड़ना ओ अन्ततः बैरसी-लीलीक प्रेम-मिलन । एही संग आनो-आनो असम्बद्ध कथा सब कहल जाइछ जे भिन्न-भिन्न गाममे भिन्न-भिन्न रूपक होइत अछि ।

व्रतकथा सभक आख्यान-स्वरूप ओ भाषामे बड़ अल्प परिवर्तन लक्षित होइत अछि। व्रतकथा होइत अछि गद्यमे किन्तु ओहिमे एक प्रकारक यतिमयता (Rhythm) अवश्य रहैत अछि । प्रत्येक कथाक अन्तमे भरत-वाक्य जकाँ मंमल-कामना अवश्य रहैत अछि, यथा **जेहन चिल्लोकेँ भेलनि तेहन सबकेँ होइन, जेहन सिआरोकेँ भेलनि तेहन ककरो सने होउ, पापक छय, धर्मक जय** इत्यादि ।

(ii) *लोक-देवताक कथा* (Tales of Folk Deity and Demigod)– मिथिलामे पौराणिक देवी-देवतासँ भिन्न विभिन्न जाति, वर्ग ओ ग्राम सबमे अनेक लोकदेवता ओ मनुसदेबा सभक पूजा होइत अछि । ई देवता सभ थिकाह: कमला, बन्दी, गोरैआ, कलाली, किरंची, कोरल, कुसिआरमल, झालाराम, ठीठामल, पँचपिढ़िआ, राहु, रामठाकुर, रकतमाला, मातर, मीरा, मोतीदाइ, दयाराम, बौधूराम, झम्मन मरड़, गौरबाबा, जलपा, हुलहुली, सुल्तान खाँओं, सुरजाउ, धर्मराज इत्यादि । हिनको लोकनिक जीवन, कार्य, शौर्य, चमत्कार ओ दिव्यशक्तिक वर्णन कयनिहार लोककथा सब रुचि ओ श्रद्धापूर्वक सुनल जाइछ । एहि कथा सभक भाषा अत्यन्त सरल ओ तरल होइत अछि । केवल घटनाक वर्णन करब इष्ट रहैत अछि। स्थानभेदसँ एकर घटना सबहुमे सेहो भिन्नता देखल जाइत अछि ।

(iii) *पौराणिकी लोककथा* (Folk Tales of Pauranic Gods and Characters)– ई ओहि कोटिक लोककथा सब थिक जकर मुख्य पात्र तँ अवश्ये पौराणिक होइत छथि किन्तु कथानक सर्वथा लोक-मानस-प्रसूत रहैत अछि । मिथिलामे प्रचलित एहन लोककथाक स्रोत पुराणमे नहि देखल जाइत अछि । पौराणिक देवता ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, राम, सीता, कृष्ण, नारद इत्यादिसँ सम्बद्ध लोककथा सब लघु आकारक होइत अछि तथा एहिमे निदर्शनात्मकताक भाव विशेष प्रधान रहैत अछि । उदाहरणक लेल **नारदक गुरु कथा**

प्रस्तुत अछि–

नारद गुरुक मन्त्र नहि लेने छलाह । ओ ब्रह्माक सभामे नित्य जाथि । सभासँ चल अयला पर ब्रह्मा ओहि ठामक माटि कटबा कऽ फेकबा देथिन । नारदकेँ ई जानल भेलनि। नारद ब्रह्मासँ कारण पुछलथिन । ब्रह्मा कहलथिन, अहाँ एखन धरि गुरु नहि कयने छी तेँ अहाँ जतऽ बैसैत छी से अपवित्र भऽ जाइत अछि । नारद बिचारलनि जे काल्हि भोरे जे नजरिपर पड़त तकरहि गुरु बनायब । भोरे उठलाह तँ एकटा मलाहकेँ जाइत देखलनि । ओ ओकरहि गुरु बना लेलनि । दोसर दिन आन देवता सबकेँ ई बात बूझल भेलनि । ओ ब्रह्माकेँ कहलथिन । ब्रह्मा नारदकेँ कहलथिन जे अहाँ शूद्रकेँ गुरु बनओलहुँ तेँ प्रायश्चित्त करऽ पड़त। नारद कहलथिन, की एकर प्रायश्चित्त होयत ? ब्रह्मा कहलथिन, संसारक सभ तीर्थमे जाय पड़त । नारद बिधुआयल अयलाह । प्रात भेने ओ मलाह-गुरुकेँ देखि सब बात कहलथिन । मलाह कहलकनि–अहाँ आइ ब्रह्माकेँ कहबनि जे धरती पर सब तीर्थक नकसा बना कऽ देखा दियऽ जे कोन तीर्थ कतऽ छैक । ब्रह्मा नकसा बना कऽ सब तीर्थ देखा देथि, तखन अहाँ ओहि नकसा पर लेटा जाएब । सब तीर्थ भऽ जायत । ब्रह्मा जँ पुछताह जे ई की ? तँ कहबनि, जे तीर्थ अहाँ देखा देलहुँ ताही पर हम लोटयलहुँ ने । नारद तहिना कयलनि । ब्रह्मा ओ आन देवता सब नारदक गुरुक बुद्धिसँ चकित भऽ गेलाह ।

(iv) *सृष्टितत्त्वक कथा*–मैथिलीक किछु लोककथामे सृष्टिक विभिन्न उपादानक व्याख्या देल गेल अछि । जेना पहिने आकाश एकदम नीचाँमे छल । एकटा बुढ़िआ धान कुटैत छलि । ओकर समाठ आकाशमे ठेकि गेल करैक । अकच्छ भऽ बुढ़िया समाठसँ आकाशकेँ खोँचारैत बाजलि–दुर जो जरलाहा । बस, आकाश बहुत ऊपर चल गेल आ उपरे रहि गेल। ओही दिनसँ आकाशमे जरैत सूर्य उगऽ लागल ।

एकटा दोसर कथामे धानमे खोँइचा होयबाक कारण कहल गेल अछि । विष्णु आ लक्ष्मी एकटा दरिद्र ब्राह्मणकेँ नोत दऽ भरिपोख भेजन कराय दान-दक्षिणा दऽ बिदा कयलनि। ब्राह्मण चलल अबैत रहथि । बाटमे धानक खेत भेटलनि । धानमे पहिने चाउर फड़ैत रहैक। ब्राह्मणकेँ लोभ भऽ गेलनि । ओ चाउर सुरड़ि कऽ खाय लगलाह । लक्ष्मीकेँ ई बात ज्ञात भेलनि तँ बड़ दुख भेलनि। ओ ब्राह्मणकेँ शाप देलथिन–जाउ हे ब्राह्मण ! अहाँ सब दिन हाथ सुखल ब्राह्मण भुखल रहब। आ धानकेँ कहलथिन जे आब चाउर भुस्सामे बन्द भेल फड़त ।

एहि प्रकारक अनेक कथा सब मैथिलीमे लोक-प्रचलित अछि । ई कथा सब लघु आकारक होइत अछि । एहि सबमे धार्मिक भावना ओतेक नहि अछि, किन्तु आदिम मानवक सृष्टिविषयक विश्वास ओ अवधारणाक अवशेष एहिमे सुरक्षित अछि । तेँ एहि कथा सभकेँ धर्मिक कथाक कोटिमे राखब उचित ।

3. उपदेशात्मक कथा (Didactic Tales) :

मैथिली लोककथाक एकटा वर्ग एहन अछि जाहिमे कोनो-ने-कोनो नीति अथवा उपदेश निहित रहैत अछि । मनुष्यकेँ दुर्गुणक परित्याग ओ सदगुणक आचरण करबाक प्रेरणा देल गेल रहैत अछि । सामाजिक वा वैयक्तिक जीवनमे आचरित छल-छद्मसँ बचबाक एवं ओहिसँ सचेत रहबाक निर्देश एहि कथा सबमे रहैत अछि । अतः स्वभावतः एहि कथा सभमे

अप्राकृतिक घटना किंवा अतिमानवीय चरित्रक अल्प प्रयोग भेल अछि । एहि वर्गक कथा सब अछि **मुसहरनीक सत, धर्मक बानि, अन्हराक बैलगाड़ी, सौतिनिक माछ-भात, बुढ़िआक फूसि, सासुक गरदनिक घंटी** इत्यादि ।

4. हास्य-व्यंग्य-कथा (Tales of Wit and Humour):

मिथिलामे भोजन-विन्यास ओ हास्य सबसँ प्रिय वस्तु मानल जाइत अछि । एकर प्रभाव एहि ठामक लोककथामे सेहो प्रभूत परिमाणमे देखल जाइत अछि । मैथिलीक हास्यपरक लोककथा सब अनेक कोटिक देखल जाइत अछि–

(i) ***सामान्य हास्यकथा*** (General Humorous Tales).

(ii) ***गोनूझाक कथा*** (Humorous Tales of Gonu Jha).

(iii) ***उपहास-कथा*** (Tales of Ridicule).

(iv) ***चुटुक्का*** (Anecdotes).

(i) सामान्य हास्यकथा– सामाजिक, पारिवारिक ओ वैयक्तिक जीवनक विसंगति, असंगत आचार ओ व्यवहारक हास्योत्पादक वर्णन सामान्य कोटिक हास्यकथामे होइत अछि। एहि कोटिक कथामे अनेक ठाम बौद्धिक चमत्कारक नीक प्रयोग भेल अछि । एहि कोटिक कथा सबमे अछि **बुद्धि-माधवीक कथा, निसाफी कुमारीक कथा, बकरी माय ए बकरी माय, कानी धीआ रानी होइती** इत्यादि ।

(ii) गोनूझाक कथा– मैथिली हास्य-लोककथाक महत्त्वपूर्ण वर्ग अछि **गोनूझाक कथा** । गोनूझा तेरहम शताब्दीमे भेल छलाह । हिनक उपाधि **धूर्त्तराट्** छलनि । हिनक बौद्धिक विचक्षणताक अजस्र कथा सभ कतोक शताब्दीसँ लोकक मनोरंजन करैत आबि रहल अछि। गोनूझाक तुलना बीरबल, तेनाली राम आदिसँ कयल जा सकैत अछि । गोनूझाक हास्यकथा सब मैथिलीमे बहुतो कहबीकेँ जन्म देलक अछि यथा– **गोनूझाक बिलाड़ि, गोनूझाक ठेङा, गोनू गामहि, एक बेर मरने गोनू माइओकेँ चिन्हल** इत्यादि । ई कहबी सब प्रसंगतः प्रयोगमात्रसँ गोनूझाक तत्सम्बन्धी कथाक स्मरण करा दैत अछि ।

(iii) उपहास-कथा– मैथिली हास्य-कथाक तेसर वर्ग थिक **उपहास-कथाक** । एहि वर्गक कथामे लोकलक्षण वा समाजक निन्द्य चरित्रक लोकक उपहास कयल गेल रहैत अछि। विभिन्न जाति, फूहरि, पेटाहि, छुलाहि, चोरनी, झगड़ाहु स्त्रीवर्ग, ठक, धूर्त्त, चोर, फुसिआह, बकलेल, खाधुर पुरुषवर्ग, अनेक विवाह कयनिहार पुरुष-स्त्री, अव्यावहारिक बुद्धिक नैयायिक-पंडित इत्यादिक स्वच्छन्द उपहास एहि कोटिक कथामे भेल करैत अछि । एहि कोटिक कथा सबमे अधिकांश कोनो-ने-कोनो कहबी वा फकड़ाक आधार बनि गेल अछि। एहि वर्गक उल्लेखनीय कथामे किछु अछि– **चिबन्तकेँ घोँटन्त, एके पटोरबे नओ रे नओ, काँचे दूध उठा कऽ पीब, झगड़ाहु माइ-धी, छोड़ झाड़ मोरा डूबऽ दे, गाङो-सोहाइत, एत्ते रुइआ को धुनिहऽ** आदि-आदि ।

(iv) चुटुक्का– चुटुक्का हास्य-कथाक लघुतम रूप थिक । अत्यन्त छोट घटना दू-चारि वाक्यमे वर्णित रहैत अछि । श्लेष, यमकक प्रयोग विशेष ठाम देखल जाइछ । एहिमे उक्तिक चमत्कार, व्यंग्य, वक्रोक्ति, परिस्थिति इत्यादिक विसंगति निहित रहैछ, यथा–

एकटा नैयायिकक़ेँ एकटा बाछी रहनि । केओ पूछलकनि, पंडितजी ! बाछी बेचब? पंडितजी कहलथिन, हमरा गाछी नहि अछि । एहि पर पुछनिहार जिज्ञासा कयलकनि, से किएक कहैत छी ? बाछी आ गाछीक कोन सम्बन्ध ? पंडितजी उत्तर देलथिन, गाछीसँ जारनि भेटैत छैक । हमरा से नहि, तखन तँ बाछिएक गोबरसँ जारनि होइत अछि ।

बरिआतीकेँ भेजन कराओल जाइत छल । एकटा बारिक बऽड़ परसैत छल । एकटा पंडितजीकेँ ओ आग्रह कयल, पंडितजी, बऽड़ लेब ? पंडित **बड़** शब्दकेँ **वर** रूपमे लैत कहलथिन, कनिएँ दिअऽ । एहि ठाम **कनिएँ** शब्दक श्लिष्ट अर्थ अछि **अल्पमात्रा** आ **वधूमात्र**। एहिमे वर-पक्ष द्वारा कन्या-पक्ष पर कयल गेल व्यंग्य अत्यन्त मार्मिक ओ सटीक भेल अछि।

एहिना एकटा भोजमे दहीक बारिक **दही, दही** कहि लोकककेँ लेबाक आग्रह करैत जाइत छल । एकटा पंडितजीकेँ सेहो आग्रह कयल, पंडितजी, दही ? पंडितजी कहल, दही (दऽ दहक) । बारिक श्लेषार्थ बुझैत बाजल, पंडित जी ! जँ दूध परसल जाइत तखन ? पंडित तुरन्त कहलथिन, तखन उनटा कऽ 'धऽदू ।'

एहि प्रकारक प्रभूत चुटुक्का सभ मिथिलाक सब वर्गक लोकक सामान्य व्यवहार ओ गप्प-सप्पमे प्रयुक्त होइत रहैत अछि ।

5. भूत-डाइनिक कथा (Tales of Ghost and Witches):

भूत एकटा वायवीय प्राणी मानल जाइछ आ डाइनि भूतकेँ नियन्त्रणमे रखनिहारि कहल जाइछ । मिथिलामे भूत योनिक अनेक प्रभेद मानल जाइत अछि, यथा– **प्रेत, राकस, भुतराकस, जिन्न, चुड़ैलि, पनिडुब्बा** इत्यादि । लोकविश्वासमे डाइनि अपन तन्त्र-मन्त्रक बलेँ एकरा सबकेँ अपना अधीन राखि मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटनक प्रयोग लोक पर कयल करैछ । डाइनिक एहि लोक-अपकारी काजकेँ रोकनिहार तान्त्रिक होइत अछि **ओझा, गुणी, धामि, मती** इत्यादि । एकरा सभक सम्बन्धमे प्रचलित परम्परित कथा भूत-डाइनिक कथा कहबैत अछि । भूतक निवास श्मशान, सघन गाछी, पाँतरक झमटगर गाछ, प्राचीन पोखरिक मोहाड़, पुरान डीह, बान्ह इत्यादिमे रहैछ । ई सब भरखरि सभ गाममे रहितहि अछि ।

प्रत्येक गाममे किछु महिला पर डाइनि होयबाक आरोप रहितहि छैक । अज्ञता, रूढ़ि ओ अन्धविश्वाससँ प्रेरित प्रत्येक गाम ओ इलाकाक अपन-अपन भूत-कथा सभ रहैत छैक आ तथाकथित प्रत्यक्षद्रष्टा द्वारा भूत-डाइनि-जन्य अनुभवक नव-नव कथाक सृष्टि ओ प्रचार होइत रहैत छैक । किन्तु बहुतो कथा सब सामान्य रूपसँ समस्त मैथिली-क्षेत्रमे प्रचलित अछि। एहि प्रकारक किछु भूत-कथाक उदाहरण देखल जाय सकैत अछि ।

एकटा पंडितजी चल अबैत रहथि । बाटमे राति भऽ गेलनि । पाँतरमे एकटा भूत घेरि कऽ कहलकनि, एकटा भूतिनसँ हमर विवाह विधिपूर्वक करा दिअऽ ने तँ घरहंज कऽ देब। डरेँ पंडित गछि लेलथिन आ गाम पर आबि रातिए भरिमे **भूत-विवाह-पद्धतिक** रचना कयलनि। दोसर राति पंडित ओही गाछीमे पहुँचलाह । ओ भूत फेर भेटलनि । ओ नकिआइत कहलकनि-अओ पंडित ! जाहि भुतनीसँ बिआह होइत से मुक्ति पाबि लेलक । आब अहाँ जाउ ।

एकटा ब्राह्मण अपन बहिआक संग परदेशसँ चल अबैत रहथि । रातिमे एकटा गाममे

डेरा देलनि । ओहि गामक सब लोक कोनो मरकीमे मरि-मरि भूत बनि गेल छल । ओ भूत सब रातिमे घेरि लेलकनि । ब्राह्मण डरेँ शतरुद्री जापऽ लगलाह । बहिआकेँ रुद्री मन्त्र नहि अबैत रहैक । बस भूत सब कहऽ लागल, **जा तोँ जपबह रुद्र रुद्र; तावत खयबहु बहिआ शूद्र** ।

तौल बनिआँ तौल अत्यन्त प्रसिद्ध भूत-कथा अछि । एकटा अन्न बेचनिहार बनिआँकेँ कोनो भुताहि गाछीमे राति भऽ गेलैक । भूत सब घेरि कऽ बनिआँकेँ अन्न तौलबाक लेल कहलकैक । बनिआँ ओकरा सबकेँ सामान्य ग्राहक बूझि पलड़ा पर अन्न चढ़ौलक । मुदा पलड़ा लऽत होयबे ने करैक । बनिआँ तखन बुझलक जे ई सब भूत थिक । ओ बोरा-झोड़ा सबमे बटखारा तकबाक लाथ करऽ लागल । भूत कहैक- **तौल बनिआँ तौल, तीन पसेरी तौल** । बनिआ बटखारा तकैत कहैक- **पचड़ी हेरायल बाबू तकिते छी** । एहिना करैत-करैत राति बीतल । भोर भेल । भूत पड़ायल । बनिआँक जान बाँचल ।

भूत-कथामे भयानकता रहैत छैक अवश्य, किन्तु ओहिमे निहित अद्‌भुतता, औत्सुक्य, रोमांच ओ रोचकता ततबा रहैत छैक जे श्रोता रुचि पूर्वक जासूसी कथा जकाँ एकरा सुनैत अछि आ आनन्द उठबैत अछि । एकहि गोट कथानककेँ विभिन्न कथक्कर अपन-अपन भाषामे अभिनव कल्पना ओ परिवेशक समावेश करैत कथाकेँ रोचक बनयबाक प्रयास करैत अछि। परिणामतः भाषा ओ घटनाक्रममे स्थान-स्थान पर अन्तर देखल जाइत अछि । मुदा मूल कथासूत्रमे समरूपता रहैत छैक ।

6. बालकथा (Nursery Tales):

ओना बच्चा सबकेँ सब प्रकारक लोककथा सुनबामे अभिरुचि रहैत छैक, किन्तु मैथिलीमे बहुत रास लोककथा सब एहन अछि जकरा नेने लेकनि विशेष रूपसँ सुनैत अछि आ कहैत अछि । एहि कोटिक कथाक पात्र सब सामान्यतः छोट-छोट जन्तु, कीड़ा-मकोड़ा, चुट्टी-पिपरी, चिड़ै-चुनमुन्नी आ छोट आकार ओ वयसक नेना सब होइत अछि । घटना सब सरल ओ शृंखलाबद्ध रहैत अछि । एकहि प्रकारक घटना ओ उक्तिक यथावत् पुनरावृत्ति होइत रहैत अछि । हास्य, औत्सुक्य ओ आश्चर्य एहि कथा सभक भाव-भूमि रहैत अछि। भाषा सरल, छोट-छोट वाक्य एवं लयात्मकतासँ युक्त रहैछ । अनेक ठाम अर्थहीन किन्तु लयात्मक शब्द-संयोजन सेहो रहैत अछि । बालकथा सब दुइ कोटिक अछि- (क) **मानव-पात्रक कथा** आ (ख) **जीव-जन्तु पात्रक कथा** ।

(क) *मानव-पात्रक कथा*- एहि कोटिक कथा सबमे प्रमुख पात्र वा नायक कोनो नेना, बौना, बुढ़िआ अथवा हास्योत्पादक चरित्रक व्यक्ति होइत अछि । एहि कोटिक कथामे अछि **डेढ़बितनाक खिस्सा, निरबुधिआक खिस्सा, बगिआबला खिस्सा, दरिद्र छिम्मड़िक खिस्सा**, इत्यादि ।

डेढ़बितनाक खिस्सामे एकटा डेढ़ बीतक छओँड़ा अछि । ओकरा बापकेँ राजाक सिपाही पकड़ि लैत छैक । ओ नरकट काटि कऽ गाड़ी बनबैत अछि । मूसकेँ बड़द रूपमे जोतैत अछि । ओही पर चढ़ि बापकेँ छोड़ाबऽ जाइत अछि । बाटमे लोक देखि-देखि हँसैत छैक । बाटमे रस्सी, सोँटा, बिढ़नी, आगि, पानि भेटैत छैक । ओ सब डेढ़बितनाक संग जाय चाहैछ । डेढ़बितना सबकेँ- **आजो भाजो, कानमे समा जो**, कहि कऽ कानमे रखने जाइत

अछि । राजाक ओहि ठाम जाय बापकेँ छोड़ऽ कहैछ आ अन्यथा लड़ाइ होएबाक धमकी दैछ । सिपाहीसहित राजा ओकर उपहास करैत छैक । डेढ़बितना बाटमे भेटल सहयोगी सभक सहायतासँ राजा ओ सिपाही सबकेँ विवश कऽ दैछ । डेढ़बितनाक बाप छोड़ि देल जाइछ । ओ खुशी-खुशी घर अबैत अछि ।

(ख) *जीव-जन्तु पात्रक कथा–* एहि कोटिक कथा सबमे मुख्य पात्र जन्तु, चिड़ै, कीट इत्यादि रहैत अछि । एहि प्रकारक कथामे उल्लेखनीय अछि– **मुसरीक खिस्सा, फुद्दी रानीक खिस्सा, चोँचाक खिस्सा, कनही बगड़ीक खिस्सा**, इत्यादि । एहि सब खिस्सामे चोँचाक खिस्सा अत्यन्त करुणामिश्रित अछि । चोँचा (Nest-builder bird) किसानक खेतमे चीनक सीस खोँटलक । किसान ओकरा पकड़ि लेलकैक आ बजार बेचऽ बिदा भेल। चोँचा बाटमे विलाप करैत जाय– **पर्वत महाड़ पर खोँता रे खोँता बच्चा भूखेँ मरैए ।**

जकरे चिनमा खेलिऐ हो भैआ सेहे पकड़ने जाइए ।

बाटमे चोँचाक विलाप सुनि, हाथीबाला, घेड़ाबाला एवं आन-आप कतेक व्यक्ति हाथी, घोड़ा ओ अन्य मूल्यवान् वस्तु लऽ कऽ चोँचाकेँ छोड़ि देबऽ कहलकैक, मुदा किसान राजी नहि भेल । अन्तमे एकटा खुद्दी बेचऽबाली बुढ़िआ खुद्दीक बदला चोँचाकेँ छोड़ि देबऽ कहलकैक । किसानकेँ भूख लागल छलैक । ओ खुद्दी लेलक आ चोँचाकेँ उड़ा देलक।

एहि कथा सबमे हास्य प्रचुर रहैछ मुदा से प्रौढ़ वर्गक हेतु नहि अपितु बालवर्गक हेतु उपयुक्त अछि । उपदेश ओ शिक्षाक तत्त्व अत्यन्त सूक्ष्म रूपमे निहित रहैत अछि । अवश्ये कथा सभक माध्यमसँ बच्चा सब अपन परिवेश ओ पर्यावरणसँ परिचित भऽ ओकरा संग आत्मीयताक सम्बन्ध स्थापित करबाक हेतु प्रेरित होइत अछि । नेना सबमे कल्पनाशीलता, बौद्धिकता ओ वाचाशक्तिक विकास होइत छैक ।

7. ऐतिह्य (Legends Related to Historical Events and Persons):

डा०जयकान्तमिश्र एहि कोटिक कथामे केवल उपासकक कथा पर विचार कयलनि अछि । किन्तु हमरा विचारेँ मिथिलाक विभिन्न राजवंश, राजपुरुष, दार्शनिक, विद्वान्, तान्त्रिक, सन्त, साधक, युद्ध, शास्त्रार्थ इत्यादिक सम्बन्धमे सत्य, कल्पित, उभय मिश्रित, सम्भाव्य-असम्भाव्य घटना सभक सम्बन्धमे किवदन्ती सभ लोकमे कहल-सुनल जाइत रहल अछि । कालिदासक देवी-पूजा, वाचस्पतिक पत्नी भामती, शिवसिंहक तिरोधान, विद्यापतिक चाकर उगनाक रूपमे महादेव, विद्यापतिक निकटमे गंगाक आगमन, गंगेशउपाध्यायकेँ पत्नीसँ नव्य न्यायक अभिज्ञान, मदनउपाध्यायक धोती आकाशमे सुखायब, धीरेन्द्रउपाध्यायक सूर्य-स्तम्भन, संत साहेबरामदास, लक्ष्मीनाथगोसाँइ इत्यादिक सिद्धि ओ चमत्कारक कथा, शुभंकरठाकुरक चन्द्रग्रहणक भविष्यवाणी सन बहुश: किंवदन्तीक पात्र सब जेँ इतिहासमे प्रसिद्ध छथि तेँ एहन कोटिक किवदन्ती जे वास्तवमे लोककथा थिक, एहि ठाम **ऐतिह्य** नामक स्वतन्त्रवर्गमे विचारणीय अछि । एकर सभक कोनो प्राचीन अभिलेख-सिद्ध आधार नहि अछि। लोक जे किछु अपन पूर्व पीढ़ीसँ सुनैत रहल अछि से अपन उत्तरवर्त्ती पीढ़ीकेँ सुनबैत-जनबैत आबि रहल अछि । तथापि किछु-ने-किछु ऐतिहासिक संकेत तँ रहितहि छैक । एहि अर्थमे ऐतिह्य सामान्य लोकश्रुतिसँ भिन्न भऽ जाइत अछि । तेँ कवीश्वर चन्दाझा, म०म० परमेश्वरझा,

बख्शी मुकुन्दझा सदृश विद्वान ऐतिह्यकेँ प्रमाणक एक प्रकार मानि एकर सभक संकलन तथा ओहि आधार पर मिथिलाक इतिहासक संरचनाक प्रयास कयलनि ।

8. लोकश्रुति वा स्थानीय किवदन्ती (Popular Report or Local Tradition):

ऐतिह्यसँ भिन्न विभिन्न स्थान, गाम आ प्राकृतिक विपदासँ सम्बद्ध कथा सब लोकमे प्रचलित अछि । एहि कोटिक लोककथासभक दुइ प्रभेद अछि– (क) **स्थान-ग्राम-सम्बद्ध लोकश्रुति** (ख) **प्राकृतिक विपदा विषयक लोकश्रुति** ।

(क) मिथिलाक ग्राम, पोखरि, मन्दिर, डीह, बान्ह, नदी, ग्रामविशेषक गुणी, गबैआ, पहलवान, चोर, ठक इत्यादिसँ सम्बद्ध लोककथा सब लोक-समाजमे प्रचलित अछि । मिथिलाक किछु गामक नामक उच्चारण नहि कऽ ओकरा हेतु **सीतारामक गाम, बड़का गाम, पुरहितक गाम, पुबारि गाम, पछबारि गाम** इत्यादि कहल जाइछ । एहि नाम-अग्राह्यताक पाछाँ कृपणता, शठता, धूर्त्तता, मानव-वध सन निन्द्य घटनाक प्रवाद रहैत अछि । किछु गामक कोनो-कोनो वस्तु उपहासक रूपमे प्रख्यात हछि, जेना-सोतिपुराक दही, उजानक पटुआ साग, पिड़ारुछक झिङुनी, नबादाक भुसखाड़, पोखरामक दालि, महबाक टेल्ह, घनश्यामपुरक टूक इत्यादि । एकरा सभक पाछाँ कोनो-ने-कोनो निन्द्य घटना होयबाक प्रवाद सन्निहित अछि । मिथिलाक प्राचीन पैघ सरोवर दैत्यक खुनल मानि दैता-पोखरि कहल जाइछ । प्रायः जाहि पोखरिमे पुरैनिक पात होइछ ताहि सम्बन्धमे कहल जाइछ जे पूर्व कालमे बटोही ओहि पोखरि पर राति बितबैत छल तँ पोखरिसँ सोना-चानीक वर्तन-बासन बहराइत छल । ओहिमे भानस-भात कऽ बटोही ओकरा माँजि-धो कऽ पोखरिकेँ समर्पित कऽ दैत छल । एक बेर कोनो लोभी बटोही ताहि वस्तुकेँ लेनहि चल गेल । ओहि दिनसँ पोखरिमे पुरैनिक पात होबऽ लागल ।

दुइ गोट पोखरि लगे-पास रहने ओकरा दुहबी-सुहबी पोखरि, ननदी-भौजैआ पोखरि, सौतिनिआ पोखरि, सहोदरा पोखरि इत्यादि नाम कहल जाइछ । एकरा पाछाँ यथासम्बन्ध प्रतिस्पर्धात्मक अथवा सहयोगाात्मक वर्ण्यवस्तुक कथा प्रचलित अछि ।

हमर दरभंगा नगरमे एकटा **हराही पोखरि** अछि । बेस नमहर । विद्वान् लोकनिक अनुमान छनि जे ई पोखरि कर्णाट राजा हरसिंहदेवक खुनबाओल थिक । तेँ एकर नाम **हरसँ हराही** भेल मुदा स्थानीय लोककथामे एकर दोसर व्याख्या कयल गेल अछि । **हरही** नामक एक गोट मलाहिनि माथपर कठौतमे माछ लऽ जाइत छलि । एक चिल्होरि कठौतसँ एकटा माछ लूझि कऽ उड़ि गेल । चिल्होरिक लोलमे माछ सम्हरलैक नहि आ खसि पड़लैक । ई देखि हरहीकेँ हँसी लागि गेलैक । लोक ओकरा एकसरे हँसैत देखि कारण पुछलकैक । हरही बात टारऽ चाहलक जे हँसीक कारण कहब तँ हम मरि जायब । मुदा लोक नहि मानलकैक। तखन हरही कहलकैक जे एकटा ई चिल्होरि अछि जे सेरो भरिक माछ नहि सम्हारि सकल। हमहूँ पूर्व जन्ममे चिल्होरि रही । महाभारतक लड़ाइमे एकटा कटल बाँहि लऽ कऽ उड़ल रही जाहिमे सबा मोनक सोनक कङना रहैक। ओ सोनक कङनाबाला बाँहि लोलमे लेने उड़ल-उड़ल आबि एही ठामक एक गोट तेतरिक गाछ पर बैसि कऽ खयने रही । ओ एकटा स्थान देखाय कहलकैक–एहि ठाम माटि खूनि देखने बातक प्रतीति भऽ जायत । ओहि ठाम

माटि खूनल गेल तँ बहुत तऽरमे पैघ सन बाँहिक हाड़ आ सबा मोनक सोनक कङ्ना भेटल। ओ देखि हरही प्राण त्यागि देलक। खूनल गेल स्थान **हराही पोखरि** नामेँ प्रसिद्ध भेल ।

(ख) मिथिलामे प्राकृतिक विपदा–बाढ़ि, अगिलग्गी, रौदी, अकाल, महामारी, भूकम्प इत्यादि निरन्तर होइत आयल अछि । एकरा सभक भवितव्यताक आभास ओ प्राकृतिक विपदाक अन्तरालमे एवं परिणमस्वरूप भेल पश्चात्कालिक घटनाविषयक अनेक किंवदन्ती सभ बूढ़-पूरान लोक सभ कहैत रहैत छथि । एहि प्रकारक किंवदन्तीमूलक लोककथामे जन-सामान्यक विवशता, क्लेश ओ पीड़ाक मार्मिक अभिव्यंजना रहैत अछि ।

9. लोकगाथा-कथा–(Tales of Folk-Epic and Ballads):

एहन कथानक जे गाबि कऽ सुनाओल जाइत अछि **लोकगाथा** कहबैत अछि । मैथिलीमे लोककंठमे अवस्थित एहन गोट सत्तरिएक लोकगाथाक सन्धान भऽ सकल अछि। एकर विविध प्रकार सब अछि यथा–महराइ, सम्मर, लगनी इत्यादि । किछु लोकगाथा अत्यन्त विशाल ओ बहुशः कथा–उपकथाक समुच्चयक रूपमे अछि । एकरा सबकेँ **लोकमहाकाव्य** (Folk Epic)कहब उपयुक्त अछि । लघु आकरक लोकगाथा **गाथा-गीत** वा **गाथिका** (Ballads) कहबैत अछि ।

एहि सब लोकगाथाक गानक अतिरिक्त एकर कथानकक गद्यहुमे वाचनक परिपाटी अछि । जखन ई सब गाओल जाइछ तँ एकर गेय रूपकेँ **लोकगाथा** कहब, किन्तु एकर कथ्यरूप लोककथा रूपमे परिगणित होयबाक योग्य अछि । कारण एकर कथ्य रूपमे भाषा, वर्णनशैली, कथन–भंगिमा ओ बहुत स्थलमे कथानकोमे परिवर्तत भऽ जाइत अछि ।

मैथिलीमे लोकमहाकाव्य कोटिक लोकगाथा सबमे प्रमुख अछि सलहेस, दीना–भद्री, लोरिक, दुलरादयाल, बिहुला, रायरनपाल, नैकाबनजारा, गोपीचन्द–मयनावती, कुमरवृजभान इत्यादि । ई गाथा–कथा सभ यद्यपि एक गोट नायक ओ एक गोट नायिका पर आधृत अछि, किन्तु घटनाक्रम–विकासमे अनेक उपनायक, उपनायिका, खलनायक, खलनायिका सब जुटैत जाइत अछि । परिणामतः मुख्य कथाक सहयोगी अनेक आनुषङ्गिक कथा–उपकथाक सृष्टि-संयोग होइत जाइत अछि । अतः एकरा लोककथा–समुच्चय (Cumulative Story) कहब उपयुक्त होयत । प्रेम, शौर्य, धैर्य इत्यादिक मुख्य भावधराकेँ सम्पुष्ट करबामे असम्भाव्य शक्ति, चमत्कार, विशिष्ट गुणसम्पन्न मनुष्य, देवी-देवता, दैत्य–भूत, पशु–पक्षी, विशिष्ट गुण-सम्पन्न जड़ उपादानक योगदान रहैत अछि । लोककथाक जतेक उपादान ओ प्रभेद लोकवृत्त-विशेषज्ञ (Folk Lorist) लोकनि लक्षित कयने छथि अथवा मैथिलीमे लोककथाक जे स्वरूप ओ लक्षण देखल जाइत अछि, तकर सभक एकत्रैव समावेश एहि लोकमहाकाव्यक गाथा–कथामे देखल जाइत अछि । दोसर दिस गाथिकाक कथानक सब गद्यमे कहल जाइत अछि तँ ओ रम्यकोटिक कथा (Romantic Tales)क रूप धरण कऽ लैत अछि ।

10. पिहानी-कथा (Riddle Tales):

मैथिलीमे कतिपय लोककथा पिहानी कोटिक अछि । एहिमे लघु कथानकक माध्यमसँ प्रश्न अथवा शंका उपस्थित कयल जाइछ तथा ओकर उत्तर वा समाधान देल

जाइछ। ई सब मूलतः थिक **प्रहेलिका**, किन्तु सूक्ष्म कथानकक प्रयोग रहने लोककथामे सेहो परिगणित भऽ सकैत अछि । एहि कोटिक कथाक तुलना लीलावतीक गणितीय प्रश्न आ बेताल-पचीसीक कथा सबसँ कयल जा सकैत अछि । एहि प्रकारक पिहानी-कथाक प्रयोग बौद्धिकताक परीक्षाक हेतु कयल जाइछ । मिथिलामे विशेष रूपमे बरिआती सबकेँ एहन पिहानी-कथा सब पूछल जाइछ । उदाहरण रूपमे एक गोट पिहानी-कथा प्रस्तुत अछि–

गुरु, गुरुआइनि आ दुइ गोट चेला रहथि । गुरु चालिस मनक, गुरुआइनि चालिस मनक आ दूनू चेला बीस-बीस मनक रहथि । चारूकेँ नदी पार करबाक रहनि । एकटा नाओ छल जे केवल चालिस मनक भार थम्हि सकैत छल । आब चारू गोटा कोना नदी पार करथि ? पहिने दुनू चेला नाओ पर चढ़ि पार भेलाह । एक चेला ओहि पार रहि गेलाह। एक चेला नाओ खेबि एहि पार आनल । तखन गुरु नाओ खेबि कऽ पार भेलाह । दोसर चेला ओहि पारसँ नाओ खेबि एहि पार अनलनि । फेर दुनू चेला नाओ पर चढ़ि ओहि पार गेलाह । एक चेला उतरि गेलाह । दोसर चेला नाओ अनलनि । नाओ पर गुरुआइनि चढ़ि पार भेलीह । ओहि पारसँ पहिल चेला फेर नाओ अनलक । तखन फेर दुनू चेला संग-संग नाओ पर पार भेलाह । एहि तरहेँ चारू गोटे नदी पार कयलनि ।

मैथिली लोककथाक ई वर्गीकरण, एकर सभक सामान्य प्रकृति ओ लक्षणकेँ ध्यानमे राखि कयल गेल । किन्तु एहन बहुतो लोक-कथा सब अछि जे एकसँ अधिक वर्गमे राखल जाय सकैत अछि । एक वर्गक लोककथाक बहुतो लक्षण दोसरो वर्गक कथामे भेटि सकैछ ।

मैथिली लोककथाक प्रकृति-वैशिष्ट्य

लोककथा जेँ सामान्य रूपसँ कहल जाइछ तेँ एकर सहज रूप गद्यात्मक होइत अछि, परन्तु मैथिलीक कतोक लोककथामे मुक्तवृत्तक लयात्मकता देखल जाइछ । अनेक लोककथामे कथानकक मध्यमे फकड़ाक प्रयोग होइत अछि । एहन फकड़ा समग्र रूपमे अथवा ओकर अंश-विशेष कहबीक रूप धारण कऽ लेने अछि । एहन फकड़ा अथवा कहबीमात्रक प्रयोगसँ श्रोताक स्मृतिमे समग्र कथानक आबि जाइत छैक ।

स्थान, वाचक ओ श्रोताक भेदसँ मैथिली लोककथाक भाषामे परिवर्तन स्वाभाविक रूपेँ होइत रहैत छैक । किन्तु कथन-शैली अक्षुण्ण रहैत छैक । किछु शब्द-समूह ओ उक्ति-भंगिमा जे प्राचीन ओ अप्रचलित रहनहु लोक-कथामे प्रयुक्त होइत अछि; यथा– गिरमलहार, बिजूबन, तरहारा, खटबास-पटबास, कौड़, खनतर-पटिआ, बुचकट कटिआ, मोतिलच्छा, भकसी झोँकब, जी-जान बकसब, सात निनेँ सूतब, बजरकेबाड़ ठोकब इत्यादि ।

मैथिली लोककथाक आरम्भ होइत अछि कथाक प्रमुख पात्रक जातिबोधक नामसँ, जेना **एगो रहथि राजा, एकटा रहथि दरिद्र ब्राह्मण, एकटा रहए सुग्गा** । कोनो कोनो कथा स्थान अथवा समयक उल्लेखसँ आरब्ध होइछ, जेना– **एक गाममे, एकटा वन छल, एक बेरक गप्प थिक, कहिओ एक बेर बड़का अकाल पड़ल** ।

एकहि कथामे कोनो घटना वा कथनक आवृत्ति होयब सामान्य बात थिक । किन्तु किछु घटना वा वाक्यांशक प्रयोग विभिन्न कथामे समान रूपेँ सेहो होइत अछि ।

मैथिली लोककथाक पात्र सबमे राजा-रानी, राजकुमारी, दरिद्र ब्राह्मण, दरिद्र दम्पती, बुढ़िआ डाइनि, सेठ-साहुकार, चोर, धूर्त, विभिन्न व्यवसायक लोक, पति, पत्नी, सौतिनि, माय, सतमाय, भाय-बहिनि, मौसी रूपमे अनचिन्हारि माउगि, सखी, चेरिआ इत्यादि मानव पात्र रहैत अछि । अन्तरिक्ष योनिक मानवेतर पात्र ब्रह्मा, विष्णु, महादेव-पार्वती, सूर्य, इन्द्र, नारद, दैत्य, राक्षस, भूत-प्रेत इत्यादि स्व-रूपमे अबैत अछि । एहिसँ भिन्न पशु-पक्षी, हाथी-घेड़ा, गाय-बड़द, कुकुर-बिलाड़ि, भेँड़ी-बकरी, बाघ-भालु, नढ़िआ-बानर सन जानवर; सुग्गा, मैना, फुद्दी, चोँचा, कौआ, बगड़ा इत्यादि चिड़ै; साप, बेङ, बिढ़नी, झिंगुर, चुट्टी इत्यादि कीट-पतंग पात्रक रूपमे अबैत अछि । मनुष्यवत् भाषा बजैत अछि ओ आचरण करैत अछि । अनेक कथामे वृक्षादि जड़ पदार्थो पात्रक रूपमे आचरण ओ वार्त्तालाप करैछ ।

मैथिली लोककथामे किछु विशिष्ट पात्र सब सेहो अछि जे अधिकांश कथामे महत्त्वपूर्ण भूमिकाक सम्पादन करैत अछि । एहिमे **विधि-विधाता** ओ **सलखी चेरिआ** उल्लेखनीय अछि । विधि-विधाता पक्षीक जोड़ा (प्रायः दम्पती) थिक जे भूत-भविष्य-वर्तमानक बात एवं कोनहु संकटक समाधान जनैत अछि । रातिमे, उड़ैत काल अथवा पुरान पैघ गाछ पर बैसि वार्त्तालाप करैछ जाहिसँ संकटमे पड़ल कथापात्रकेँ संकट-निवारणक अथवा इष्ट-पूर्तिक उपाय भेटि जाइछ । **सलखी चेरिआ** नायिकाक विश्वासपात्री आज्ञाकारिणी दासी होइत अछि । ई अत्यन्त विचक्षणा ओ कठिनसँ कठिन कार्य-सम्पादनमे अत्यन्त पटु होइत अछि । नायिकाक अन्तरंगिणी सखी रूपमे ओकर सुख-दुखक सहभागिनी रहैछ ।

जेना शिष्ट साहित्यमे काव्य-रूढ़ि वा कवि-समय-प्रसिद्धि होइत अछि । तहिना लोकसाहित्यहुमे बहुशः रूढ़ि-प्रयोग होइत अछि जकरा लोकतत्त्व वा लोकरूढ़ि (Motif) कहल जाइछ । अन्य भारतीय भाषाक लोककथाक सदृश मैथिलीओ लोककथामे अजस्र लोकरूढ़िक प्रयोग देखल जाइछ, यथा– भविष्यज्ञान, मनुष्यद्वारा पशु-पक्षीक भाषा बूझब, पशु-पक्षी द्वारा मानवक भाषाक प्रयोग, मनुष्यक पक्षी रूपमे परिवर्तन, निहत स्त्रीक पुष्पवृक्ष वा अन्य कोटिक वृक्षक रूपमे पुनर्जीवन तथा प्रियतम व्यक्तिक स्पर्शसँ पुनरुद्धार, कोनो विशिष्ट पात्रक कनगुरिआ आङुरमे अमृतक वास, व्यक्तिक राम-राम कऽ जीबि उठब, जीवक पुनर्जन्म, पूर्वजन्मक वृत्तान्तक स्मृति, इत्यादि ।

वर्त्तमान कालमे लोकप्रचलित मैथिली लोककथा सब अवश्ये मध्यकालमे समाजक विभिन्न वर्गमे विद्यमान छल । एहि सबमे किछु कथाक सृष्टि मध्यकालहुमे भेल होयत, मुदा बहुतो ओहि कालसँ बहुत पूर्वहिसँ चलि अबैत होयत ओ एहि क्रममे वर्तमान कालमे जीवन्त अछि । मैथिली लोक कथाक प्राचीनत स्वरूप विद्यापति रचित **पुरुष-परीक्षा**मे भेटैत अछि। पुरुषपरीक्षाक कथा सब वास्तवमे चौदहम-पन्द्रहम शताब्दीमे प्रचलित मैथिली लोककथाक विभिन्न प्रभेद-ऐतिह्य, लोकश्रुति, रम्यकथा, हास्य-व्यंग्य कथा सभक संस्कृत रूपान्तर थिक। विद्यापति ओहि कथा सभक उपयोग सकारात्मक वा नकारात्मक नीति-उपदेशक प्रतिपादनक हेतु कयलनि अछि ।

वर्त्तमान कालमे मैथिली लोककथाक संकलन-संपादन-प्रकाशनक दिशामे बड़ अल्प प्रयास भेल अछि । रम्यकथा, व्रतकथा ओ हास्य कथा सभक कतिपय लघु संग्रह सभ

समय-समय पर प्रकाशित भेल अछि । किछु छिटपुट लोककथा सामयिक पत्र-पत्रिकादिमे सेहो प्रकाशित होइत रहल अछि । किन्तु मैथिलीक विशाल लोककथा-समूहकेँ देखैत ई प्रयास नगण्ये मानल जा सकैत अछि ।

आवश्यकता अछि जे मनस्वी अध्येता ओ गवेषक लोकनि द्वारा सुदूर ग्रामांचलमे अपन शुद्धतम रूपमे प्रचलित लोककथाक संकलन-संपादन ओ प्रकाशन कयल जाय तथा ओकर वैज्ञानिक रीतिसँ अध्ययन-अनुशीलन कयल जाय । तखने मैथिली लोककथाक स्वरूप, वैशिष्ट्य ओ महत्त्वक समग्रतामे परिज्ञान संभव अछि ।

[साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ओ भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ताक संयुक्त तत्त्वावधानमे 9-10 दिसम्बर 1994कँ कलकत्तामे आयोजित **इण्डिजीनस ओरल नैरेटिभ फॉर्म्स इन इस्टर्न लैंग्वेजेज** विषयक सेमिनारमे पठित निबन्ध ।]

सन्दर्भ-संकेत

1. डिक्शनरी ऑफ वर्ल्ड लिटरेचर, पृष्ठ 246
2. डॉ०जयकान्तमिश्र – इन्ट्रोडक्शन टू दि फोक लिटरेचर आफ मिथिला, भाग II, इलाहाबाद युनिवर्सिटी, 1951, पृष्ठ 17.
3. डॉ०अणिमासिंह – चेतना समिति, पटना द्वारा प्रकाशित मैथिली साहित्यक रूपरेखा (भाग 2) मे संकलित निबन्ध 'मैथिली लोक साहित्य', पृष्ठ 16. ...
4. डॉ०जयकान्तमिश्र, पूर्ववत्

●

मैथिली लोकवचन

लोकसाहित्यक एकटा प्रमुख प्रकार होइत अछि **लोकवचन** । मैथिलीयो लोकसाहित्यमे प्रचुर परिमाणमे लोकवचन विद्यमान अछि । सामान्यतः विद्वान् लोकनि लोकवचनकेँ लोकोक्तिक कोटिमे परिगणित कऽ दैत छथि । परन्तु लोकवचनक प्रकृति भिन्न प्रकारक होइत अछि । लोकोक्तिक सृष्टिक पृष्ठभूमिमे सामान्यतः कोनो ने कोनो कथात्मक घटना होइत अछि । प्रयोगावसरमे प्रस्तुतक आशयक समर्थन-सम्पुष्टि तत्समान भावक लोकोक्तिसँ होइछ । लोकोक्तिक अर्थ अप्रस्तुत होइछ । अतः प्रस्तुत ओ अप्रस्तुक मध्य बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव रहल करैत अछि ।

लोकवचनमे से बात नहि रहैत अछि । ई शिष्ट साहित्यक नीति, सूक्ति, सुभाषित इत्यादिक प्रतिस्थानीय होइत अछि । वास्तवमे एकरा **लोकसूक्ति** कहल जा सकैत अछि । लोकवचनमे नीति-अनुभूति, उपदेश-निर्देश, विधि-निषेध, वर्जना-तर्जना, कर्त्तव्याकर्त्तव्यक भाव व्यंजित रहैत अछि । एहिमे लक्ष्यार्थ ओ व्यंग्यार्थक अपेक्षा वाच्यार्थेक मुख्यता रहैत अछि जे लोकजीवनमे सहज रूपमे माननीय, अनुकरणीय ओ आचरणीय होइत अछि ।

जीवनक गहन अनुभवसँ उद्‌भूत लौकिक ओ सामाजिक जीवनक कसौटी पर कसल उक्ति थिक लोकवचन जे लोक व्यवहारमे प्रमाण ओ साक्ष्यक रूपमे शास्त्रीय सूक्ति जकाँ परम्परासँ प्रयोजनानुसार प्रयोगमे अबैत रहल अछि । लोकोचित गरिमासँ युक्त ई वचन सभ जनकण्ठमे सुरक्षित श्रुति-परम्पराक रूपमे एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ी, एक स्थानसँ दोसर स्थान, एक समुदायसँ दोसर समुदायकेँ अन्तरित होइत रहलैक अछि।

सामान्यतः लोकसाहित्यक सम्बन्धमे एकटा रूढ़ मान्यता अछि जे एकर रचयिता अज्ञात होइत छथि, लोकसाहित्य मौखिक होइछ, लिपिबद्ध नहि । विभिन्न लोक, वर्ग, परिवेशक अनुरूप लोक साहित्यक स्वरूपमे अन्तर देखबामे अबैछ । शास्त्रीयता ओ पाण्डित्यसँ रहित विशुद्ध अपढ़ ओ ग्राम्यजनक वस्तु थिक– लोकसाहित्य । मुदा, लोक साहित्यक एहि रूढ़ लक्षणक अपवाद अछि मैथिली लोकवचन । मैथिलीक समस्त लोकवचन तँ नहि मुदा एकर पुष्कल अंशक रचयिताक रूपमे **डाक, घाघ, भड्डरी, व्यास, खानिखाना** आदिक नाम लेल जाइछ । जेना मैथिलीक प्राचीन गीतिमे कथ्यक सौन्दर्य-वृद्धि हेतु कहबीक सहज अनायास प्रयोग देखल जाइत अछि, तद्‌वते मिथिलाक ज्योतिष ओ व्यवहार सम्बन्धी कतोक प्राचीन निबन्ध ग्रन्थमे प्रतिपादित विषयकेँ पुष्ट करबाक हेतु लोकभाषाक एहि वचन सबकेँ प्रमाणत्वेन उद्धृत कयल गेल अछि जे प्राचीनो कालमे निश्चये लोकमुखहिसँ ग्रहण कयल गेल होयत । कतोक प्राचीन हस्तलेख एवं टिपओटसँ सेहो ई वचन सब प्राप्त भेल

अछि। एतावता मैथिली लोकवचनक ई विशेषता अछि जे ई जनकण्ठहिमे नहि, लिपिबद्ध रूपमे सेहो प्राप्त होइत अछि । एहि अर्थमे मैथिलीक लोकवचनकेँ एहि भाषाक प्राचीनतम ज्ञात लोकसाहित्य कहल जा सकैछ । मैथिली लोकवचन एहू मान्यताकेँ खण्डित करैत अछि जे लोकसाहित्य विशुद्ध अनपढ़-गमार जनक साहित्य थिक आ एकर विकास लोकाश्रय पाबिए कऽ होइत छैक । प्राचीन संस्कृत ग्रन्थमे जाहि प्रकारेँ एहि लोकवचन सबकेँ उद्धृत कयल गेल अछि, ताहिसँ ई सहजहिँ बूझल जा सकैछ जे एकरा मिथिलाक पण्डित ओ विद्वत् वर्गसँ सेहो मान्यता भेटैत रहलैक अछि । एतावता परम्परासँ श्रुति ओ लेख्य परम्परामे जीबैत, दैनन्दिन जीवन ओ व्यवहारमे ग्राम्य ओ विद्वत् जनक पथ-प्रदर्शन करैत रहनिहार एहि लोकवचन सबमे शास्त्रीयता ओ लौकिकताक मणिकाञ्चन संयोग अछि ।

मैथिली लोकवचनक वर्गीकरण

पूर्वहि कहल अछि जे मैथिली लोकसाहित्य मध्य एकमात्र लोकवचनहि एहन विधा अछि जकर बहुतो अंश भनितायुक्त अछि । अतः कर्तृत्वक आधार पर लोकवचन दुइ कोटिक अछि– **1. भनिताहीन वचन 2. भनितायुक्त वचन**

भनिताहीन वचन ओ अछि जकर रचयिता अज्ञात छथि । अनुभूत सत्यक आधार पर सहज भावसँ रचल जाइत रहल ई लोकवचन सब समाजमे प्रचलित भऽ जनकण्ठमे अपन स्थान बना लेलक । एखनो किछु व्यक्तिमे एहिं प्रकारक आशुकवित्वक प्रतिभा देखबामे अबैछ । कोनो अवसर विशेष पर ओहन व्यक्तिक स्वानुभव स्वतः स्फूर्त्त भऽ पद्यक रूप धारण कऽ लैछ । स्वानुभवसँ भरल एहि कोटिक चमत्कारक पद्य किंवा पद्यखण्ड अवश्ये अपन सहजताक कारणे लोकक ठोर पर चढ़ि अन्ततः लौकवचनक रूपमे समाजमे अपन स्थान बना लैत अछि ।

मिथिलाक लोकवचनमेसँ अधिकांशक रचयिताक रूपमे **डाक**क नाम लेल जाइत अछि । किछु आयातित लोकवचनमे घाघ, भड्डरी, व्यास, खानिखाना, कबीर आदिक भनिता सेहो देखल जाइछ, तथापि मिथिलामे वचनमात्रहिकेँ **डाकवचन**क नामसँ अभिहित कयल जाइत अछि । डाक के छलाह, कहिया भेल छलाह, कतऽ भेल छलाह, ताहि सम्बन्धमे विद्वान् लोकनिमे विचारमंथन चलि रहल अछि । निष्कर्ष किछु नहि बहरायल अछि । डाकक वचन मिथिलाक अतिरिक्त समस्त पूर्वाञ्चलमे प्रचलित अछि तथापि मैथिल विद्वान लोकनि द्वारा प्रमाण पुरस्सर डाककेँ मैथिल सिद्ध करबाक प्रयास कयल गेल अछि । म०म०डा० उमेशमिश्र डाक सम्बन्धी एकगोट निबन्धमे डाककेँ मिथिला निवासी अहीर सिद्ध कयने छथि । 1924 इ.मे श्रीरमेश्वर प्रेस, दरभंगासँ तीन भागमे डाकवचनक संकलन **डाकवचनामृत** नामसँ कपिलेश्वरझा प्रकाशित करौलनि । एहि दिशामे पं० जीवानन्दठाकुरक योगदान ऐतिहासिक महत्त्वक सिद्ध भेल अछि । ओ मिथिलाक प्राचीन संस्कृत ग्रन्थमे उद्धृत डाकक वचन सभक उद्धार कऽ पूर्व प्रकाशित **डाक वचनामृत**क वचन सभकेँ सम्पादित कऽ **मैथिल डाक** नामसँ 1950 इ.मे प्रकाशित कराओल । एही पोथीमे डाकक जीवन, परिचय, प्राचीनता, प्रचार-क्षेत्र इत्यादि पर गम्भीरतापूर्वक विचार करैत ओ डाकक मैथिलत्व सिद्ध करबाक प्रयास कयलनि। एखन धरि डाकक वचनक सम्बन्धमे एतबहि कार्य भऽ सकल अछि । एमहर **जिज्ञासा**[1]

नामक अनुसंधान पत्रिकामे जीवानन्दठाकुरक दुर्लभ भऽ गेल पोथी **मैथिल डाककेँ** समग्र रूपमे मुद्रित कयल गेल अछि जे प्रशंसनीय थिक । एही संग पं०श्रीगोविन्दझाक एक गोट निबन्ध **लोकरत्न ज्योतिर्विद डाक:एक मूल्याङ्कन** सेहो प्रकाशित भेल अछि जे डाकक वचनक सम्बन्धमे आगाँ अनुसन्धानक हेतु प्रेरक सिद्ध भऽ सकैत अछि । मैथिलीक प्राचीन साहित्यक मर्मज्ञ विद्वान निविष्ट अन्वेषी डा०शशिनाथझा सेहो डाकवचन सभक एक गोट संकलन सम्पादित कऽ प्रकाशित करौलनि अछि जाहिमे पाठोद्धार, पाठ विवेचन ओ अर्थानुसन्धान केर दिशामे नीक प्रयास भेल अछि ।

एखन धरि मैथिलीमे जतेक लोक-वचनक संकलन सभ प्रकाशित भेल अछि तकरा डाकक वचन मानि लेल गेल अछि । प्राचीन अभिलेख ओ मौखिक दुहू स्रोतसँ प्राप्त एहि समस्त वचनक रचयिता एकमात्र डाक छथि से कहब कठिन अछि । किछु वचनमे डाकक भनिता अछि तँ किछु भानिताहीन । अतएव भनिताक आधार पर लोकवचनक वर्गीकरण ओ विवेचन खूब युक्तिसंगत प्रतीत नहि होइत अछि । लोकवचनक कर्त्तृत्वकेँ बेकछयबासँ बेसी उपयुक्त होयत प्रतिपाद्य विषयक आधार पर लोकवचनक वर्गीकरण ओ विवेचन करब ।

लोकवचन किंवा डाकवचनमे जीवन ओ जगतसँ सम्बद्ध प्राय: प्रत्येक पक्ष पर विचार भेल अछि । एहि आधार पर लोकवचनकेँ पाँच विषयक वर्गमे विभाजित कयल जा सकैछ– 1. **कृषि** 2. **ऋतु** 3. **ज्योतिष** 4. **गृहस्थ जीवन** 5. **लौकिक व्यवहार ओ विविध ।**

1. कृषि विषयक

भारतीय ग्राम्य जीवनक मूल आधार रहल अछि कृषि । लोकवचनमे कृषिकेँ सबसँ उच्च स्थान देल गेल अछि– **उत्तम खेती, मध्यम बान । अधम चाकरी, भीख निदान ॥**

कृषक उत्तम ढंगेँ खेती कोना करथि; केहन बड़द कीनल जाय आ केहन नहि; कोन भूमिमे कोन गाछ रोपब उचित हो आदि-आदि विषयक ज्ञान लोकवचनक माध्यमे जनसामान्यक हेतु प्रस्तुत कयल गेल अछि । यथा–

– काशी-कुशी चौठी चान, आब की रोपबह धान किसान ।
भारे बीआ बोझे धान, आबहुँ बैसह घऽर किसान ॥
– आधा चितरा जओ केराइ, आधा चितरा राइ-सोहराइ ।
– जोड़े हरे जोतह चासा, फेरा पचओटा सोलह भासा ।
– हर चलए गुमार, चौकी चलए रबाड़ ।
– जँ नहि तमबह माघ वसन्त, जँ नहि तमबह घैला सुखन्त ।
तँ की तमबह बेङ कुकहन्त ।
– अखाढ़ रोपी तान वितान, साओन रोपी बित परमान ।
आसिन रोप कँकोड़बा बान ॥
– हाँसू-खुरपी-करिन-कोदारि, हरकठ परिकठ खेतक आरि ।
– उस्सर-खासर हो जञो चासा, राड़ी-खढ़ही रोपी बाँसा ।
– हथिया बरिसय चित मड़राय, घर बैसल गिरहथ अगराय ।
– बड़द बेसाहए जैहऽ कन्ता, कइल गोल नहि देखिहऽ दन्ता ।
काछ-कछौटी खाँओर बान, एहि छाड़ि जनु कीनह आन ।

देखिहऽ बड़द जओ रूपा धओल, दू-चारि टका दिहऽ उपरओर ।
ओहि पारमे देखिहह मैना, एही पारसँ करिहह बैना ।

–सरङ पताली भुइआ डेर, अप्पन खाए परोसिया हेर ।

–परतीसँ किछु भरती आछा, कहए डाक किछु अक्कठ गाछा ।

2. ऋतु विषयक

ऋतु विषयक अन्तर्गत लक्षणक आधार पर बरखाक योग, अकालक योग, वायुक प्रवाह, ग्रहण, बाढ़िक आभास आदिक विचार कयल गेल अछि । यथा–

– जओँ पुरबैया पुरबा पावए, सुखले नदिया नाओ बहाबए ।

– मघा लगाबए घग्घा, सेवाती लगाबए टाटी ।
हाथीराम कहै छथि, आबि रहल छी बरियाती ॥

– पूसक रौदा बकरीक ढूसि, साँए-बहुक झगड़ा तीनू फूसि ।

– पूसक दिन फूस

– माघक बदरी लधनहि, भाय भिन्न भेनहि ।

– माघक हरहा भादवक बरहा ।

– बीसी-तीसी मकर पचीसी ।

– आदिमे बरिसये आदरा, अन्तमे बरिसय हस्त ।
कतबहु राजा डाँड़य बान्हय, परसन रह गिरहस्थ ॥

– पश्चिम दिशि जँ हरिअर मेह, चमकय बिजली वायुक नेह ।
बरखा होअय मूसलधार, सात दिन धरि डाक गोआर ॥

3. ज्योतिष विषयक

किंवदन्तीक अनुसार प्रसिद्ध खगोलविद् वराहमिहिरक पुत्र डाक ज्योतिषी छलाह । ज्योतिष विषयक अपन वचनहिक कारणेँ डाकक ख्याति अछि । एहि विषयक लोकवचनक जनसामान्यमे वस्तुतः कोनो सिद्ध पुरुषक उक्ति जकाँ मान्यता अछि । डाकक भनितासँ रहित-सहित ज्योतिष विषयक एहि लोकवचनसभमे मुहूर्त्त, यात्रा-शकुन, योग, छीक, पल्लीपतन आदि पर व्यवस्था देल गेल अछि । उदाहरणस्वरूप द्रष्टव्य किछु वचन–

– छिक्के सूती, छिक्के खाइ, छिक्के पऽर घऽर नहि जाइ ।

– सन्मुख छिक्के दुन्ना लाभ ।

– शनि मंगल जँ दच्छिन जाइ, किछु ने किछु तँ पड़लो पाइ ।

– चौठ चतुर्दशि नवमी रिक्ता, अपनो घर नहि जइहह पुत्ता ।

– नहि किछु जानी तँ दिगबल धऽ तानी ।

– शुक्रक पड़िबा एकादशि होइ, सिद्धियोग कह षष्ठी सब कोइ ।
बुधबासर जँ भद्रा पाबए, सिद्धियोग तेहि जगमे गाबए ।
जया तिथि जओँ मंगल होए, सिद्धियोग मन मानिए सोए ।
शनि दिनमे रिक्ति जओँ आबए, सिद्धियोग गुनिजन तेहि गाबए ।
पूर्णा तिथि गुरु वासर जानि, सिद्धि योग कह डाक बखानि ।

– रविकेँ पान, सोमकेँ दर्पण, मंगल किछु-किछु धनिया चर्वण ।
बुधकेँ गूड़, वृहस्पति राइ, शुक्र कहए मोरा दही सुहाइ ।
शनि कहए मोरा आदी भाइ ।

4. गृहस्थ जीवन विषयक

गृहस्थ जीवनमे षोडश संस्कार, दिवस-विचार, उत्तम ओ वर्ज्य वास-विचार, त्याज्य-अत्याज्य, खाद्य-अखाद्य आदि विविध प्रसंग नित्यप्रति अबितहिं रहैत अछि । एहि समस्या सभक सम्यक् निराकरण ओ दिशा-निर्देशक रूपमे पारम्परिक लोकवचन सभ **बाबा वाक्यं प्रमाणम्** रूपमे जनसामान्य द्वारा ग्रहण कयल जाइछ । प्रसूती स्नान, स्तनपान, कर्णवेध, मुण्डन, अक्षरारम्भ, उपनयन, विवाह-द्विरागमन, व्रत-अनुष्ठान, न्यों देबाक उत्तम दिन, घर छड़यबाक शुभ दिन इत्यादि विचार लोकवचनमे कयल गेल अछि । यथा-

प्रसूति स्नान- अनुराधा अश्विनि ध्रुवहस्ता, स्वाती पौष्णा नक्षत्रे सस्ता ।
कुज, रवि, गुरु दिन करी नहान, कहथि डाक परसौती जान ॥

कर्णबेध- जन्मक तारा जन्मक चन्द्र, चन्द्र मास ओ चन्द्र ग्रहेन्द्र ।
दक्षिणायन छोड़ि जानी शुभ वार, सूर्य्य शुद्धि केर करी विचार ।
अश्विनि पुष्य हस्त अरु अभिजित, मृग अनुराधा रेवती चित ।
शुभ ग्रहमे शुभ लग्न सुकाल, शुद्ध समय लेल डाक बेहाल ।

विवाह- सन्मुख दच्छिन दोष न हो, कहथि डाक एक युक्ति इहो ।
मामा फाबए जेठ अषाढ़, कन्या बिआही कहथि गोआर ॥
दग्धा तिथि मासान्तहि त्यागि, करी बिआह शुभ-शुभकेँ जागि ।
जञो कन्या नहि रखबा जोग, शुद्ध जानि करु विवाह सुभोग ॥

नव कपड़ा पहिरबाक दिन-

कपड़ा पहिरी तीन दिना । बुध वृहस्पति शुक्र दिना ॥
शनि जारए, रवि फाड़ए सोम करए सुड्डाह ।
मंगल मारए जीव सञो, बुध पहिरि घर जाह ॥

केरा रोपबाक दिन- भादव-भदवा सी मी वारि, केरा रोपी दिन विचारि

5. लौकिक व्यवहार ओ विविध विषयक

एहि कोटिक वचनमे जीवन ओ जगत्क कटु ओ नग्न सत्य, अन्धविश्वास, आचार-व्यवहार, रीति-नीति, लोकाचार, लोकलक्षण आदि प्रतिपादित अछि । यथा-

उत्तम गृहस्थी- भुइञा खेड़े हर हो चारि । घर हो गिरहिनि गाय दुधारि ॥
रहर दालि जरहन केर भात । गागर नेबो ओ घिउ तात ॥
सहरस खण्ड दही जञो होए । बाँके नयन परोसए जोए ॥
कहए डाक तब सबही झूठ । ओतए छाड़ि एत्तहि वैकुण्ठ ॥

पतनशील गृहस्थी- जाकर घर बासए चतुरङ्ग । साँझ-प्रात नर पीबए भङ्ग ॥
नारी ओगरए गाछी-चास । ताकर घरक हो शीघ्रहिँ नास ॥

बूड़िक लक्षण- घोकड़ी लाधि भूमि पर सोबए । उढ़री बहु लए जे नर रोबए।
बाट चलए नहि ताकए घूरि । कहए डाक ई तीनू बूड़ि ॥

*पतितक लक्षण-*माछ सड़े दुध-खिच्चड़ि खाय । मुइला बहुक नैहर जाय ॥

बाट चलैत जे गाबय गीत । कहए डाक ई तिनू पतीत ॥

अन्यान्य- साओन साग, भादव दही । आसिनक ओससँ बचले रही ॥

बैसल खाए चिबाबए पान । से की राखत वंशक मान ।

खटहट खटिया, बतकट बोहु । ई दुख बिहि ककरो नहि देहु ॥

साँझ पराती, भोर, वसन्त । तकरा दुखक न कहियो अन्त ॥

लोकवचन अर्थात् उपदेशक भण्डार

लोकवचनक विश्लेषण-मननसँ सद्यः प्रतिभासित होइत अछि जे ई उपदेशक भण्डार थिक । एकर उद्देश्य थिक जनजीवनक मंगल । आपत्ति-विपत्तिसँ मुक्त भऽ लोक सुखी कोना रहय तेँ एहि वचनमे कतहु नीति-उपदेश अछि, तँ कतहु विधि-निषेध, वर्जना ओ निर्देश। आजुक विज्ञान भने एहि लोकवचनकेँ मान्यता नहि देअय, मुदा एकर लोक-मान्यता एखनहुँ अक्षुण्ण अछि । लोकवचनक वैशिष्ट्य एहू रूपमे अछि जे ई कखनो कऽ एकहि संग वचन ओ कहबी दुहू दायित्वक निर्वहन करैत अछि । लोकवचनक कोनो अंश विशेष कहबीओक रूपमे प्रयुक्त होइछ । जेना एकटा अछि– **नाशहिँ काल विनाशहिँ बुद्धी**– विनाशकाल विपरीत बुद्धिः । मुदा सम्पूर्ण रूपमे ई वचन एहि प्रकारक अछि–

ई जनि बुझह डाक निर्बुद्धी । नाशहिँ काल विनाशहिँ बुद्धी ॥

प्राचीन ग्रन्थमे लोकवचन

पूर्वमे विद्वान्क ई धारणा छल जे केवल मैथिली शब्देक प्रयोग मिथिलाक प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ सबमे भेल अछि । मुदा 1950इ.मे जखन जीवानन्दठाकुर अनेक प्राचीन ग्रन्थ सभमे उद्धृत मैथिली लोकवचनकेँ संकलित कऽ प्रस्तुत कयलनि तँ उपर्युक्त धारणा खण्डिते नहि भेल अपितु एहिसँ अनुसन्धानक नूतन द्वार फूजि गेल । हुनका द्वारा संकलित-सम्पादित **मैथिल डाक** नामक पोथीक प्रथम भागमे **विशुद्ध डाकवचन**क अन्तर्गत तालपत्र पर लिखित पाँचगोट प्राचीन ग्रन्थक पाण्डुलिपिसँ लोकवचन संकलित अछि ।[2] एहि पोथीक अनुसार विद्यापतिक पुत्र हरपतिठाकुरक **व्यवहार प्रदीप** पोथीमे 21 गोट प्रसंगमे, महाराज शुभंकरठाकुरक **तिथिद्वैधनिर्णय**मे एक प्रसंगमे, **ग्रामवास विचार** नामक ग्रन्थमे एकगोट प्रसंगमे, विक्रमोर्वशीय नाटकक पोथीक एकटा पत्रसँ उद्धृत एकटा वचन ओ **प्रकीर्ण** नामक अज्ञात कर्त्तृत्वक ज्योतिष ग्रन्थमे छओ गोट प्रसंगमे ग्रन्थकार लोकनि **डाक**क नाम निर्देश पूर्वक वचन उद्धृत कयने छथि। एहिमे अनेक वचन एहनो अछि जाहिमे ने तँ **डाकक** नामक निर्देश अछि आ ने वचनक भनितेमे डाकक नाम अछि । किछु पदक भनितामे **मुनिवर** नाम अछि ।

जीवानन्दठाकुरकेँ एहूसँ प्राचीन म०म०चण्डेश्वरठाकुर (1325इ.) कृत **कृत्य चिन्तामणिमे** तीन गोट ज्योतिष विषयक लोकभाषा-वचन प्राप्त भेल छलनि ।[3] ई तीनू वचन ग्रन्थक भूमिका भागमे पाद टिप्पणीमे उद्धृत कयल गेल अछि । एहि तीनू वचनमे कर्त्तृत्वक नामोल्लेख नहि होयबाक कारणेँ एकरा **डाक वचन** होयबा पर सन्देह व्यक्त करैत पोथीक संग्रह भागमे संकलित नहि कयल गेल । अवश्ये संकलनकर्त्ताक उद्देश्य डाक वचनक संग्रह छलनि तेँ संग्रह भागमे एकरा संकलनीय नहि बुझलनि । तथापि ई तीनू वचन मैथिली लोकवचनक सम्भवतः सबसँ प्राचीन उदाहरण अछि । एमहर डा०शशिनाथझा द्वारा सम्पादित

डाकवचन-संहिता(2001) पोथीमे विष्णुदेव कृत **रत्नकलाप** एवं कलाधरकृत **ज्यौतिष शिशुबोधमेसँ** सेहो किछु **लोकवचन (डाकवचन)** उद्धृत भेल अछि ।

लोकवचनक नवीन स्त्रोत

किछु आरो प्राचीन ज्योतिष विषयक संस्कृत ग्रन्थ ओ टिपौटमे उद्धृत मैथिली **लोक वचन**क आविष्कार भेल अछि ।[4] एहि पंक्तिक लेखकक निजी संग्रहमे **बुद्धिप्रदीपम्** नामक एकगोट हस्तलिखित ग्रन्थ अछि, जाहिमे स्थान-स्थान पर मैथिली भाषाक लोकवचन सभ उद्धृत अछि । एहि ग्रन्थक केवल एक प्रति पूर्वमे बिहार-उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी केर दृष्टिपथ पर आयल छलैक जकर विवरण **डिस्क्रिप्टिव कैटलोग इन मिथिला** (तृतीय भाग)मे अछि ।[5] ई बदामी रंगक कागतक एक पीठ पर देवाक्षरमे लिखल अछि । ठाम-ठाम अशुद्धि छैक । आरम्भक दुइ ओ अन्तक छओ गोट पत्र सादा छैक । शेष पत्रमे समस्त ग्रन्थ छैक । बीचमे कतोक पत्र एहनो छैक जाहिमे किछु स्थान सादा रहि गेल छैक । साधारणतः सोड़हसँ बाइस पंक्ति धरि एक पृष्ठमे छैक । लिपिकारक नाम ओ लिपिकाल नहि देल छैक । ई प्रति डेढ़-दू सय वर्षसँ बेसी प्राचीन नहि होयत । पोथीक आदिमे छैक–

नत्वा हरिं भास्करम्भारतीञ्च । गणेशं शिवञ्चेष्टदेवङ्गुरुञ्च ॥
सुधीरेश्वरेण प्रणीतं समस्तं । समालोच्य शास्त्रं सुबुद्धिप्रदीपम् ॥

तथा अन्तमे छैक– **इति श्रीधीरेश्वराचार्य विरचितं बुद्धिप्रदीपं नाम ग्रन्थं सम्पूर्णम् ॥**

एहिसँ जानल होइछ जे ग्रन्थकारक नाम थिकनि **(सु)धीरेश्वर** (आचार्य) तथा पोथीक नाम थिक **बुद्धिप्रदीपम्** । पोथीक रचना कालक सम्बन्धमे कोनो संकेत नहि भेटैछ । ग्राम-वास-विचारक क्रममे ग्रन्थकार **रुचिदत्त**क उल्लेख कयलनि अछि– **वासस्थाने विचारोऽयं रुचिदत्तेन भाषितम्** ।। ई रुचिदत्त के छलाह सेहो कहब सम्भव नहि, कारण मिथिलामे जे जे रुचिदत्त भेलाह तनिका सभक कोनो ज्यौतिष-ग्रन्थ उपलब्ध नहि अछि ।

प्रस्तुत ग्रन्थमे निम्नलिखित सोड़ह गोट प्रसंगमे मैथिली लोकवचन प्रमाणत्वेन उद्धृत कयल गेल अछि – 1. राशीनाम् नवचरणज्ञानम् 2. शरीरगतचन्द्रः 3. शरीरगत चन्द्रस्य फलम् 4. तिथिविशेष संज्ञा 5. काकस्य वाक्यात् यात्राफलम् 6. प्रसंगाद्भाषाऽसगुनः 7. गृहप्रमाणम् (अथ प्रसंगता(त्) डाकभाषापि लिख्यते) 8. वासस्थान दिशावृक्षफलम् 9. भाषा षोड़श गृह प्रश्नः 10. योगिनी विचार । पोथीक अठाइसम पत्र पर शीर्षक देल छैक **अथ डाक भाषा विचारः** जकरा अन्तर्गत निम्नलिखित विचार छैक– 11. शिवरात्रि दिन वायु विचार 12. फाल्गुन चतुर्दशि वायुफलम् 13. (उपर्युक्त फल संस्कृतमे सेहो छैक) । ततःपर मैथिलीमे पुनः आषाढ़ पूर्णिमाक वायु-विचार छैक, जकर अन्तमे छैक **इति आषाढ़ पूर्णिमा विचारः** 14. ग्रहण विचारः 15. ग्रहण दोषः 16. सूर्य ग्रहण योगः ।

उपरिनिर्दिष्ट पद सभमे किछुमे डाकक नामोल्लेख अछि, किछु पदमे नहि अछि । छठम क्रमसंख्यक पदमे **व्यासक** भनिता अछि । एतावता एहि नवीन स्त्रोतसँ प्राप्त लोकवचनमेसँ किछु सर्वथा नवीन अछि, किछु प्रचलिते लोकवचन थिक और किछु पद पाठान्तरक संग आनो ठाम देखल जाइछ । **बुद्धिप्रदीपम्** नामक एहि नवोपलब्ध ग्रन्थमे उद्धृत मैथिली लोकभाषाक समस्त

लोकवचन निम्नलिखित अछि–

1. *अथ राशीनानंवचरण ज्ञानम् ।*

अश्विनी भरणी कृत्तिक एक पाय । मेष राशिकाँ एतेक उपाय ॥ 1 ॥
कृत्तिक तीनि रोहिणी भौ वेद । दुइ मृगशिरा वृष परिछेद ॥ 2 ॥
मृगशिरा दूयि आर्द्रा चौपाय । तीनि पुनर्वसु मिथुन गोसाँइ ॥ 3 ॥
एक पुनर्वसु पुष्यश्लेष । भूँजहु कर्कट राशि विशेष ॥ 4 ॥
मघा पूर्व उत्तर एक पाय । सिंह राशिकाँ एतेक उपाय ॥ 5 ॥
उत्तर तीन हस्त भौ चारि । दुइ चित्रा लय कन्या कुमारि ॥ 6 ॥
अर्ध चित्रा स्वाती भौ चारि । तीनि विशाखा तूल विचारि ॥ 7 ॥
शेष विशाखा ओ अनुराधा चारि । सर्व ज्येष्ठा लय वृश्चि विचारि ॥ 8 ॥
मूल पूर्व उत्तर एक पाय । धनु राशिकाँ एतेक उपाय ॥ 9 ॥
उत्तर तीनि श्रवण भौ चारि । अर्ध धनिष्ठा मकर विचारि ॥ 10 ॥
अर्ध धनिष्ठा शतभिष भौ चारि । तीनि पूर्व लय कुम्भ गोसाइ ॥ 11 ॥
पूर्व एक उत्तर भौ वेद । चारि रेवती मीन परिछेद ॥ 12 ॥

2. *अथ शरीरगत चन्द्रः कथ्यते* ॥

जन्मक तेसर पञ्चम शीश । षष्ठ नवम गुणि लीजय पीठ ॥
दशम एकादश हृदयमे दीजय । आठम द्वादश पादहिं दीजय ॥
सप्तम चौठ पुनि हाथहि दीजय । कहथि डाक भाषा फल लीजय ॥

3. *॥ फलञ्च ॥ (शरीरगत चन्द्रस्य)*

माथक चन्द्रमा द्रव्य देखाबहि । हृदयक चन्द्रमा बहु सुख पाबहि ॥
पादहिं कल्लह पीठ निराश । हाथक चन्द्रमा पुरावहिँ आस ॥

4. *अथ तिथि विशेष संज्ञा* ॥

परीब षष्ठी एकादशी नन्दा ॥ द्वितीया सप्तमी द्वादशी भद्रा ॥
तृतीया त्रयोदशी अष्टमी जाया ॥ चौठ चतुर्द्दशी नवमी रिक्ता ॥
पञ्चमी दशमी पञ्चदशी पूर्णा ॥

5. *अथ काकस्य वाक्यात् यात्राफलम्* ॥

पिपर पाकरि बेल पर पोखरि भिण्ड पलाशमे
बोलय दहिने शुभ फल(द) पूर्ण होय सभ काम

6. *अथ प्रसङ्गाद्भाषाऽ सगुनः* ॥

नगण भगण गुर्विणी सोइ । षटसियार योँ आगाँ होइ ॥
हाड़ा लय सुनह योँ धावय । कहथि व्यास किछु मरण दिषाबय ॥

7. *अथ गृह प्रमाणम् (अथ प्रसङ्गाड्डाकभाषापि लिख्यते)* ॥

गृहपति हाथ करब परमान ॥ घर चाकर दीर्घ गुनि आन ॥
एक छारि कय वसु सय हरब ॥ बाकी बयसे लेखा करब ॥
एक अनेक तिजे धन मान ॥ चौठे होहि पुत्र कल्याण ॥

साते सकल मनोरथ पूर ॥ कहथि डाक भाषा फल बूझ ॥
गामे ठामे नामे जान ॥ सोम शुक्र बुध दशा लय आन ॥

8. *अथ वासस्थानाद्दिशावृक्षफलम्* ॥

पीपर पाकरि पयोधर काँट । लोहित फूल पश्चिम नहि आँट ॥
वायव तेतड़ि उत्तर तार । ईशानक बदरी परइ अकाल ॥

9. *अथ भाषा षोड़शगृह प्रश्नः* ॥

कर्त्ता एक सिद्धि लय आबय । दूजे परे परा धन पाबय ॥
तीजे कार्य्य विलम्ब न होइ । चौठे पन्थ चल आबय सोइ ॥
पञ्चम त्वरित किछु बात जनाबय । छठे देश दिगन्तर धाबय ॥
सप्तमे परय पीड़ित घर आबय । अष्टम हनुमत बात सुनाबय ॥
नवमे मृत्यु दशा भौ चोरी । दशम एकादश किछु वित्त बटोरी ॥
बारह पाबय कुशल आनन्द । तेरह पर तोँ झगरा द्वन्द ॥
चौदह परय न सोहय चीर । पन्दह करय किछु दुःख शरीर ॥
सोड़ह सिद्धि नेने घर फीर । सोड़ह गृहफल बूझ सुधीर ॥
सोड़हो कोठाक जानय भेद । तकर पानि भरय सहदेव ॥

एहि वचनवला पत्रक वामभागक पृष्ठ पर निम्नलिखित षोडशगृह यन्त्र बनाओल छैक—

	1	
3	2	5
8	4	6
9	7	14
10	12	13
15	11	16

10. *अथ योगिनी विचारः* ॥

पड़ी पची सखा दुआ । नवे नवे योगिन हुआ ॥
दहिना योगिनी मारय मारय । समुख योगिनी जीव लय जाय पराय ॥
वामे पीठ बहुत धन पाबय । अन धन लक्ष्मी देहि जनाबय ॥
ऊर्ध्वे योगिनी पञ्चदश 15 । अर्द्धे दश 10 परमान ॥
वामे दहिने तेरह तेरह । सन्मुख नव को जान ॥

11. *॥ अथ डाकभाषा विचार ॥ अथ शिवरात्रि दिन वायुविचार* ॥

पूर्वे पूर्वा बहय कुरङ्ग , एको मेघ न लाबय अङ्ग ॥ 1 ॥
अग्नि कुमारि बहहि योँ वाय , भूषहिँ मरिहेँ प्रजा अभागू ॥ 2 ॥
दक्षिण पवन लघु योँ बहही , अन्न मूल लड्डु भरि कहही ॥ 3 ॥
नैर्ऋत कोण बहय योँ वाय , धान पान सभ प्रजा सुखाय ॥ 4 ॥
पश्चिम पछबा बहय विकरार , कोदो मरुआ होय पवहार ॥ 5 ॥
वायव कोना कहि गेल योई , कुआँ पैसि वस्त्र धोय धोबी ॥ 6 ॥
उत्तर उतरा बहय निराओ , घर मै घरनी रहय नितराय ॥ 7 ॥
कोन ईशान योँ बहय निरन्तर , रसगर सारि पुनि करह सुरङ्ग ॥ 8 ॥

12. *अथ फाल्गुन चतुर्दशी वायुफलम् ॥*

फाल्गुन चतुर्दशी सन्ध्याकाल । वर्षा बूझब वायु विचार ॥

13. *(अथ आषाढ़ पूर्णिमाविचार ॥)*

मास अषाढ़ पूर्णिमा गमना ॥ ध्वजा ताकि कँ बुझब पवना ॥
पूर्वे दिशा पवन चलि आबय ॥ उपजय सारि पवन झरि लाबय ॥
अग्नय कोन बहय योँ अनील ॥ परय अकाल भूप सभ हील ॥
दक्षिण बहय मलयानीला ॥ मध्यम शस्य रण जूझय धीरा ॥
नैर्ऋत पुहमी बुन्द ने गिरई ॥ राजा रङ्क अन्न बिनु मरई ॥
पश्चिम पछबा नम्भीक(?) जान ॥ अतीचारक किछु भये समान ॥
वायव पुहमी योँ जल भरई ॥ ढोंढ़ साँप मूस अवतरई ॥
उत्तर उतरा बहय इसान ॥ धान पान सभ खाय किसान ॥
ईशान दुई (दई) कुल दुन्दभि बाजय ॥ दही भात घृत भोजन कराबय ॥
योँ बह ध्वजा रहय ब्रह्मण्डा ॥ कांपय पृथ्वी ओ..... दण्डा ॥
नवरत्न पञ्चरत्न परितेजिकेँ ॥ अन्न संग्रह करु जाय ॥
व्यास वचन सभ भाषया ॥ पुहमी धूरि उरि जाय ॥

14. *अथ ग्रहणविचारः ॥*

रवि सौँ चन्दा सप्तमे राहौ सोँ एकान्त ॥
अवशो गहना लागही की फल खण्डित सन्त ॥

15. *अथ ग्रहणदोषः ॥*

रवि राउत ये घहराउ की कह भय समुझाय ॥
अब नहि गहना लागिहैँ राहु रहय मुह बाय ॥

16. *अथ सूर्य्यग्रहणयोगः ॥*

जानि षड़ा यँ रवि तम(प)य ताहि अमावस होय ॥
किछु किछु परिवा सञ्चरय सूर्य्य पर्व तब होय ॥

निजी संग्रहमे एकटा अत्यन्त पुरान जीर्ण-शीर्ण बसहा कागतक टिपौटमे कागभाखा कहि चारि गोट पद्य अछि । ओहिमे प्रत्येक पहर (पहिल, दोसर, तेसर, चारिम)मे कोन दिशामे कागाक बजने की फल होयत तकर वर्णन कयल गेल अछि । प्रत्येक पद्यमे दिशाक क्रम अछि– पूब, अग्नि, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर ओ ईशान।

अथ कागभाषा विचार ॥

पूबे चिन्ता अग्ने दुज भोजन । दक्षिण कहए सन्तापहि मोचन ॥
नैऋत किछु सुवचन सुनाब । पश्चिम कहुखन मेघ देखाब ॥
बाएब मित्र मिलए ताहि बार । उत्तर अर्थ लाभ संचार ॥
मन सन्ताप इसानहि भेल । पहिलहि पहर काग कहि गेल ॥ 1 ॥
पूबे धन अग्नेये मित्र जोग । दक्षिण हित नैऋत अर्थ भोग ॥
पश्चिम किछु लाभ तैं जनि झूरह । बाएब कलह उत्तर सुख पूरह ॥
सज्जन संग इसानहि भेल। दोसर पहर काग कहि गेल ॥ 2 ॥
पूबे व्यय अग्नेये कह हानि । नृपति कथा कह उत्तर जानि ॥

दक्षिण शत्रु नैऋत दुख पाब । बाएबे कत कलह कराब ॥
इसानहिं मित्र मिलए परचारि । आठहु दिशा दुज कहल विचारि ॥
पश्चिम .... भेल । तेसर पहर काग कहि गेल ॥ 3 ॥
पूबे द्विज पंथ चलाब । अग्ने सुख भंग कराब ॥
दक्षिण शत्रु नैऋत भाए । पश्चिम नृपति वस्य भए जाए ॥
बाएब अरि सञो होअए प्रीति । उत्तर कह अग्नि अभीति ॥
सज्जन संग इसानहि भेल । चारू (चारिम) पहर काग कहि गेल ॥ 4 ॥

ई कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली भाषा, साहित्य ओ समाजशास्त्रीय अध्ययनक दृष्टिएँ लोकवचनक कतेक महत्त्व अछि । मुदा एहि दिशामे एखन धरि सन्तोषप्रद कार्य नहि भऽ सकल अछि । सबसँ पैघ आवश्यकता अछि लोकवचन सभक संकलन करबाक दिशामे तत्परता । ई मानि लेल गेल अथवा सन्तोष कऽ लेल गेल अछि जे कपिलेश्वरझा जतबा वचन संकलित कऽ लेलनि, ओहिसँ अधिक वा नवीन वचन लोकमुखसँ प्राप्य नहि अछि, अथवा जीवानन्दठाकुर प्राचीन स्रोतसँ जतबा वचन सब बहार कयलनि ताहिसँ अधिक भेटब सम्भव नहि । मुदा एहि प्रकारक धारणा समीचीन नहि अछि । अवश्ये कपिलेश्वरझाक संकलन कालक पश्चात् एकटा दीर्घ अवधि व्यतीत भऽ गेल अछि । गाम-देहातक परिवेश परिवर्त्तित भऽ नगरक मनोवृत्ति धारण कयने जा रहल अछि । निरक्षर किन्तु अनुभवी लोक आब विरल होइत जा रहल अछि आ ओही संग विलोपक प्रक्रियामे अछि मैथिलीक ई अनमोल लोकवचन सभ । एखनो जतबा समेटल जा सकय से समेटि कऽ लिपिबद्ध कऽ लेबाक चाही । दोसर दिस, प्राचीन लोक-व्यवहार विषयक संस्कृत ग्रन्थ ओ प्राचीन टिपौट सबमे डाक किंवा अनाम कर्त्तृत्वक वचनक अनुसन्धान कऽ ओकर उद्धार करबाक दिशामे गम्भीर प्रयत्न अपेक्षित अछि। एही संगे ईहो आवश्यक अछि जे अनुसन्धाता लोकनि मैथिली लोकवचनक समाजशास्त्रीय, काव्यशास्त्रीय एवं भाषाशास्त्रीय अध्ययनक दिशामे सेहो प्रवृत्त होथि ।

सन्दर्भ-संकेत

1. जिज्ञासा (मैथिली अर्द्धवार्षिक शोधप्रधान पत्रिका) वर्ष -1, अंक-2, जुलाइ-दिसम्बर 1995
2. मैथिल डाक; पं०जीवानन्दठाकुर, मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा, 1950
3. तत्रैव;
4. धीरेश्वराचार्य कृत **बुद्धिप्रदीपम्**मे मैथिली पद; प्रो० श्रीरामदेवझा, स्टडीज इन इण्डोलोजी भाग-1, म.म.उमेशमिश्र मेमोरियल वॉल्यूम,1967, पृ.
5. ए डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग ऑफ मैन्युस्क्रिप्ट्स इन मिथिला, वॉल्यूम-3-ए.पी. बनर्जी शास्त्री, द बिहार एण्ड ओड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना, 1936

●

मैथिली लोकोक्ति

मनुष्य जातिक मनोवृत्ति, प्रवृत्ति ओ स्वभाव; जड़-जेतन समुदायक स्वभावाचरण; ऋतुचक्र, प्राकृतिक घटना ओ प्रभाव इत्यादिक सम्बन्धमे अनभिज्ञात कालसँ, अनभिज्ञात कर्त्तृत्वक लोकानुभव जन्य ज्ञानक परम्परया प्राप्त रूढ़ सूत्रात्मक अभिव्यक्तिकेँ लोकोक्ति कहल जाइत अछि ।

लोकोक्तिक विभिन्न अभिधान

संस्कृतमे एहन उक्ति सबकेँ **आभाणक, लौकिकी गाथा** एवं **लोकप्रवाद** कहल जाइत अछि । एकटा संस्कृत व्याख्याकार लोकप्रवाद अर्थात् लोकोक्तिकेँ परिभाषित करैत कहने छथि– **लोकप्रवादो जनानां चिरन्तन वचन व्यापारः** । एकरे अंगरेजीमे **प्रोभर्ब** (Proverb), बंगलामे **प्रवाद** वा **वचन** ओ हिन्दीमे **कहावत** कहल जाइछ । मैथिलीमे एहन उक्तिकेँ **लोकोक्ति, कहबी, कहबित** ओ **फकड़ा** कहल जाइछ । कवीश्वर चन्दाझा अपन **वाताह्वान** काव्यमे कहबी वा लोकोक्तिकेँ **उपलच्छन** (उपलक्षण) कहैत छथि–

'उपलच्छन संसारहि फैल । झिटुकी सौं फुटि जाइछ घैल ॥'
'उपलच्छन अछि जन कहबाक । तिन तिरहुतिआ तेरह पाक ॥'

म.म. परमेश्वरझा ओ प० ऋद्धिनाथझा सेहो कहबीकेँ उपलक्षणे कहैत छथि। सम्प्रति कतोक विद्वान् उपलक्षणक प्रयोग मोहाबराक लेल करैत देखल जाइत छथि ।

सूक्ति ओ लोकोक्ति

लोकोक्ति कोनहु भाषाक नैसर्गिक सम्पत्ति मानल जाइत अछि । समाजमे एकरा आप्तवचन मानल जाइत अछि । आधुनिक भारतीय भाषामे एहन रूढ़ोक्ति अर्थात् लोकोक्ति प्रचुर परिमाणमे विद्यमान अछि जकर समाजमे नित्य प्रयोग होइत अछि तथा जकरा सूक्ति वा सुभाषित सदृश मान्यता प्राप्त छैक । परन्तु **लोकोक्ति** ओ **सूक्ति** वा **सुभाषित**मे बहुत अन्तर अछि । कोनहु देश ओ समाजक महापुरुष, मनीषी, दार्शनिक चिन्तक-विचारक लोकनि अपन चिन्तन ओ ज्ञानक सारभूत तत्त्वकेँ अल्प शब्दमे निबद्ध कऽ परवर्ती मानव समुदायक हितार्थ रिक्थ रूपमे छोड़ि जाइत छथि । ओ उक्ति सभ समयक कसौटी पर सत्य सिद्ध भऽ कऽ चिरन्तन, सार्वभौम ओ सार्वकालिक रूपमे मान्य भऽ जाइछ । एहन सारभूत तत्त्व सम्पन्न आप्त वचन सभ लिपिबद्ध भऽ कऽ वाङ्मयक अनमोल रत्नक रूपमे सुरक्षित राखल जाइत रहल अछि, जकरा **सूक्ति वा सुभाषित** कहल जाइत अछि । भारतीय वाङ्मयमे एहन सूक्ति-सुभाषित सभक अपरिमित भण्डार अछि ।

दोसर दिस लोकोक्तिक कर्त्तृत्व अज्ञात रहैत अछि । ई लोकमानससँ प्रादुर्भूत भऽ लोकश्रुति ओ लोकस्मृतिक माध्यमे अलिखित ओ कथ्य रूपमे एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीकेँ कण्ठान्तरित होइत रहैत अछि । सूक्ति-सुभाषितमे गम्भीर चिन्तन ओ वैचारिकता रहैत अछि,

लोकोक्तिमे अनुभव ओ व्यावहारिकता रहैत अछि । सूक्ति-सुभाषित लिखित रूपमे रक्षित आभिजात्य साहित्य थिक । परन्तु लोकोक्ति लोककण्ठमे रक्षित लोकसाहित्य थिक । प्रत्युत लोकसाहित्यक ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग मानल जाइत अछि ।

लोकोक्तिक प्रभेद

लोकोक्तिक सामान्य अर्थ भेल लोकक कथन, लोकक उक्ति । एहि तरहेँ एकर क्षेत्र बड़ व्यापक भऽ जाइछ । एकरा अन्तर्गत लोकवचनहुक समावेश कऽ देल जाइत अछि; । किन्तु लोकवचन लोकसाहित्यक भिन्ने प्रकार थिक । ओकर प्रकृति लोकोक्तिसँ भिन्न होइछ। दोसर दिस अत्यन्त संकुचित अर्थमे केवल कहबीएक लेल एकर प्रयोग होइत अछि। एक दृष्टिएँ एकर परिधि विस्तृत अछि तँ दोसर दृष्टिएँ अति संकुचित । हम दुनूकेँ अमान्य करबाक पक्षमे छी । लोकवचनक व्यतिरिक्त मैथिली लोकोक्तिक तीन गोट प्रभेद परिगणित कयल जयबाक चाही । ओ तीनू प्रभेद थिक, क्रमशः (क) **कहबी** (ख) **फकड़ा** (ग) **लौकिक न्याय** । तीनूक अपन-अपन प्रकृति ओ वैशिष्ट्य छैक परन्तु तीनूक जाति थिक एके ।

मैथिलीमे लोकोक्तिक स्थिति

मैथिली भाषामे लोकोक्तिक विशाल भण्डार अछि । प्रत्येक मैथिली भाषीक वाक्कोषमे पचीस-पचास लोकोक्ति अवश्ये अवचेतन स्थितिमे विद्यमान रहैत छैक जकर प्रयोग प्रसंगानुकूल कयल करैत अछि । लोकोक्तिक निर्माण, स्वरूप, सूक्ति ओ मोहाबराक संग साम्य-वैषम्य तथा मैथिलीमे लोकोक्तिक स्थितिक सम्बन्धमे अपन पुस्तक **मैथिली मोहाबरा ओ लोकोक्ति**मे प०चन्द्रनाथमिश्रअमर संक्षेपमे निम्नरूपक विचार व्यक्त कयने छथि- **उपलक्षण (मोहाबरा)सँ लोकोक्तिक स्थिति भिन्न होइत अछि । लोकोक्ति शुद्ध संस्कृत शब्द थीक, ठेंठ मैथिलीमे एकरा कहबी कहल जाइत अछि । एकर उत्पत्ति ओ विकासक कोनो शास्त्रीय पद्धति नहि छैक । लोकोक्तिमे बहुत सूक्तिक सन्निवेश सेहो रहैत छैक, अतः बहुतो लोकोक्ति छन्दोबद्ध देखना जाइछ । जाहि कोनो सत्यकथाक सार्वभौमिक महत्त्व रहैत छैक तकरा सर्वमान्यता भेटिए जाइत छैक । परिणामतः सर्वसाधारणमे ओ उक्ति ततेक प्रसिद्ध भै जाइत अछि जे कोनहु ग्रन्थमे ओकर उल्लेख बिनु रहनहुँ जनसाधारणक कण्ठमे ओकरा व्यापक स्थान भेटि जाइत छैक । यैह कारण थीक जे कहबीक उत्पत्ति कोना होइत अछि से निधारित करब बड़ कठिन । परन्तु सूक्तिक संग ई स्थिति नहि रहैछ। समाजक मूर्द्धन्य व्यक्ति सामाजिक दूषणकेँ दूर करबाक हेतु, आतुरताकेँ शान्त करबाक एहन वचन उदाहरण स्वरूप उपस्थिति करैत छथि । ओहि उपदेशात्मक वाक्यकेँ सूक्ति कहल जाइछ ।'.... 'लोकोक्तिक अर्थ नहि कैल जा सकैत अछि, प्रत्युत प्रयोग द्वारा उपयुक्त अवसर उपस्थित कराय भावार्थ व्यक्त कैल जा सकैत अछि । मैथिलीमे लोकोक्तिक संख्या बहुत अछि, परन्तु अश्लील ताहिमे ततेक अधिक, जकरा लिपिबद्ध करब सर्वथा अनुचित ओ उपहासास्पद बूझल जैत तथा सत्साहित्यमे ओहि प्रकारक प्रयोगो नहिंजे होइत अछि ।**

मोहाबराक उपयुक्त पर्याय : चतकार

मिथिलावासी अपन वार्त्तालापमे भाषा-प्रयोग करबाकाल अत्यन्त सतर्क रहैत छथि।

ककरासँ कोन रीतिक भाषामे गप्प कयल जाय तकर ध्यान राखब अत्यन्त आवश्यक मानल जाइछ । अत: मैथिली भाषाक व्याकरणिक संरचना सेहो ओही रीतिक बनि गेल छैक । एहि रूपक भाषिक प्रवृत्तिक सम्बन्धमे एकटा कहबी सूनल जाइत अछि– **कहबाक छल अओ, कहा गेल हओ, तँ की मारबेँ रओ ?**

वास्तवमे बोलेक मोल छैक, यैह मुँह पान खुआबय, यैह मुँह जुत्ता खुआबय । एकहि अर्थक दुइ शब्दमे महान् अन्तर होइत अछि । खायब आ गीड़ब समानार्थक पर्यायवाची शब्द थिक । दुनूक अर्थ समाने होइछ, खाद्य पदार्थक गल-विलाध-संयोग । परन्तु **खा लियऽ** आ **गीड़ि लियऽ** एहि दुहू वाक्य-प्रयोगमे अर्थ आ आशयमे कतेक भिन्नता छैक से सहजहि बोधगम्य अछि । तेँ कहबीयो अछि– **खायब गीड़ब एक थिक, बजबाक बिसेख थिक ।**

बजबाक बिसेख गुण मैथिली भाषाक पद-पदमे भेटैछ । शब्द, पद ओ वाक्यमे लक्षणा आ व्यंजनाक सहज सन्निवेश देखल जाइत अछि । सामान्य जन जे काव्यशास्त्रक शब्दशक्ति-अभिधा, लक्षणा, व्यंजना एवं एहिसँ निष्पन्न अभिधेयार्थ, लक्ष्यार्थ आ व्यंग्यार्थसँ सहजहि अनभिज्ञ रहैत अछि, सेहो अनायासे वाक्यार्थक मर्म बूझि लेबामे समर्थ होइत अछि । लोक सहज रीतिसँ ओहन खण्डवाक्यक प्रयोग करैत रहैत अछि जाहिमे रूढ़ रूपमे लक्ष्यार्थ वा व्यंग्यार्थ सन्निहित रहैछ । मैथिलीमे लक्ष्यार्थ-व्यंग्यार्थ-युक्त वाक्यांशक बहुल प्रयोग ओ बजबाक **बिसेख** वा छवि-छटाकेँ **चतकार** कहल जाइत अछि, जेना–**'फल्लाँकेँ बड़ चतकारसँ बाजऽ अबैत छनि ।' 'हुनका बजबामे बड़ चतकार ।' ओ बाजत तँ चतकारेसँ ।'**

वास्तवमे प्रत्येक भाषामे एहन रूढ़ वाक्य-खण्ड होइछ जे वाच्यार्थसँ भिन्न चमत्कारक लक्ष्यार्थ वा व्यंग्यार्थ द्योतित करैत अछि । एहि प्रकारक लक्ष्यार्थ-व्यंग्यार्थ-मय वाक्यांश हेतु संस्कृत, मैथिली अथवा हिन्दीयोमे कोनो परम्पराप्राप्त सुनिश्चित अभिधान नहि छैक । अवश्ये उर्दू ओ हिन्दीमे एहि हेतु आगत शब्द **मुहावराक** प्रयोग होइत अछि आ ई आब ओकर अपन शब्द बनि गेल छैक । **मुहावरा** अरबी भाषाक **हौर** शब्दसँ व्युत्पन्न भेल अछि आ एकर व्युत्पत्ति-लभ्य अर्थ होइछ– **गप-सप करब, उतराचौरी करब** । **मुहावराक** हेतु कतोक भारतीय भाषामे **उपलक्षण, वाग्धारा, वाग्रीति, रूढ़ प्रयोग** इत्यादि अभिधानक प्रयोग कयल जाइछ । मैथिलीमे **मोहावरा** ओ **उपलक्षण** कहबाक प्रवृत्ति अछि ।

मैथिलीक कतोक विद्वान् लोकोक्ति-कहबीक लेल **उपलक्षणक** प्रयोग कयने छथि । तेँ **मोहावराक** लेल **उपलक्षण** अभिधान भ्रमकारक सिद्ध भऽ सकैत अछि । एहन स्थितिमे **मोहावराक** लेल मैथिलीक अपन देशी शब्द **चतकार** सर्वाधिक उपयुक्त ओ तदर्थक व्यंजक अछि । अत: मैथिलीमे ओहन वाक्यांशकेँ जकरा अंगरेजीमे **फ्रेज**, हिन्दीमे **मुहावरा**, मैथिलीमे **'वाग्धारा'** वा **'उपलक्षण'** कहल जाइछ, तकरा **चतकार** अभिधान देल जा सकैछ ।

(क) कहबी

परिभाषा ओ स्वरूप-निरूपणक क्रममे **लोकोक्तिक** प्रसंग जे विचार कयल जाइत रहल अछि, से सब वास्तवमे कहबीए पर घटित होइत अछि । कहबी सब समाजक दीर्घकालीन अनुभवसँ प्रसूत निष्कर्ष थिक । ओ अपन लघु आकारहुमे बहुत गम्भीर सन्देश कहि दैत अछि । प्रत्येक कहबीक निर्माणक पृष्ठभूमिमे कोने ने कोनो घटना अथवा

घटनात्मक परिवेश अवश्य रहैत छैक जकर स्मृति अवशेष एखनहुँ विद्यमान अछि । ओकरहि सभक निष्कर्ष वा उपसंहार कहबीक रूपमे प्रचलित अछि । बहुतो कहबीक पृष्ठभूमिक घटना वा घटनात्मक कथा-प्रसंग विस्मृत भऽ गेल । ओकर कतोक शब्दक अर्थ-लोप भऽ गेलैक तथापि ओ कहबी जनसमाजमे चलि रहल अछि ।

मैथिली कहबीक संरचना

मैथिली कहबीक बाह्य स्वरूप ओ भाषिक संरचना सेहो एकटा विचारणीय विषय थिक । मैथिलीक बहुसंख्यक कहबी पद्यात्मक कोटिक अछि । लघु आकारक एकहु चरणक कहबीमे यति-गति रहैत अछि जाहिसँ ओहिमे छन्दक आभास भेटैत अछि । किछु उदाहरण देखल जा सकैत अछि–

सात नुएँ सहोदरा नाङ्ट ।	– यतिकमात्रा-3-3-3-6 = 15 मात्रा
राँड़ माँड़हि तिरपित ।	– यतिकमात्रा- 3-4-4 = 11 मात्रा
पेटमे घास (खऽढ़) नै सींघमे तेल ।	– यतिक मात्रा- 5-5-5-3 = 18 मात्रा
गाइओ हूँ बछड़ुओ हूँ ।	– यतिकमात्रा - 5-2-5-2 = 14 मात्रा

विशेष पद्यात्मात्मक कहबी एक वा दुइ चरणक होइत अछि । किछुमे दुइसँ अधि को चरण होइत छैक । अतः पद्यात्मक कहबीक दुइ प्रकार कहल जा सकैत अछिः एकचरणात्मक कहबी ओ बहुचरणात्मक कहबी । बहुचरणात्मक कहबीमे समचरण ओ विषमचरण- दुहू कोटि देखल जाइत अछि । क्वचित् अपवाद सहित बहुचरणात्मक कहबीमे अन्त्यानुप्रासक प्रयोग रहैत अछि । पद्यात्मक कहबीमे अन्तर्वर्त्ती अनुप्रास-प्रयोगक विलक्षणता सेहो यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होइत अछि, यथा– **छोट** खिखिरकेँ **मोट** नाङरि / **सोन** पूत **वोनमे**, कानी धीया **कोनमे** / लऽहु काज **बऽहु** करय धान कुटय मैया / **चोरा** करय **बटोरा**, ने हाथी ने **घोड़ा** / **हाटक** चाउर, **बाटक** पानि / **अऽरि** अढ़ेलनि **कऽरिकेँ**, **कऽरि** रहला **पऽड़ि** / **चतुरीकेँ हथुरी**, **फुहरीकेँ** ढकिया / **मूनि** गाय **खूनि** आबय / उपर **भऽर**, **तऽर झऽड़**, **ताइ** नुक्खक कोन **डऽर** ।

एहि रीतिक अनुप्रास-योजनाक नियमानुशीलन कयल जा सकैत अछि । कहबीमे जे लयात्मकता ओ गति-यति-नियमन अछि, छन्दक जे विविधता ओ विलक्षणता अछि तकर गम्भीर अध्ययन-विश्लेषण कऽ ओकर महत्त्व सेहो स्थापित कयल जा सकैत अछि। किछु कहबी एहनो अछि जकरा सम्बन्धमे ई निर्णय कठिन भऽ जाइछ जे ई पद्यात्मक थिक वा गद्यात्मक । अन्तरक रेखा बड़ सूक्ष्म रहैत छैक । कतोक कहबीमे यति-गतिक अभाव रहैत अछि । एहन कहबी सब शुद्ध रूपमे गद्यात्मक रहैत अछि । अवश्ये ओकर वाक्य-विन्यास, शब्द-योजना प्रयोगक कालमे सामान्यतः परम्परित, तेँ अपरिवर्त्तनीय रहैत अछि । ई सब वार्त्तालापक भाषामे ओ लघु-दीर्घ वाक्यमे गठित रहैत अछि । वाक्य सब सरल, संयुक्त वा मिश्र कोटिक भऽ सकैत अछि। एहन गद्यात्मक कहबीक किछु उदाहरण द्रष्टव्य अछि–

लंकामे जे सबसँ छोट से उनचास हाथ / नेना बाजय बूढ़ जकाँ तँ ओकरो मुँहमे मारी, बूढ़ बाजय नेना जकाँ तँ तकरो मुँहमे मारी / जते जांघ (पोन) पर चाटी चलै छै, तते ढोलक पर नहि चलै छै / चालनि दुसलनि सूपकेँ जनिका अपना सहस्सरटा भूर / कहलकै मुसहरनीयाँ जे समाङे ने, सगाइ लय हरहोड़ उठल छै / नन्हकटनीक सूत आ मोटकटनीक

सूओ, सब एके भाव / ई आङुर काटू तओं अपने दुखायत, ओ आङुर काटू तओं अपने दुखायत / बनिञा जोखबे ने करय, गहिंकी कहय पूर (लऽत) कऽ जोखिहऽ । इत्यादि

चतकार / मोहावरा ओ कहबीमे अन्तर

कहबी ओ **मोहाबरा** वा **चतकार**मे बड़ विभेद अछि । कहबी एकटा वाक्य होइछ मुदा चतकार एकटा वाक्य-खंड । कहबीमे सूत्रात्मकताक संग शब्द-विन्यास निश्चित रहैछ, तथापि ओहिमे शब्द विन्यासक क्रममे व्यतिक्रम ओ कोनो शब्दान्तरो भेलासँ अर्थमे अन्तर नहि होइत छैक । परन्तु चतकारमे से भेलासँ ओकर अर्थ-व्यंजना बाधित भऽ जाइछ । **चतकार** वा **मोहाबरा**मे प्रयुक्त शब्दक वाच्यार्थ कथमपि ग्राह्य नहि होइत छैक ! **फूकि फूकि कऽ चलब** एकर अभिधेयार्थ होयत चलबासँ पूर्व बाटकें मुँहक फेकल बसातसँ साफ कऽ कऽ चलब । परन्तु व्यवहारमे एहन होइत नहि छैक । तें उपर्युक्त वाक्यक अभिधेयार्थक कोनो उपयोगिता नहि छैक । परन्तु लक्षणासँ अर्थ होयत सतर्क भऽ कऽ कोनो कार्य करब। व्यंजनासँ अर्थ बहरायत जे तेना कार्य करब जाहिसँ आगाँ कोनो विघ्न-बाधा नहि हो । **कहबी** एकटा वाक्य होइत अछि । अतः ओहिमे क्रियापद रहब स्वाभाविक अछि । परन्तु कतोक कहबी एहनो होइछ जाहिमे क्रियापद प्रत्यक्षतः रहैछ नहि अपितु ऊह्य होइत छैक । जतऽ क्रियापद रहैत छैक ततऽ ओकर कर्त्ता, कर्म, पुरुष, लिंग, कक्षा ओ कालानुसार क्रियापद-रूप सुनिश्चित रहैत छैक । ओहिमे ऐच्छिक परिवर्त्तन नहि भऽ सकैछ । से भेला पर कहबीक प्रकृति ओ अर्थाभिव्यक्तिक चमत्कारिक शक्तिए नष्ट भऽ जायत । ओहन उक्तिक कहबीत्व नष्ट भऽ जयतैक । किछु उदाहरण द्रष्टव्य—**बाबाजीक बेल, हाथे हाथे गेल/भेल विआह मोर करबह की, धीआ छोड़ि कऽ लेबह की ?/ रुसल जमैआ करता की, धीया छोड़ि कऽ लेता की ?/ फेर फेर नढ़रो बेलतर जेती, बेलक मारि भटाभट खैंती ?/हारलकें हरिनाम /अपने मने होउ राजा, तँ होउ राजा ।**

एहि कहबी सबमे क्रियापदक जे रूप प्रयुक्त भेल छैक से अपरिवर्त्तनीय अछि । दोसर दिस चतकार वा मोहाबरामे क्रियापदक अवस्थिति अनिवार्य रहैत अछि से वाक्य-प्रयोगमे विभिन्न रूप धारण करैत अछि । ओ कर्त्ता, कर्म, पुरुष, लिंग, कक्षा ओ कालानुसार परिवर्तित होइत रहैत छैक । कहबी प्रसंगाश्रित होइत अछि । प्रस्तुत प्रसंगक समर्थन कहबीक अप्रस्तुत भावार्थसँ कयल जाइछ । प्रस्तुत अर्थ ओ अप्रस्तुत अर्थमे बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव रहैत छैक। **चतकार** वा **मोहाबरा** वाक्याश्रित होइत अछि आ वाक्य-प्रयोगे द्वारा ओकर अर्थ लक्षित वा व्यंजित होइत अछि । एकरा कोनो अप्रस्तुत अर्थक समर्थनक प्रयोजन नहि रहैछ । ई वाक्यांग रूपमे स्वयं इष्टार्थक द्योतन करैत अछि परन्तु कहबी इष्ट अर्थक सम्पोषण करैत अछि ।

कहबीक शब्दार्थ-लोप

कहबीमे कतोक एहनो शब्दक प्रयोग भेटैछ जे कहियो प्रचलित छल, आब अप्रचलित अछि । कहबी-प्रयोगमे वर्त्तमान रहितो ओकर वाच्यार्थक लोप भऽ गेल अछि । फूसि बहाना कऽ कऽ काजमे विलम्ब करबाक, टालमटोल करबाक प्रसंग उपस्थित भेला पर एकटा कहबीक प्रयोग होइत अछि— **पचड़ी हेरायल, बाबू तकिते छी** । बनियाँ आ भूतक घटनासँ उद्भूत एहि कहबीमे **पचड़ी** शब्दक अर्थ थिक बटखारा। परन्तु बटखाराक अर्थमे **पचड़ी** शब्द कहबीमे जीबैत अछि वाच्यार्थ नहि अछि ।

कोनो कनियाँक माय आ सासुक व्यवहारक तुलनात्मक प्रसंग उपस्थित भेला पर निम्नलिखित कहबीक प्रयोग होइछ– **माय दिअय ओगरेमे, सासु दिहय डगरेमे** । माय अपना बेटीकेँ झाँपन दैत छैक तेँ भातो दैत छैक माँड़मे नुका कऽ । सासु पुतोहुकेँ देखार करबाक हेतु सूपमे खायक देत । एहि **ओगरक** अर्थ होइछ माँड़ । परन्तु माँड़क अर्थमे **ओगर** शब्द प्रचलित नहि अछि । प्राचीन मैथिलीमे अर्थात् अवहट्ठमे **ओग्गर** शब्द छल । **प्राकृत पैंगलमक** एक प्रसिद्ध पद्यमे **ओग्गर भत्ता** कहल गेल अछि जकर विद्वान् लोकनि अर्थ करैत छथि कोनो विशिष्ट कोटिक धानक चाउरक भात। हमरा दृष्टिमे **ओग्गर भत्ताक** अर्थ **माँड़-भात** सैह अछि आ भावो उपर्युक्त कहबीक प्रथम चरणक सदृश छैक ।

अत्यन्त सामान्य व्यक्ति द्वारा पैघत्वक प्रदर्शन वा आडम्बरक प्रसंग उपस्थित भेला पर कहबीक प्रयोग होइछ– **बाप गदहिया पूत चौतार** मैथिलीमे **चौतार** शब्दक अर्थ विलोपित भऽ गेल अछि । मुदा नेपाली भाषामे जीबैत अछि आ अर्थवान् अछि । मध्यकालीन नेपालमे राजमन्त्रीकेँ **चौतारा** कहल जाइत छल आ एखनहुँ ओही अर्थमे बोधगम्य अछि ।

अनेर धुनेरक राम रखबार वा **अनेर गायक राम रखबार** सन कहबीक समानान्तर एकटा अन्य कहबी अछि **टूअर-टापरक राम रखबैया** । मैथिलीमे **टापर** शब्दक अर्थ लुप्त भऽ गेल । तेँ शब्दो सर्वथा अप्रचलित भऽ गेल । किन्तु राजस्थानीमे **बेटाक** अर्थमे **टाबर** शब्द एखनो जीवित अछि जे **टापर** शब्दहिक भिन्न रूप थिक ।

कहबी-विलोपन

प्रसंग ओ शब्दार्थक लोपक कारणे कतोक कहबी कालक्रमे प्रचलनसँ बाहर होइत जाइत अछि । कोनो कहबीक वाच्यार्थक प्रसंग सामाजिक आचार-व्यवहारक प्रसंगसँ दूर भऽ जाइछ तँ ओहनो कहबी नित्य प्रयोगसँ बहिर्भूत भऽ विस्मृत भऽ जाइछ । सम्प्रति अपना सभक समाजमे तीव्र गतिसँ सामाजिक परिवर्त्तन भऽ रहल छैक, सामाजिक न्यायक जे अन्धबिहाड़ि बहि रहल छैक, ताहि परिस्थितिमे सैकड़ो कहबीक प्रयोग करबामे लोक हिचकिचाय लागल अछि । विशेषतः कतोक व्यवसाय, जाति, स्थानक उपहासमूलक कहबी सब लोकव्यवहारमे सतर्कतापूर्वक छोड़ल जा रहल अछि । ई कतोक कहबी सभक लोपक प्रक्रिया थिक ।

व्यक्तिवाचक कहबीक सृष्टि

अतीत कालमे प्रचलित लोककण्ठमे बसल बहुतो कहबी सब विस्मृत होइत गेल तँ बहुतो नवीन कहबी सब प्रचलनमे अबैत गेल । एहिमे अतीत कालीन घटना सभक संग प्रसिद्ध व्यक्तिअहुक नामे कहबी सभक प्रचार होइत रहल अछि । विद्यापतिक भनिता कहि कऽ एहने कतिपय कहबी सभ प्रचलित अछि, यथा–

भनहि विद्यापति सुन रे नेटा, जेहने बाप तेहने बेटा ।
भनहि विद्यापति सुन गे सजनी, बीतत जिनगी रहि जायत कहिनी ।
भनहि विद्यापति ताहि रे, आब हम हयब बताहि रे ।

एहि श्रेणीक कहबीमे गोनूझाक नामसँ प्रचलित कहबी सब सर्वथा अविस्मरणीय अछि। गोनूझाक चतुरता ओ धूर्त्तताक जतेक कथा सभ समाजमे प्रचलित रहल अछि से सभ अवश्ये कोनो ने कोनो कहबीक सृष्टि कयने अछि, जेना– **गोनूझाक बिलाड़ि, गोनूझाक**

लाठी, गोनूझाक चमरछोंच, गोनूझाक कम्मल, गोनूझा एक बेर मरि कऽ मायोकेँ चिन्हलनि, गोनूझाक महींस, गोनूझाक परि, गोनू गाममहि, गोनूझाक बखाड़ी इत्यादि ।

अभिनव कहबीक सृष्टि

वास्तवमे कहबीक तिरोधान ओ निर्माण एक सामान्य प्रक्रिया थिक जे समाजमे निरन्तर चलिते रहैत अछि । यदि एक दिस बहुतो कहबी दुरूह वा लुप्त भऽ गेल वा लुप्त होयबाक क्रममे अछि तँ दोसर दिस, नव नव सामाजिक आचार-व्यवहार-विचारक आधार पर जनसामान्य द्वारा गढ़ल गेल नव नव कहबी सब सेहो प्रयोगमे अबैत जा रहल अछि। नवीन सामाजिक, राजनीतिक, शासनिक-प्रशासनिक परिवेशमे अनुभूत सत्यक अभिव्यक्तिक हेतु नव-नव कहबी सब निर्माणक प्रक्रियामे देखल जा रहल अछि जाहिमे आलोचना, उपहास, व्यंग्य आ विवशताजन्य करुणाक झलक सहजे देखल जा सकैत अछि । विभिन्न वर्गक लोकक मुँहसँ, विभिन्न स्थान पर ओ विभिन्न समयमे श्रुतिगोचर भेल नवीन कहबीमेसँ किछु बानगी देखल जा सकैत अछि–**अन्हराकेँ देखाबय हाइकोट/आब कहू मन केहन लगैए/ऊपर आसमान, नीचाँ पासमान/ऊपरसँ फीटफाट, नीचासँ मोकामाघाट /करनी छुछुन्नर, नाम नेताजी/किरानी आ पुलिस अपन बापोक नहि/खो मङला पड़ल रह/घूस बिना सब फूस (धूस)/जे बड़ पाजी, से मुखियाजी/डीलरक भोजमे चिन्नीक ओज/ बाप मुइल अन्हरिआमे, पूतक नाम पावरहाउस/राम भरोसे हिन्दू होटल/लहक चहक, कने फल्लोँकेँ दहक / सय हरामीक एक किरानी / सय हरामी मरय, तँ एक किरानी जनमय / सरबे (Survey) नहि, लड़बे/सिपाही अपकारीकेँ, भोज करय ताड़ीकेँ/हाकिम छोट इजलास भारी इत्यादि ।**

मैथिली कहबीक साहित्यिक प्रयोग

मैथिली कहबीक अभिव्यंजना-सामर्थ्यसँ मैथिलीक कवि-लेखक लोकनि नीक जकाँ परिचित रहलाह अछि । काव्यमे चमत्कार उत्पन्न करबाक लेल ओ लोकनि अपन काव्यमे ओकर संयोजन करैत रहलाह अछि । महाकवि विद्यापति अपन गीत सबमे समकालिक प्रचलित कहबीक प्रयोग कऽ अद्‌भुत चमत्कारक सृष्टि करैत देखल जाइत छथि । कतोक गीतमे कहबीएक माध्यमसँ समग्र भाव व्यक्त कऽ दैत छथि । एहने एकटा गीत अछि–

निधन काँ जञो धन किछु हो करए चाह उछाह।
सिआर काँ जञो सींग जनमए गिरि उपारए चाह॥
दूती बुझलि तोहरि मती ।
छाड़ रे चन्दा भरमइते बुलह कि हरह ताहे विपती॥
पिपड़ीकाँ जञो पांखि जनमए अनल कर झपान ।
छोटा पानी चहचह कर पोठी के नहि जान ॥
जइओ जकर मूह पेच सन दूसए चाहए आन ।
हमतह के विषहु आगर ढोढ़हु काँ थिक भान ॥
झरक पानि डोभक कोइ गरब उपजु जाहि ।
भने विद्यापति दहक कमल दूसए चाहए ताहि ॥

मैथिली सहित्यमे कहबीक विपुल संख्यामे प्रसंगोपयुक्त शोभाधायक प्रयोग करबामे कवीश्वर चन्दाझाक स्थान सर्वोपरि आ सर्वश्रेष्ठ छनि । कवीश्वर सर्वप्रथम वाताह्वान काव्यमे कहबीक प्रयोग कऽ ओकर महत्त्वक दिग्दर्शन कऽ चुकल छलाह । हुनक सहस्रसंख्यक गीतो

सबमे ठाम-ठाम कहबीक समीचीन प्रयोग देखल जाइत अछि, यथा– **'बाघ ओ अजा पिबैछ पानि एक घाट / दुलारै सौं बेटा बनथि बड़ टेटा, कर छती / बेटा बूड़ि दुलार सौं / कहाँ ई दीबड़ाक भीड़ ओ कहाँ पहाड़ / गेह मध्य फूट सौं गमार आबि लूट / वासमे सन्देह हो उपाति हेतु मारि'** । सबसँ महत्त्वपूर्ण अछि कवीश्वर विरचित **मिथिला-भाषा रामायण** जाहिमे अजस्र संख्यामे सहज भावसँ कहबीक सन्निवेश भेल अछि । एहि सबमे बहुतो कहबी जनसमाजमे प्रचलित अछि । परन्तु कतोक कहबी एहनो अछि जे आब सामान्य प्रयोगसँ बाहर भऽ गेल अछि अथवा जकर विरल प्रयोग होइत अछि । कवीश्वरक एहि अवदानक एखन धरि गम्भीर अध्ययन-आलोचन कऽ ओकर वैशिष्ट्यक प्रख्यापन करबाक प्रयास नहि भऽ सकल अछि। परवर्ती कालमे कविवर सीतारामझा कहबी सबकेँ समस्या पूर्त्तिक रूपमे बहुतो मुक्तक पद्यक सृष्टि कयने छलाह । मिथिला-मिहिरक स्तम्भ **धर्मधकेलानन्दजीक बलधिङरो** तथा **सहजोपीसीक चर्खा**मे कहबीक सायास भरखरि प्रयोग कयल जाइत छल जाहिसँ स्तम्भ अत्यन्त रोचक ओ पठनीय बनि जाइत छल । ई सब कहबाक तात्पर्य ई जे मैथिली साहित्यमे कहबीक महत्त्वक कोनो अभिनव अभिज्ञान नहि भेल अछि । मैथिली काव्यस्रष्टा लोकनि काव्यसर्जनमे कहबीक सार्थक प्रयोग सब दिनसँ करैत आबि रहल छथि ।

अश्लीलताक समस्या

कहबीमे अश्लीलताक प्रश्न निरन्तर विवादक विषयक बनल रहल अछि । अश्लीलताक कारणे बहुतो तीक्ष्ण व्यंग्यार्थ सम्पन्न कहबी सब शिष्टजन ओ शिष्टसाहित्यमे प्रयुक्त होयबासँ वंचित रहल अछि । मैथिलीए नहि, अन्यहु भारतीय भाषा सबमे अश्लील कहबी सभ विद्यमान अछि जकर प्रयोग ओहन निरक्षर-अशिक्षित जनसमुदायमे बहुलतासँ होइछ जकरा श्लीलता-अश्लीलताक अन्तर-बोध बड़ अल्प छैक । ओहनो वर्गमे शिक्षाक प्रसारसँ आभिजात्य प्रवृत्ति बढ़ैत जा रहल छैक । एहन वर्ग सेहो आब अश्लील कहबीक प्रयोगसँ विरत रहबाक चेष्टा करैत अछि । अवश्ये शिष्टजन द्वारा एवं साहित्यिक प्रयोगमे अश्लीलता-व्यंजक कहबीकेँ शिष्ट ओ शालीन रूप देबाक प्रयत्न कयल जाइत अछि । एहि हेतु सामान्यतः अश्लीलता-बोधक ओ व्रीड़ा-व्यंजक शब्दक स्थानमे **किदन / कहाँदन** शब्दक प्रयोग कऽ शिष्ट रूप देल जाइत अछि, जेना-अपने खाट पर, **किदन** बाट पर । कतोक कहबीमे अश्लील शब्दक निकटवर्त्ती अर्थद्योतक शब्द प्रतिस्थापित कऽ देल जाइत अछि । ग्रियर्सन साहेब एहि रूपक कतोक कहबीकेँ निदर्शित कयने छथि– नव जोगीकेँ **कटि**मे जटा / **कटि** नहि चलैन्हि, केराक भार / लिखितो साहित्यमे अश्लील कहबी सभक परिमार्जित रूपक प्रयोग करबाक प्रयास देखल जाइत अछि, यथा– 'नव जोगीकेँ **काँख**मे जट्टा / हेहरा **पीठ**मे गाछ जनमल, तँ कहलक छाहरिएमे छी / **हाथ** ने धोअय से भगता होअय / तेल जरय तेलीकेँ, **कोँढ़** फाटय मसालचीकेँ / जुड़य तँ ठाँओ दऽ कऽ **पाबी**, ने तँ **पबितो** जाइ पड़ायलो जाइ।

(ख) फकड़ा

पद्यात्मक कहबीक सदृश एक गोट कथनक प्रकार होइत अछि जकरा **फकड़ा** कहल जाइत अछि । एकरहु प्रयोग वार्त्तालापमे समान प्रसंग अयला पर भेल करैत अछि। तेँ फकड़ा सबकेँ सेहो कहबीए कोटिमे परिगणित कऽ लेल जाइत अछि आ कतोक फकड़ाक अंश - विशेष कहबीक स्वरूपमे प्रयुक्तो होइत अछि ।

फकड़ा शब्द अरबीक **फिक्रः** शब्दसँ व्युत्पन्न भेल अछि । **फिक्रः**सँ उर्दू शब्द बनल **फिकरा** आ मैथिली शब्द बनल **फकड़ा** । **फिक्रः** वा **फिकराक** अर्थ होइछ– वाक्य, झाउली–पट्टी, व्यंग्य, उपहास । वास्तवमे मैथिलीमे ओहन परम्परित वा कविकृत पद्यात्मक संरचनाकेँ फकड़ा कहल जाइत अछि जाहिमे कोनो व्यक्ति, वर्ग, घटना, आचरण, स्वभाव इत्यादिक उपहास, कौचर्य, काकु, खिधांस कयल गेल रहैत अछि । व्यंग्य ओ कटाक्ष पकड़ाक मूल भाव रहैत छैक । समाजमे होबऽ वला कोनो विषय पर कोनो सप्रतिभ व्यक्ति द्वारा पद्य जोड़ि देल जाइत अछि तँ लोककण्ठमे जा कऽ ओ फकड़ाक रूप धारण कऽ लैत अछि । काव्य–शास्त्रक भाषामे एहन पद्य–रचनाकेँ **कुकाव्य** कहल जाइछ। कहबाक चाही जे कुकाव्यहिक मार्मिक अंशविशेष कालक्रमे फकड़ा आ कहबीक सत्ता प्राप्त कऽ लैत अछि ।

मैथिलीमे प्रचुर संख्यामे फकड़ा विद्यमान अछि जाहिमे व्यंग्य, कटाक्ष, उपहास, खिधांस, कौचर्य इत्यादिक भाव रहैत अछि । किछु मात्र उदाहरण द्रष्टव्य अछि–

★ **बालाबन्द (पन) भेल बिआह नहि आबय नहि जाय ।**
पेट भरय ओहि बयलकेँ कि बान्हल भुस्सा खाय ।

★ **सतवरतीकेँ देखलियनि परतीमे, अपखैंतीकेँ देखलियनि पबनीमे ।**

★ **मन छल दिल छल नैहर जायब, छाँछ दही सोहारी सड़े खायब ।**

★ **अनकर बान्हल घऽर पइली बीनल पइली टाटी ।**
अनकर जनमल बेटा पइली चुमा लेबऽ की चाटी ।

★ **बासी भात चेपे, ताड़ तर घीवक्क ढेपे ।**
चन्ना उगल छटाके, छाल्ही गिड़ल घटाके ।
ताड़ पर दू सेर भूजा, उठू गौरा दाइ करू पूजा ।

★ **हम तऽ सात बापक बेटी, हम तऽ नै खेबइ रोटी ।**
हमरा हाथमे अछि घी, हमरा के कहत की ।
हमरा पयरमे आरत, हमरा साँय किए मारत ।
मारत तऽ मारत, वैह ने सम्हारत ।
भात तर कऽ दऽही देबइ, तखन तऽ नै मारत ।

उतराचौरी : एकटा विशिष्ट रीतिक फकड़ाकेँ उतराचौरी कहल जाइछ । एकर शैली संवादात्मक होइत अछि । दुइ पात्रक प्रश्न–उत्तर, उत्तर–प्रत्युत्तर, उक्ति–प्रत्युक्तिक रूपमे एहि रीतिक फकड़ा कहल जाइत अछि । किछु उतराचौरीमे वक्ता ऊह्य रहैत छैक आ किछुमे फकड़ेमे वक्ता–प्रतिवक्ताक प्रसंगतः उल्लेख भऽ गेल रहैत छैक । निम्नलिखित फकड़ा गृहस्वामिनी आ पाहुनक उक्तिप्रत्युक्ति अछि जाहिमे वक्ता–श्रोता ऊह्य अछि–

★– **तौला रे धिमराहा छओ मास धीपै लय, पाहुन सबुरदत्त बरिस दिन टीकै लय ।**

हेहरक प्रसंगमे उतराचौरी अछि–

★– **रे हेहरा ! रे हेहरा ! कोना रहै छेँ ? गारि मारि खाइ छी भने रहै छी ।**

वक्ता–प्रतिवक्ताक उल्लेखयुक्त फकड़ाक निम्नोक्त निदर्शन द्रष्टव्य–

★ **चूल्हि कहलक हम सतजुगमे सोनाक रही, खोरना कहलक हम तँ संगहि रही ।**

★ **डाँड़ कहलक हम पहिरलउँ पटोर, आँखि कहलक हम रही निपोर ।**

वक्ताक उल्लेखयुक्त उतराचौरीमे **भवनाथ-जिवनाथक** उतरा चौरी गाम-देहातमे बेस प्रसिद्ध अछि जाहिमे बारहोमासक हास्योत्पादक वर्णन कयल गेल अछि ।

बिन्नी-दोहा : महिला लोकनिक द्वारा मनाओल जायवला **मधुश्रावणी** पाबनिमे प्रत्येक दिन व्रतकथा कहलाक बाद बड़ आग्रह आ रुचिसँ **बिन्नी, दोहा** कहल, सूनल जाइत अछि । ई बिन्नी आ दोहा सब वास्तवमे सामान्य ओ उतराचौरीक फकड़ा सब रहैत अछि । एहि फकड़ा सबमे रसिकता अधिक रहैत अछि । युवक-युवतीक शृंगारिक हाव-भाव, प्रेम-प्रणय, भोग-संभोग, वाग्विलास मुख्य विषय रहैत अछि । जेँ एहि बिन्नी-दोहा सभक कहनिहारि-सुननिहारि, सब वयसक महिले वर्ग रहैत अछि तेँ एकर सभक कथन-श्रवणमे लाज-बीज, रोच-संकोचक कोनो बाधा नहि रहैत अछि । बिन्नी-दोहाक रूपमे कहल जाय बला किछु **फकड़ा- उतराचौरी** देखि ओकर विषय-वस्तुक अनुमान कयल जा सकैत अछि।

एकटा भरिआ नीक कपड़ा-लत्ता पहिरि-ओढ़ि, माथपर पाग आ कान्ह पर भार लेने चल जाइत छल । बाटमे, एकटा खत्तामे माछ मारैत युवती पूछि देलकैक-

पयर पनही मचामची की कान्हे लेने भार ।
हम तँ पूछी हे रसिया एहि पगियाक कोन सिङार ॥

भरियाकेँ किछु ने फुरलैक । ओ ओही पयरेँ गाम पर आबि अपन घरवालीकेँ सब बात कहलक । घरवाली सब बात बूझि उत्तर सिखा देलकैक । ओ पुनः युवतीकेँ जाय कहलकैक- **भरल नद्दी गहागही की गोरी मछरी मार ।**
कादो छिटकि जौवन पर पड़लउ अङियाक कोन सिङार ।

माछ मारनिहारि युवती चोट्टे उत्तर देलकैक-

घर गेलेँ बहुडिंगर भेलेँ बहुसँ अयलेँ सीखि ।
एते वचन जँ पहिनेँ कहितेँ, हमरे तोरे पिरीत ॥

आत्मोक्ति रीतिक किछु फकड़ा बानगी रूपमे देखल जा सकैछ-

* **कारी छी तँ कारी छी, रामके बनाओल छी ।**
भल सैञा हेता, चटक चुमा लेता ।
फटक बन्द करता, डिबिया बुतेता ।
अन्हार घरमे खल-खल हसेता ।
* **सात तामाकेँ सात पकौलउँ चौदह तामाकेँ एके ।**
तोँ देहजरुआ सातो खयलह हम कुलमन्ती एके ॥

नव फकड़ा सर्जनक प्रक्रिया : फकरा गढ़बाक प्रक्रिया अनवरत चलैत रहैत अछि । विभिन्न समय ओ कालमे तद्युगीन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक परिदृश्यक अनुरूप कतेको फकड़ा गढ़ाइत अछि, किछु दिन धरि बेस प्रचलित रहैछ आ तकर बाद अप्रासंगिक भऽ कऽ लुप्त सेहो भऽ जाइत अछि । स्वतन्त्रताक पश्चात् देशमे लोकतान्त्रिक प्रक्रियाक अनुरूप प्रारम्भ भेल चुनावी राजनीतिक क्रममे स्वपक्षक प्रचार ओ विपक्ष पर प्रहार करबाक उद्देश्यसँ कतेको फकड़ा सब गढ़ाइत रहल अछि । चुनावक समाप्तिक संगहि एहि तात्कालिक महत्त्वमूलक फकड़ाक इहलीला सेहो समाप्त भऽ जाइत अछि, मुदा जखन कखनो अतीतक कोनो प्रसंगक चर्चाक क्रममे ओहि पकड़ा सभक उल्लेख होइत अछि तँ

अवश्ये तद्‌युगीन राजनीतिक दशा-दिशा ओ राजनेता लोकनिक मनोवृत्तिक झलक भेटि जाइत अछि। स्वतन्त्रा प्राप्तिक तुरत बाद भेल महगी पर फकड़ा बनल छल जाहिमे जवाहरोलालकेँ नहि छोड़ल गेल छल– **एक पाइमे टीड़ीड़ीड़ी दू पाइमे तीनटा बीड़ी।**

चारि पाइमे बीकै छै सलइया हो जमाहिर भैया॥

आइसँ कतोक दशक पूर्व सुदूर दक्षिणमे एकटा जाति विशेषक विरोधमे उग्र आन्दोलन ठाढ़ भेल छल जे क्रमशः टपैत-टपैत मिथिला धरि पहुँचल। ताहि क्रममे लक्ष्य समुदाय पर प्रहार करबाक हेतु फकड़ाकेँ राजनीतिक अस्त्र बनाओल गेल। ओहि समयमे एकटा फकड़ा प्रचलित भेल छल– **लंकाकेँ खयलक राबन, मिथिलाकेँ खयलक बाभन।** एहि विरोधी भावनाक उग्रताक परिचय ओहि समयक एक गोट औरो फकड़ामे देखल जा सकैत अछि– **एबरी साओन-भादोमे, गोरी कलाइ कादोमे।**

वस्तुतः वर्त्तमान राजनीतिक परिदृश्य एहि कोटिक फकड़ाक निर्माणक हेतु सबसँ उर्वर समय अछि। प्रत्येक चुनाव समयमे कतेको फकड़ा गढल जाइत अछि। पक्ष-विपक्ष द्वारा अपन नेता ओ दलक प्रति मंगल आ विरोधीक प्रति अमंगल भाव, अपन प्रत्याशीक महिमामंडन आ विपक्षीक उपहास एहि कोटिक सामयिक फकड़ाक विशेषता होइछ। यथा–

'पूरी-जिलेबी तेलमे, (फल्लाँ) नेता जेलमे'
'मकै के रोटी तावामे, (फल्लाँ) उड़ि गेल हावामे'
'(फल्लाँजी)क अंतिम इच्छा फल्लाँ चलाबय ताँगा-रिक्शा'
'(फल्लाँ) नेता चलल बिआहऽ, (फल्लाँ) नेता कनियाँ
नेता सब ढोल बजाबय, चमचा सब लोकनियाँ' इत्यादि।

(ग) लौकिक न्याय

मैथिलीमे ओ अन्यहु भाषामे किछु एहन विशिष्ट शब्दगुच्छ सब अछि जकर प्रयोग वाक्यमे कयल जाइछ तँ ओहिसँ वाच्यार्थक बोध नहि अपितु लक्ष्यार्थ वा व्यंग्यार्थक बोध होइछ, जे गुण कहबी ओ चतकार दुहूमे रहैछ। अतः एकरा सबकेँ कखनो कहबी ओ कखनो चतकार (मोहाबरा) बूझि लेल जाइछ। परन्तु ने ई कहबी जकाँ पूर्ण वाक्य थिक, ने चतकार सदृश वाक्यांश। एहिमे कोनो विशेष क्रियापदक नित्य साहचर्य नहि रहैत छैक। एहिमे दुइ वा तीन शब्द मात्र रहैछ। एहन शब्दगुच्छकेँ लौकिक न्याय कहब बेसी समीचीन अछि। संस्कृतहुमे एहि प्रकारक अजस्र लौकिक न्यायक प्रयोग देखल जाइछ जाहिमे एक, दुइ वा तीन शब्दमात्र रहैछ, यथा–घुणाक्षर न्याय, काकताली न्याय, स्थालीपुलाक न्याय, देहली दीपक न्याय, दण्डापूप न्याय इत्यादि। एहिमे **न्याय** शब्द सादृश्य अर्थक द्योतक अछि।

मैथिलीक लौकिक न्याय सब विशेषतः संज्ञा आ विशेषणहु रूपमे देखल जाइछ। वाक्य प्रयोगमे / सामान्यतः उपमानक रूपमे रहैत अछि, से उपमेयमे लौकिक न्यायक सारूप्य वा सादृश्य देखाओल जाइछ। साधर्म्य सूचनार्थ **सन, परि, परतर, जकाँ, जेहन, तेहन, जेना, तेना** इत्यादिक प्रयोग कयल जाइत अछि। निरन्तर प्रयोगमे प्रचलित किछु प्रसिद्ध मैथिली लौकिक न्याय देखल जा सकैत अछि– **अगिया वैताल, अन्हरमारि, अन्हरा साँढ़, अन्हागाही, अनोन विसनोन, आमा माइक खिस्सा, इनारक बेङ, एकपिठिआ, कुकुरक नाङरि, कुकुर कटाउझि, कुकुरक निन्न, कुम्हारक कुकुर, कोल्हुआ बड़द, कोल्हुआरक महंकार, गङबा-सोहैती,**

गराँक घेघ, गराँक ढोल, गिदरनोच, गिदरभभकी, गुनझिक्कू डाइन, गोड़हाक जेठ, गोनू गामहि, गोबर गणेश, गोबरक चोत, जितलाहाक ढोलिआ (ढोलबज्जा), डगराक बैगन, डपोड़ शंख, डोमघाउजि, डोमाडिगरी, ढेलमारा गोसाञि, ढेलमासक चेप, ताड़क छाहरि, तीतल बिलाड़ि दूधक माँछी, नङरिडोलाओन धन, पमरिआक तेसर, पाकल परोड़, पेटबे कि लोटबे, फूजल ऊक, फूटल ढोल, बत्तिस दाँतक तर, बनरघुड़की, बसुलबाधार, बाबाजीक बेल, बिन पेनीक लोटा, बिलाड़िक सिउँथि, बिसुन बिलाड़ि, बुढ़ियाक फूसि, बेर परक भदबा, बेहूड़ल खाम्ह, भानुमतीक पेटार, भेंड़ा भैंसाक कानि, भोम्हाशंख, माटिक महादेव, म्याँउक मूड़ी, माँझ घरक खाम्ह, माँझ फाड़ी कौ, रड़धुम्मस, लस्सानोन, लोथ-मोट, लौङिया मिरचाइ, सापक कान, सिताहल नढ़िया सूपक भाँटा, सौतिनि काँट, सौतिनिञा डाह, हड़ाशंख, हाथक मैल, हिलखी बिलाड़ि इत्यादि ।

मैथिली लोकोक्ति : संकलन ओ अध्ययन

मैथिली कहबीक महत्त्व सबसँ पहिने कवीश्वर चन्दाझा रेखांकित कयलनि । ओ अपन वयसक चौबीसम वर्षमे अर्थात् 1854-55 इ.मे एकटा **वाताह्वान** काव्यक सृष्टि कयलनि, यद्यपि एकर प्रकाशन भऽ सकल 1885 इ.मे । ई काव्य सृष्टि बाल ओ किशोर वर्गक सहज शिक्षणार्थ कयल गेल छल । एहिमे अत्यन्त प्रचलित बत्तिस गोट कहबीक समावेश भेल छल। आगाँ बबुनन्दनशर्मा ओ भानुनाथझा रचित **वाताह्वान**मे एही रूपेँ कहबीक समावेश कयल गेल । ई सब मैथिली कहबी संकलनक आरम्भिक प्रयत्न छल । मैथिली कहबीक संकलनक दिशामे जी.ए. ग्रियर्सनक काज अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहल । यद्यपि ग्रियर्सन महोदयक मैथिली कहबी विषयक ऐतिहासिक महत्त्वक अवदानक सम्बन्धमे कतहु कोनो चर्चामात्र एखन धरि नहि भेल अछि, से मैथिली कहबीपर साधिकार कहबाक गर्व रखनिहारो विद्वान द्वारा नहि । जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन 1880-81मे एसियाटिक सोसाइटी, कलकत्तासँ प्रकाशित अपन महत्त्वपूर्ण ओ प्रसिद्ध ग्रन्थ(An Introduction to the Maithili Language of North Bihar Containing A Grammar, Chrestomathy and Vocabulary : Extra number to Journal, Asiatic Society, Bengal, Part I for 1880, Calcutta, 1881)केर शब्द-संग्रह (Vocabulary) खण्डमे बहुतो विशिष्ट शब्दक प्रयोग-निदर्शनार्थ कहबी सब उद्धृत कऽ ओकर अंगरेजी अनुवाद अथवा भावार्थ देने छथि । ओ प्रायः अढ़ाइ सयसँ उपरे कहबी उद्धृत कयने छथि जकर संकलन ओ मैथिली क्षेत्रमे कयने छलाह । आइसँ सबा सय वर्ष पूर्व वृहत् संख्यामे जनजीवनसँ संकलित कहबी सब; मैथिली कहबीक संकलन, सम्पादन, अध्ययन ओ विश्लेषणमे कतेक आवश्यक ओ अपरिहार्य भऽ सकैछ से बुझयबाक प्रयोजन नहि अछि । ग्रियर्सनकेँ बारि कऽ मैथिली कहबी पर किछु कहब उपहासास्पदे मानल जायत ।

बीसम शताब्दीमे प०कपिलेश्वरझा, प०ऋद्धिनाथझा (उजान), प०फणिनाथझा (खड़रख) ओ विद्यानन्दठाकुर (पूर्णिया) कहबीक संग्रहमे प्रवृत्त भेलाह । एहिमे विद्यानन्द ठाकुरक एक लघु संग्रह 1935मे **लोकोक्ति प्रकाश** नामसँ प्रकाशित भऽ सकल । प० ऋद्धिनाथझाक संग्रह एमहर **जिज्ञासा** (अंक 2) पत्रिकामे प्रकाशित भऽ सकल जाहिमे 122 गोट कहबी, प्रसंग ओ भावार्थक संग देल गेल अछि । फणिनाथझाक संग्रह प्रकाशमे अद्यापि नहि आबि सकल अछि । 1950सँ जखन पाक्षिक **वैदेही**क प्रकाशन होमऽ लागल तँ ओकर प्रत्येक अंकमे कोनो ने कोनो कहबी अवश्य देल जाइत छल ।

जखन विद्यालय-महाविद्यालयमे मैथिलीक अध्यापन होमऽ लागल तँ छात्रक आवश्यकताकेँ ध्यानमे राखि भाषा-रचना विषयक ग्रन्थमे कहबीक संकलन, ओकर भावार्थ ओ प्रयोगक संग देल जाय लागल । एहि रीतिएँ कहबी-प्रस्तोता लोकनिमे उल्लेखनीय छथि, प०चन्द्रनाथमिश्रअमर (**मैथिली मोहाबरा ओ लोकोक्ति**, 1954), प्रो०रमानाथझा (**मिथिला भाषा प्रकाश**, 1954), रमानाथमिश्र मिहिर (**मैथिली मुहाबरा ओ लोकोक्ति प्रकाश**, 1963), बालगोविन्दझाव्यथित (**आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना**, 1960), युगेश्वरझा (**मैथिली व्याकरण आओर रचना**) । यद्यपि किछु गोटे हिनका लोकनिक ताहि रूपेँ चर्चा करैत छथि जेना छात्र लोकनिक हितार्थ कहबीक संकलन कऽ अपराध कयने होथि, जखन कि कहबीक क्षेत्रक गम्भीर अनुसन्धानकेँ हिनका सभक प्रति आभारी होयबाक चाही ।

डा०कमलकान्तझा पी-एच.डी. उपाधि हेतु **मैथिली लोकोक्ति** विषय पर एकटा वृहत् ओ महत्त्वपूर्ण शोधप्रबन्धक रचना कयने छथि । **जिज्ञासा** नामक शोधपत्रिकाक अंक दू, तीन ओ चारिमे मैथिली कहबी पर विशेषरूपसँ सामग्री प्रस्तुत कयल गेल अछि । ओकर चारिम अंकमे मैथिलीक कहबी कहि कऽ सात सय कहबीक (यथार्थ संख्या 690) एकटा संकलन प्रकाशित भेल अछि । कहबीक प्रामाणिक स्रोत, सामान्यजन-धरि जाय ई संकलन कयल गेल हो, तकर कोनो छापक अनुभव संकलन देखलासँ नहि होइछ । अधिकांश कहबीक रूप विकृत । अनेक कहबी बेर-बेर दोहराओल । राजनीतिक प्रतिबद्धता ओ स्व-संस्कृतिक प्रति अवहेलाक व्यंजक उक्ति, बनौआ आ अनसोहाँत कथन सब मैथिली कहबीक रूपमे चला देल गेल अछि । सप्तशती सन परम्परावादी संख्या पुरयबाक लौलिमे हिन्दी, उर्दू ओ छपरिया बोलीक खाँटी कहबी सब सेहो प्रचुर संख्यामे सम्मिलित कऽ लेल गेल अछि ।

कोनो भाषाक कहबीमे ओहि भाषाक भूमि, ओकर समाज, समाजक विधि-व्यवहार, आचार-विचार, सभ्यता आ संस्कृति व्यंजित होइत छैक । परन्तु उपरिचर्चित संकलनमे अपमिश्रणक कारणे उपर्युक्त मान्यताक वैपरीत्य देखल जाइछ । एकटा कहबी देल गेल अछि **वर कनियाँ राजी तँ की करता काजी** । की मिथिलामे वर-कनियाँक विवाह काजी करबैत छैक ? स्पष्टे ई हिन्दी-उर्दूक खाँटी **कहावत** थिक **मियाँ बीबी राजी तो क्या करेंगे काजी** । जँ समानान्तर मैथिली कहबी बनायबे इष्ट छल हो तँ बनि सकैत छल- **वर-कनिञा मीती तँ की करत पुरहीती** । ई बेसी नीक होइत । लगैत अछि जेना विभिन्न संग्रहक कहबी सबकेँ धड़फड़ीमे उतारि लेल गेल, तेँ **धड़फड़ी बिआह कनपट्टी सीनुर** भऽ जायब स्वाभाविके । एहि संकलनक विकृतिक उदाहरण सब देल जाय तँ सैकड़े पचाससँ अधिक कहबी उद्धृत करऽ पड़त । निष्कर्षतः एहि संकलनक मैथिली कहबीक मौलिकता, लोकायत्तता, स्वाभाविकता, प्रामाणिकता, विश्वसनीयता- सब किछु सन्दिग्ध अछि । अग्राह्य अछि।

आवश्यकता एहि बातक अछि जे मिथिलाक ग्रामाञ्चल आ सामान्य जनक मध्य जाय, कहबी, फकड़ा, लौकिक न्याय इत्यादिक संकलन कऽ वृहत्, व्यवस्थित कोषक निर्माण कयल जाय जे बोध-सम्पन्न समर्पित अध्येता-अनुसन्धाता द्वारा दीर्घकालमे सम्पादनीय-सम्भाव्य अछि ।

[द्वितीय अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन, दरभंगा, 1963 हेतु समर्पित अप्रकाशित **मैथिली लोकोक्ति** शीर्षक निबन्धक परिवर्द्धित रूप ।]

●

बरिसू हे मेघराजा !

साहित्यकार लोकनिक हेतु ऋतुक राजा बसन्त भऽ सकैत अछि, मुदा कृषक लेल तँ ओकर परमपूज्य बरिसाते होइत छैक । ओकरा लय राजा छैक मेघ । मेघक रस-वर्षणहिसँ जेना ओकर अंग-अंग पुलकि उठैत छैक । जखने मेघमे कारी-कारी बादरि उमड़ऽ-घुमड़ऽ लगैत छैक, मजूरक पाँखि पसरि जाइत छैक आ ओकर पैर धरती पर तालमय गतिसँ थिरकऽ लगैत छैक, तँ कृषकक मन-प्राणमे सेहो जेना एकटा संजीवनी दौड़ऽ लगैत छैक । कारी-कारी मेघसँ छाड़ल आकाशकेँ देखिते ओकर मुखाकृति पर जेना एकटा दिव्य हरियरी पसरि जाइत छैक— किएक तँ खेतकेँ हरित-भरित होयबाक आशा जे सजीव भऽ उठैत छैक। आकाशक श्वेत-श्याम मेघ ओकर परता खेतकेँ रस-सिंचनसँ कोमल बना देतैक, खेतक माटिमे जीवनक कण छीटि देतैक, तखन घटाटोप मेघे जकाँ ओकर खेत उमड़ि पड़तैक । ओकर खेतमे गंगा-जमुनी जजाति कल्लोल करऽ लगतैक ।

जँ चढ़ैत आर्द्रा आ उतरैत हथिया बरसि जाय तँ राजा कतबो कर किएक ने ओसूलि लिअय, कृषकक प्रसन्नतामे कमी नहि अबैत छैक । कहलो गेल छैक—

चढ़ैत बरिसय आदरा, उतरैत बरिसय हस्त ।
कतबो राजा डाँड़ि जिअय, परसन रह गिरहस्त ॥

एहि लोकवचनमे एकटा पैघ सत्य निहित छैक । मेघराजाक शक्तिक समक्ष लोकराजाक शक्ति धूमिल भऽ जाइत अछि । कृषकक राजा तँ मेघ छैक जे ओकर चऽर-चाँचर, खेत-पथार, गाछी-बिरछी, माल-जाल सबकेँ अपन रसक फुहारसँ पुलकित कऽ दैत छैक । ओकर घर-आङन, खेत-खरिहान सबतरि मोती-मानिक सन अन्नक दानासँ भरि जाइत छैक । सुदूर आकाशमे विचरण करैत मेघराजा हिया फोलि कऽ अन्नक ढेरी वसुधा पर उझीलि दैत अछि ।

मिथिलामे एकटा लोककथा प्रचलित अछि । राजा भोज अपन सभासद् पण्डित लोकनिसँ एकटा प्रश्न पुछलथिन— संसारक सर्वश्रेष्ठ राजा, सर्वश्रेष्ठ रानी ओ सर्वश्रेष्ठ फूल कोन अछि ? सोचि-विचारि कऽ पण्डित लोकनि उत्तर देलथिन—

राजा तँ भोज राजा, आओर राजा कोन ?
रानी तँ राजरानी, आओर रानी कोन ?
फूल तँ गुलाब फूल, आओर फूल कोन ?

राजा भोजकेँ ई उत्तर बड़ पसिन्न पड़लनि । ओ उत्तर देनिहारकेँ इनाम-मकराम दितथि, मुदा झरोखा पर बैसलि राजकुम्मरिकेँ एहि उत्तरमे चाटुकारिताक गन्ध बुझयलनि। एहि प्रश्नक ओ एकटा फराके उत्तर कहा पठौलथिन—

राजा तँ मेघ राजा, आओर राजा कोन ?
रानी तँ बेबहारी रानी, आओर रानी कोन ?
फूल तँ कपास फूल, आओर फूल कोन ?

राजा तँ मेघ अछि जे समान रूपसँ सबकेँ जल दैत अछि, समदर्शी अछि । रानी तँ ओ नारी थिकीह जे व्यवहारपटु छथि, राजाक पत्नी रानी नहि होइत छथि । श्रेष्ठ फूल तँ बाङक फूल अछि जाहिसँ वस्त्र बनैत अछि, जाहिसँ राजा-रंक सभक शरीर झँपाइत अछि। राजाकेँ ई उत्तर नहिं नीक लगलनि आ ओ तमसा कऽ अपन बेटीक विवाह एकटा भेड़िहरसँ करा देलनि । तथापि ओकर उत्तरकेँ ओ असत्य नहि सिद्ध कऽ सकलाह । वस्तुतः राजकुम्मरिक ई उक्ति मात्र ओकरे टा नहि, समस्त भारतीय जनमानसक उक्ति थिकैक । हृदयक वाणी कहियो फूसि नहि भेलैक अछि । ई सर्वयुगीन.... सर्वदेशीय सत्य अछि– **राजा तँ मेघराजा ।**

जखन कखनो किसानक राजा रूसि जाइछ, आसमानसँ मेघ पड़ा कऽ कतहु दूरस्थ भऽ कऽ नुका जाइछ, तखन किसान बरखाक देवता इन्द्रकेँ गोहराबऽ लगैछ –

हाली-हुली बरिसू इन्नर देवता पानी बिनु पड़ै छै अकाले हो राम ।
चओर सुखयलै, चाँचर सुखयलै सुखि गेलै बाबाकेँ जिराते हो राम !

एहि गीतमे एकटा निरीह विकलता छैक, मिनतीक भाव छैक, करुण आह्वान छैक। एहि अनुनय-विनयक संग किसानक चंचल-चिन्तित आँखि नील आकाशमे कारी-भौर मेघक अयबाक बाट ताकऽ लगैत छैक । बुझना जाइत छैक, जेना ओ मूक भाषामे बजैत होअय– हे बरिसातक रूसल मेघराजा ! आबो घूरि आउ ! अहाँक दरसन लय आँखि बेकल अछि। मानि जाउ हे मेघराजा ! बरिसू हे मेघराजा !

एहि रूसल परदेसी मेघकेँ बौँसबाक हेतु किसान नाना प्रकारक टोना-टापर करैत अछि । भारतक सब भागमे ई टोना-टापरक विधान प्रचलित छैक । यैह तँ थिकैक भारतक अन्तःस्थ एकता । बोली-बानी भिन्न मुदा विश्वास सब ठाम एकहि रंग । मध्यप्रदेशक विभिन्न इलाकामे पानिक हेतु गीत गयबाक, नग्न भऽ कऽ खेतमे हर जोतबाक, वेश बदलि कऽ भिक्षाटन करबाक, लोकदेवता सप्ताजीक मूर्त्ति बैसयबाक सन कतेको अनुष्ठान, टोटमा ओ टोना-टापर करबाक परम्परा अछि । मिथिलामे सेहो बरखा-बदरीसँ सम्बन्ध रखनिहार टोटमा, टोना-टापर आ अनुष्ठानक प्रयोग होइत रहल अछि । बदरी लधने रहओ । बरखा बरिसैत बरिसैत सतारि लगा देने होउक । तखन ओहिसँ उगरास पयबाक लेल अनेक टोटमा वा टोना-टापर कयल जाइत अछि । लोकक विश्वास छैक जे एहनमे जाहि बच्चाक जन्म ओकर मातृकमे भेल रहैत अछि से जँ कोठीमे दीप लेसि देअय, माँझ आङनमे आगि गाड़ि देअय, पैरक अउँठासँ घरक धरनिमे कादो लगा देअय तँ पानि रुकि जाइत छैक । मिथिलामे वर्षा रोकबाक हेतु एकटा मन्त्र सेहो छैक । हँ, एकरा मन्त्रे कहल जयबाक चाही । बाट चलैत जँ झीसी पड़ऽ लगैछ तँ नेना-भुटका सब गाबऽ लगैछ–

आयल पानि, गेल पानि, बाटे बिलायल पानि

मेघ आ बरखाक आवाहनोक हेतु मिथिलामे पारस्परिक लोकानुष्ठान कयल जाइछ।

बेङ कूटब आ जटा-जटिन खेलायब वास्तवमे वर्षाक आवाहनेक हेतु आचरित लोक अनुष्ठान थिक ।

जेठ मास थिक बरखाक हेठ होयबाक, नीचाँ उतरबाक समय । तेँ बरहमासा गीतक आरम्भ जेठे मासक वर्णनसँ होइत अछि जाहिमे कहल जाइत अछि– **जेठ हे सखि हेठ बरखा** । अखाढ़मे तँ खूब बरखा प्रकृत्या होयबाक चाही । से जेठ-अखाढ़मे मेघ नहि लागल। बुन्न नहि झहरल । धरती नहि भीजल । हाल नहि भेल । अटट्ट रौदी भऽ गेल । खेतमे दराड़ि फाटि गेल । पानिक लेल हाहाकार मचि गेल । आसिनो-कातिकमे हथियाक नहि बरिसने धानक घोघ सुखाय लगैछ । रब्बी मारल जाइछ । एहनमे विवश कृषक-परिवार की करओ? तखन ओ अपन परम्परा, अपन रूढ़ि, अपन अन्धविश्वासक आश्रय लैत अछि । सैह अन्धविश्वास थिक बेङ कूटब, इन्द्र देवताकेँ गोहरायब, इन्द्रकेँ प्रसन्न करबाक लेल जटाजटिनक नृत्य-अभिनय करब । एहि अनुष्ठानमे की बेङकेँ उक्खरिमे धऽ कऽ ठीके कूटल जाइत छैक ? नहि नहि, से बात नहि छैक । रातिमे गामक किशोरी-महिला सब कोनो प्रशस्त आङनमे, कोनो खरिहानमे अथवा घर लगक कोनो खाली जमीनमे जमा होइत अछि। उक्खरिमे पानि धऽ देल जाइछ । एकटा बेङ पकड़ि कऽ समाठक उपरका नरौ भागमे बान्हि देल जाइछ आ समौ भागसँ महिला सब उक्खरिक पानिकेँ कूटैत अछि । यैह भेल बेङ कूटब। फेर ओहि पानि, थाल-कादो आ बेङकेँ माटिक बासनमे राखि ओहन स्त्रीगणक आङनमे फेकि देल जाइछ जे बड़ झगड़ाहु ओ गारि पढ़निहारि रहैत अछि । जँ समाठक ऊपर-नीचाँ भेलासँ बेङ कौँकिआइत छैक, छुलकैत छैक आ जकरा आङनमे बेङ-पानि फेकल जाइत छैक से खूब गारि पढ़ैत छैक, तँ पानि अवश्य होइत छैक । लोकविश्वास एहने छैक ।

एहि विधिक बाद आरम्भ होइछ जटा-जटिन खेल, एकटा विशिष्ट प्रकारक गीत-नृत्य-नाट्य । गीत-नृत्यक संग भरि-भरि राति ई खेल चलैत रहैछ । ई जनविश्वास छैक जे धरतीक एहि बेटी सभक आग्रह भरल गीत सुनि कऽ आकाशमे हेँजक-हेँज मेघ उमड़ि अबैत छैक । नीरसँ डब-डबायल श्वेत-श्याम मेघ आकाशक नीलिमाकेँ आवृत्त कऽ दैत छैक। किसानक मन-मयूर नर्त्तन करऽ लगैछ । कृषक-शावक ताली दऽ दऽ नाचि उठैछ–

करिया मेघमे मामा हो मामा, उजरा मेघमे भाय
तेहन बरखा दिहऽ हो मामा, तीनू लोक दहाय

सऽहे-सऽहे झीसी पड़ऽ लगैत छैक तँ ओहिमे भीजैत-भीजैत धीया-पुता सभ किलकैत गाबऽ लगैछ– **पानि एलै बुन्नी एलै, कौआके जमाय एलै**

डाला-डुली घऽर करू, बेटीकेँ बिदा करू

नेना-भुटकाक एहि गीतमे एकटा भरल-पुरल घरक चित्र अंकित अछि । बर्षा समृद्धिक सन्देश लऽ कऽ अबैत अछि । अपन घर-आङन, खेत-खरिहानमे अनधन लक्ष्मीकेँ विचरण करबाक कल्पनासँ किसानक मोन विभोर भऽ उठैत छैक । ओकर अंग-अंग गुदगुदा उठैत छैक, पुलकि उठैत छैक । पानिक बुन्नमे भीजि कऽ हर-कोदारि चलबैत हरवाह, बीहनि उखाड़ैत खेतिहर, बीया रोपैत किसान, गाय-महिंस चरबैत चरवाह, सभ जेना एहि जीवन-रसमे सराबोर भऽ जाइत अछि । सभक मुँहसँ अनायासे गीतक बोल फूटि पड़ैछ,

भाव-विभोर भेल सब गाबऽ लगैत अछि-

कहुँ भीजैत हेता भगवान, प्रेम रस बुनियामे
कहमासँ उठलै रामा कारी हो बदरिया
कहमा बरसि गेल मेघ, प्रेम रस बुनियामे
मिथिलासँ उठलै रामा कारी हो बदरिया
अवध बरसि गेल मेघ, प्रेम रस बुनियामे
ककर जे भिजलै रामा, लाली रे चदरिया
ककर जे भिजलै पटोर, प्रेम रस बुनियामे
रामजीके भिजलनि रामा, लाली रे चदरिया
सियाजीक भिजलनि पटोर, प्रेम रस बुनियामे

प्रेमरसक बादरिमे भीजैत राम ओ सीताकेँ मिथिलाक किसान अपन भावाभिव्यक्तिक माध्यम बना लैत अछि ।

परम्परासँ साओन-भादवकेँ वर्षा ऋतुक समय मानल जाइत अछि । मुदा ई तँ आरम्भ भऽ जाइत अछि जेठहिँसँ । ओना जेठ-अखाढ़केँ ग्रीष्म मानल जाइत अछि, मुदा प्रकृत्या ई वर्षाक बेसी निकट अछि । जेठे माससँ बरिसातक भूमिका बनऽ लगैत छैक । नवयौवनाक झुण्ड जकाँ आकाशमे नवल-नूतन मेघक टुकड़ी सब जमा भऽ कऽ जेना रसक भारसँ झूकऽ लगैत अछि- **जेठ वारिद नवल नवि-नवि, मदन रस बरिसाय यो**

आर्द्रा नक्षत्रक श्याम वर्ण घनकेँ नव मेघक संज्ञा देल जाइत अछि जे उमड़ल तँ बरिसबे करत- **ई अदराक मेघ नहि मानत, रहत बरसि कय**

तँ जेठक एहि उमड़ल-घुमड़ल कारी-भौर मेघकेँ देखि कऽ आमक गाछीमे मचकी झुलैत गामक किशोरी गाबि उठैत अछि-

जेठ चहुँ दिस श्याम बादर, देखि मोहि डर लाग यो
जानि मोहि अनाथ विरहिनि, मेघ गरजि सुनाब यो

एहि वर्षा ऋतुमे मिथिलाक आम्रकुञ्जमे कजरी, मलार, बरहमासा, छौमासा, चौमासाक स्वर-लहरी तरंगायित होइत रहैत छैक ।

आषाढ़मे नदी उमड़ऽ लगैत छैक । बुझना जाइछ जेना ककरो प्रीतिमे वशीभूत भेल जलधारा सब सम्मिलनक हेतु जा रहल हो । प्रीति तँ तेहने छैक, जकर वशीभूत भऽ कऽ राम सागर पर सेतु बान्हि सीताक अन्वेषण कयने छलाह-

प्रथम मास अखाढ़ हे सखि ! साजि चलल जलधार यो
एहि प्रीति कारण सेतु बान्हल, सिया उदेसल सिरी राम यो

आषाढ़क मास आयल कि मेघ उमड़ि पड़ल, झहर-झहर पानि बरिसऽ लागल । पैघ-पैघ घनगर बुन्न खसऽ लागल-

मास अखाढ़ उमरि गेल बदरा, बरिसय बुन्न सघन घहरी

आषाढ़क बाद साओन । मधुसँ परिपूर्ण साओन ! तँ कहाओल मधुश्रावणी !! मिथिलाक नवविवाहिता रंग-बिरंगक साड़ीमे आवेष्टित भऽ झुण्डक-झुण्ड तितली जकाँ

बाड़ी-झाड़ीमे उड़ल फिरैल अछि। हाथमे साजी लेने पूजाक हेतु फूल-पात, जाही-जूही लोढ़ने-बटोरने फिरैल अछि–

जुगुति-जुगुति व्रजनारी आहो रामा, पहिरल अतिरूप साड़ी।
हाथ लेल फुलडाली आहो रामा, गबइत गेलि फुलबाड़ी ॥

साओनक नागपञ्चमीसँ लऽ कऽ शुक्ल पक्षक तृतीया धरि ई सौभाग्य-पर्व चलैत रहैत अछि। पीयर-पीयर कनैलक फूलसँ भरल साजी नागदेवताक चरणमे अर्पित कयल जाइत अछि– **साओन मास नागपञ्चमी भेल। घर-घर बिसहरि पूजा भेल ॥**

मिथिलाक महिला एहि नवविवाहिता लोकनिक हेतु शुभकामनासँ आपूरित गीत गबैत छथि। एहि गीत सभमे सम्पूर्ण विश्वकेँ शीतल होयबाक कामना रहैत छैक–

शीतल बहथु समीर दिशा दश, शीतल लेथि उसासे।
शीतल भानु लहूलहु ऊगथु, शीतल भरथु अकासे ॥
शीतल सजनि गीत पुनि शीतल, शीतल विधि व्यवहारे।
शीतल मधुश्रावणि विधि होबथु, शीतल बसु एहि गारे ॥
शीतल घृत शीतल बरु बाती, शीतल कामिनि आङ्गे।
शीतल अगर सुशीतल चानन, शीतल आबथु गाङ्गे ॥

एमहर किसान डाक-वचनकेँ स्मरण करैत बसातक गतिक अध्ययन करैछ। एक बेर जँ साओनमे पछबा, भादवमे पुरिबा डोलि जाय तँ धान रखबाक जगह नहि–

साओन पछबा, भादव पुरिबा, आसिन बहय इसान।
कातिक कन्ता सिकियो ने डोलय, कहाँ कऽ रखबह धान॥

किएक तँ धनहर-भीठ, ऊँच-नीच सब ठाम एके रंग धानक उपजा होअय–

साओन पछबा बह दिन चारि। चूल्हिक पाछाँ उपजय सारि ॥

भादवकेँ बरिसातक अन्तिम मास बूझल जाइत अछि। भादवक वर्षा पर जेना एकटा विकरालताक छाप रहैत छैक। भादवक रातिमे विछोहक पीड़ा जेना बेसी सघन भऽ उठैत छैक। सीता-विरहमे रामो केँ ई अनुभव भेल छलनि–

घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रियाहीन मन डरपत मोरा ॥

तुलसीदासक रामक मुखसँ उच्चरित ई उक्ति भादवे मासमे घटित होइत अछि। उमड़ैत नदी, डबडबायल मेघ, हहरैत-खँघरैत छाती आ झहरैत आँखि ! से आँखि चौंकि कऽ देखऽ लगैत अछि– **भादव हे सखि भरल नदिया, घेरल चहु दिस देश यो।**

भादवक भयाओन रजनी, श्याम घनघटाक बीच कड़कैत मेघ, चमकैत बिजुरी एकाकीपनक चुप्पीकेँ जेना ओरो घनीभूत कऽ दैत अछि। एहि बादर भरल भादरकेँ देखि विद्यापतिक नायिका पीड़ासँ विकल भऽ गेलि–

सखि हे हमर दुखक नहि ओर।
ई भर बादर माह भादर सून मन्दिर मोर ॥

आ लोकगीतक नायिका अपन प्रियतमक वियोगमे एसगरि बैसलि आरो बेसी भयातुर भऽ उठैत अछि–

भादव सेजिया भयाउनि रात । बिजुरि घटा देखि कापय गात ॥
भरि-भरि नदिया अगम बहु नीर । विकल विरह जियरा नहि थीर ॥

ओकर मोन चिन्तातुर भऽ जाइत छैक । एक तँ भादवक विकट मास, ताहि परसँ अन्हरिया राति, उमड़ैत नदी, पानिसँ भरल तीर ! ओकर निष्ठुर प्रियतम आबइयो चाहत तँ एहन स्थितिमे कोना कऽ आबि सकत ?

भादव मास सखि दोसर राति
भरि गेल नदिया उमड़ि गेल तीर
हमरो बालम कइसे उतरत पार !

जाहि नायिकाकेँ ओकर प्रियतम बिसारि देने हो, से नायिका मना करैछ ओहि मेघकेँ जे बरसि कऽ ओकर पीड़ाकेँ बढ़ाय बिरहक आगिकेँ आरो बेसी धधका दैछ–

हे मेघबा जनि बरिसू एहि देशे ।
जाहि देश इन्द्रो नहि बरिसय पिया कोना बुझत कलेशे हे मेघबा ॥

मुदा, आगि, पानि ओ बसातकेँ के रोकि सकैत अछि ? ओहि बेचारीक हृदयमे विरहानलक ज्वाला धधकैत रहतैक । ओकर कोमल कान्ति म्लान होइत रहतैक । झंझानिलक वेग चलैत रहत–ओकरा झकझोरैत रहत । वर्षा बरिसैत रहत । से बेचारी विरहिणीक निवेदनकेँ अनसुन करैत मेघ बरसबा लय उमता उठल अछि–

बरिसन चाह बदरबा हे उधो !
खन बरिसय, खन दामिनि दमसय खन-खन बहय बयरबा हे उधो !

किसान तँ चाहितहिँ अछि जे बरसि जाय ई मेघ जे ओकर खेतक जजाति लहलहा उठय । पुरिबा आ पछबाक झोँक पर झूमि उठय ओकर हरियर–कचोर जजाति–धान, मकइ, मड़ुआ, साम ओ काउनक गाछ । ओकर वसुन्धरा शस्य–श्यामला भऽ जाय । अपन खेतक आरि पर ठाढ़ भऽ नयन भरि निहारय अपन धरतीकेँ, अपन अन्नपूर्णाकेँ । ओकर ठोरसँ अनायासे आशुतोष अढरन–ढरन महादेवक निवेदनमे गीतक कड़ी सब निकलैत रहय कि–

तोरो चढ़यबह हम बेलपतिया, भाङ पिअयबह पिसि भरि पथिया
हथियामे हो बाबा झपसी लगा दैह, बरखा हो अरिया नंघान
हो बाबा हम रोपी छप-छप-छप धान ।

(हिन्दी रूपान्तर, आर्यावर्त्त, 12.8.62)

●

नैया लगा दे झिनमापुरके घाट

आइ आवागमनक साधन एतेक समुन्नत भऽ चुकल अछि, समादक आदान-प्रदानक सुविधा एतेक सरल भऽ गेल अछि जे संसारक कोनो हिस्सा दूर नहि लगैछ । लगैत अछि जे सौंसे दुनिया समटि कऽ एकटा मुट्ठीमे आबि गेल हो । मुदा वर्त्तमान कालसँ पूर्व आदिम कालमे संचार आ आवागमनक ई समस्या अवश्ये बड़ दुरूह रहल होयत । एक स्थानसँ दोसर स्थान पर समाद पहुँचयबामे कतेको बरख लागि जाइत होयतैक । सुनल जाइत अछि जे मध्ययुगमे जखन लोक जगन्नाथपुरीक यात्रा पर विदा होइत छल तँ ओहि समयमे मृत्यु सनक शोकावह शान्ति पसरि जाइत छलैक । ककरो मृत्यु पर जेना करुण क्रन्दनक स्वर चतुर्दिक गुंजैत रहैत छैक, ठीक तेहने वातावरण ओहि समयमे उपस्थित भऽ जाइत छल । तीर्थयात्रहि नहि, कोनो दूरस्थ प्रान्तक यात्राक समय सेहो एहने परिस्थिति उत्पन्न भऽ गेल करैत छल। कतेको वन-प्रान्तर, नदी-नाला, पहाड़ ओ घाटी आदिकेँ पार करैत, नाना प्रकारक बाधासँ जुझैत लोक अपन गन्तव्य स्थान पर पहुँचैत-पहुँचैत अन्ततः नहि पहुँचि पबैत छल । स्थल-मार्ग तँ पैदल, हाथी, घोड़ा, ऊँट, बड़दगाड़ी आदिसँ पार कयल जाइत छल । जलमार्गक संगी होइत छल मलाह जकरा हाथमे पथिकक जीवन सुरक्षित रहैत छल । ई मलाह लोकनि स्थलमार्गमे सेहो बड़ पैघ सहायक सिद्ध होइत छल । एकरा बल पर बाट-घाटक पैघसँ पैघ नदीकेँ पार कयल जा सकैत छल ।

मलाहक चर्चा अबिते आँखिक समक्ष नाचि जाइछ एकटा दृश्य । कातिक मासक इजोरिया रातिमे उन्मुक्त भऽ कऽ ग्राम्यबाला लोकनि द्वारा खेलायल जाइत जट-जटिन नाच। जटसँ रूसि कऽ मानिनी जटिन अपन नैहर विदा होइछ । बीचमे पड़ैत छैक एकटा अगम-अथाह नदी चानी-पीटल । उमड़ैत-हुम्हड़ैत । जटिन मलाहकेँ अपन भाय कहि नदी पार करा देबाक अनुनय करैछ— **भैया मलहबा रे ! नैया लगा दे झिनमापुरके घाट**

वस्तुतः अदौकालसँ आवागमनक सशक्त आधार रहल अछि नाव ओ करुआरि आ ओकरा खेबनिहार मलाह । पौराणिक साहित्यमे यत्र-तत्र मलाहक चर्चा ओ प्रसंग सब आयल अछि । एहिमेसँ कमसँ कम दू गोट प्रसंग तँ एकरा अमर बना देने अछि । रामायणक प्रसंग अछि— राम वन जा रहल छथि, बाटमे गंगा नदी पड़ैत छैक । पार उतरबाक लेल हुनका नाव चाहिऐनि । रामायणकार लोकनि एहि प्रसंगकेँ बड़ विशेषताक संग चित्रित कयलनि अछि। दोसर प्रसंग महाभारतक अछि । शान्तनु-पुत्र भीष्मक विमाता सत्यवती मलाह जातिक छलि जे योजनगन्धाक नामसँ प्रसिद्ध छलि आ बाट-बटोहीकेँ नदी पार करबैत छलि । ओकरे कुमारि जीवनकालक पुत्र भेलथिन कृष्ण द्वैपायन व्यास ।

मलाहकेँ वरुण-पुत्र कहल जाइछ । मिथिलामे ई लोकनि स्वयंकेँ कमला नदीक पुत्र मानैत छथि । एहि जातिक उत्पत्तिक सम्बन्धमे एकगोट किंवदन्ती प्रचलित अछि ।

एक गोट नव दम्पती कमला नदीकेँ पार कऽ रहल छल । कहल जाइछ जे सत्युगमे

नाव स्वयं लोककेँ पार लगा दैत छल । मुदा ओहि दिन नदीक वेग अनियंत्रित भऽ गेल छलैक। नगदा जेना आकाश ठेकल छलैक । नाव डगमगाय लागल आ भमरमे जा कऽ फँसि गेल । दम्पती अपन प्राण रक्षाक हेतु कमलाक गोहारि करऽ लागल । तथापि नाव भसिआयले चलल जाइत छलैक आ दम्पती आर्त्तभावसँ प्राणरक्षा हेतु कमलाकेँ गोहरा रहल छल । कमला मैयाकेँ बड़ दया आबि गेलनि । पीयर-पीयर बियहुती वस्त्र पहिरने, आँखिक काजर आ दूभि-धानसँ भरल युवतीक खोँइछ देखि हुनक मोन पसीझि उठलनि । झट दऽ ओ एकटा मनुक्ख बनौलनि जे कोइला सन कारी आ पहाड़ सन विशाल छल । ओ मनुक्ख नदीमे हेलि गेल आ डूबैत नावकेँ निकालि कछेड़ पर लगा देलक । दूनू पति-पत्नी हलसैत-फुलसैत अपन घरक बाट धयलक। एमहर ओ मनुक्ख कऽल जोड़ि कऽ कमलाक कातमे ठाढ़ भऽ गेल । कमला मैया ओकरा आदेश देलथिन जे आइ दिनसँ ओ लोककेँ नावसँ पार उतारय । संगहि अपन धारक सबटा माछ सेहो ओकरा सुंझा देलथिन । कहल जाइछ जे ओही दिनसँ मलाह नाव खेबैत अछि आ माछ मारैत अछि ।

यैह भेल मलाह जातिक जन्मक कथा, जकरा लोकविश्वास अपन अन्तस्मे सम्हारि-जोगा कऽ रखने अछि । ई कथा मनुस्मृतिक उत्पत्ति-निर्धारणसँ सर्वथा फराक अछि जाहिमे कहल गेल छैक- **निषादो भर्गवं सूते दासं नौकर्म जीवितम् ।**

कैवर्त्तमिति यं प्राहुरार्यावर्त निवासिनः ।

वस्तुतः यैह किंवदन्ती मलाहक जीवनक वास्तविक ओ सम्मानपूर्ण झाँकी प्रस्तुत करैत अछि ।

जाहि देशमे नदीक प्राचुर्य रहैछ, जतऽकेर माटि नदीक पानिसँ सदिखन शीतल बनल रहैछ, जतऽ केर खेतमे नदीक पानि साले-साल जीवन-रस ढारल करैछ, ओतऽकेर भाषामे, लोक-विश्वासमे ओ लोक-काव्यमे नदी ओ नदीक पुत्रकेँ महत्त्वपूर्ण स्थान भेटब स्वाभाविके अछि । लोकगीतमे वस्तुतः नदीकेँ बड़ प्रतिष्ठा देल गेल अछि । यद्यपि विदेशमे रहनिहार प्रियतमकेँ गृहागमनमे प्राचीन कालहिसँ बड़ पैघ बाधा उपस्थित करैत रहल अछि ई नदी सभ। राही-बटोहीकेँ पार उतरबाक छैक, मुदा बीचहिमे पड़ि जाइत छैक पानिसँ ऊमडाम करैत चाकर-चाकर धार सभ । पथिक किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ उठैछ । ओकर मोन आकुल भऽ जाइत छैक । कोनो प्रेमीकेँ अपन प्रियतमासँ आ कोनो प्रियतमाकेँ अपन प्रेमीसँ मिलनक अतीव उत्कण्ठा रहैत छैक । अतः नदीक अनुनयमे टीस भरल एकटा स्वर अभरैछ- **धीर बहु गंगा, मधुर बहु जमुना**

पश्चिम भारतक एकटा युवती एहिना नदीसँ आग्रह करैछ-

नदी तोँहे आजु बहु धीरे-धीरे, मोर पहु उतरत पार ।

लोककवि लोकनि मलाहकेँ कथमपि नहि बिसरलाह अछि । एहि वर्गक वाणीकेँ अपन काव्यमे समुचित स्थान देलनि अछि । दू गोट बिछुड़ल आत्मीय जनकेँ मिलौनिहार एहि सरिता-सुतकेँ लोककाव्यमे नदीक समाने स्मरण कयल जाइत रहल अछि । एतबे नहि कृष्ण आ शंकरकेँ सेहो नौ-संचालनक लेल आहूत कयल गेलनि अछि ।

नाव ओ नाविकमे अटूट सम्बन्ध छैक । बिना नाविकक नावक कोनो अर्थ नहि । नाव तँ निर्जीव अछि, निष्क्रिय अछि । एकटा लोकगीतमे बिनु नाविकक नावक तुलना मायसँ रहित नैहर और पति विहीन नारीक निरर्थक श्रृंगारसँ कयल गेल अछि–

बिनु रे मइयाके नैहर केहन, बिनु स्वामी केहन सिंगार ।
बिनु रे खेबैया नैया मोरा डगमग, कोना कऽ उतरब पार ।

नारी–हृदयक कोमलता आ ओकर टीसक माध्यमसँ नाविक–मलाहकेँ देखबाक प्रवृत्ति मैथिली लोकगीतमे डेग–डेग पर देखबामे अबैत अछि । मिथिला तँ नदीमातृक भूमि अछि ने, तेँ एहि भूमिक लोकगीत सेहो अपन कामनाकेँ एहि नदीक निर्मल जलमे सतत भिजौने भेटैत अछि । नदी आ ओकर दुलरुआ बेटा मलाहक विरुदावली जँ मिथिलाक लोकगीत नहि गाबय तँ आर दोसर के गाओत ? हँ, तँ बिना नाविकक नाव अनाथ रहैछ, ओकरा नाविकक मुहँतक्की रहैछ । लहरिक दया पर, नगदाक दिशा पर ओकर अस्तित्व निर्भर रहैत छैक ।

तेज बसात चलैत हो आ पार कयनिहारि जँ कोनो तन्नुक–डेरबुक नारी हो आ पतियाल–करुआरि सम्हारऽवला जँ कोनो माँझी नहि होअय तँ ओहि नारीक मनोदशा केहन भऽ उठैत छैक– **भासल नाव अगम जल सजनी गे, पवन बहय बड़ जोर ।**

एकसरि नारि कुदिन फल सजनी गे, हठमति नन्द किसोर ।

आ, हठमति नन्दकिसोर करुआरि सम्हारऽ नहि अयलथिन तेँ नायिकाक मनो नावे जकाँ डगमगाय लगैछ–

डूबल जाय मोर नैया कन्हैया बिनु
एक तँ कन्हैया बिनु दोसर खेबैया बिनु
तेसर बहय पुरबैया कन्हैया बिनु

पुरुषक बाँहि सबल होइत छैक । ओकरामे परिस्थितिसँ संघर्ष करबाक क्षमता होइत छैक । ओ सामनेक अवरोधसँ लड़ि सकैत अछि, जूझि सकैत अछि । अनवरत चोट सहियो कऽ ओ चुनौतीक उत्तर दऽ सकैत अछि । नदीक उत्ताल तरंगसँ निर्भीक भऽ टकरा सकैत अछि, छाती अड़ा सकैत अछि ।

एकटा ब्राह्मण बटुक, कोनो दक्षिण देशसँ घूमि कऽ आबि रहल अछि । बाटमे गंगाक अगम–अथाह धार पड़ि जाइत छैक । ओकर डेग रुकि जाइत छैक । ओहि ठाम कोनो नाव नहि छैक । ओ कोना पार उतरि सकत ? बीच धारमे जाइत एकटा नाव पर बैसल यात्री सभकेँ ओ अपन पिताकेँ कहि देबाक हेतु संवाद कहैछ जे ओकरा लेल तत्काले नाव आ नाविक दूनू टा पठा देथि– **गंगा पारसँ फल्लाँ बरुआ करथि पुकार हे**

आहे फल्लाँ बाबाकेँ कहिऔन समाद नवहेरिया पठाय देता हे ।

मुदा घरसँ संवादक उतारा अबैत छैक जे जकरा जनउ पहिरबाक एतेक उत्कट् इच्छा छैक से स्वयं गंगा नदी हेलि कऽ चलि आओत–

ने मोरा नाव नवहेरिया, ने मोरा करुआरि ।
आहे जनिका जनउआ केर काज, गंगा हेलि आबथु रे ।

नाव चलैत अछि, मुदा सबटा नाव सकुशल किनारे नहि लागि जाइछ। किछु नाव मझधारहिमे डूबि जाइछ। कमार बड़ कुशलतासँ नाव बनबैत अछि। विभिन्न प्रकारक काठसँ नावक विभिन्न भागक निर्माण कयल जाइछ। इंगुरसँ ओकरा रंगल जाइछ। नावक समूह जखन विदा होइछ तँ हा-हा कऽ बहैत नदीक बेग पर ई स्वयंकेँ सम्हारि नहि पबैछ। जत्था टूटि जाइत छैक। मौलायल गुलाबक पत्ती जकाँ नाव सब छिड़िया जाइछ। किछु चलैत अछि, किछु चक्कर कटैत रहि जाइछ। किछु मँझधारमे जा कऽ डूबि जाइछ। जाहि नावकेँ धर्मक संम्बल रहैत छैक ओ पार उतरि जाइछ। जकरा संग ई पाथेय नहि रहैछ, तकरा नदी मैया सब दिनक हेतु अपन पेटक अथाह जलमे रोकि कऽ राखि लैत छथिन। मलाहक एक गोट गीतमे धर्मक एही महिमाक बखान भेल अछि–

आठहि काठक नैया बनाओल, हिंगुर ढेउरल दुनू माङि।
लाबू-लाबू झिमला मलहा रे भैया, खेबि उतारू पार।
किछु नैया चललै किछु भसिअयलै, किछु बुड़लइ आधहि रे धार।
धरमक नैया बाबू पार उतरि गेल, पापक नैया बूड़ल मझधार।

मलाह माछ मारऽ आ नाव चलाबऽसँ पहिने सातो बहिन कमला मैयाकेँ गोहरा लैछ। हुनका पूजा ढारैत अछि तकर बादे नदीमे जाल फेकैत अछि वा अपन नावक पाल फोलैत अछि। ई सातो बहिन कमला अपन दुलरुआ-पुत्र मलाहक रक्षा करैत छथि। ई सातो बहिन थिकीह– गंगा, कमला, कोशी, तिलयुग, बलान, बागमती आ गंडकी। आन नदी सभमे तँ बड़ सहजतासँ नाव खेबल जा सकैछ। मलाह ओहि नदी सभमे नाव चलयबामे कनेको डरक अनुभव नहि करैछ। मुदा तमसाहि-अनटाहि कोशी नदीमे नाव चलायब तँ अपन जिनगीकेँ खतरामे देब थिक। कोशीक उन्मत्त धारमेसँ नावकेँ खेबि कऽ पार लऽ जायब कतेक पैघ दुस्साहसक काज थिक से तँ वैह जनैत अछि जे ओहि नाव पर चढ़ल होअय वा नहि तँ, कमसँ कम कोशीक किनारमे ठाढ़ भऽ कऽ ओकर घहराइत, हुम्हरैत, फुफकारैत, हुंकार भरैत फेनिल धारकेँ निकटसँ देखने होअय। तथापि कोशी ओ कमलाक ई बेटा सभ अपन मायक ममताक भरोसे ओकर कोरमे निर्भीक भऽ खेलाइत रहैछ। अपन नाव खेबैत रहैछ।

एक राति कोशी गंगा स्नान करबा लय विदा होइत छथि। नाविकसँ नाव आनक हेतु कहैत छथि–

गिरि पर्वतसँ चलि भेलै माता कोसिका, चलि भेलै गंगा घाट।
निशि भाग राति माता कोसिका, किऐ करै छी किलोल।
लाबू-लाबू नैया, नैया रे मलहा, लाबि दिअउ गंगाजीकेँ घाट।

नाविकक नाव पुरान छैक, टूटल-भाङल छैक। करुआरि सेहो टूटल छैक। कोना कऽ एहि उमड़ल नदीकेँ ओ पार कऽ सकत ? ओ डेराइते कोशी मैयाकेँ प्रणाम कऽ अपन विवशता सुना दैत अछि– **कल जोड़ि माता कोशी करै छी परनाम**

टूटल जे नैया मैया, टुटले पतवार
कोना कऽ करबै नैया उमड़ल नदी पार

अनकर नाव भने डूबि जाय, मुदा कोशीक नाव कोना डूबत ! तैयो कोशी आश्वासन दैत छथिन जे सोना आ रूपासँ ओ ओकर नावकेँ मढ़बा देथिन–

सोनेसँ मढ़ाय देबौ दुनू माङि नैया, रूपासँ मढ़ेबउ करुआरि ।

सात दिन सात राति कोशी मैया नाव पर झिलहेरि खेलाइत छथि आ जलक्रीड़ासँ प्रसन्न भऽ कऽ ओहि नाविकके ँ ओकर मुँह मांगल वस्तु देबऽ चाहैत छथि–

सात दिन सात राति खेललहुँ झिलेहरिया
से माङै रे मलहा, मलहा अपन इनाम ।

मलाहके ँ तँ अपन नदीमातासँ सब किछु भेटैत छैक । जिनगी, पेट–भरि दाना, धन–सम्पत्ति, सन्तान सब किछु तँ वैह दैत छथिन । नाविक कोशीसँ मङैत अछि अपन बुढ़िया मायक लेल आँखिक ज्योति, बाँझ पत्नी लेल सन्तान आ अपना लय संघर्षक समयमे कोशी माताक अभय वरदान–

घरमे जे माता छै, अन्हरी बुढ़िया माय
धनी मोरा बाँझ पद देहु ने छोड़ाय
अपना लय माङ्गब माता रन बेरि होहु ने सहाय ।

सम्भवतः ओ नहि बुझने होअय जे एकहि संग ओ कतेक रास वस्तु माङि लेलक । एकटा सुखमय जीवनक हेतु एहिसँ बढ़ि कऽ और अधिक साधन की भऽ सकैत छैक ! कोशी प्रसन्नतापूर्वक मलाहके ँ ओकर माङल सब चीज दऽ देलथिन–

मैयाके हेतउ मलहा जोति दुनू लोचना
धनि बाँझि देलियौ छोड़ाय
कल जोड़ि मिनती कयले ँ रे मलहा
रन बेरि रहब सहाय ।

ओहि सरिता माताक आशीर्वाद लऽकऽ ओ जिनगीक लड़ाइ लड़ैत रहल अछि । खुनियाँ लहरिसँ खेलाइत, टकराइत रहल अछि । नदीक माछसँ नुक्का–चोरी आ गोहि–घड़ियारसँ भिड़न्त करैत रहल अछि । पानिमे रहि कऽ मगरसँ वैर मोल लैत रहल अछि । अपन कर्मठ जीवनक उतार–चढ़ावमे ओ सब ठाम विजय पबैत रहल अछि । आ जखन कखनो नाव खेबैत काल ओकरा अवसर भेटि जाइत छैक तखन एहि तरहक गीतमे स्वर भरि कऽ अपन जीवनक लय पर नहुँ–नहुँ थाप देबऽ लगैछ । ओ भगवानसँ प्रार्थना करैत रहैछ जे एहि नदी सभक पानि अनन्त काल तक एहिना चलैत रहय, बढ़ैत रहय ।

(हिन्दी रुपान्तर, आर्यावर्त, 25.12.60)

●

आयल शरद् सोहाओन मासे

वर्षाक अन्त होइतहि शरद् ऋतुक आभास होबऽ लगैत छैक । भादवकेँ समाप्त होयबासँ किछु पहिनहिसँ वातावरणमे एक प्रकारक चमक आबि जाइत छैक । नील-निर्मल आकाश आ चकमक इजोरियासँ युक्त शरद् ऋतु मनुष्यमे एकटा विचित्र प्रकारक स्फूर्त्ति भरि दैछ । प्राकृतिक शोभाक शुभ्रता समस्त जगतमे पसरि जाइछ । आकाश मेघ-शून्य भऽ जाइत छैक । सर-सरिताक बरसाती घोर-मट्ठा जल स्वच्छ भऽ जाइछ, एहन प्रतीत होइछ जेना पश्चात्तापक बाद हृदय शुद्ध आ पवित्र भऽ गेल हो, अथवा दुःखाश्रु खसलासँ मोन हल्लुक भऽ गेल हो । नदीक धारा पातर भऽ जाइछ आ ओकर दुनू किनार पर चानी सन चकमक बालुक ढेरी आ पथार देखबामे अबैछ । गाम-घरक बाट सुखा कऽ चलबा योग्य भऽ जाइत छैक । प्राणीक संचरण बढ़ैत छैक । ओ पक्षी जे वर्षा ऋतुमे दूर चलि जाइछ अछि से पुनः घूरि अबैत अछि । कालिदास देखने छलाह जे वर्षाकेँ अबितहि ओकर सुभग मनोहर गर्जन सुनि हंस कोना मानसरोवरक लेल उत्कंठित होइछ आ अपना मुँहमे मृणाल तंतुक पाथेय लऽ कैलाश-पर्वतक दिस उड़ि जाइछ । उत्तरापथक यात्रा करऽ वला एहन राजहंस पुनः हिमालयक तराइमे घुरि अबैछ ।

शरद् नववधूक सदृश अबैछ आ जगतक अशेष तारुण्य तरंगित भऽ उठैछ । संस्कृतक एक गोट कवि ठीके एकरा लक्ष्य कयलनि अछि—

अद्य प्रसन्नेन्दु मुखी सिताम्बरा, सभा ययावुत्पलपत्रनेत्राः ।
सपंकजा श्रीरिव गांनिषेवितुं, सहंस बालव्यञ्जना शरद्वधूः॥

शरत्क एहि शोभा पर कवि रवीन्द्रनाथ सेहो मुग्ध भऽ उठल छलाह । शारदीया लक्ष्मीक स्वागत कयल जाइछ । काश-गुच्छसँ शृंगार कयल जाइछ । शेफालीक माला गाँथल जाइछ । नव धानक शीशसँ डाला सजाओल जाइछ । शारदीया लक्ष्मीक शुभ्र रथ वन-गिरि-प्रान्तरमे चलऽ लगैछ—

आमरा बेधेछि कांशेरि गुच्छा, आमरा गेथेछि शेफालि माला
नवीन धानेरि मंजरि दिए, साजिए एनेछि डाला
एसो ओ शारद लक्ष्मी, तोमार शुभ्र मेघेर रथे
एसो धौत श्यामल आलो, झलमल वन गिरि पथे

शरद् ऋतु पाबनि-तिहारक ऋतु थिक । एहन जानि पड़ैछ जेना सम्पूर्ण वर्षक पाबनि-तिहार समटा कऽ शरत ऋतुमे समाहित भऽ गेल हो । एहि ऋतुक प्रथमहि दिनसँ पितरक तर्पण आरम्भ भऽ जाइछ आ पहिल तर्पण होइछ आर्य सभ्यताक महान् प्रचारक अगस्त्य केर । काश-पुष्पसँ ओहि महान त्यागीक तर्पण होइछ जे उत्तर एवं दक्षिण भारतक सभ्यताकेँ एक सूत्रमे बन्हबाक पहिल प्रयास कयने छलाह आ मातृनवमीकेँ अपन माताक प्रति श्रद्धा अर्पित कयल जाइछ । एकरा मिथिलाक विशेषताक रूपमे लेल जाइछ ।

पितृपक्षक समाप्ति होइछ आ शारदीय नवरात्रक आराधना-पर्व आरम्भ होइछ ।

बंगालमे ई दुर्गोत्सव नवजीवनक संचार करैछ । यदि एहि देवी पक्षमे ओतऽकेर गाम-गमाइत भ्रमण कयल जाय तँ एहन लागत जेना बंगभूमिमे खुशीक हिलकोर उठि रहल हो । बंग-वधू सब थारीमे सपर्या सामग्री सजौने देवीमन्दिर दिस जाइत दृष्टिगोचर होइतीह । मिथिलाक भूमि देवीपक्षमे सेहो कम मनमोहक नहि रहैछ । प्रत्येक घरमे कलश स्थापित होइछ जकरा चारू कात जयन्ती जनमल रहैछ। दुर्गा-पाठ चलैत रहैत छैक । देवीवंदनाक गीत वातावरणमे भक्तिभाव भरैत रहैत छैक । धूप-अगरुक धूमराशिसँ वातावरण सुवासित भऽ उठैत छैक । कोन बाटे दशो दिन बीति जाइत छैक से बुझाइये नहि पड़ैत छैक । आसिनक पूर्णिमा अबैछ। **कोजागराक** ई राति प्रेम आ सौन्दर्यक राति थिक । कृष्णक **महारास** एही पूर्णिमाकेँ भेल छलनि आ इतिहास प्रसिद्ध मगधक **कौमुदी महोत्सव** सेहो एही रातिमे मनाओल जाइत छल। मिथिलाक ग्राममे ई राति प्रसिद्ध अछि **दही-पान-मखान-पचीसी**क लेल ।

शरद् ऋतुक उत्तर भागक रूपमे अबैछ कातिक-मास । सुखराती, गोधन, भरदुतिआ, छठि, अक्षय नवमी, देवोत्थान, धवल-त्रयोदशी आ सामा-चकेवा बेरा बेरी कऽ अबैत अछि। मिथिलावसी अत्यन्त मनोयोगपूर्वक, उत्साह ओ उल्लाससँ प्रत्येक पाबनि-तिहारकेँ मनबैत अछि । मिथिलाक तँ ई विशेषते थिक जे बिना गीतक कोनो काजे नहि हो, कोनो उत्सवे नहि हो, कोनो पाबनिये नहि हो । से एहि ऋतुमे मिथिलाक जनजीवन लोकगीतक भंडार बनि जाइछ । शरत्क इजोरिया ककरा ने नीक लगैत छैक ? आ एहिमे दूरसँ अबैत वंशीक स्वर आ मंद-मंद बहैत पवन पर छिहलैत गीतक स्वर सुनि के भावमग्न नहि भऽ जायत ?

ई ऋतु श्वेत वस्त्र धारण कयने अबैत अछि । ओकर भाल पर श्रीखंडक चारुचन्दन लागल रहैत छैक । उज्जर-उज्जर काशक फूल लहराइत रहैत अछि । महमह करैत सिङरहार रातिमे फुलाइत आ भोरमे झहरैत रहैत अछि । चर-चाँचरमे श्वेत भेँटक फूल मने मलकोका रातिमे फुलाइत छैक । भरि राति चान आ तरेगन ओकरासँ परिहास करैत छैक । भोर होइतहि सूर्यक स्वर्णिम किरण पड़ितहि ओ लाजे सकुचि जाइत छैक । भेँटक मालासँ अपन शरीरकेँ आवृत्त कऽ चानक प्रियतमा इजोरियाक चकचक आँचरक तरमे मिथिलाक किशोरी जतऽ दशमीमे- **जय-जय भैरवि असुर भयाउनि**क मधुर झंकारसँ वातावरणकेँ झंकृत कऽ दैत अछि, तँ दोसर दिस स्त्रीगण **झिझिया** नृत्य करैत भगवतीकेँ गोहरबैछ आ डाइनकेँ गरियबैछ। आ ई सब होइत छैक गीतक माध्यमसँ, स्त्रीगण सहस्रछिद्रयुक्त घटमे दीप जराय माथ पर राखि लैत अछि । हेंज बान्हि कऽ राति भरि गाममे घुमैत-नचैत-गबैत रहैत अछि-

भल डैनियाँ होइहेँ अपन बेटा खइहेँ
नगरक लोकके बचइहेँ गे ।

आ तकरा बाद **छठि**मे दीनानाथक आवाहन होइत अछि-

नदियाक नीरे तीरे बौलउँ मोञ राइ
छठी माइक मिरगा चरिअ चरि जाइ

किन्तु सर्वाधिक भावुक पर्व होइछ **सामा-चकेबाक** । ई भाय-बहीनक पर्व थिक जे छठिक दोसर दिनसँ आरम्भ होइछ आ कार्त्तिकक पूर्णिमा धरि चलैत अछि । सामा-चकेबाक पूजा किशोरी सब हरियर दूबि, नव गम्हरायल धान, दूबि पर पसरल ओस आ सरल-निश्छल गीतसँ करैत अछि-

सामा खेलऽ गेलउँ कोने भइया टोल
गोखुलाक काँट लबुधि धयलक सड़िया
छाड़ु-छाड़ु कँटबा लगाओल बड़ हे देरिया

आ पूर्णिमाक दिन ओहि किशोरी सभक सब उल्लास पसीझि जाइत छैक । आँखि नोरा जाइत छैक । नोरसँ आँचर भीजि जाइत छैक । उदासी पसरि जाइत छैक ओहि जोतल खेतमे, पोखरिक किनारमे, नदीक तटपर जतऽ ग्रामीण बाला लोकनि सामा-चकेबाक मृण्मयी मूर्त्तिकेँ विदा करबाक हेतु जमा होइत अछि । टीस भरल गीतक मूर्च्छनामे एकटा आग्रह, अनुरोध भरल रहैत छैक-

सामचको सामचको अबिहऽ हे अबिहऽ हे,
कूर खेतमे बैसिहऽहे, बैसिहऽ हे
सब रंग पटिया ओछबिहऽ हे, ओछबिहऽ हे,

आसिन आ कातिक शरद् ऋतुक दुनू भुजा थिक । शरद्सुन्दरी अनेको पर्वकेँ अपन बाहु-पाशमे आबद्ध कयने अछि । अतः एहि दुनूक फराक-फराक चर्चा सेहो लोकगीतमे प्रचुर अछि । एहन शरद्-यामिनीमे यदि चारू कात आनन्दे आनन्द पसरल हो आ कोनो तरुणीक प्रियतम परदेशमे होइक तँ ओकरा वेदना आ पीड़ाक अतिरिक्त की भेटतैक ? इजोरिया रातिक स्वाद ओकरा कोना लगतैक ?

आसिन आस जनाबय जोर । उगय चानिनी दुख बड़ जोर ॥
बाजल हे सखि कीर चकोर । कहाँ गेला मोर नन्द किशोरे ॥
अलि रे घनश्याम बिना ।

एकाकी रहैत रहैत बीति जाइत छैक कातिकक मास । निर्मोही प्रियतम नहिएँ अबैछ। नायिकाक आँखिक नोर सुखा जाइत छैक । सखी सब आनन्द विभोर रहैछ आ ई नायिका अपन हृदयमे पीड़ाकेँ संजोगने रहैत अछि–

कातिक सखि सब मुदित खेलय, श्याम चकेबा खेल रे ।
हम कतय बसि सेज पर सखि, नयन नीरस भेल रे ॥

आसिन आ कातिकक असीम शोभा, अशेष ऐश्वर्य, अप्रतिम मनोहर रूप सब किछु ओकरा लेल व्यर्थ अछि । प्रियतमक अभावमे सुधा सदृश चन्द्रमाक प्रकाश सेहो पानि जकाँ बहि गेल। सिङरहार तूबि कऽ खसि पड़ल । खेतमे धानक शीश सेहो जेना झुकि गेल–

आसिन हे सखि कास फलकल, भेंट भेल भकरार यो
पानि सन बहि गेल चानिनि, तुअल सिङरहार यो
कातिक हे सखि गम्हड़ि लीबल, सबुज खेतक सारि यो
हमर केहि अपराध कारन, पिआ देल बिसारि यो

मैथिलीक शिष्ट साहित्य आ लोकसाहित्य दुनूमे शरद् वर्णनक प्रचुरता अछि । विभिन्न प्रकारक मृदु-मृदु कल्पना-वल्लीसँ शरद्सुन्दरीक शृंगार कयल गेल अछि । लोकगीतक भावपूर्ण पंक्ति मानवकेँ अपन दुख बिसरबामे सहायक होइत छैक । गामक लोक सब सालक एहि तेरहम मासकेँ एही गीत सबकेँ गाबि बितबैत अछि ।

(हिन्दी रूपान्तर, आर्यावर्त, 1. 10. 61)

●

बिहुँसलि वसुधा फागुन मासे

प्रकृति गतिमान अछि, ओकर समस्त अवयव मर्यादित परिधिमे चलि रहलैक अछि। ओकर यैह गति प्राणीक जीवनकेँ सेहो गतिमान बनौने अछि । जँ सूर्य चलय नहि, चन्द्रमाक कला घटैत-बढ़ैत नहि रहय, तारा उगैत-डूबैत नहि रहय, मेघ लागय नहि, मेघ फाटय नहि, ऋतुमे परिवर्त्तन नहि होइत रहय, तँ कहू जे कोनो मनुक्ख कोना जीबि सकत ! मानव अपन दुख-पीड़ाकेँ बिसरि क्षण-प्रतिक्षण मोम जकाँ बरकि रहल जिनगीक आनन्द कोना उठा सकत! प्रकृतिक गति आ परिवर्त्तनहिसँ तँ वसुधाक फलक पर नूतन रंगक तूलिका चलैत छैक। एही दुआरेँ तँ गरमी आ जाड़ अबैत छैक, बरिसात आ वसन्त अबैत छैक ।

शिशिरक कनकन बसातक झमाड़सँ पीड़ित भऽ कऽ गाछक पात सब खसि पड़ैत छैक । प्रपर्ण वृक्ष, ओकर नग्न बेजान सन बुझाइत डाढ़ि आ ओहि पर बैसल कोनो एसगरि चिड़ै, डारि पर पड़ैत भोरक दुर्बल किरण, सब किछु जेना उदास-उदास सन लगैत अछि । अभिशप्त किन्नर जकाँ ठाढ़ भेल रहैछ गाछ अपन दुर्भाग्य पर कनैत-विलखैत-पछताइत।

फेर रमणीय वसन्तक शुभागमन होइछ । मन्द-मन्द, मधुर-मधुर पछबा सिहकऽ लगैछ । कोइली कुहकऽ लगैछ । नग्न गाछमे नूतन आवरण जकाँ कोमल-कोमल किसलय पनघऽ / जनमऽ लगैछ । हरियर रंगक वस्त्रसँ सुसज्जित गाछमे आभूषण जकाँ रंग-विरंगक सुवासित पुष्प फुलाय लगैछ । वस्तुतः सोनमे सुगन्धि सन । गाछक अंग-अंग भरि जाइत छैक– सुसज्जित लागऽ लगैत छैक, जेना पसाहनि कयल कोनो नवकनियाँ हो आ ओकर डारि-पात झूमि-झूमि कऽ नाचि उठैत छैक चंचल-खेलौनियाँ ननदि जकाँ ।

प्रकृतिक प्राप्त भेल एहि अक्षय यौवनक रंग दिशा-दिशामे व्याप्त भऽ जाइत छैक। ई रंग लोकक सुषुप्त मनकेँ सेहो झकझोड़ि दैत छैक, किछु मस्ती, किछु-किछु बेसुधी जेना ओकरा पर सवार भऽ उठैत छैक । जखन दशो दिशा सहकार मञ्जरीक केसरसँ मूर्च्छित भऽ उठय, जखन भ्रमर मधुपान कऽ बेमत्त भेल गली-गलीमे घूमि रहल हो, तँ एहन मादक वसन्तक समयमे ककर मोन अज्ञात उत्कण्ठासँ कातर नहि भऽ जयतैक–

सहकार कुसुम केसर निकर भरामोद मूर्च्छित दिगन्ते ।
मधुर-मधु विधुर मधुपो मधौ भवेत् कस्य नोत्कण्ठा ॥

कहबी अछि– मोन हरखित तँ गाबी गीत । जँ प्रकृतिए प्रसन्नतासँ खिलखिला रहल हो तँ कोनो प्राणी स्वयंकेँ कोना कऽ बरजि सकत ! ओकर मोन चंचल भऽ उठैत छैक । नाचि-गाबि कऽ अपन उल्लास प्रकट करबाक उत्कण्ठा बेसम्हार भऽ जाइत छैक । ओकरो कण्ठ संगीतसँ भरि जाइत छैक, पैर थिरकऽ लगैत छै । जे जिनगीक भट्ठीमे निरन्तर जरि-झरकि रहल अछि, अभावक चकरीमे दरड़ाइत जकर जिनगी राइ-सोहराइ भऽ रहल छैक; वसन्ती बसात जखन सिहकैछ तँ ओहि निर्धन किसानक शुष्क-उस्सर तनमन जेना सराबोर भऽ उठैछ । दीन-दुनियाँक हलचलसँ सर्वथा असम्पृक्त, लाइ-लपटाइसँ फराक,

गाम-देहातमे रहनिहार निर्दोष किसान अपन ढोल, मृदङ्ग, डम्फामे नूतन स्वर, नूतन ताल, नूतन लय ओ नूतन तान भरऽ लगैछ ।

फागुन सन मदमस्त मास तँ सालमे दोसर कोनो नहि होइछ । तेँ तँ गामक कोनो अल्हड़-चंचलयौवना गुनगुना उठैछ— **भरि फागुन बुढ़बा देओर लागय** । ओ अपन रसिक पति द्वारा चुनरीकेँ रङाकऽ आनल देखि नितराइत कहैछ—

मोरा बलमुआँ बड़ा रे रङरसिया फागुनमे चुनरी रङा आनय ।

खेत-खरिहानमे होरी कोनो वाद्ययन्त्रक कसल तार जकाँ आङुर पड़िते झनझना उठैछ। रंग-अबीरक लालिमा चारू दिश जेना पसरि जाइछ । महिंसिक पीठ पर निचिन्त बैसल चरबाह युवक निपरबाहि भेल एके बेर गीतक टाहि उठा दैत अछि—

गोरी कहमा गोदओलेँ गोदना

अहियाँ गोदओलेँ, बहियाँ गोदओलेँ पिआके पलंग पर रोदना ।

कहल जाइछ जे पहिने होरी पश्चिम भारतमे मनाओल जाइत छलैक, बादमे पूर्वी भारतमे सेहो ई पर्व मनाओल जाय लागल । तथ्य जे हो, मुदा आब तँ भारतक प्रत्येक गाममे होरीक अबीर-गुलाल उड़ैत अछि । भारतक विभिन्न प्रदेशमे होरीक अवसर पर विभिन्न प्रकारक परम्परा ओ प्रथा प्रचलित अछि । मुदा सब ठाम मस्ती ओ आनन्द एकहि रंगक रहैत अछि। सब ठाम प्रसन्नताक बखारी फूजल रहैत छैक, लोक भरि पोख लुटैत रहैत अछि ।

होरी वसन्त ऋतुक पर्व थिक तेँ चैत-वैशाख-बन्धुक विशेष अधिकार एहि पर्व पर रहैत छनि । **वसन्तौ मधुमाधवौ** तँ प्रसिद्धे अछि । वसन्तक स्वागतमे पहिने वसन्तोत्सव मनाओल जाइत छल, जकरा **मदनमहोत्सव** सेहो कहल जाइत छलैक । फागुन पूर्णिमाक प्रात भऽ कऽ ई उत्सव होइत छलैक । होरीक धूम-धाम तँ एखनो ओही दिन होइत छैक । मुदा ओही दिनसँ रंगीन वसन्तक अन्त सेहो भऽ जाइत छैक । एना बुझना जाइत छैक जेना वसन्त ऋतुक समय घसकि कऽ पाछू चल आयल हो । माघक श्रीपञ्चमीसँ प्रारम्भ भऽ कऽ फागुन पूर्णिमाक दोसर दिन एहि वसन्तक समावर्त्तन भऽ जाइछ । मिथिलामे सतरहम शताब्दीमे भेल विद्वान् गोकुलनाथउपाध्यायक तँ विचार छलनि जे माघ शुक्ल पञ्चमी तिथिये कऽ रंग-अबीरक पाबनि होरी मनाओल जयबाक चाही, ई ककरो मुहेँ सूनल अछि ।

मिथिलावासी माघ शुक्ल पञ्चमीकेँ वासन्ती दुर्गा-सरस्वतीक आवाहन ओ आराधन आमक नूतन मज्जर तथा जओक फूलसँ करैत छथि । ओही दिनसँ वसन्त देवता चतुर्दिक व्याप्त भऽ जाइत छथि । हुनका स्वागतमे जेना सरदीक झमाड़लि धरती एके बेर अङैठी-मोड़ करैत अपन जड़ता त्यागैत बिहुँसि कऽ ठाढ़ भऽ उठैछ । शिशिरक सोनहुल तारसँ कसीदा काढ़ल ओकर आँचर वसन्तक सिहकी पबिते जेना उधिआय लगैछ । रब्बीसँ बनल ओकर साड़ीक किनारी, सरिसबक पीयर फूलसँ रञ्जित साड़ीक जमीन, फूलक परागसँ भरल ओकर खोँइछ, चिड़ै-चुनमुन्नीक मधुर कलरवसँ बनल ओकर पयरक नूपुर अवश्ये ककरो मोनकेँ मोहि लऽ सकैत अछि ।

मिथिलाक कृषक एहि समय धरि अपन धान समेटि लेने रहैत छथि, रब्बी-राइक बाओग सम्पन्न भऽ गेल रहैछ । प्रतीक्षा रहैत छनि जे कखन रब्बी-राइ तैयार होयत । गाछी-बिरछीमे

उन्मुक्त विचरण करैत आम्रलक्ष्मीक स्वागत करबा लय उताहुल भेल रहैत छथि । घर भरल रहैत छनि धानसँ, बाध भरल रहैत छनि रब्बी-राइक हरियर, पीयर, नील रंगक जजातिसँ तथा गाछी-बिरछी आमक मज्जर ओ महुआक फूलसँ-चतुर्दिक लक्ष्मी खलखल हँसैत । एहने समयमे तँ लोकक कण्ठसँ मधुर स्वर लहरी फूटि पड़ैत छैक । एहि कण्ठस्वरमे अपूर्व मादकता रहैत छैक। ओकर प्रसन्नतामे ओकर देवी-देवता सेहो आबि कऽ सम्मिलित भऽ जाइत छथिन। गामक सोझमतिया किसान हुनका लोकनिकेँ अपना संग होरी खेलयबाक आमंत्रण दैत अछि। सबसँ पहिल होरी घरक गोसाउनि खेलाइत छथि । हुनक हाथक फुचकारीसँ रंगक फुहारा झहरऽ लगैछ, अबीर उड़ऽ लगैछ, हुनक पीताभ वस्त्र फहराय लगैछ-

धन-धन हे गोसाउनि हे आजु खेलिय तोँहे फागु ।
घरहिमे आहे माता रंग घोराओल अबिर झोड़ि संग लेल फिचकारी
अतर-गुलाब मैया सीचन लागू पीत बसन फहराय ।

तदुपरि भगवती जगदम्बा अपन जोगिनिक झुण्ड बना कऽ होरी खेलाइत छथि-

जगदम्बा खेलय फागु हे जोगिन संग लये

किसानक गीतक वसुधा पर एकाएकी कऽ समस्त देवी-देवता उतरैत छथि आ भरि मोन, भरि पोख कुंकुमक लाली उड़बैत छथि । हुनका लोकनिक होरीक गीत मिथिलावासीक हेतु प्रेरणाक स्रोत बनि जाइत अछि । हुनक धमाउरमे धैर्य आ उताहुलपनक अद्भुत सम्मिश्रण रहैछ । गीतक एकेटा कड़ी धुनिक संग बेर-बेर दोहराओल जाइछ ।

एहि देवी-देवता लोकनिक होरी-क्रीड़ाक वर्णन जाहि प्रकारेँ मैथिली लोकगीतमे भेल अछि, ओहिमे एकहि संग एहि धरतीक भावभूमि ओ अपन उल्लासक नैवेद्य देवतो लोकनिक बीच वितरित करबाक उदात्त भावक दर्शन होइछ । सोझ-साझ भाषा आ सरल छन्दमे बान्हल गीतक कड़ी आ ओकर अर्थ वस्तुतः बड़ रमणीक, बड़ सुखद आ हृदयस्पर्शी होइछ । गौरीक पीयर चुनरी पर भोला बौरहबा रंग धऽ दैत छथिन, हुनक गोर-गोर गालपर कुंकुम औंसि दैत छथिन-

भोला बौरहबा रंग ढारे
गौरीक चुनरी झलामलि पीअर
गोरे-गोरे गाल पर अबीर झारे ।

गौरी सेहो ओहि भंगियाकेँ नहिं छोड़ैत छथिन । हुनका पाग, जट-जूट, दाढ़ी, बघछाला सबकेँ रंग-अबीरसँ तोपि दैत छथिन । गौरी आ बुढ़बा भोलानाथक रंग-अबीरमे तोपल ई रूप देखि कऽ सब पूछऽ लगैत छनि-

बम भोलेबाबा, कहाँ रङौलह पागड़िया
अपने तँ भोलाबाबा जटा रङौलह पारवती केर चूनरिया ।

शिव आ पार्वतीक चलि रहल वसन्तोत्सव, रंग-क्रीड़ा, सखी लोकनि फराकेसँ देखि रहल छथिन । हुनका लोकनिक मुखाकृति पर एकटा कौतूहलक भाव छनि, तँ आँखिमे कुटिलतापूर्ण इशारा । सब एक-दोसरकेँ देखबैत कहैत छथि-

देखह हे सखि, जहँ शिव शंकर खेलथि फाग
ककरहि पहिरन बाघ-बघम्मर, ककरहि पहिरन चीर
शिवजीक पहिरन बाघ-बघम्मर, गौरीक पहिरन चीर
ककरहि भोजन आँक धुथुर फल, ककरहि भोजन खीर
शिवजीक भोजन आक धुथुर फल, गौरीक भोजन खीर
ककरहि सिर पर भसम विराजय, ककरहि खोँइछ अबीर
शिवजीक सिर पर भसम बिराजय, गौरीक खोँइछ अबीर

अद्‌भुत दृश्य अछि ! शिवक पहिरन बाघम्मर छनि तँ गौरीक चीर : शिवक आहार आक-धुथुरक फड़ छनि तँ गौरीक भोजन खीर । शिव भस्मक प्रेमी छथि तँ गौरीक खोँइछमे छनि अबीर ! अनेरे प्रश्न उपस्थित भऽ जाइछ, एहन विरोधाभास किएक ? एहि दम्पतीक प्रतिकूलतोमे कतेक अनुकूलता भरल छनि !

रंग-अबीरक एहि लालिमासँ रामायण परिवार सेहो कहाँ वंचित अछि ! मर्यादा पुरुषोत्तम राम घड़ी भरि लय मर्यादाक परिधिसँ बाहर भऽ साधारण मनुष्य बनि जाइत छथि । मिथिलाक जमाय श्रीराम अपन सासुर जनकपुरमे रंग-अबीर खेलाइत छथि–

होरी जनक भवनमे खेलथि दशरथ-लाल
किनका हाथ कनक फिचकारी, किनका हाथ गुलाल
रामजी हाथ कनक फिचकारी, सीता हाथ गुलाल ।

जखन राम अवधमे रहैत छथि, तँ ओतहुँ होरीकेँ नहि बिसरैत छथि । राम राजमहलमे होरी खेलाइत छथि आ सीता रनिवासमे । राम चोआ-चानन उड़बैत छथि आ सीता कुंकुम-अबीर–

राम खेलय होरी राजमहलमे सीता खेलथि रनिवास
राम उड़ाबथि चोआ-चानन सीता कुंकुम-गुलाल ।

राम-लछुमन सोनक डम्फा आ झाझर बजयबामे मग्न भऽ जाइत छथि–

किनका हाथ कनक डम्फा बाजय, किनका हाथ झाझर बाजय
लछुमन हाथ कनक डम्फा बाजय, रामजीक हाथ झाझर बाजय

ब्रजमण्डलक पात-पातकेँ जेना वसन्त रंगसँ रङि देलक अछि । वृन्दावनक कुञ्जगली जेना रंगसँ सराबोर भऽ उठल । भीजि गेल गोपांगना लोकनिक झिलमिल चुनरी । हुनका लोकनिक कोमल कपोलमे लागल कुंकुम उड़ि-उड़ि कऽ यमुनाक जलमे खसैत अछि आ ओकरो रंगीन बना दैत अछि । गोपाङ्गना लोकनिक लहराइत लाल, पीयर, गुलाबी रंगक चुनरीक छाह यमुना जलक लहरिमे मिज्झर भऽ इन्द्रधनुषक शोभा उत्पन्न कऽ रहल अछि। ककरा नहि मोनमे कामना होयतैक जे ब्रजमण्डक ई वासन्ती रासक प्रत्यक्ष दर्शन करय, से ओहि ब्रजमण्डलमे जतऽ दुधगरि गाय बहुत छैक, जतऽ मोर बहुत छैक, जतऽ छैक गोरि-सुन्नरि बाला आ कतहु दूर कदमक गाछ पर झोँझड़िमे नुका कऽ बाँसुरी टेरैत नवल रसिया–

ब्रजमण्डल रास देखा दे रसिया
ओहि ब्रजमण्डल नारि बहुत हे
गोरे-गोरे नारि नवल रसिया ।

एहि ब्रजमण्डलमे कोनो कुञ्जमे राधा-माधव होरी खेलाइत छथि । दुनू गोटाक बीच झिक्का-तीरी, बलजोरी होइत छनि । कृष्ण जतेक होरी खेलाइत छथि, राधा ओहिसँ दोबर खेलाइत छथि ।

राधा-माधवक सरस होरी गीत जखन गामक अल्हड़ि-चंचल युवती कने नाज-नखराक संग ककरो ठेकानि कऽ गबैत अछि तँ जेना वृन्दावनक ओ दृश्य एके बेर साकार भऽ उठैछ। विशेष कऽ जखन कोनो नवविवाहित वर सासुर आयल हो आ ओकरा उपर चारू कातसँ रंगक फुचकारी उझिलल जाइत हो । सम्भवतः कृष्णकन्हैया सेहो एहन होरी कहियो नहि खेलायल होयताह । एहि प्रसंगक होरीक एकटा मनोरंजक गीत रसिकताक सीमाकेँ जेना टपि जाइत अछि । खेले-खेलमे राधा आ हुनक सखी लोकनि कृष्णकेँ स्त्री बना हुनक दुर्दशा कऽ दैत छथिन । तखन केहन लागल होयत जखन कृष्णक हाथसँ बाँसुरी छीनि कऽ, मुकुट उतारि कऽ हुनका चुनरी पहिरा देल गेल होयतनि, आँखिमे काजर ओ नाकमे नथिया पहिरा कऽ गोपी लोकनि कोना कऽ ठहक्का मारि हँसलि होयतीह !

एक दिस आबथि कुमरि राधिका, दोसरहि कुमर कन्हाइ हो
खेलथि फागु परस्पर हिलि-मिलि से छवि वरनि न जाइ हो
बाजय डम्फ मृंदग झालरी ता पर बजय सहनाइ हो
उड़य गुलाल रंग ओ केसर कुंकुम अबिर उड़ाइ हो ।

एहि वासन्ती रसवृष्टिमे जेना कृष्णक सुधि-बुधि हेरा गेलनि । ओमहर गोपी लोकनि तँ एही अवसरक प्रतिक्षामे छलीह आ से अवसर जहाँ भेटलनि तँ कृष्णक से गति कयलथिन जे-

छिनि लेल मुरली अरु सिर मटुकी, सिर देलि चुनरी ओढ़ाइ हो
भाल बनाय, नयन बिच काजर, नाक बेसरि पहिराइ हो ।

होरी अमर रहय, ओकर गीतक टघार अमन्द बनल रहय । प्रति वर्ष होरी अबैत अछि आ जिनगीक पीड़ासँ पिड़ायल मनुखकेँ दुलार-मलार कऽ मधुर स्वरमे निनिया गाबि कऽ सुता दैत अछि । क्षण भरि लय लोक सबटा दुख-पीड़ा बिसरि होरीक राग-रंगमे डूबि जाइत अछि। होरीक स्वागत एहिना सब दिन होइत रहय, होरी अबैत रहय, आनन्दक वर्षा बरिसैत रहय, यैह भाव तँ रहैत छैक होरीक अन्तिम गीतमे-

सदा आनन्द रहय एहि द्वारे मोहन खेले होरी हो ।

(हिन्दी रूपान्तर, आर्यावर्त 26.2.61)

●

रंग-रस मातल फगुआ

आङुरपर गनैत-गनैत फगुआ आबिये गेल । वसन्त पंचमी दिन सोचने रही जे एक मास दस दिन छैक आ आब फागुक कुंकुम-अबीर उड़ि रहल छैक । रंगक फिचकारी उमड़ि रहल छैक आ डम्फाक तालपर फगुआ गीतक लय उधिया रहल छैक । एहि अवसरपर मिथिलाक गमइ इलाकामे जायब तँ एकटा मस्ती आ उमंगक वातावरण भेटत । चलू ने हमरे गाम दिस । हम अपने गामक फागु-उत्सव देखा देब तँ सम्पूर्ण मिथिलाक मस्तीक थाह भेटि जायत ।

किछु दिन पहिने हमरा गाम आयल रहितहुँ, रातिमे होरीक धमाउर सुनितहुँ भरि पोख....महादेवक मंदिरपर, भगवानक मंदिरपर, ब्रह्मस्थानमे, भगवती स्थामे आ नहि तँ ककरो दलाने पर । आ काल्हिखन अबितहुँ चौठिया घर लग तिनबट्टी पर देखितिऐक बाँस एतेक सम्मतक धधरा उठैत, बूझि पड़ैत जेना वैदिक कालिक यज्ञ-देवता अग्नि साक्षात् उतरि गेलाह अछि । काल्हिसँ आगि स्वतंत्र अछि । मिथिलाक गाम-गाममे ई नङटे नाचत । हमरा गामक बूढ़ पुरुखक विश्वास छनि आ एहिना अनेको लोकक विश्वास छैक जे सम्मत दिनसँ आगिक देवी नैहरमे चल अबैत अछि ।

फागुनक इज़ोरिया रात्ति, निर्मल, दूध सन धवल आ ओहीमे सौंसे गाममे बूलि कऽ फागु गबैत, जारन आदि जमा कयने छल लोक । आ बिरजू कका भरि राति जागि कऽ अपन ढाठक पहरा कयलनि जे क्यो उजाड़ि ने लिअय । आ चौधरीजीक टुटलाहा खोपड़ी आ कुसियारक पगार सभ तँ धैये देल गेलैक सम्मतक आगिमे ।

आ आइ भिनसरेसँ गामक प्रत्येक घरमे पूआ छना रहल छैक, बऽड़-बड़ी बनैत छैक आ मारि की-कहाँ बनैत छैक । सभ बजाओत, निमंत्रण देत आ कतहु खा नहि सकब, खा नहि होयत । खाली मूँहटा ऐंठा कऽ छोड़ि देब ।

नजरि सतर्क राखब, ने तँ क्यो कोम्हरहुसँ बोरि ने दिअय । से कि अहाँ बाँचि सकब! देखू ओम्हर नजरि खिराउ ने.... बूझि पड़त जेना अनेक रंगक बहुत रास फूलक गुलदस्ता अछि। नहि, ओ सभ ग्रामबाला थिक जे झुंड बान्हि कऽ अङने-अङने घूमि-घूमि कऽ फगुआ खेलायत । सभक हाथमे फुलही बाटीमे, लोटामे, डोलमे गुलाबी रंग घोरल छैक । जेना मधुमाछी सभ एक हेंजमे चलैत अछि, जेना सिल्ली चिड़ैक समूह एके बेर कोनो सतरिया धानक खेतमे बैसि जाइत अछि, तहिना ई संगी-बहिनपाक संगतुरिया सभ आङन सभमे जायत । कनियाँ सभकेँ, नव कनियाँक श्वेत-पीत साड़ीकेँ हाथक थप्पासँ भरि देत । सौंसे देहयष्टि रंगसँ सराबोर भऽ जयतैक ।

कय गोट आङनमे वर सभ आयल छैक । जकर नव बियाह भेलैक से जँ सासुरक गुलाबी रंगमे नहि भीजल, अपन नव परिणीताकेँ कुंकुमक फुहार नहि दऽ सकल तँ ओकरा लेल फगुआ रुच्छ-छुच्छ, पनिसोह । सासुरक फगुआमे सोहे ने रहि जायत जे कतऽ छी ? बूझि पड़त जे ब्रजमंडलेक वसन्तविहार देखि रहल छी...

आ ओम्हर महादेव स्थानमे ढोल-झालि झमकि उठलैक । आइ सौंसे गाम घूमि-घूमि कऽ, सभक दरबज्जापर जा कऽ लोक फागु गाओत आ सूनत । सौंसे गामक बच्चा, बूढ़, जुआन, धनिक, गरीब सभ एहि जुलूसमे समभावसँ सम्मिलित होयत । मिथिलावासी लोकनि एहि दिन भाङ पीने उन्मत्त रहैत छथि । जे भाङ नहि पिबैत छथि, तनिका अबीरेक निसाँ लागि जाइत छनि । एहि ठाम तँ ओहिना भाङक सिनेह रहैत छैक, आ फागुन मासमे तँ दलाने-दलाने भाङक लोटा चलैत रहैत अछि । मंडली जुटल आ वासन्ती रंग जमल । **रंगमे भंग** नहि भेल तँ फागुन की ? मुदा फागुनक बसातेमे भाङ घोरल रहैत छैक, तेँ दुआरे ने चिड़ैओ चुन-मुन्नी सभ बेमत्त भऽ जाइत अछि आ कोनो कामिनीक नकबेसर लूझि कऽ पड़ा जाइत छैक । कामिनीक प्रियतम भाङक निसाँसे बुत्त भेल सुतले रहि जाइत छैक । से दूर पर जुटल सर्वहारा वर्गक भसियाइत स्वरक गीत सूनि पड़ैत अछि-

नकबेसर कागा ले भागा सइयाँ अभागा ना जागा
उड़ि उड़ि कागा कदम चढ़ि बैसल जोबनाक सब रस ले भागा

आ देबूबाबाक उज्जर-उज्जर केशमे मुहमे, लेभरल अबीर, भाङक निसाँ, लाल आँखि आ हाथमे अधसेरा बड़का फुलही झालिक स्वर - **झन झन झनक-झन झन झनक**...............

गीतक कड़ी । पहिल फगुआ के खेलायत ? महादेव आ गौरी खेलाइत छथि आ ओहिसँ बचल चुटकी भरि अबीरमे सँ सौंसे गाम होरी मचैत अछि -

पहिल अबिर बम्भोला खेलथि
दोसर अबीरा गौरी हो हो गौरी हो
बचल अबिर चुटकी भरि लय लय
सगरो गाम मचय होरी हो हो होरी हो

आ रामअसीसझा किरतनियाँ महनजी नामे प्रसिद्ध । गबैत काल विभोर भऽ कऽ नाचऽ लगैत छथि । से बड़ मधुर स्वरमे उठौताह-

जात कुमारी जात कुमारी गिरिजा पूजन जात कुमारी

शिवमन्दिर आ राममन्दिरक बीचमे एकटा बड़का दलान छैक । आगाँमे करमी, सेमार, कुम्ही आ कदइसँ भरल विशाल पोखरिक लहराइत हरियर पानि, बूझि पड़त जेना गुलाबीक बदला हरियरे रंग वा भाङे घोरा गेल छैक एहि पानिमे । एहि दलानपर चारि-पाँचटा मंडली बैसल भेटत, फराक-फराक । एकटा कऽ ढोलकिया पाँच-छौटा कऽ झलैता । कोनहु मंडलीमे चारू कात ठाढ़ भेल वा सभ मंडलीमे घूमि-घूमि कऽ कतोक लोक चलतीक तोड़ दैत-

दशरथ साजु बरियात आरे लाला, दशरथ साजु बरियात

सभ मंडलीक अपन-अपन रुचि, अपन-अपन मोन; से तदनुरूपे झूमि-झूमि कऽ फागु गाबि रहल अछि सब । गाबि रहल अछि एहि दुआरेँ जे काल्हिसँ नहि गाबि सकत । साल भरि नहि गाबि सकक आ परुकाँ साल जे जीवित रहत से गाओत, बजाओत, रंग उड़ाओत, **जे जीअय से खेलय फागु** । सभ मंडली अबैत जायत बाटपर, दलानपर, मंदिरपर । सभ ठाम, फागुनक एक एकटा रंगीन क्षण पाछाँ छुटल जयतैक । लोक ओकरा धरऽ चाहत मुदा से पकड़यतैक नहि । गैंची माछ जकाँ छिहलि कऽ अतीतक पानिमे बिला जयतैक ।

तेँ कोनो मंडली गाबि उठत–

होरी केहि संग खेलू गृह लछुमन नहि राम
राम लखन सिया वन कऽ सिधारल दशरथ तेजल परान हो ।

दोसर मंडलीक निर्द्वन्द्व स्वरक झंकारमे डूबि जायब । बूझि पड़त जेना रस–सागरमे डूबल भसिआइत जा रहल छी । बूझि पड़त जेना रोम–रोमक छिद्र बाटेँ ओ भावसंकुल व्यंजनासँ भरल गीत आ ओकर स्वरावली प्रवेश कऽ कऽ रक्तक प्रवाहमे मिज्झर भऽ रहल अछि–

सगरि राति पिया बहियाँ मरोरलनि बढ़नियाँ छुअल नहि जाय ।
सइयाँ बेदरदा मरमो ने जानइ मोरा निहुरलो ने जाय ।

विश्वास करू, ई भूतपूर्व मुखियाजी छथि । एहि गीतकेँ एहि मूर्च्छनामे वैहटा गाबि सकैत छथि । भेँड़ाक केश सन औँठिया केशक दोग–दोगमे,गऽह–गऽहमे अबीर सन्हियायल, कारी–कारी, कड़े–कड़े मोंछक जड़िमे लाली भरल.....रोबदार चेहरा आ ताहि मुहसँ उतरैत एहन भावापन्न गीत सूनि थोड़ेक आश्चर्य भऽ सकैत अछि । आ हुनक एहि स्वर पर ककर मोन चंचल नहि भऽ उठतैक ? के नहि सतृष्ण भऽ उठत ? ओहि गोरीकेँ भरि नयन देखबाक लेल, रूपरसक जी भरि छकि कऽ पान करबाक लेल ककर मोन नहि ललचि उठतैक । स्वर्गक मेनका ओ उर्वशीकेँ निस्संकोच एहि धरा–सुन्दरीक लेल निहुँछि देब–

गोर गोर बहियाँ कि कारी–कारी गोदना
हाथो सोभइ बिना सोनाके कंगना
अबिर गुलाल मुँह सोभइ चनरमा
कोना कऽ राखइ धनि जौवन के भरमा

मुदा तुरन्ते नजरि चल जायत निरधनमा लग, जे हाथमे फुटलाहा डम्फा लेने पीटि रहल अछि आ गाबि रहल अछि– **डम्फा काहे को**

डम्फा काहे को बाजे रङीली रसिया
डम्फा काहे को ।

आगाँ सर्वहारा मंडली सड़कक कातमे ठाढ़ अछि, गाबि रहल अछि, अबीर उड़ा रहल अछि। ओकर मसकल, मैलछोन साफ कपड़ा पर रंगक टघार नीक लागत । थोड़बे कालमे सभ मंडली मिज्झर भऽ गेल, परन्तु अन्दाज नहि लागत जे के अवर्ण आ के सवर्ण। लोक गारि पढ़ैतक, गारि पढ़तैक निरधनमाकेँ जे घर–जमैया अछि, गारि पढ़ैतक ननकू हजड़ाकेँ जे बहीन ओतऽ रहैत अछि । आ अन्तमे खाली गारिटा रहतैक....**भले जी भले....** आ कि. ... **सुनले भैया मोर कबीर.....** आ ई गारि आब भने नहि नीक लगौक मुदा ताहि दिनसे एहि टोलपरक लोक बाट छेकि कऽ होलैया पढ़बबैत छल, गारि दैत छल, गारि सुनैत छल, निधोख ढारैत छल रंग, उड़बैत छल अबीर ।

कंटिरबाबा आ टुनटुनचौधरीकेँ नहि बिसरि सकैत छी । जीबैत लोकमे सभसँ बड़का जोगिड़िया । जागीड़ा आ कबीरक उतराचौरी दूनूमे बाझि जाइत छैक तँ तमाशा लागि जाइत छैक । आ बाझिये जयतैक– **ढोलकिया ताल न टूटे**

भैया रे सऽरऽ रऽ रऽ, भैया रे सऽरऽ रऽ रऽ

दोसर दिससँ चलतैक -

और बजा रे और बजा रे , ढोलकिया और बजा रे

आ पाछाँसँ विशाल व्यक्तित्वक गरिमा लेने बालेबाबू गर्दनिमे गमछाक धोकड़ी लटकौने, एक धोकड़ीमे अबीर, दोसरमे सुपारी लेने सभकेँ टारि कऽ आगाँ बढ़बैत चलताह -

जगदम्बा खेलय फागु हो हो जोगिन संग लिये ।

एके बेर सम्मिलित गामसँ सम्पूर्ण भगवती स्थानक वातावरण गूँजि उठल । बूझि पड़ैछ जेना असंख्य योगिनीक नर्तित पदक घुघरू शब्दायमान भऽ उठल । भालसरी ओ पिपरक गाछ प्रतिवर्ष भगवती स्थानक ई गीत-ध्वनि सुनैत आयल अछि आ सुनैत रहत ।

एकटा बात कहि दैत छी । एहि ठामसँ जखन अपना देश जायब, तँ मिथिलाक फागुक उल्लासकेँ नहि बिसरब-ओकर उन्मुक्तताकेँ नहि बिसरब । बिसरब केवल आवरण-हीन गीतक कड़ी सभकेँ । क्षण भरिक लेल जेना गारिक लाइसेन्स भेटि जाइत छैक । मोन राखब जे एहि गीत सभमे अनेक ठाम श्लीलता आ अश्लीलताक बान्ह टूटि जकाँ गेलैक अछि, जेना गंगा आ यमुना एकाकार भऽ गेल अछि, किन्तु ई सभ उन्मत्त भावोल्लास थिकैक, क्षणिक । गीत सभक कड़ियो जेना निसाँमे चूरम चूर रहैत अछि । किछु गीतमे नवीन मुग्धा बालाक अल्हड़पन होइत छैक । ईहो मोन राखब जे एहि सभसँ थोड़ेक हटि कऽ बहुतो गीतमे विषाद ओ असन्तोषक गड़ैत-कचकैत खैंक सभ देखि पड़ैछ । ओकर वसन्त-रंजित स्वरवितानमे उदासीएक फरिछाँही हुलकी दैत बूझि पड़त । खास कऽ प्रोषितपतिकाक सुनसान उसरठ होरीक भाव जतऽ वर्णित छैक, ओ हृदयक आङनमे जा कऽ पसरि जाइत छैक ।

लोकक दरबज्जापरसँ उठैत काल लोक गाबि उठैत अछि-

सदा अनन्द रहय एहि द्वारे मोहन खेलय होरी हो,
एक बर खेलय कुमर कन्हैया दोबर राधा जोड़ी हो
हो दोबर राधा जोड़ी हो, हो दोबर राधा जोड़ी हो ।

आ सम्पूर्ण गामक परिभ्रमण कऽ उदास इजोरिया रातिमे पुरना ठाकुरबाड़ी परसँ लोक सभ घुमैत अछि । चैतावरक करुणस्वर फगुआकेँ विदाइ दैत अछि । तखन अनायासे मोन उदास भऽ उठत । यदि अहूँकेँ भाङक निसाँ रहत तँ से टूटि जायत । बूझि पड़त जेना उल्लासमय फगुआक बितला तँ युगो भऽ गेलैक । आ थोड़बेक कालमे देखबैक थाकल ठेहियायल गामक पसार, खाली निस्तब्ध राति, दुधिया ज्योत्सना आ क्रम-क्रम ऊपर अबैत वृत्ताकार चन्द्रमा ।

.... हे लियऽ जाबत हम अहाँकेँ गप्पमे बझौने छलहुँ ताबतेमे लाल भौजी दूनू गोटेक माथपर भरलो बाल्टी गुलाबी रंग ढारि देलनि । देखू, ई मौगी कोना छका देलक !

(मिथिला मिहिर 26.2.61)

●

फूल कचनार भकरार भेलइ हे !

लोकगीतक विषय सहज, स्वाभाविक ओ जीवन्त होइत अछि। ओहिमे जनजीवनक एक-एक साँस ओ धड़कन जेना सुनाइ पड़ैत अछि। ओहि धड़कनकेँ सुनबाक ओ बुझबा जोगरक कान आ हृदय होयबाक चाही। लोकगीतक धरती पर पैर रखिते अद्‌भुत नैसर्गिक छटाक दर्शन होअऽ लगैत अछि। गाम-देहातक अटपट रंगसँ रङल-ढेउरल लोकगीतक छवि-छटा तेहन ने सोआहोन आ चित्ताकर्षक जे कहल नहि जाय। निचट्ट देहातक कोरमे अगरा कऽ लहराइत गाछ-वृक्ष, अनचिन्हार वनफूल, घास-पात, जाही-जूही एहि लोक-गीतक साधन होइत छैक। कोनो नगरवासी एहि वनफूलक गाछकेँ अपन फुलवाड़ीमे नहि रोपैत अछि। गर्मीसँ तबधल रहला पर एकर जड़िकेँ शीतल जलसँ सिक्त नहि करैत अछि। कोनो माली एकर ताक-छेम नहि करैत अछि। ई सब तँ स्वयं जनमैत अछि, फड़ैत-फुलाइत अछि आ मुरुझा जाइत अछि। सूर्यक उन्मुक्त रौद, असीम नील आकाश, सन-सन बहैत बसातक झोँक, मेघसँ झर-झर कऽ बरिसैत पानिक बुन्न, यैह तँ एकरामे जीवन-रस भरैत रहैत छैक।

एहि ग्राम्य लता-पुष्पकेँ भने शहरीबाबू लोकनिक सिनेह नहि भेटैक, मुदा गामक लोकक अजस्र दुलार तँ एकरा सब दिनसँ भेटैत रहलैक अछि। ग्रामीण बाला ओ नववधूक शृंगारक साधन बनि अपूर्व तृप्तिक अनुभव करैत अछि ई पुष्प सब। बाट-घाट चलैत कोनो अल्हड़ किशोरी, चरवाहिनी, घसवाहिनी, पतखरड़नी, पनिभरनीक मण्डली बाटक कातक झाँखुरमेसँ लता-वृक्षक कोनो डारि तोड़ि कऽ ओकर पात वा फूलक एकटा गुच्छ खोँटि कऽ जँ ओहिना बसातमे लोकि लेलक तँ ई तृप्त भऽ उठैत अछि। जँ अपन केशमे खोँसि लेलक तँ एहि पुष्पक सौन्दर्य अगणित भऽ उठैत छैक। यैह अनेर गाछ-वृक्ष, फूल-पात जखन ग्राम्य गीतक मालामे गाँथि देल जाइछ तँ एहिमे एकटा निष्कपट सौन्दर्य ओ सहजता परिलक्षित होअऽ लगैत छैक। कल्पनाक उत्थरपनमे सेहो भाव गाम्भीर्यक आभास होअऽ लगैत छैक। गामक लोक एहि घास-पात, लत्ती-फत्ती आ गाछ-वृक्षकेँ अपन मनोगत भावक प्रतीक बना कऽ गीत गबैत रहल अछि आ गबैत रहत।

प्रत्येक देश, जाति ओ भाषाक लोकगीतमे; ओकर परिवेशमे जनमल-बढ़ल, फड़ल-फुलायल गाछ-वृक्षक प्रचुर वर्णन पाओल जाइत अछि। ओहि तरु-वल्लीक विशेषते लोकगीतक अभिव्यक्तिक साधन बनि जाइत अछि। मिथिलाक लोकगीतमे सेहो एतुक्का गाछ-वृक्ष– आम, महु, जामुन, केरा, पीपर, बऽड़, पाकड़ि सन अलेल वृक्षक वर्णन-वन्दन भेल अछि।

एहने एकटा वन फूलक गाछ अछि– कचनार। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रन्थमे अनेको ठाम एकर चरचा भेटैत अछि। मध्यम आकारक एहि गाछक लम्बाइ पन्द्रहसँ बीस फीट धरि होइत छैक। जोड़ा पोस्टकार्ड जकाँ जोड़ल रहैत छैक एकर गोल-गोल हरियर-हरियर पात। एहि गाछक सबसँ पैघ विशेषता होइत छैक एकर फूल। गोटा-पघरा नहि, ढेरी-ढाकी, एक

रंगक नहि, कतेको रंगक । कमलपत्री-गुलाबी रंगक फूल, निर्मल नील आकाश रंगक फूल, दूध सन धवल-श्वेत वर्णक फूल । जखन ई फुलाइत अछि तँ बुझना जाइछ जेना कोनो पुजेगरी अपन फुलडालीमे फूल सजा कऽ रखने हो । सत्य पूछी, जँ स्वर्गक देवता ओ अप्सराकेँ धरतीक शोभा निरेखबाक लेल आमन्त्रित कयल जइतय तँ हुनका सभकेँ सबसँ पहिने फूलसँ लुबुधल कचनारेक गाछ देखाओल जइतनि आ सन्देह नहि जे ओ लोकनि सबसँ पहिने एही दिश आकृष्ट होइतथि । कचनारकेँ देखि तेना लालायित भऽ जइतथि जे अपन पारिजात पुष्पकेँ सेहो बिसरि जइतथि । सुनैत छी जे सत्यभामाक मानमोचन लय कृष्ण इन्द्रकेँ युद्धमे पराजित कऽ स्वर्गसँ पारिजातक गाछे उपाड़ि कऽ लऽ अनने छलाह । कचनार गाछक अछैत जानि नहि किए पारिजातकेँ ओ एतेक महत्त्व देलनि ? कहल जाइछ जे कामदेव लग पुष्पसँ निर्मित पाँच गोट वाण छनि । मुदा ई संख्या उचित नहि प्रतीत होइत अछि, वा तँ ओ अपन वाणक संख्या बढ़ा कऽ छओ कऽ लेथि किंवा पुरनका वाणमेसँ एकटाकेँ निकालि कऽ ओकरा स्थान पर कचनारकेँ राखि लेथि ।

पतझारक बाद जेना प्रत्येक गाछमे नवयौवनक संचार होइत छैक । नवविकसित फूल, आम-महुआक मज्जर, कोमल-कोमल पल्लवक भारसँ अवनत गाछ-वृक्ष..... फागुन, चैत, वैशाखक विशेषता थिकैक । कचनारकेँ फुलयबाक सम्भावना तँ बहुत पहिनहिसँ बनऽ लगैत छैक । मुदा ई फुलाइत अछि चैतमासमे आ बिचला वैशाख धरि फूलक खण्डहर विद्यमान रहैत अछि । फागुनमे कचनारकेँ पतझार लागि जाइत छैक............श्रीहीन प्रपर्ण.......प्रकृतिक अभिशाप जकाँ बूझि पड़ैछ । कंकाल जकाँ ठाढ़ भेल पत्रविहीन कचनार गाछक डारि पर कदाचित् कोम्हरोसँ कोनो कोइली उड़ैत-उड़ैत आबि कऽ बैसि जाइत छैक । दू-चारि बेर कू...कू....कऽ फेर दोलबाती दैत उड़ि जाइत छैक । डोलैत कँपैत डारि जेना विकल भऽ कऽ कहि उठैत छैक- **कोइलिया तोर मिठ बोलियो न भाबय ।**

कखनो कोनो नीलकण्ठ कोम्हरोसँ कर्रा...कुर्...कुर्...कर्रा...कुर् करैत आबि कऽ कचनार पर बैसि जाइछ । मुदा बैसिते देरी जेना ओकरा मुँहमे सपटी लागि जाइछ । जेना बौक-बौध भऽ गेल हो । बूझि पड़ैछ जेना डारि पर बैसिते ओकरा पर कोनो अशुभ छाया पड़ि गल हो । कचनारक ई गाछ उदास-उदास सन ठाढ़ रहैछ, जेना कोनो अभिशप्त किन्नर हो, कि कोनो प्रियाविहीन यक्ष अथवा मर्त्यलोकक कोनो रूपवान् पर मुग्ध होयबाक अपराधमे इन्द्र द्वारा निर्वासिता देवसुन्दरी हो ।

सुख-दुख सब दिन नहि रहैत छैक । चैत अबिते ओकर कायाकल्प भऽ जाइत छैक। जेना ओकर अंग-अंगमे यौवन प्रस्फुटित भऽ उठैत छैक । गीरह-गीरहमे फूल लुबुधि जाइत छैक । पात एकोटा नहि, खाली फूले-फूल । चैतक समस्त शोभा जेना कचनारेमे उमड़ि पड़ैत छैक । उज्जर-भकरार फूल जेना मेघसँ सबटा तारा उतरि कऽ गाछमे लटकि गेल हो । विकचित नील फूल, जेना एक टुकड़ी नील मेघ आबि कऽ गाछकेँ छापि लेने हो । ललहओन फूल जेना मानसरोवरक सबटा लाल-लाल प्रस्फुटित कमल आबि कऽ गाछसँ लेपटा गेल हो। चैतमे कचनारक शोभा आ कचनारसँ चैतक शोभा कथमपि बेरायल-बेकछायल नहि जा सकैत अछि ।

मिथिलाक बरहमासा गीतक टुकड़ी सबमे कचनारक बेस चर्चा भेल अछि । चैतक चैतावर गीतक अपन कोमलता होइत छैक । चैती कचनार आ चैतावर गीतक सम्मिलन बड़ भावुक आ मनोरम होइत अछि ।

फूलक मास चैत– चमेली, गुलाब, नेबार, कचनार आदि फुला गेल, आम मजरि गेल । केओ एहि फूल सभक माला गाँथि अढरन–ढरन महादेवक पूजा करबा लेल उत्सुक अछि । हुनक आशीष शीश पर लेबा लय बेकल अछि–

चैत चमेली गुलाब नेबार, मजरल आम फुलल कचनार ।
हार गाँथि लायब देब शंकर सीस, पूजन केर फल पाओब आसीस।
सीस पर राखब हे ।

कचनारक उजरा फूलक छटा तँ अद्भुते होइछ । शुक्लपक्षक चन्द्रमाक छटासन उज्जर कचनार देखबा योग्य होइत अछि । धानक लाबा सेहो तेहने उज्जर होइत छैक । कचनारक फूल आ धानक लाबामे अपूर्व साम्य अछि । धानक लाबा सन उज्जर–उज्जर फूल लगबो करैत छैक बड़ सुन्नर, जेना धानेक लाबा सौंसे गाछ पर छीटि देल गेल हो । धानक लाबाक उपयोग विवाहक बेदी पर भामरि देबामे कयल जाइत छैक । कनियाँक हाथमे ओकर भाय लाबा दैत जाइत अछि आ वर ओकरा छीटैत वेदीक परिक्रमा करैत अछि । दाइ–माइ, गितगाइनि लोकनि गबैत छथि–

दाइ लाबा छिड़िआउ, बाउ-बिछि-बिछि खाउ

एहि विधि लय धानक लाबा भूजल जाइत अछि, से लाबा तेहन उत्कृष्ट लगैत अछि जेना कचनारे हो । एहि खुशीमे लाबा भुजनिहारि अपन पितासँ इनाम–मकरामक लौल करैछ–

छोट-छोट धानी लाबा भुजु, कि लाबा कचनार भेल हे ।
आहे बाबा लाबा भेल तैयार, कि हमराके किय दान देब हे ।
हुलसि घर जायब हे ।

एहन सौन्दर्य भारानत, उन्मत्त कचनारक फूल देखि जँ कोनो विरहिणीकेँ अपन परदेशी प्रियतम मोन पड़ि जाइत हो, प्रियविहीन यौवन देखि मोन उन्मन भऽ जाइत हो तँ एहिमे आश्चर्य की ? बसातक झोंकपर कँपैत कचनारक डारिकेँ देखि कऽ ओकर चित्त चंचल भऽ उठैत छैक–

चैतहि चित मोरा चंचल फूलल-फुल कचनारी ।
पिया मोर गेल परदेसबा रे जे अछि देशक ओरी ।

आनन्द, सौन्दर्य ओ नवप्रस्फुटित यौवनक प्रतीक अछि कचनार । एहिमे सुगन्धि नहि होइत छैक, मुदा जतऽ ई गाछ रहैत अछि ओतऽक बसातमे अवश्ये एकटा महमही, एकटा मादकता जेना घुलल रहैत छैक । एकर फूलमे परागक अमित भंडार रहैत छैक । ओहुना एकटा फूल तोड़ि कऽ तरहत्थी पर झाड़ि लियऽ तँ अहगरसँ पराग जमा भऽ जायत । एही परागक लोभमे भ्रमर आ मधु–माछी भन-भन करैत चक्कर कटैत रहैत अछि । भ्रमरक यैह आकर्षण कोनो अक्षत यौवनाक प्रेमकथाक प्रतीक बनि जाइत अछि–

फूल कचनार भकरार भेलइ हे !

पोखरिक भीर बाबा फूल जे फुलिय गेल,
फुलल फूल कचनार यौ ।
ताहि फूल लुबुधल राजा दुलरूआ,
लुबुधि रहल छओ मास यौ ।

ओ मुग्धा बाला नहियो किछु कहि बहुत किछु कहि गेल, बहुत किछु सुना गेलि । जेना ओकर अन्तरक आकांक्षा एहि प्रतीकात्मक कचनारमे साकार भऽ गेलैक अछि ।

कोनो-कोनो गीतमे कचनार भरल-पूरल परिवारक प्रतीक बनि कऽ आयल अछि । अपन परिवारक बाल-बच्चाक प्रति आकर्षण, ममता, मोहक अभिव्यक्ति मूड़न संस्कारक एक गोट गीतमे भेल अछि । जाहि प्रकारेँ भ्रमर-दम्पती कचनार-कुसुमक चतुर्दिक चक्कर मारैत रहैत अछि मधु-परागक लोभमे, तहिना परिवारक बूढ़-बुढ़ानुसक आनन्दक केन्द्र-बिन्दु रहैत छनि छोट-छोट नेना-भुटका सब । ओकरे चारू कात हुनक मोन घिरनी जकाँ नचैत रहैत छनि । एकटा मूड़न गीतमे कहल गेल छैक–

भम्हरी पूछथि भम्हरासँ हे भम्हरा !
कहिया हयत ऋतु वसन्त, फुलत कचनार फूल हे ।
उतरैत पूस चढ़ैत माघ हे भमरी !
तहिया हयत रितु वसन्त, फुलत कचनारक फूल हे ।

ई भम्हरा-भम्हरीक गप्प नहि ! ई तँ वात्सल्यक प्रतिमूर्त्ति बाबा-बाबीक वार्त्तालाप थिकनि । ममताक डोरसँ बान्हल हुनक मोन आ मोनमे उमड़ैत भाव एही गीतमे तकला उत्तर कतहु ने कतहु अवश्ये ओझरायल भेटि जायत–

पितामही आमा पूछथि, पितामह बाबासँ हे
पिया कहिया हैत सुदीन, करब जगमूड़न हे
उतरैत चैत चढ़ैत वैशाख हे आहे धनी
तहिआ हैत सुदीनक दीन, करब जगमूड़न हे ।

कचनार फूलक ई पारिवारिक चित्रण मैथिली लोकगीतक मौलिक धरोहर थिक । बड़ कुशलतासँ कचनारकेँ प्रतीक बनबैत अपन मनक बात कहि देल गेल अछि । प्रकृतिसँ भाँति-भाँतिक रंगक उपहार पौने कचनारक फूल जेना सौन्दर्यप्रिय मनुष्यकेँ अपना दिस अनेरो आकर्षित कऽ लैछ, तहिना कचनार-प्रतीक वला गीत सेहो ततबे चित्ताकर्षक ! ततबे मधुर! हे लिअऽ कचनारक नाम लितहि कतहु दूरसँ गीतक टघार कानमे पड़ऽ लागल–

विरहिनि जिया अन्हार भेलइ हे, विरहक दिनमा पहाड़ भेलइ हे
चइतहिँ मासक सिङार भेलइ हे, फूल कचनार भकरार भेलइ हे

(विदेह, सी. एम.कालेज1959, हिन्दी रूपान्तर, आर्यावर्त 26.3.61)



तुइल महु डारि

मिथिलाक विशेषता तँ अनेको अछि, मुदा ताहूमे एकटा अछि आमक गाछी । दूरसँ देखलापर वा हवाइ जहाजपरसँ देखलापर गाछी सभ कुञ्ज जकाँ बूझि पड़ैत छैक । कहियो कोनो चीनी बौद्ध यात्री मिथिला आयल छल आ तथागतक प्रिय नगर वैशालीक भ्रमण कयने छल तँ ओकरा मिथिलाक करजान ओ आमक गाछी बड़ आकृष्ट कयने छलैक ।

आम-गाछीमे भिन्न-भिन्न प्रकारक आमक गाछक धारीसँ कनेक फराक हटि, कतबहिमे, आरापर दू-चारि टा मोहुक गाछ रहबे करैत छैक । मोहुक डहुरीक दतमनि बड़ नीक बूझल जाइत छैक । दाँतक दर्दमे एकर दतमनि बड़ हुकमी । मुदा सहजहि एकरा तोड़ि नहि सकब, बड़ चिम्मट होइत अछि । तहिना एकर लकड़ीयो बड़ निस्सन । मैथिली संस्कृतियोमे एकर विशेष स्थान छैक । उपनयन आ विवाहसँ पूर्व आम-मोहुक बियाहक विधिक रूपमे वृक्ष-युग्मक पूजा अनिवार्य होइछ । किन्तु ई सभ आगाँ-पाछाँक गप्प थिक।

ओकर सभसँ मधुर वस्तु होइत छैक मोहु । उज्जर-उज्जर, रससँ डग-डग करैत, रसगुल्ला जकाँ । सद्यः तुइल मोहु खयबामे उत्कट मधुर लगैछ । चैत-बैसाखमे जखन मोहु तुबैत छैक तँ सौंसे गाछीक वातावरण महमहा उठैत छैक । मोहुसँ मदिरा सेहो बनैत छैक । किन्तु ओकर सुगन्धियेमे मादकता भरल रहैत छैक । जँ गाछीमे जायब तँ एकर अनुभव करब । बुझनुक लोक भलहि एहि मादकताकेँ सम्हारि लेअओ किन्तु छोट-छोट नेना-भुटका सभ नहि सम्हारि पबैत अछि । चैत-बैसाखमे जँ गाछीक दर्शन करी, गाछिये-गाछिये बूली तँ देखब; छओसँ लऽ कऽ चौदह बरखक छौंड़ा-छौंड़ीकेँ धरिया, भगबा आ पुतली पहिरने, माथपर, हाथमे, काँखतर मौनी-चङेरा आदि लेने बौआइत । सभक बासनमे थोड़ बहुत महुआक गोटगर दाना । ओकर सभक लगन ओ एकाग्रतासँ कखनो-कखनो भ्रमो भऽ जा सकैत अछि जे ई सभ कोनो महान् तीर्थयात्रीक दल तँ ने थिक ! जेना तीर्थयात्री सभ देवमन्दिरक कपाट फुजबाक प्रतीक्षामे ठाढ़ रहैत अछि, तहिना ईहो सभ मोहुक गाछतर ठाढ़ भेल ओकर दाना खसबाक प्रतीक्षा करैत रहैत अछि ।

भिनसरुक पहर, जखन सूर्यक झिल-मिल रौद गाछक फुनगीपर पड़ैत रहैत छैक, तँ नीचाँमे ई गोहनियाँ धिया-पूता सभ गोहारि लगबैत रहैत अछि । महुआकेँ मनबैत रहैत अछि आ संगहि अपन मंत्र दोहरऽबैत जाइत अछि- **आम गुल-गुल महुआ चुभुक** । आ कहल नहि जा सकैत अछि जे एही मंत्रक प्रभावेँ वा अपन स्वभावहि, गोटा-पघरा मोहु खसैत रहैत छैक आ ओ सभ बीछैत रहैत अछि । गामपर आबि अपन नीपल आङनक एक कोनमे सुखाइलय पसारि दैत अछि । ई सुखयला पर खाद्य रूपमे प्रयुक्त होइछ, विशेषतः तीसीक संग कूटि कऽ ।

मोहु बिछबाक सऽख ओकरा सभमे ततेक रहैत छैक जे राति भरि ओकरा सभकेँ निन्न नहि होइत छैक । शंका रहैत छैक जे मुरली आगाँ जा कऽ ने बीछि लेअय, रघुनाथ हमरासँ पहिनहि ने चल जाय, अमोलिया हमरा कतहु नहि ने उठाबय । आ यैह शंका सभक मोनमे रहैत छैक । कोइली कुहकऽ लगैत छैक, पुरिबा सिहकऽ लगैत छैक आ महुजाड़ा

होइत रहैत छैक तँ सभ एकदोसराकेँ उठाबऽ अबैत छैक । जखन गाछी दिस मंडली विदा होइत छैक तँ ओहिमे सभ रहैत अछि ।

भरि राति मोहु तुबैत रहैत छैक । गाछमे गोटेके पात रहैत छैक, सेहो पीयर भेल खसबाक प्रतीक्षामे । रहैछ खाली झुमका जकाँ मोहुक थोका सभ । रातुक शान्त पहरमे चुबि-चुबि कऽ मोहुक पथार लागि जाइत छैक धरतीपर, जेना पैघ-पैघ मोती सभ छिड़िया गेल होइक । जेना सौंसे आकाशक तरेगन बरिसि गेल होइक ।

चैत अबिते मोहु फुलाय लगैत अछि, प्रकृतिक सभ गाछ-वृक्षक शृंगार भऽ जाइत छैक । जेना वयःसन्धि होइक तहिना कने लाज, कने हास एहि सभमे बूझि पड़ैत छैक । गाछीमे बैसल महुआक सुवास लैत रहू आ चैतावर गबैत रहू, सुनैत रहू, तँ संसारक कोनो बात मोन नहि रहत–

बेली फुलायल चम्पा फुलायल, सब वन फुलबा फुलायल हो रामा।
अमुबा फुलायल महुआ फुलायल, फुलायल मलियाक बगिया हो रामा।

चैतावरमे स्वरक चढ़ा-उतरी बड़ बेसी । ओहूमे हो रामाक अवरोहमे जे टीस रहैत छैक से मोनकेँ कोनादन कऽ, दैत छैक । तँ मोहुक क्षण-क्षण बरिसनक संग चैतावर-स्वर मीलि कऽ जकर पिया परदेसी छैक ताहि युवतीकेँ उदासीक जालमे बझा दैत छैक । घर-आङन किछु नीके ने लगैत छैक–

चैत मास खसय महु तुबि-तुबि ,
नीको ने लागय गृही-अङना, कोइली सबद सुनि

प्रियतम अवधि दऽ कऽ गेल रहैत छैक जे जहिया आम मजरत, मोहु तूअऽ लागत, कुसुम सभ पतझार लऽ लेत, तहिया हम अवश्य आयब । परदेसीक प्रिया आङुरपर दिन गनैत रहैत अछि, किन्तु आशा भग्न भऽ जाइत छैक । लाल नहि अबैत छैक–

अमुआ मजरि महु तूअल आ हो महु तूअल हो ।
होरे, कुसुम लेल पतझार लाल नहि आयल हो ।

आम मजरि कऽ बीति गेल, मोहु तूबि कऽ समाप्त भऽ गेलैक, मुदा परदेसी प्रियतम नहि अयलैक । आब विरहिणीक देह नहि, प्राण छीजि रहल छैक । दीपक तेल जरि गेलैक, आब शुष्क बाती जरैत छैक । नयनक नोरक धारासँ छातीक आगि मिझा रहल छैक–

आम मजरि महु तूअल, तैओ ने पहु मोरा घूरल ।
दीप जरिअ जरु बाती, नयनक नीर भिजय छाती ।

कोनो कुब्जा सुन्दरी पाहुनकेँ दृष्टिक बंधनमे बान्हि रखलकैक । ओहि युवतीकेँ फूरि नहि रहल छैक जे ओकरा कतेक गारि पढ़ी । विवशताक नोरसँ ओकर आँखिए भसिया जाइछ –

चैत बैसाख तुइल महु डारि, पढ़िअउ कुबुजी तोर कते गारि ।
मोर पहु रखलेँ नजरि लोभाय, अँखिया नोरे गेल दहाय ।

लोक-गीतमे मोहुक आश्रय लऽ बड़ कोमल भाव सभ व्यक्त भेल छैक । एहि भावमे सहृदयताक संयोग भेल छैक ।

(मिथिला मिहिर, 7.5.61)

●

नील तीसी फूल

मिथिलाक बाध-बोनक हरित सुषमा ओकरा अन्तस्तलमे खोंता लगा कऽ बसि गेल होयतैक जे एकरा निकटसँ देखने होयत । सारि लुबुधल चऽर-चाँचर अगहन-पूसक बाद श्रीहीन होमऽ लगैत छैक । बूझि पड़ैत छैक जेना दूधक उधियानक बाद रौताइनि सभटा छाल्ही काढ़ि लेने हो आ दूध चपइमे ढारि कऽ राखि लेने हो । खेत सभमे धानक खुट्टी सभ अपन अतीतक सपना देखैत पड़ल रहैत अछि....... आ कि ओहि बीचसँ अकस्मात् हरियरीक बाढ़ि उमड़ि पड़ैत छैक । चारू कात रब्बी, बदाम, खेसाड़ी, केराओ, तीसी, गोट, राहड़िक बरियात साज-बाजक संग आबि कऽ अपन कनात खसा दैत अछि । आधा माघसँ बसन्तीक लहरि बूझि पड़ैत छैक आ ओकर स्वागतक लेल राहड़ि सेहो पाछाँ नहि रहैत छैक ।

वसन्त ऋतु तँ पुष्पेक ऋतु थिक । चारू कात फूल मात्र..... फूल आ फूल...... । रंग-विरंगी फूलक प्रदर्शनी लागल । मुदा ओहीमे नील रंगक पुष्पक अपन विशिष्टता रहैत छैक, जेना कोनो नायिकाक भ्रू वा नयन-कोरक धवल आधार पर पुतरी, आ कि गौर मुखपर तीलक दाग हो । तीसी फूलक मनमोहकता, नीलिमा, स्निग्घ श्यामलतासँ प्रभावित भऽ दुर्गाक एकटा रूपक ध्यानमे कहल गेलनि-**अतसी पुष्प वर्णाभा** । माघ **शिशुपाल वध** महाकाव्यमे कृष्णक कान्ति ओ श्याम स्वरूपक सौन्दर्यकेँ व्यक्त करबाक लेल तीसी फूलक उपमानक प्रयोग कयलनि- **तस्यातसी सून समान भासः** ।

महाकवि मनबोध कृष्णक सौन्दर्य-वर्णनमे नवजलधर ओ अपराजित फूलक संगहि तीसी फूलकेँ सेहो उपमान बनौलनि-

नव जलधर अपराजित फूल । अतिसी कुसुम गात समतूल ॥

खेतमे फुलायल नील रंगक तीसीक फूल तेना बुझाइछ जेना कोनो उज्जर कपड़ाकेँ नीलमे बोरि कऽ सुखबा लय पसारि देल गेल होअय । नील....कहल तँ भने मोन पडि गेल एक कथा । ग्रियर्सन साहेब अपन **बिहार पीजेण्ट लाइफ** (अनुच्छेद 356) पोथीमे एकटा मूर्ख जोलहाक कथा कहलनि अछि । इजोरिया रातिमे एकछाहा नीलरंगक तीसी फूलवला खेतकेँ देखि जोलहाकेँ भेलैक जे ई नील घोरल पानि थिकैक आ ओ भरि राति ओहि खेतकेँ पोखरि बूझि ओहिमे हेलैत रहल ।

माघक पूर्णिमा, मकर वा शिवरातिक मेलामे कमला कात, कपिलेश्वर, कुशेश्वर जाइत तीर्थ-यात्री सभकेँ, अपन रंग-बिरंगी परिधानसँ सज्जित ग्रामीण जनकेँ देखने होयबैक। चुट्टीक धारी जकाँ आरिपर ससरल जाइत देखने होयबैक । यदि ओहि धारीमे सौभाग्यवश सम्मिलित रहल होयब तँ दूनू कातक खेतमे पसरल दूर-दूर धरि हरियर कालीन, मने बदाम, खेसाड़ी आ तीसीक पसार अवश्ये नीक लागल होयत आ नीक लागल होयत ओहि पथारमे गोटा लागल खेसाड़ी आ तीसीक नील-नील कुसुम सभ, नीलमणिक छोट-छोट खराजल खंड सभ, जेना कोनो राजकुमारीक औंठीक वा कोनो किशोरीक बुलकीक वा कोनो युवतीक छक आ खोटिलाक नगीना बनबाक प्रतीक्षा कऽ रहल हो ।

आ जँ अहाँक आँखि बेसी लजकोटर नहि होयत, यदि प्रकृतिक सरल भंगिमा देखबाक अभ्यास होयत, यदि देखबाक लेल हृदयक आँखि सेहो फूजल रहत तँ दूनू कात उन्मुक्त भऽ कऽ चलैत ग्रामीण कृषक-बालाकेँ अवश्य देखब। ओकर साज-शृंगार कयल केश देखब आ ओहिमे देखब झुमका सन खोंसल तीसीक नील कुसुमक गुच्छा। ओहि किशोरी सभक अल्हड़पनसँ साजल प्रकृत सौन्दर्यक संचय यदि कऽ सकब तँ प्रायः जीवन भरि निँघटत नहि, सठत नहि।

ई सभ एहि दुआरेँ कहि रहल छही जे हमरो ई सभ देखबाक अवसर भेटल अछि। बेर-बेर ओहि चित्रपटक धरतीपर चलैत रहलहुँ अछि। दरभंगासँ डेढ़ कोस पूब आ दच्छिन कमलाक धार बहैत छैक, पुरनी धार आ ओकरे कछेड़मे छैक छपरार घाट। कातिक आ माघक पूर्णिमामे बेस मेला रहैत छैक। माघक मेला बेसी घनगर। ओहीमे खेसाड़ी आ बदाम आ तीसी आ केराओक जजातिकेँ लोकक पयर तर मसोड़ाइत, धङाइत आ लारो-बातो होइत देखने छलिऐक आ नवकवेर छौंड़ी सभक खोपामे आ कानमे, नाकक छकबला भूरमे तीसीक फुल खोसल देखने रहिऐक आ बड़ नीक लागल छल आ भेल, जे हमरो जँ ओहने केश रहैत तँ खोंसि लितहुँ आ तकर अभावमे थोड़ेक फूल तोड़ि कऽ अपन कमीजक काजमे आ बाम भागक उपरका जेबीमे खोंसि लेने रही। ...... आ कि नहि, हम कानल रही तँ मैञा (नानी) खोंसि देने छलि।

सोझे तीसीक फूले नहि, ओकर सभ वस्तु नीक लगैत अछि। एक दिन माखनपुरमे रही, मौसीसँ भेंट करबाक लेल गेल छलहुँ। ओहि ठाम पाँच-छौ सेर भूजल तीसी कुटाइत रहैक। ओकर सोन्ह-तिसियाइन सुगन्धि सौंसे आङन, घर आ दलानमे पसरि गेलैक। हम एके बेर बाजि उठलहुँ,- बाह ! आइ तिसियो ख़ुआबऽ पड़तहु।

आ मौसी उत्तर देलक— 'भक् ! ई तीसी खयताह ..! ई तँ खेतमे डेढ़ सोड़िहि जऽन छैक तकरे लेल कूटल जाइत छैक। तोँ की खयबह ?'

तीसी निम्नवर्गीय मजूरक लेल तँ बरदान थिकैक। मड़ुआक रोटी तीसीक तीमन, यदि संग-संग भेटि जाइक तँ ओहिसँ अधिक अनमोल स्वादिष्ट भोजन दोसर नहि। अहूँ यदि एक दिन चीखि कऽ देखबैक तँ तेहने लागत। एकटा फकड़ा सूनल अछि। एकटा स्वस्थ हरबाहकेँ देखि ओकर रोगाह, मुदा धनिक मालिकक जिज्ञासा कयलापर उत्तर भेटल छलैक—

तीस तीमन लाल पूआ जलक जोगे एहन धूआ।

हरबाह तँ झँपले उत्तर देलकैक मड़ुआक रोटी आ पानिमे घोरल तीसीक तीमन, मुदा मालिकके भिन्न अर्थ लगलैक, तीसटा तीमन, पकवान आ सतत स्नान। मालिको जे बुझलक से कयलक ओ आरो दुखित भऽ गेल तँ एहिमे हरबाहक कोन दोष !

तीसीक लेल तीस शब्दक श्लेषार्थ युक्त एक गोट और फकड़ा अछि जे एकटा चतुर पत्नी अपन पतिसँ कहैत अछि—

तोँ कुलबोरन तीस तीमन खेलह, नोन-तेल-मेरचाइ।
हम कुलमन्ती छुच्छे खेलहुँ, दही-चूड़ा-मिठाइ॥

तीसीक गाछ सामान्यतः छाबा-ठेहुन भरि होइछ। गाँएढ़ा खेत होइक तँ ओहिसँ किछु

नमहरो भऽ जाइत छैक । डाँट मोटका सूत सन पातर-लचलच, मुदा बड़ मजगूत । एहिमे चललासँ पयर ओझरा जा सकैत अछि । तथापि ओहिमे भुतिया जयबाक स्थिति नहि होइछ। मुदा गियर्सन एकटा कहबी उद्धृत करैत छथि- **जोलहा भुतिअयलाह तीसीक खेत**

वस्तुतः करघाक सूतक तानी-भरनीकेँ सोझरयबाक अभ्यस्त जोलहा तीसीक ओझरायल डाँटकेँ ओरायल सूतक लच्छा बूझि सोझराबऽ लागल आ ओही खेतमे भुतिया कऽ रहि गेल।

लोकजीवनसँ तीसीकेँ बड़ बेसी निकटता रहलैक अछि । तीमनक पूरक आ गरीबक पतिराखन अछि तीसी तँ बोली-वाणीक चमत्कार आ चत्कार सेहो अछि । मिथिलाक कोनो ठेँठ गाममे जा कऽ दखि सकैत छी, कोनो दू जनीक उतरा चौरी आ टेना-मनी । एक जनी दोसरकेँ कहैत छथि- **तीसी सन नाम आ मसुरी सन चाकरि छी तखन तँ एतेक गौरव अछि। स्पष्टतः तीसी सन नाम कहबाक अभिप्राय** भेल जे ओ भुट्ट छथि । कहा-सुनी बढ़िते गेल ता झगड़ा फड़िछयबाक लाथेँ कोनो कहबैका बीचमे किछु टीपैत छथि । एक जनीकेँ ई टीपब नहि नीक लगलनि तँ ओ चोट्टहि बाजि उठलीह-जाउ-जाउ एहि बीचमे अहाँके **तीसी घोरबाक** कोनो प्रयोजन नहि अछि । वस्तुतः एहि ठाम **तीसी घोरब** भेल वाग्धारा वा चतकार जे कथनकेँ ठीक तीसिएक तीमन सन चहटगर बना देलक । अर्थात् ई समस्त झगड़ा द्विपक्षीय मामिला अछि एहिमे अहाँ सन बातकेँ बतंगड़ बनौनिहारि पंचक प्रयोजन नहि अछि ।

कत्थी-लाल रंगक, नेनुसन छह-छह करैत तीसीकेँ छूबऽमे बड़ नीक लगैत छैक। भरि-भरि आँजुर कऽ उठा कऽ ओकरा अङ्ुरक गऽह बाटे नहूँ-नहूँ खसबैत रहने एक प्रकारक गुदगुदी लगैत रहैत छैक । एहन सन स्पर्शक अनुभूति होइत रहैत छैक जेना कोनो प्रेमिका पातर-पातर आङ्ुरसँ अपन प्रेमीक कुंचित केशकेँ ओझरबैत-सोझरबैत हो ।

आ बजारमे जँ जायब, कड़ूक तेल लेबाक लेल, तँ पहिनहिसँ सावधान भऽ जायब। नाकक घ्राण-शक्ति जागि जायत । बनिञाक प्रति मोन सशंकित भऽ जायत जे कतहु तीसीक तेल ने फेँटि देअय । किन्तु कतबो सजग रहब, अहाँक अभिजात कड़ू तेलमे ई सर्वहारा जा कऽ मिज्झर भैये जायत । आब एकटार जे भऽ गेलैक अछि !

तीसीक तेलकेँ जे बदलाम करियौक, मुदा होइत अछि खूब, गरीबीं मौजमे खुसफैलसँ रहऽबला । खास कऽ दीपावलीमे ई तेल दीप जरयबाक लेल खूब आदृत होइत अछि । काठक वस्तुमे सेहो रङबाकलेल ई विशेष उपयोगी । देहाती सड़कक किनारमे ताडक छज्जासँ घेरल देहाती **कैफे** मने ताड़ीखानाक पड़ोसमे चिखनाक दोकान अवश्ये भेटत । आहिमे तीसीक तेलमे छानल झिल्ली, कचुड़ी, बड़ी,भटबड़ आ गुलगुल्ला अहाँकेँ भने असर्ध लागय, मुदा ताड़ी-प्रेमीक लेल तँ ओ अलौकिक स्वादसँ भरल रहैत छैक । पाबनि-तिहारमे तँ तीसी अछोपे जकाँ बारल रहैत अछि । मुदा ओकर तिसियौड़ी तँ तिलौड़ी आ दनौड़िये जकाँ स्वादिष्ट लगैत छैक । कुड़-कुड़-कुड़ स्वर आ स्वाद ओकर केहन रुचिगर !

एकटा बात बड़ आश्चर्यक लगैत अछि । एकरा डाँटसँ बनल वस्त्र बड़ प्रशस्त मानल जाइत छैक । मध्यकालमे एकर डाँटसँ बनल वस्त्रकेँ **क्षौम वस्त्र** कहल जाइत छलैक । तीसी शब्द संस्कृतक **अतसीसँ** व्युत्पन्न भेल अछि । एकर पर्यायवाची **उमा** ओ **क्षुमा** अछि- **अतसी स्यादुमा क्षुमा इत्यमरः** । एही क्षुमासँ बनल वस्त्रक प्रभेदक नाम पड़ल **क्षौम** । क्षौम वस्त्र बड़

पवित्र ओ मूल्यवान् मानल जाइछ । एकर दोसर नाम **तिसियौटा** छलैक आ एखनो कतहु-कतहु बाजल जाइत अछि । पता नहि, खादी ग्रामोद्योग बला सभ एहि तिसियौटा उद्योगकेँ गोबर सुँघा कऽ जिया रहल छथि वा इतिहासेक वस्तु बनबा लेल छोड़ि देने छथि! यदि इतिहासोक वस्तु भऽ जयतैक तँ तीसीक लेल वैह की कम महत्त्वक होयतैक ?

तीसीक डाँट ततेक सक्कत होइत छैक जे जऽन सभ ओकरा उपाड़बासँ छीह कटैत रहैत अछि आ तेँ किसानो सभ ओकरा दिस बेसी ध्यान नहि दैत छैक। बीया छिटबाक काल दू-मुट्ठी ओहो फेकि देलक, जे उपजलैक से फाओमे ।

तँ एहन उपेक्षित वस्तुक उपयोग यदि कोनो यौवनक भारसँ आनत कुसुमवदना युवती अपन श्रृंगारमे करय तँ ओहि वस्तुकेँ कतेक आनन्द अओतैक ! यदि ओकरा वाणी रहितैक तँ कालिदास आ विद्यापतिसँ अधिक मनमोहक गीतिक सृष्टि कऽ जाइत । तीसीकेँ एहने सौभाग्य भेटैत छैक ।

नबाबक नाम सुनने होयबैक । सहसा मोन पड़ल होयत मुसलमानक नबाबी खानदान वा लखनउक वाजिद अली शाह । मुदा ई थिक तीसीकेँ फुला कऽ निकालल गेल रस । मिथिलाक बालिका आ युवती लोकनि एकरा विन्यासपूर्वक बना कऽ अपन केशकेँ सीटैत छथि । नहि नहि, सीटैत छलीह । नबाब गोन सन लस-लस होइत छैक । अतः पहिने एहीसँ कागत आदि साटल जाइत छलैक ।

एकटा बड़ बढ़ियाँ बात बिसरल जाइत छलहुँ । तीसीकेँ पानिमे देलासँ **नबाब** बनैत छैक मुदा ओकरा आगिसँ धीपल खापड़िमे देलापर एक प्रकारक मधुर चनचन स्वर होइत छैक। सुनबामे बड़ प्रियगर लगैत छैक ई । एहन बूझि पड़ैत छैक जेना कोनो राजनर्त्तकी अपन मंजीरकेँ रुनझुन बजबैत हो आ अनवरत बजबिते जाइत हो । जाहि व्यक्तिक स्वर अत्यन्त पातर रहैत छैक तकरा लेल एकर उपमा लोकमे खूब चलैत छैक; **तीसी जकाँ चनचन करब। तीसी चनचन** हरिमोहनोबाबूकेँ एकटा फकड़ा फुरा देने छलनि- **पीसी ए पीसी, अहाँ कूटू तीसी, हम जाइ छी एनसीसी ।**

तीसीक चनचन बच्चा सभक एकटा खेलक फकड़ामे भेटैत अछि । बच्चा सभ एक हाथ माथपर आ एक हाथ दोसर काँखतर राखि कऽ नचैत रहैत अछि–

तीसी चनचन लाबा भर भर, तीसी चनचन लाबा भर भर

आ मधुबीतसँ पुछैत छैक– बुढ़िया मैयो अयलीह ?

–नहि, पानि भरऽ गेलीह । उत्तर भेटैत छैक ।

बेर-बेर एहि रीतिक प्रश्नोत्तर होइत रहैत अछि आ नाच जारी रहैत अछि ।

बच्चा सभकेँ तीसीक फऽड़ नीक लगैत छैक । ओकरा पितौझियाक घिरनी जकाँ नचयबामे नीक लगैत छैक, गाँथि कऽ पहिरबामे नीक लगैत छैक । आ तेँ तीसीक खेतो नीक लगैत छैक । **करिया-झुम्मरिक** एकटा गीतमे भैया-भौजी तीसी खेतमे पचीसी खेलाइत छैक । भैयाक जीत आ भौजीक हारि –

तिसियां खेतमे तिसिया मसुरिया खेतमे राइ हे
भैया खेलै छै पचिसिया हे, ओही खेतमे
भौजी हारै छै पचिसिया हे, ओही खेतमे
भैया जीतै छै पचिसिया हे, ओही खेतमे

भने, समाजमे भैया-भौजी तीसी खेतमे पचीसी नहि खेलाइत होथि, लोक गीतेक ई कल्पना हो। मुदा ओहि हरियरी आ नील रंग तीसी फूलसँ भरल बाधमे प्रेमी-प्रेमिकाक विहार राधा-कृष्णक वनविहारसँ एको रत्ती कम मनमोहक नहि होयतैक। वस्तुतः ओकर नील फूल युवती लोकनिकेँ ततेक प्रिय छनि जे ओही काटक एक लहठीए बनैत छैक। लहेरीक दोकानपर तीसी फूल लहठी सभ पसरल देखबैक तँ एके बेर मोन ललचि जायत। मिथिलाक गामक बेटी, जे खेत-पथारमे बौआइत छथि, मौनीमे, आँचरमे आ खोंइछमे आह्लादसँ साग तोड़ैत छथि तनिक ग्रिमहार बनल देखब जुआयल तीसीक ढेंढ़ीसँ गाँथल मालाकेँ। मोनमे होयत जे माङि कऽ पहीरि ली।

आ एकटा नायिका बदाम आ खेसाड़ीक साग खोंइछ भरि नहि तोड़ि सकलि। ओकर प्रीतम जे परदेश चल गेलैक। मोनमे कचोट रहिए गेलैक जे ओ अपन केश बान्हि कऽ ओहिमे तीसीक नील फूल खोंसि कऽ अपन प्रियतमकेँ नहि देखा सकलि। प्रियतम ओकर हृदयक विरह-दुखकेँ नहि देखलकैक। ओ तँ कोनो पौड़कीक जोड़केँ बिजोड़ नहि कयलकैक, तखन ई दण्ड किएक-

खोंइछ भरि साग-पात तोड़ियो ने भेल गे
पिया परदेसिया देखियो ने भेल गे
फूजल केसिया बान्हियो ने भेल गे
तिसियाक लीले फुल खोंसियो ने भेल गे
हमर विरोग सखि पुछियो ने गेल गे
पौड़कीक जोड़ी दुख कहियो ने देल गे

प्रकृतिक सौन्दर्यक एकटा बिन्दु तीसीक नील फूलक तथा तीसीक चर्चा लोकजीवन आ लोकसाहित्यमे भेटैत अछि। जे हृदय रखैत अछि ओकरा तँ अवश्य मोहित कऽ लैत छैक ई तीसी फूल।

(मिथिला मिहिर 19.2.61)



प्रकृतिक दुलरैतिन : नागवल्ली

— आउ, पान खा लियऽ ने ।

पानक महत्त्व अपना सभक जीवनमे कतेक अछि से तँ एही बातसँ प्रकट होइत अछि जे जखन क्यो कतहु भेटैत अछि तँ ओकरा चटसँ आग्रह कऽ दैत छिऐक— पान खा लियऽ। जर्दाक योग पनखौक लेल आवश्यक । पान विना जर्दा की, माउगि बिना पर्दा की ?

मिथिलाक जीवन तँ पानमय अछि । पितरक पूजा करू तँ पान-मखानसँ, देवताक पूजा करू तँ **धूप-दीप ताम्बूल यथाभाग नैवेद्यानि** चाहबे करी । चौठी चानकेँ, दाता दिनकरक मने छठि परमेसरीक आराधना फूलो-पान लऽ कऽ करबे करी । मधुश्रावणीमे नवविवाहिताकेँ जे टेमी दागल जाइत छनि से पानेक पात लऽकऽ । पता नहि, भानाझा जखन मिथिलाक विशेषताक बखान करऽ लगलाह तँ पान किएक छुटि गेलनि । ओ अमओट आ फोका-मखानक आदर तँ कयलनि, मुदा पानकेँ छोड़ि देलथिन-

सुन्दर अमओट फोका मखान, खिरसाकेर लड्डुबी पकवान

वस्तुतः हुनका तँ लिखबाक चाहियनि, **खिरसा लड्डुबी पान पकवान** ।

जे किछु, ओ तँ जे लीखि गेलाह से लीखि गेलाह । किन्तु आब जे केओ मिथिलाक विशेषता लिखथि से पानकेँ नहि बिसरथि। पानकेँ मिथिलेमे नहि, सम्पूर्ण भारतमे समाने महत्त्व छैक । आर्य जातिसँ एकर अनादिये कालसँ सम्बन्ध रहलैक अछि । डाक्टर सुनीतिकुमार चटर्जीक कथन छनि जे— 'पान आर्य जातिक अपन वस्तु नहि थिक । ई नाग जातिक देन थिक । तेँ एकरा नागवल्ली कहल जाइत छैक ।' मिथिलामे पानक व्यवसाय कयनिहार जातिक लोक अपनाकेँ नागवंशी कहैत छथि । जातीय देवता रूपमे नाग-विसहरिकेँ पूजैत छथि ।

तेँ ओहन महान् विद्वान् जखन कहि रहल छथि जे पान आर्य जातिक अपन वस्तु नहि थिक तँ मानि ली । मुदा आर्यजाति एकरा पौलक कोना ? संभव अछि, आर्य लोकनि नागजातिक ओहि ठाम बरियातीमे गेल होथि आ ओही ठाम विदाइमे पान-सुपारी देल गेल होइनि । एहिमे अविश्वास करबाक कोनो कारण नहि अछि । एखनो तँ अपना सभक ओहि ठाम ओ परम्परा अछि । पाहुनकेँ पान-सुपारीसँ सत्कार तँ अवश्ये कयल जाइत छनि ।

नागवल्लीक रसिक मिथिला कतेक स्नेह ओ विन्याससँ ओकरा अंगीकार करैत अछि से नुकायल नहि अछि । ज्योतिरीश्वरक नायिका सोनक सराइमे तेरह गुणसँ संयुक्त, पंचफल युक्त स्वर्ग-दुर्लभ पान नायककेँ दैत छथिन । एक तँ पान, दोसर नायिकाक हाथक ! पान तँ थिक मुखक शोभा । स्वर्गोमे पान-मखान दुर्लभ । जे नहि खयलक तकर जिनगी अकारथ । तेँ कहबी अछि **बाप जनम ने खयल पान, दाँत निपोड़ने गेल परान** । तेँ धान कटनिहारि रसिक माउगि कहैछ— **धानेक पान तँ मोर सैआ किए ने खयता पान ?**

सभ पान खयने होयत लोक, मुदा **हँसता पान** आ **बोलता सुपारी** केओ-केओ खयने होयत। साधारण लोक तँ नहिएँ, बेसी काल ई लोकेकथाक नायकके भेटैत छलनि। भयानक बाधा सभकें पार कऽ ई नायक सभ **हँसता पान** प्राप्त करैत छलाह। दोसर कोन व्यक्ति साहसी होइत एहन ! आ **पाकल बीड़ा पान ?** दुस्साहसपूर्ण कार्य सम्पन्न करबाक भार लेनिहारे **पाकल बीड़ा पान** खयबाक साहस कऽ सकैत छलाह। लोककथाक राजा सभ सोना-रूपाक डालामे **पाकल बीड़ा पान** राखि कऽ सौंसे सभामे घुमबैत छलाह, जे केओ अमुक काज कऽ सकथि से ई पान खा जाथु।'

लोक-कथाक कोन गप्प, जे मैथिली लोकगीतहुमे बेसी काल चर्चित हँसता पान, **हसाना पान, डाटरिपान** आ **दसोनहा पानमे** की विशेषता रहैत छलैक से अनुसन्धेय। लोकगीतोमे पानक महिमा पसरल अछि। अपूर्व प्रेमक उदाहरण अछि पान ओ ओकर विभिन्न उपादानमे-

चारि सखी धारि रंग चारू बेदरंग, चारूक बियाह भेल चारू एक रंग।

पानक संबंधमे ई पिहानी कते सुन्दर छैक से क़हबाक प्रयोजन नहि रहि जाइत अछि। ओकर लाल-लाल पीक सभसँ बड़का प्रमाण अछि। लोकगीतमे तँ पीकसँ गंगा-यमुनाक बाढ़ि आबि जाइत छैक जकरा ऐंहि पार भाइ आ ओहि पार बहीन रहि जाइछ –

पनमा जे खयलऽ भैया, पिकिया नेंड़ौलऽ ओही ठाम
ओहि पिकें एलइ हो भैया, गंगा-जमुना केर बाढ़ि
अइ पार बहिनो हे अपन बहिनो, करुना कयने ठाढ़ि
ओइ पार भैया हे अपन भैया, छतबा लेने ठाढ़

लोककविकें पातर पान बड़ प्रिय रहलनि अछि। अपन अपन तन्वी कनकयष्टि नायिकाक लेल पानेक उपमा दैत छथि– **पानहुसँ पातरि मोर धनी छथि**। पान सन पातर देह, पानक खिल्ली सन कतरल नाक, पान सन पातर ठोर, पान सन पातर साड़ी, पान सन तरहत्थी आदि अनेक लोकप्रशस्ति सभ अछि।

पानक हरीतिमा प्रायः सभसँ उत्कृष्ट बूझल जाइत अछि। सत्ते, ओकर हरियर-हरियर पात ककर मन मुग्ध नहि कऽ लैत होयतैक ! गौरी हाथक पानक हरियरीक प्रशंसा कयल गेल अछि, सौंसे प्रकृतिक हरियर वस्तुसँ अधिक हरियरी छैक गौरीक पानमे-

हरियर लत्ती हरियर फत्ती, हरियर दूभि धान रे
ताहू सऽ जे हरियर देखल, गौरी मुख पान रे

मिथिलाक गमइ इलाकामे जँ खूब बौआयल होयब तँ कोस-दू कोस-पर मारि किला सभ भेटल होयत। चित्तौरक पद्मिनीकें जाहि किलामे राखल गेल रहैक ताहिसँ एकोरत्ती कम महत्त्व एहि किलाक नहि। एही किला अर्थात् **बरैठा / बरेबमे** ई हरित-पत्रिणी नागवल्लीक निवास छनि। मध्यकालीन असूर्यम्पश्या नायिका जकाँ हिनको सूर्यक किरण नहि लगैत छनि। बरैठामे फट्टक खोलि कऽ प्रवेश करब तँ हजारोक संख्यामे ताम्बूल-लता सभ एक **धारी/साँपुरमे** लतरल भेटत। एहन सन, जेना कृष्णक वृन्दावनक असंख्यक गोपी अथवा द्वारकाक सोलह हजार पत्नी होथिन। एकटा कथा मोन पड़ैत अछि। भीमसेन एक

बेर कृष्णकें कहलथिन– 'मामाकें सहस्र गोपी आ हमरा एको नहि ।' कृष्ण कहलथिन– 'जे कोठलिया अजबारि देखिऐक से अहींक' । भीमसेन खा-पी कऽ माथपर खाट लेलनि । सभ कोठली ताकि अयलाह, सभमे एकटा कऽ गोपी आ एकटा कऽ कृष्ण । कोनो कोठलीमे गोपी एकसरि नहि । खौंझा कऽ खाट पटकि देलनि आ ओहीपर सूति रहलाह । से ओहि बरैठामे सभ लत्तीकें एक-एकटा कऽ **साङ्ह / इकरी** लागल । जेना पानक लत्ती गोपी हो आ ओ इकरी कृष्ण ।

बूझि पड़ैत अछि, एही सिनेहक कारणें वियाहमे वरक हाथें कनियाँकें आ कनियाँक हाथे वरकें हरीड़-पान खुअयबाक विधान छैक । ओहन पान खायब जिनगीमे बेर-बेर नहि भेटैत छैक जे नव विवाहिता पत्नी मुँहमे पान खुअबैत हो आ चारू कात गाइनि सभ गबैत हो– **खाउ बाबू हऽरीड़ पान मुहमा सोहाओन लागत हे** । एहन महिमामयी लताक विरुदावली भारतीय कवि लोकनि गबैत रहलाह तँ से उचिते । एकटा कवि एकरा प्रशंसामे कहैत छथि जे लतावल्ली तँ संसारमे हजारो अछि । ओ सभ परोपकारो कम नहि करैत अछि, मुदा सभसँ ऊपर विराजमान अछि एकमात्र नागजातिक दुलारी वल्ली ताम्बूल-लता जे नागरिकाक वदन-चन्द्रकें अलंकृत करैत अछि–

किं वीरुधो भुवि न सन्ति सहस्रशोऽन्याः यासां दलानि न परोपकृतिं भजन्ते ।
एकैव वल्लिषु विराजति नागवल्ली या नागरीवदनचन्द्रमलंकरोति ॥

यथार्थमे एहन दुलारू लत्ती दोसर नहि होइत अछि । अमरलता बबूरोक गाछपर लुहलुहाइत रहत, मुदा पर्णबेलि मने पानक लत्तीकें सदिखन छाहरि ओ जलक फुहार भेटैत रहय । ने तँ क्षणेमे मौलि जायत । अपन देसी पानक अपने स्वाद होइछ जे अनदेसीमे कहाँ पाइ । मिथिलाहुमे अनेक एहन गाम सब अछि जाहि ठामक पानक विशिष्ट स्वाद होइत छैक । लहेरियासरायक तारालाही गामक पान बड़ प्रसिद्ध अछि । नामी अछि पतैलीक पान-**पान पतैली, ब्रेल पबड़ा** । अपन देसी पानक प्रजाति , पानक पातक आकार, रंग, स्वाद आदिक भेदसँ पानक अनेक प्रभेद प्रसिद्ध अछि, जेना- **चम्पा, टिकुलिया, काड़ा, कलजोड़िया, पखिया, कपुरिया, बङ्ला, साँची, बेलहरी साँची** आदि । एतबे नहि, एकहि **छर्रा** अर्थात् लत्तीमे भेल पानमे गुण-भेद होइत छैक, तेँ नामो भिन्न-भिन्न होइछ । सबसँ निचलका पाँच-छओ गोट पात **घासन** कहबैछ । ओहिसँ ऊपर चारि-पाँच गोट पात **खूट** कहल जाइछ । ताहि सँ ऊपर छोट-छोट कोमल पात **कचलेवारि** होइछ । सब सँ ऊपर, टुरनी पर लघुतम पातक नाम अछि **मुड़लेवारि** । घासनकें लोक बेसी पसिन्न करैत अछि । घासन होइछ जुआयल, **तरखगर, तज्जी;** कनेको मोड़ने टूटि जाय, तेँ बड़ स्वादिष्ट ।

'गप्पेमे एती काल बझौने रहलहुँ । चलू, दोकानपर दू खिल्ली पाने खा कऽ चल जायब । कनेक पिपरमिंट सेहो रहतैक । प्रकृतिक ई दुलरैतिन अवश्ये नीक लागत ।'

(मिथिला मिहिर, 15.1.1961)

●

काँचहि बाँसक एहो नव कोबर

ओ अवसर ने अहाँ बिसरि सकैत छी, ने हम बिसरि सकैत छी; क्यो नहि बिसरि सकैत अछि। प्रत्येक व्यक्तिक जीवनमे एक एहन क्षण अवश्य अबैत छैक जे अविस्मरणीय भऽ जाइत छैक आ जीवन भरि ओहि क्षणक अलिखित चित्रकेँ ओ संजोगने रहैत अछि। ओकरा एको रत्ती मलिन नहि होमऽ दैत छैक। सभक मोनमे एको कड़ी अवश्ये घुरियाइत रहैत होयतैक– **भेल बियाह राम चलु कोबर, धिया लेल अङुरी धराय।**

आङुर धयने अनुगमन करैत ओहि पीतवसनाक मुख देखबाक लेल वरक मोन अकुलाइत रहैत छैक, किन्तु ओ पाछाँ घूमि कऽ ताकि नहि सकैत अछि। कारण, सौंसे आङन जे लोक सभ भरल रहैत छैक! तकबो कयने की फल? ओ वधू तँ अवगुंठनसँ झाँपल रहैत अछि। हँ, घोघक नीचाँमे ओ कनियाँ अपन जीवन-लताक ओहि नव रसालकेँ भरि आँखि देखबा लेल उत्सुक रहैत अछि, किन्तु लज्जाक भारसँ नमलि रहैत अछि। संकोचक आवरण ओकरा चारू कातसँ घेरने रहैत छैक। तेँ ओ नमहर डेगो ने उठा सकैत अछि। अतः ओहि दूनू प्राणीक आङुरमे किछु सिहरन भऽ जाइत छैक, कम्पन भऽ जाइत छैक। आङुरे-आङुरमे एक-दोसरकेँ चीन्हि लेबाक प्रयास रहैत छैक। दुहूक आङुरक रक्तप्रवाह मीलि जाय चाहैत छैक। पैरमे नहूँ-नहूँ गति– चारू कात गाइनिक, सारि-सरिहोजिक मंडल.... प्रसन्नता-उल्लास, हास-परिहास आ बीचेमे कोनो सारि गायत्री, सावित्री, मनी, शीतलि– कोनो नाम भऽ सकैत छैक, से आबि कऽ दुआरि छेंकि लैत छैक। दुअरिछेकाइ चाही। बड़ मनोरंजक रहैत छैक ई दुअरिछेकाइक माङ–

भेल वियाह राम चलु कोबर, सारिहि छेकलि दुआरि,
हमर भैया लय नाम कहु बहिनिक, तखन जायब वर कोबर हे।

मुदा उत्तर सूनि कऽ बूझि सकैत छी ओहि कालक उक्ति चमत्कारकेँ–

हमरा कुल बहिनी नहि भेली, भेला लछुमन भाय।
सेहो भाय संगे चलि अयला, सारिसओँ माङथि वियाह।

किन्तु एहि सभसँ दूर हटि ओहि नव वर-वधूक अन्तर्मन कोनो आन ठाम जा कऽ बैसल रहैत छैक, जेना गोपी-सभक मोन रहैत छलैक–

चित मोर चंचल चेहरा उदास,
चित मोर बसइ कन्हैया जीक पास।

तँ दूनू गोटाक मोन गीतक एक-मात्र पदपर– एक शब्दपर– ओहि गीतक मूर्च्छनापर जा कऽ लागि जाइत छैक–

काँचहि बाँसक एहो नव कोबर,
धिया जनि औरि पसारब हे।

कोबर.... कोबर.... कोबर... जाहि ठाम दुहू गोटा परस्पर जी भरि, ही भरि देखि सकत, रूप-रस पीबि सकत। एहन मादक घर की फेर-फेर कऽ भेटैत छैक?

एहि कोबर घरक निर्माण अनादि कालसँ होइत रहलैक अछि । दूटा अपरिचित युवक-युवतीकेँ अग्निक साक्षी राखि जीवन भरिक लेल एक गीरहमे बान्हि देब सरल अछि-

साखि राखल प्रभु अगिनिक धाही राखलमे बाभन हजाम हे ।

किन्तु ओकर मन-प्राणो मिलि कऽ एकाकार भैए जयतैक तकर कोन विश्वास ?

हियाके सिनेहिया जँ नहि देब प्रभु, तिरिया जनम आकारथ हे ।

कोबर गीतक ई करुण निवेदन समाजक चिरकालक अनुभवक सूत्रमय अभिव्यक्ति अछि-जेना नारी वर्ग एहि सत्यक कटु अनुभव कयने हो । अत: ओ अपना भरि कोनो प्रयास उठा नहि रखैत अछि । विवाहक पहिल उपक्रमसँ लऽ कऽ द्विरागमन धरि समस्त लौकिक विधान आ व्यवहारमे दूनू प्राणीकेँ एक करबाक सद्भावना सन्निहित छैक । तेँ ओ विधि सभ उपेक्षणीय नहि अछि । नवसभ्यताक प्रभावमे ओकर तिरस्कार करब अनुचित ओ हानिकर अछि । नव सभ्यताक आलोकमे कोबर-घरक निर्माण भने नव ढंगसँ करी, ओहिमे नव ढंगक कलेंडर टाङि कऽ सज्जित करी किन्तु कोबर घरक जे अपन मौलिकता तथा आत्मीयता छैक तकर परतर ई नव-सुसभ्य केलिगृह नहि कऽ सकैत अछि । कोबर घरक चारू कातक भीत ढेउरल आ चित्रसँ रङल रहैत छैक । सौंसे मीत प्रतीक चित्रसँ भरल रहैत छैक । लोक-शैलीक चित्र सभ महिला वर्गक अन्त:करणक सम्पूर्ण मनोरम भावसँ आपूरित भऽ उठैत अछि-

रतिए सींदुर भीती लगाओल, ताही लय लीखू कोबर हे

सिन्दुर ओहि घरक श्री थिकैक तेँ सभसँ जगजियार रहैत छैक । कोबर लिखबाक साधन सभ अत्यन्त कोमलता-युक्त रहैत अछि । ओहिमे भावुकता भरल रहैत छैक :

कोबर कोबर सुनिअइ हे प्रभु, कोबर कोने रंग हे ।
पिसू गऽ पिठार धनि लिखू कोबर, कोबर होअ एहि रंग हे ।

फेर बट्टा भरि चानन रगड़ि कऽ कोबरक श्रृंगार करैत अछि-

रगड़ि बटा भरि चानन लिखू नबि कोबर हे ।

भीतपर बनल चित्र सभक अपन शैली ओ अभिव्यक्ति रहैत छैक । सौंसे भीत चारू कात पाढ़ि काटल आ ओहिपर लत्ती, फूल, पत्ती बनल । ऊपरमे बाम दिस सूर्य, चन्द्र, नओ-नवग्रह उरेहल । सुग्गा, माछ आ मजूरक पाँती । ठाम-ठाम फल युक्त लओङ, बेल आ कदमक गाछ, घौंदाएल केराक गाछ । कमलदहमे माछ, काछु, बीछ, साप, शंख आ नाल सहित सातटा पुरैनि । पुरैनिक पातक बीचसँ हुलकी दैत कमलक गुलाबी फूल, कनेक हरियायल कमलक कोंढ़ी आ कमलपर जोर मारैत भ्रमरक पाँती । नीचाँमे बाम दिस हरगौरी । दहिन दिस सुग्ग लुबुधल बाँसक बीटक नीचाँ पटिया पर पुरहर-पातिल । हाथी पर गौरी सहित बैसल स्त्री-पुरुषक एक जोड़ी- दूनूक नीचाँ वर-कनियाँक नाम लिखल ।

कोबर लिखब एक कला थिकैक । स्त्रीगण सभ ककरो कोबर बड़ सिनेहसँ लिखैत छथि । सभ अपन-अपन कला ओ सिनेहक योग ओहि कोबरमे दैत छथिन-

कोबर लिखल कोसिल्या रानी, आरो सुमित्रा रानी हे ।
आमक घौंद लिखल केकइ रानी, बड़ रे जतनसँ हे ।

वर-वधूक मनमोहनक लेल के कोन काज करैत अछि आ कोन वस्तु सभ जुटबैत

अछि तकर बड़ मनोरम वर्णन एकटा कोबर गीतमे अछि–

कहमहि लिखल मोर रे मजुरबा, कहमहि लिखल आठ दल रे।
कोबर लिखल मोर रे मजुरबा, बेदिय लिखल आठ दल रे।
कहमहि बोलल कारी रे कोयरिया, कहमहि बोलल मजूर रे।
आम डारि बोलल कारी रे कोयलिया, दुअरहि बोलल मजूर रे।

वर-वधूक एहि प्रथम मिलनकेँ कुलीन, समाजिक मर्यादामे आबद्ध अभिसार कहि सकैत छी, जकर उद्दीपनक रूपमे ई सभ सामग्री समतूल भेल अछि। वरक मोन मुग्ध भऽ जाइत छैक ओ घर देखि कऽ। कनियाँक मोन हुलसि जाइत छैक वातावरण देखि कऽ। वरक प्रश्न पर कनियाँक देल उत्तरमे ओहि परिवारक स्नेहसिक्त परिचय रहैत अछि–

के मोरा लिखलनि एहो प्रेम कोबर, केहि सेज फूल छिड़ियाउ हे।
सारिअहि लिखलनि एहो प्रेम कोबर, सरहोजि फूल छिड़ियाउ हे।

लोक-गीतक नव-वधू तँ ओहि घरकेँ सजयबाक लेल अपनहिसँ लओङक फूल लोढ़ि कऽ सेजपर छिड़िया दैत अछि–

घर पछुअरबामे लओङक गछिया, लओङ चुबय अधिराती।
खोँइछा भरि लोढ़लहुँ फाँफर भरि लोढ़लहुँ, पहु सेज देलौं छिड़ियाय।
सखी! कोबर भऽ गेल सोर।

भीतपर तूलिकासँ आ गीतक भाषामे, शब्दमे ततेक वस्तु सभ कहि देल जाइत छैक जे ओहि नव दम्पतीकेँ जीवन-पथक सम्पूर्ण संकोचकेँ दृष्टिक एके सम्मिलनमे झमाड़ि कऽ दूर हटा दैत छैक। ओहि युवक-युवतीक अनजान मनमे अभिनव भावक उधियान भऽ उठैत छैक। ओ एक-दोसरकेँ चीन्हि जाइत छैक, एहन सन जेना जनम-जनमकेर संगी रहल हो। दू मन, दू तन, दू परिवार एक भऽ जाइत अछि–

मुहमा उघारि जब प्रभु देखलनि, किय किय अभरन हे।

तखन अपन पतिक समस्त परिवारे ओहि नववधूक आभरण भऽ जाइछ। भारतीय नारीक विराट गरिमा भेटैछ एहि गीतमे, यदि सहृदयतापूर्वक ओकरा पढ़ी, सूनी आ बूझी–

सिउँथक साटन प्रभु तोहेँ छह, देओरा सांखक चूड़ी हे।
चनरहार छथि सासु बरैतिन, बाजू देयादिनि हे।
जाउत मोरा नयन इजोरिया, ननदि नव चोलिया हे।
भैंसुर माथक टिकुलिया, एहो सब अभरन हे।

ओ कनियाँ सपना देखैत अछि बाँसक बीट, पुरैनिक थऽरि, कमलक फूल आ अन्तमे काजिम सिन्दूर। पता नहि ओकरा अचेतन मोनमे कोन-कोन वस्तु सभ रहैत छैक जकर अभिव्यक्ति एहि स्वप्न-संकेतमे छैक। आन नहि क्यो बुझौ, अपनो नहि बुझओ मुदा ओकर प्रियतम बूझि जाइत छैक–

सुतल जे छलियइ प्रभु, ओहि रे कोबर घर सपना देखल अजगुत हे।
जँ तोहेँ आहे प्रभु पढ़ल पंडित छह, सपना कहू ने बिचारि हे।
पहिने जे देखलहुँ हे प्रभु बाँसक बीट, दोसर पुरइनिक थऽरि हे।
तेसर जे देखलहुँ प्रभु कमलक फूल, चारिम जे काजिम सिन्दूर हे।

आ पति ओकर सपनाक जे व्याख्या दैत छैक से कम हृदयग्राही नहि अछि–

पहिल सपन धनि बाप तोहर छथि, दोसर सपन तोर माय
तेसर सपन धनि भाय तोहर छथि, चारिम धनि हमहि तोहार

लोक-मानस कोबर-घरकेँ बड़ पवित्र, चंचल आ गतिमान मानैत अछि— गंगा आ यमुनाक धारा सन। प्रणयी आ प्रणयिनीक संस्पर्शमे सुरसरिक प्रवाहक कल्पना कयल गेल अछि–

गंगा जे बहलइ, बहलइ जमुनमा, हे सखि सुन्दर कोबर।
बीचे बहइ छइ सुरसरि धार, हे सखि सुन्दर कोबर।
ताहि पैसि सूतऽ गेला फल्लाँ दुलहा, हे सखि सुन्दर कोबर।
पिठि लागि सुतली (फल्लाँ) सुकुमारि, हे सखि सुन्दर कोबर।

भीतरमे मान-मिलान चलैत रहैत छैक आ बाहरमे कोबर गीतक भावनापूर्ण स्वर-संकेत चलैत रहैत छैक। वर-कनियाँक एक-एक अनुभूतिकेँ जीवन्त बना कऽ गाइनि सभ बसातक सतहपर पसारैत रहैत छथि आ ओ नव दम्पती अपन हृदयक चोरबा-नुक्की करैत भाव-तरंग संग ओकर तुलना करैत रहैत अछि। ओकर मोन, ओकर प्रियतमक मोन आनन्दक गंगामे झिलहेर खेलाइत रहैत छैक।

प्रथम रात्रिक प्रथम मिलनक अवसर पर जे कोबर गीत सब गाओल जाइत अछि, ओहिमे ओही प्रसंगक बड़ भावुक चित्र सभ उपलब्ध होइत अछि। कतोक ठाम तँ लोक-कविक उक्तिक छवि देखि आश्चर्य होमऽ लगैछ।

वर सुकुमार, कनियाँ सुकुमारि, दुहूक भाव-सम्मिलन सुकुमार, तेँ कोबर गीतक भाव, भास आ भाषा सभ सुकुमार। कोबर गीतक तँ भासे अपन रहैत छैक, जाहिमे साम-गानक ऋचा सन स्थैर्य आ भाव गाम्भीर्यक आभास भेटैत अछि। ओहि गीतक एक-एक पाँती, पद आ शब्दे नहि, अपितु एक-एक वर्णक अर्थबोधक अवसर दम्पतीकेँ भेटैत रहैत छैक। तेँ गाइनि सभ गीतक प्रत्येक वर्णकेँ बिकछा-बिकछा कऽ गबैत छथि–

काँ-चऽ-ही बाँ-सऽ-कऽ ए-हो नऽ-बऽ को-बऽ-रऽ....

(मिथिला मिहिर, 18.12.61)

●

अँचरा सितल बसात

ओहि दिन नारीपर गप्प चलि गेल रहैक तँ एकटा मित्र छोट-छीन स्पीचे झाड़ि गेलाह ओकर वैशिष्ट्य पर । एखनो धरि ओ पाँती सभ बिसरलहुँ नहि हम.....

नारीक सम्पत्ति थिकैक सतीत्व । सतीत्वजन्य स्वाभिमानक रक्षाक लेल ओ कोनो वस्तुकेँ निर्मम भऽ कऽ ठोकर दऽ सकैत अछि । ओ कठोर होइत अछि इन्द्रक वज्रसन-अखण्ड,अभेद्य, अटूट आ कोमल होइत अछि नवनीत सन-स्वच्छ, निर्मल, मृदुल । नारी,नारी अछि-ओ जखन ऊपरसँ कठोर होइत अछि तँ अन्तस्मे ममताक निर्मल धारा सेहो बहैत रहैत छैक, अलौकिक निर्झरणीक झिहिर-झिहिर स्वरसँ सोहाओन रहैत छैक । ऊपरसँ यदि ओकरा मार्दव आच्छादित कयने रहैत छैक तँ ओकर अन्तस् कोनो शिला-खंडसँ अधिक कठोर रहैत छैक । नारीक यैह विशेषता ओकरा रहस्यमय बना देने छैक । युग-युगसँ ओकर ई विरोधाभास पुरुष जातिकेँ जीवनक अगम्य पथमे, अथाह सागरमे भुतियबैत रहलैक अछि । मनुष्ये नहि, अलौकिक शक्तिसँ युक्त दैवो एकरा नहि जानि सकलाह । तेँ ने नीतिकारकेँ कहऽ पड़लनि- **स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यम्, दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः** ।

दोष नारीक नहि, ओ तँ सृष्टिक आदिएसँ विवश रहलि अछि आ तेँ ई गुण धारण करऽ पड़लैक । ई एकटा एहन कवच छैक ओकरा लेल, जकर सहायतासँ ओ केहनोसँ केहनो वातावरणमे निष्कलुष रहि अपनाकेँ सुरक्षित राखि पबैत अछि-पुरैनि पातपरक जल जकाँ ओ असम्पृक्त रहि पबैत अछि ।

मित्रक ई भाषण आ हमरा संग्रहक लगनीक ओ गीतिकथा-दूनूमे अपूर्व साम्य भेटल । नारीक एहि कोमलताजन्य कठोरता आ कठोरताजन्य कोमलताकेँ चिन्हने छल एकटा लोक कवि । लोककवि देखने छल ओहि स्त्रीकेँ जमुनाक घाटपर जल भरैत । एकसरिए निर्भीक भऽ कऽ जल भरऽ गेल छलि । ओकर पथ निरापद नहि छलैक । परिस्थिति ओकर सतीत्व, सर्वस्व, जीवनक सत्त्वक अपहरण कऽ लेबाक लेल अपन सैनिककेँ ठाढ़ कऽ देने छलैक । सैनिक एहन जकरा आगाँ ओहि युवतीक कोनो अस्त्र निष्फल भऽ जैतैक ।

कटिपर जल भरल पुरहर, मुखपर अवगुंठन, लाजक जालसँ घेरल ओहि युवतीक हाथ-पयर, तन-मन, क्रिया-कलाप सभ किछु बान्हल छलैक नारी सुलभ शीलमे, सामाजिक मर्यादामे । पानि भरि कऽ विदा भेलि तँ आगाँमे बाट छेकि ठाढ़ भऽ गेलैक ओकर भैंसुर । ओहि नववधूक उद्दाम यौवन, अक्षत सौन्दर्य देखि कऽ भैंसुरक मनुजता पशुतामे बदलि गेलैक। ओकर लुब्ध आँखि पियासल बाघ सन भऽ गेलैक, भूखल सिंह सन भऽ गेलैक-

पनिआँ के गेलिऐ हे समरो ओही रे जमुनमा रे की
ओ जे उमता भैंसुरबा बाट-घाट रोकल रे की

ओहि उन्मत्त भैंसुरक हेतु ने सोदर-स्नेह रहि गेलैक, ने भातृजायाक गरिमामय बन्धन, ने धर्मक विचार, ने सामाजिक मर्यादा । भातृजाया युवती मात्र छलैक, उपभोग्या-कामिनी-रमणी-।

एहि गीति कथाक प्रथम दू पाँती पढ़िते देरी हमरा उत्सुकता जागि गेल छल । की दशा भेल होयतैक ओहि पतिव्रता युवतीक ! ओकर करुण मुखमण्डल, घमघमायल कपार, धड़कैत छाती आ पुष्ट मांसल बाँहिमे बाझल जलपूरित पुरहर–सभ एके बेर आबि कऽ मोनमे कपड़ियाक दोकानपरक पसरल कपड़ा सभ जकाँ पसरि गेल छल ।

यमुनाक घाट, एकान्त स्थान, झींसी पड़ैत..... आगाँमे उन्मत्त विवेकहीन भेंसुर आ अपनामे संचित यौवन.... सभ मीलि कऽ ओहि युवतीकेँ अवश्ये भम्होरऽ लागल होयतैक । बूझि पड़ैत होयतैक जेना भैंसुरक एक-एक पलक दृष्टि, देहपर पड़ैत पानिक एक-एक बुन्न काँट जकाँ गड़ि रहल हो । विवश, भीत हरिणी जकाँ चौंकलि चारू कात तकैत ठाढ़ि रहलि होयत ओ । ओकर साड़ी भीजि गेल होयतैक । केचुआ भीजि कऽ सुपुष्ट देहमे सटि गेल होयतैक । कारी-कारी केशपर मोती जकाँ लटकि गेल होयतैक पानिक गोल-गोल उज्जर-उज्जर बुन्न सभ । एहने अवस्थामे ओ भैंसुरसँ अनुनय कयने होयतैक–

घाट छोड़ू बाट छोड़ू उमता हे भैंसुरबा रे की
झिसिए-फुहिए चुनरी भीजल रे की

अवश्ये ई उत्तर विनम्रताक दृष्टिएँ बेजोड़ अछि । ओ युवती भाषाक सुकुमारता नहि छोड़लक। भैंसुरकेँ अपशब्दो नहि कहैत अछि । ओ ई नहि कहैत छैक जे अहाँ पतित छी, व्यभिचारी छी । ओ तँ यैह कहैत छैक जे चुनरी भीजल जा रहल अछि, कने हटि कऽ हमरा बाट दियऽ । भैंसुरक उत्तर होइत छैक–

भीजऽ दैह भीजऽ हे भाबहु अपन चुनरिया रे की
ओ जे हमरो दोपटबा तोहरो के पालट रे की

भैंसुर अपन डोपटा पालट देबऽ चाहैत अछि भाबहुकेँ । जकर स्पर्श वर्जित छैक शास्त्रमे, समाजमे, तकर वस्त्र कोना लितैक ! लोक कवि भैंसुरक की तात्पर्य छैक, एहि बातकेँ अत्यन्त झाँपि कऽ कहबाक प्रयास कयलक अछि किन्तु से आच्छादित नहि रहैत छैक । श्रोता बूझि जाइत छैक । ओहि युवतीयोकेँ भैंसुरक भावना बुझबामे भाङठ नहि रहि जाइत छैक।

युवती ओहि ठाम तमसा नहि सकैत छलि । भैंसुरक निरादर नहि कऽ सकैत छलि। मुदा ईहो बोध करा देब आवश्यक छलैक जे भैंसुर आ भाबहुक सम्बन्ध आगि आ पानि जकाँ होइत छैक । दुनू दू सीमान्त बिन्दुपर ठाढ़ अछि, एक दोसराक अस्तित्वक शत्रु अछि दुनू । किन्तु यदि आगिकेँ बसातक योग भेटैक तँ ओ फूजल ऊक भऽ जाइत अछि । कामवासनाक लेल बसात थिकैक युवती, कामिनी । अतः भैंसुरक कामाग्नि भड़किए उठलैक तँ कोन आश्यर्च ! मुदा नहि, ओ साधारण युवती नहि, ओकर भातृवधू छलैक । ओ एहन बसात अछि जाहिमे शीतल जलबिन्दु भरल छैक। एहि शीतल बसातक स्पर्श भेने केहनोसँ केहनो आगि समाप्त भऽ जयतैक । भाबहु संयत किन्तु भावमय विरोधक भाषामे उत्तर दैत छैक–

तोहरो दोपटबा हे भैंसुरा अगिनीक धाधर रे की
ओ जे हमरो अँचरा सितल बसात रे की

अपमानित भेलि, क्रोध आ क्षोभसँ भरलि गामपर आयलि तँ एके बेर अपना पतिपर बमकि उठलि । ओकर विद्रोह प्रचंड भऽ उठलैक ओकरा अन्तःमे । भैंसुरक कुदृष्टि ओकरापर

पड़लैक, एहिसँ बढ़ि कऽ ग्लानिक बात की होयतैक आ से बात जानियो कऽ ओकर पति चुप्प रहि जाइ !

एहि अनाचारकेँ चुपचाप देखैत रहनिहार पतिक प्रति ओकर क्रोध धधकि गेलैक। ओ पतिकेँ अत्यन्त कटु भाषामे उलहन, उपराग आ धिक्कार देमऽ लगलैक–

जाँघ तोर जरिहउ हे स्वामीनाथ बाँहि घुन लगिहउ रे की
ओ जे तोहरा अछैते भैंसुर परेखल रे की

भाषा कड़ू छैक । एहिसँ कठोर भाषा कोनो पत्नी अपना पतिकेँ नहि कहने होयत। प्रायः साहित्योमे कम्मे ठाम एहन भेटि सकत । मुदा परिस्थिति कोना घेरि लेने छलैक ओहि युवतीकेँ, ताहिपर विचार कयलापर ई कठोरता एको रत्ती असंगत नहि बूझि पड़ैछ । ध्यान देबाक योग्य अछि ई जे युवती पतिकेँ मृत्युक शाप नहि दैत छैक । वस्तुतः ऊपरसँ ओ एतेक कठोर रहितो भीतरसँ एकदम कोमल अछि, जखन कि भैंसुर लग ऊपरसँ कोमल आ भीतरसँ पाषाणी बनिल छलि ।

पत्नीक धिक्कार पतिक व्यामोहकेँ झनझना कऽ तोड़ि देलकैक । एहन सन जेना कुम्हारक आबाक बासनपर कोनो पैघ भारी वस्तु पड़ि गेल होइक आ पकलाहा बासन सभ फूटि–फाटि गेल होइक । ओ भाइ छलैक अवश्य । ओकरा अन्तःमे अपन अग्रजक प्रति प्रेम ओ आदर रहल होयतैक किन्तु ओ एक पति सेहो छल, जकरापर अपन अर्द्धाङ्गिनीक लाज रखबाक भार सेहो छलैक । एहि उत्तरदायित्वसँ विमुख भऽ ओ सामाजिक व्यक्ति नहि रहि सकैत । नारीक सुरक्षाक किला ओकर पति थिकैक । ओकर तन–मन–प्राणक चारू कात पतिक सुदृढ़ प्राचीर ठाढ़ रहैत छैक । जाहि दिन ई प्राचीर दुर्बल भऽ जाइत छैक, टूटि जाइत छैक, ताहि दिन नारी अरक्षिता भऽजाइत अछि । नारी तँ रक्षणीया अछि । अतः पत्नीक दिस कुदृष्टि देनिहार अपन भाइक हत्याक विचार करैत पत्नीकेँ सान्त्वना देलक–

होमऽ दैहे होमऽ दैहे हाँजीपुर हाटिया रे की
ओ जे छुरिया बेसाहि भैया जीब हतब रे की

हत्या...... हत्या.....हत्या !!! अपन सोदर भाइक हत्या ! एक हत्या दोसर नारीकेँ अनाथ, विधवा, अरक्षिता बना देतैक !

शील आ विवेक नारीक अलंकार बनि कऽ उपस्थित भेल अछि । ओ युवती परिवारक आदर्श रूपकेँ बड़ गम्भीरतापूर्वक देखैत–बुझैत अछि । संसारमे सोदर भाइ नहि भेटैत छैक। तुलसीदासोकेँ लीखि देमऽ पड़लनि, **जग नहि मिलहि सहोदर भ्राता** ।

युवती देखलक अपना पति दिस, जकरा अन्तस्‌मे द्वन्द्वक बिड़रो चलि रहल छलैक। एक दिस ओकरा अनाचारीसँ बदला लेबाक कर्त्तव्य छलैक आ दोसर दिस, अपन सोदर भ्राताक मृत्युक चित्र छलैक ।

आ ओकर पत्नी देखैत रहलैक, सोचैत रहलैक । भैंसुर ओकरा परेखलकैक यैह ओकर दोष छलैक । ताहि लेल ओकरा मृत्युदंड ! ओकर पति एकसर भऽ जयतैक । ओकर देयादनीक सिन्दूर मेटा जयतैक । चूड़ी फूटि जयतैक । कोनो सोहागिनक सोहाग–सिन्दूर मेटा देब, चूड़ी छीनि लेब, अहिबातीसँ राँड़ कऽ देब, एहि दंडसँ बढ़ि कऽ कोनो दंड नहि ।

प्राणोदंडसँ बढ़ि कऽ ई यन्त्रणा छैक । किन्तु देयादनीक कोन दोष ? भैंसुरक मरने तँ एकर प्रतिफल देयादनीएकेँ भोगऽ पड़तैक ।

यैह सब सोचि कऽ ओकर अन्तःक हिमालय हहा कऽ पसीझि गेलैक आ ओहिसँ ममता भरल निर्झरणी प्रवाहित भऽ उठलैक –

भैया जीब हतने हे स्वामीनाथ, एकसर हैब रे की
ओ जे तिरिया मारैत तिरबध लागत रे की

सागर सन गंभीरता आ विस्तार, आकाश सन उच्चता ओ निर्मलता, गंगा सन पवित्रता, क्षीर सन मधुरता, नेनु सन द्रवणशीलता, माय-बहीन सन आत्मीयता आ कमलक पात सन कोमलता एहि गीतिकथामे लोककेँ भेटैत रहैत छैक । नारी, नारीक मोनक भावनाकेँ चीन्हैत छैक नीक जकाँ आ तेँ स्त्रीगणमे ई गीत बेसी प्रियगर अछि ।

पुनः ओ नारी-चित्र अबैछ जे सन्तोषमयी, क्षमामयी, कल्याणमयी अछि । जकर कल्पना, स्मृति कतेको हृदयकेँ वैशद्य आ प्रेरणा युग-युगसँ दैत रहलैक अछि। ओ नारी महान्, ओकर कथा महान् आ महान् ओ अज्ञात जनकवि जे एकरा स्वर-संगीतमे बान्हि कऽ अभिव्यक्ति देलक ।

(मिथिलामिहिर, 27.11.60)

●

उतिमा खिरलि पताल

भोरहरिया रातिमे अचानक निन्न टूटि गेल आ कानमे एक टा अविस्मरणीय स्वर-संगीत पड़ल । एहि विचित्र मधुर वाद्य-स्वरक आरोह-अवरोह निश्चित तालपर भऽ रहल छलैक । ऊठि कऽ बाहर अयलहुँ । आकाशमे धवल चन्द्रमा गामक पछबारि कातक बसबारिक छीपपर जा कऽ लटकि गेल छल । एहन सन क्रम जेना ओ अपन माल-जालक लेल पात काटऽ गेल हो आ ओहीमे ओझरा गेल हो । अनायासे पूब दिस नजरि गेल, क्षितिजपर भुरुकबा आबि गेल छलैक । आ आब मोन ओ कान दुनू सन्धान करऽ लागल एहि स्वरक । के एखनुक शांत वातावरणपर स्वरक पालिस चढ़ा रहल अछि ! मोन पड़ल, मंजुलियाक मौसी एहि ठाम छैक । ओ जीवनक अभाव-अभियोगक गुरुताकेँ गीतक अन्तरामे घोरि कऽ उझिलैत रहैत अछि । जहिया कहियो अपना बहीन ओतऽ अबैत अछि तँ ओकर चिरपरिचित गीतिकथा, उतिमाक कथा सुनबामे अबैत अछि । जाँतक घनर-घनर स्वर ओकर संग दैत रहैत छैक । टोल-पड़ोसक सूतल लोक जागि उठैत अछि , कान पाथि दैत अछि। बस, भोरेमे ओकर गीत सूनि सकैत छी । दिनमे तँ ओकर ठोर सम्पुटित रहैत छैक, जेना बौक भऽ गेलि हो । आँखि भाव-शून्य भऽ जाइत छैक । पुनः भोरमे जाँतपर जऽनक लेल मकइ वा मड़ुआ पीसैत काल, पाबनिक गहुम पीसैत काल ओकर उतिमा वला गीतिकथा मुखर भऽ उठैत छैक ।

ओकर उतिमाक गीति-कथा हमरा संकलनमे अछि । बाबी लिखा देने रहथि । कालेजसँ घुमैत काल हुनका लग गेल रही तँ ओ जनउ तनैत रहथि । हम उतिमाक गीतक आशामे गेल रही । ओ कहलनि– दुर, ओहन ओहन कथा सभ तँ कते ने अबैत अछि । अहाँ लिखायब तँ लिखा देब ।

–कतेक अबैत अछि ओ कोन-कोन ?

– लगनी तँ दू-तीने सोड़हि आब मोन रहल अछि। आ एहि प्रकारक कथामे रेशमा, जान, जयलछी, हिरनी-जिरनी नटिनियाँ तँ मोने अछि । मोन पाड़बै तँ आरो कते ने मोन पड़तैक । सब बिसरि-तिसरि गेलिऐक ।

उतिमाक गीतिकथा ओहि दिन लिखने रही आ आन कथा सभक लेल आन दिन अयबाक वचन दऽ अयलियनि । मुदा फेर ओ अनमोल गीत सभ नहि लिखा सकलहुँ । ओ हमरा सिनेहेँ लिखयबाक लेल तैयार रहैत छलीह । अपन जेठकी नातिनकेँ बैसा कऽ हमरा लय गीत लिखबऽ लगथिन । सातम वर्गमे पढ़निहारि ओहि नातिनक अक्षर टाटपरक लतरल लत्ती-फत्ती सन देखि कऽ लिखायब छोड़ि देलथिन-हय ! तोरासँ नहि होयतह, ओ अपने औताह तँ लिखताह । तोँ बरु हमरासँ सभ गीत सिखिये लैह । जँ हम मरियो जायब तँ तोँही लिखा दियऽहुन ।

पता नहि हुनक ओ जेठकी नातिन गीत सभ सिखलकनि की नहि, मुदा हम ओ गीत सभ नहि लिखा सकलहुँ, ओ सभ हुनके संग चल गेल । थोड़ दिनुक परिचयमे बाबीक स्नेह देनिहारि ओ महिला एखनो हमरा लोकगीतक संग्रहमे अत्युच्च स्थान रखने छथि । हुनकर लिखाओल ई उतिमाक गीतिकथा हुनक गीत-स्मृति-चिह्न अछि हमरा लेल । आ तेँ मंजुलियाक मौसी आबो जखन जाँतपर उतिमाक लगनी गबैत अछि तँ मोनमे कोनो अज्ञात भावक हिलकोर उठऽ लगैत अछि । एक तँ ई गीते करुण आ ताहि परसँ हमर स्मृति करुण।

मिथिलाक महिलाक मोनमे आ ठोरपर उतिमा विराजमान अछि। सामाजिक जीवनक संघर्षमे महिला लोकनिकेँ आपत्तिसँ बेढ़ल परिस्थितिमे अपूर्व साहस ओ बल दैत रहैत छैक। उतिमाक चरित्र निर्मल गंगाक जलसन अछि । ओ अपन शीलक रक्षा कोना कऽ सकलि, यैह थिकैक ओकर विशेषता ।

उतिमाक घटना कोनो विशेष पुरान नहि बूझि पड़ैछ । अंगरेजक आगमन भेलाक बादे ई घटना भेल होयतैक । किन्तु डेढ़-दू सय वर्षसँ कम पुरान घटना नहि थिक । सौन्दर्यमयी, गौरवर्णा, दीर्घकेशी उतिमा नहा कऽ भीड़पर बैसलि छलि । ओकर नाम-नाम केश पीठपर छिड़ियायल छलैक-

नहाय सोनाय उतिमा, भीड़ा चढ़ि बैसलि
दऽसो आङुर चीरइ, नामी केसिया रे दइबा

ओही बाटे जा रहल छल साहेब, घोड़ापर चढ़ल । सद्यःस्नाता सुन्दरीकेँ देखिते छकित भऽ गेल, मुग्ध भऽ गेल । गाममे जा कऽ पुछारी कयलक-

घोड़बा चढ़ल साहेबजी कऽरइ पुछरिया
ककर बहिनिया उतिमा नहाइलि रे दइबा

साहेबकेँ पता चललैक जे ओ गामक पच्छिममे बसनिहार होरिलसिंहक बहीन थिकि। साहेब शासक छल, ओकरा लेल कोनो वस्तु अप्राप्य नहि । यदि ओकर इच्छा भऽ गेलैक ओहि उतिमाकेँ अंकशायिनी बनयबाक लेल तँ ओकरा के रोकि सकैत छलैक ? ओहि गामक गोराइतकेँ बजा कऽ होरिलसिंहकेँ पकड़ि मङबैत अछि-

कहाँ गेलेँ किए भेलेँ गामक गोरइतबा
होरिलसिंहकेँ पकड़ि मङाबह रे दइबा

होरिलसिंह उपस्थित होइत अछि । ओकरा साहेब पलङ पर बैसबैत छैक, बट्टाभरि पान दैत छैक, डाला भरि सोना दैत छैक आ संगहि दैत छैक उतिमासँ विवाहक प्रस्ताव-

आबह होरिलसिंह पलङ चढ़ि बैसह
बटा भरि पान चिबाबह रे दइबा
लैह लैह होरिलसिंह डाला भरि रे सोनमा
अपनो बहिनिया उतिमा बियाहि दैह रे दइबा

कोनो स्वाभिमानी लोक एहि गर्हित प्रस्तावकेँ स्वीकार नहि कऽ सकैत अछि । होरिलसिंह अपना बहीनक लेल अपन जीवन दऽ सकैत छल आ एक भाय सन उत्तर ओकरा मुहसँ बहार भेलैक-

डाहबइ जारबइ साहेबजी डाला भरि हे सोनमा
बाबा कुलमे बेटियो ने छैक रे दइबा

परिणाम वैह भेलैक जे सामन्ती युगमे होइत छलैक । साहेबक आज्ञा भेलैक आ होरिलसिंहकेँ मुसुक बान्ह पड़लैक आ ऊपरसँ मारि । मुदा होरिलसिंह एको रत्ती विना 'इस्स' कयने सहैत रहल ।

ओ उतिमाक भाइ छलैक ताहिमे सन्देह नहि, किन्तु ओकर पत्नी तँ उतिमाक भाउजि छलैक । भाउजिक अग्नि सन, विषबोरल बोल सूनि कऽ उतिमा दुखी भऽ उठलि–

अगिया लगयबइ उतिमा तोरो नामी केसिया
तोहरे कारण भइया जिब जाइ छौक रे दइबा

उतिमाक कोरमे होरिलसिंहक बेटा छलैक । ओकरा भाउजिक कोरमे थम्हा देलकैक आ अपन भाइक रक्षाक लेल स्वयं अपना देहकेँ यन्त्रणाक आगिमे झोंकबाक लेल चलि देलक–

लैह लैह भाउजि घर-घरुअरबा, रामा गोदीक लरिकबा रे
हम जाइ छी भइया बान्ह फोलय रे दइबा

अपन निवासमे पलङपर सूतल साहेब मुसुकि उठल उतिमाकेँ स्वयं अबैत देखि कऽ। होरिलसिंहक बन्धन फूजि गेलैक । उतिमाक जीवनमे बन्धन आबि गेलैक । उतिमा साहेबक वस्तु भऽ गेलैक । साहेब प्रसन्न छल आ उतिमाक हृदय हाहाकर कऽ रहल छलैक । साहेब हँसि–हँसि कऽ बजारमे श्रृंगारक वस्तु सभ कीनैत अछि– सिन्दूर, टिकुली, गहना, चूड़ी, कपड़ा आ उतिमा कानि–कानि कऽ पहिरैत अछि–

हँसि हँसि साहेबजी सिनुरा बेसाहइ, रामा टिकुली बेसाहइ
कानि-कानि उतिमा पहीरइ रे दइबा
हँसि-हँसि साहेबजी कपड़ा बेसाहइ, रामा चुड़िया बेसाहइ
कानि कानि उतिमा पहीरइ रे दइबा

साहेब हँसि कऽ डोली कयलक आ उतिमा कनैत–कनैत ओहिमे बैसि गेलि–

हँसि हँसि साहेबजी डोलिया फनाबइ
कानि कानि उतिमा चऽढ़इरे दइबा

कहार डोली लऽ कऽ चललैक तँ उतिमाक हृदय चीत्कार कऽ उठलैक । डोलीसँ उतरलाक बाद ओकर कौमार्य नष्ट भऽ जयतैक । ओकर जीवनक सर्वस्व ओ क्रूर साहेब लूटि लेतैक आ ओ किछु नहि बाजि सकति । चुपचाप यन्त्रणा सहैत रहति आ साहेबक वासना–तृप्ति करैत रहति । विवश हरिणी जकाँ एक बेर उतिमा महफाक ओहार उठा कऽ देखलक । सड़कक कातमे ओकर बाबाक खुनाओल पोखरिक निर्मल जल चमकैत छलैक, जाहिमे ओ नहायलि छलि, हेललि छलि, चुभकलि छलि । ओकरा पियास लागि गेलैक ओहि पोखरिक जल देखि कऽ । ओ कहारसँ अनुनय कयलकैक–

गोड़ लागू पैञा पडू अगिला कहरिया, रामा पछिला कहरिया
बाबा दह पनिञा पियाबह रे दइबा

आ कहरिया सभ उत्तर दैत छैक–

बाबा दह पनिञा हे उतिमा घोंङहा रे सेमरबा
साहेब दह पनिञा पीबह रे दइबा

साहेब... विजातीय–ओकर सर्वस्व अपहर्त्ताक पोखरिक पानि ओ कोना पीबैत ! ओ एको चुरू पानि पिया देबाक आग्रह करैत छैक–

एक चुरु पनिञा पियाबह रे दइबा

उतिमाक करुण आग्रह पर कहरिया सब पसीझि गेल । महफाकेँ राखि देलक । उतिमा दहक किनारमे गेलि जल पीबऽ । उतिमा दहमे पयर देलक । मुदा उतिमा ओहि दहक जल नहि पीलक । ओहि दहक जले ओकरा पीबि गेलैक–अपना कोरामे सर्वदाक लेल समेटि लेलकैक । सीताक पाताल–प्रवेश जकाँ उतिमा अपन बाबाक दहमे, दहक अगाध जलमे समा गेलि–

एक घोंट पिलकइ उतिमा दुइ घोंट पिलकइ
तेसरहि खिरल पताल रे दइबा

साहेब चौंकि उठल । ओकर चिड़इ हाथसँ ऊड़ि गेलैक । मलाहसँ जाल खिरबौलक ओहि दहमे, मुदा उतिमा सन मोतीक बदलामे घोंघहा, सितुआ आ सेमारे भेटलैक–

एक जाल फेकलक मलहा, दुइ जाल हे फेकलक
तेसरइ बझलइ घोङहा सेमरबा रे दइबा

यदि साहेब जनैत जे उतिमा ओकरा संग एतेक छल कऽ कऽ उड़ि जायति तँ ओ एतेक प्रतीक्षा नहि करैत–

जओं हम जनितहुँ हे उतिमा
एते बुधि हे रचबह,
रामा एते छल हे रचबह
महफा पैसि जाति हम लीतहुँ रे दइबा

किन्तु उतिमा प्रखर धारमे भसियाइत कुमुदिनीक फूल छल जकरा कोनो अपावन व्यक्तिक हाथ स्पर्श नहि कऽ सकैत छल । आ कतोक शताब्दीक समयक पाँतरकेँ नँघैत उतिमाक ई गीतिकथा जीवित अछि । ओकर चरित्र विपदापन्न नारीकेँ मुक्तिक हेतु संघर्षक संदेश दैत रहलैक अछि । ओ अपन जीवनक आहुति दऽ कऽ नारी जीवनक गौरवमय इतिहासमे एक अमूल्य पृष्ठक वृद्धि कयलक । मिथिले नहि, सम्पूर्ण उत्तर भारतमे प्रचलित ई उतिमाक कथा अमर अछि, अमिट अछि ।

(मिथिला मिहिर, 13.11.60)

मिथिलाक लोकगाथा : दीना-भद्री

मिथिलाक अधिकांश जातिमे जातीय नायकक गाथा प्रचलित अछि । ई गाथा सब श्रुति-परम्परासँ पुस्ति-पुस्तैनी चल आबि रहल अछि । एहन मान्यता अछि जे ई नायक सब दिव्य शक्ति सम्पन्न छलाह । अपन जीवन कालमे अलौकिक कार्य सम्पादन करबे कयलनि, परन्तु अपार्थिवो रूपमे निरन्तर दीन-दुखीक गोहारि सुनैत छथि । तेँ लोकदेवताक रूपमे एखनहुँ पूजित प्रतिष्ठित छथि । हुनक गाथागानमे धार्मिक भावना संयुक्त अछि ।

एहि कोटिक जातीय लोकदेवताकेँ **मनुसदेवा** सेहो कहल जाइत अछि । एहने एक गोट लोकदेवता अछि दीना-भद्री जे मिथिलाक मुसहर जाति मध्य पूजित अछि । एहि जातिमे दीना-भद्रीक गाथाकेँ अत्यन्त भक्ति-भावसँ श्रवण कयल जाइत अछि । एहि गाथाक सर्वप्रथम संकलन उनैसम शताब्दीक चारिम चरणमे ग्रियर्सन कयने छलाह जकर मूल ओ अंगरेजी अनुवादसंग फ्रांसक एकटा पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल । ओ एकर शीर्षक देने छलाह **गीत दीना-भद्रीक** । तदुपरान्त एखन धरि ई गाथा अनदेख रहल अछि । डा० जयकान्तमिश्र ओ पं०राजेश्वरझा एहि गाथा पर विचार कयनिहार थिकाह अवश्य, परन्तु हिनका लोकनिक आधारस्रोत रहलनि अछि ग्रियर्सनेक पाठ । यथार्थमे दीना-भद्री गाथाक पुनः संकलनक कोनो नवीन प्रयासक सूचना नहि अछि ।

दीना-भद्रीक गाथामे एहि दुनू भाइक अलौकिक शौर्य, पराक्रम ओ बलिदानक वर्णन भेल अछि । जेँ गाथा-नायक दुनू भाइ मृत्युकेँ प्राप्त होइत अछि आ तकर पश्चात् ओकर प्रेत-जीवनक व्यापार वर्णित छैक, तेँ दीना-भद्रीक गीतकेँ मरौटी गीत वा मरौटी गाथा कहल जाइत छैक । गाथा-रूपक सारांश एहि प्रकारक अछि-

जोगिया जाँजरि गाममे दुइ भाइ दीना-भद्री छल जे परमबली ओ स्वतन्त्र विचारक छल । ककरो खेतमे बोनि नहि करय । नगरक एकटा सामन्त ओकरा अपन जन बनाबऽ चाहलक मुदा दुनू भाइ तिरस्कार पूर्वक अस्वीकार कऽ देलक । एहि प्रसंगक वर्णन मूल गाथामे द्रष्टव्य अछि । भोरे भोरे धामि दीना-भद्रीक आंगन पहुँचि गेलैक । दीना-भद्रीकेँ अधलाह लगलैक- **कौन गरु परलौ हो घामी बड़ भोर छेकल दुआर,**

अपन बहु पुतहु रखलह घर सुताय,

हमर बेटी पुतहु देखलह नाङट उघार

धामि कहैत छैक-**थारु दोनवार जन भेल तैयार,**

आजु दिन दीनाभद्री दैह मदति सभके देबै हम चारि सेर बोनि

दीना-भद्री धामिक एहि प्रलोभनकेँ अस्वीकार करैत अपन स्वतन्त्र प्रकृतिक परिचय देलक-

कबहु ने कैल खुरपी कोदारि बोनि

कहियो ने जानिऔ हो धामी, पैंच उधार

धामि दीना-भद्रीकेँ **फोटरा गीदरक** सहयोगसँ मरबा देबाक षड्यन्त्र कलयक । दीना-भद्री मामा **बहोरन** संग **कटैया वनमे** शिकार खेलाय जाइछ । **कजरी नदीक** पार ओ वन छलैक । मुदा वनमे शिकार नहिं भेटलैक, भेटलैक **बौरम नदीमे** पानि पिबैत फोटरा गीदर।

दुहू भाइकेँ फोटराक संग घनघोर युद्ध भेलैक । दीना-भद्री फोटराकेँ मारि दैक आ **सलहेस** ओकरा जिआ दैक । लड़ैत लड़ैत दुहू भाइ थाकि गेल आ फोटरा द्वारा मारल गेल । जोगिया नगरमे समाद गेल । दुहूक शुद्ध-श्राद्ध भेल । दीना-भद्री प्रेत भऽ कऽ विचरऽ लागल । प्रेतयोनिमे रहैत योगी भेषमे अपन माय'-बापसँ भेँट कयलक । **हिरिया तमोलिन** ओ **जिरिया लोहैनसँ** प्रेम कयलक । बगहा गामक **ताहिर मीञाक** गायक बथान **बाराडीह** जाय ओकर दुइटा कामधेनु गायक दूध पीबऽ चाहलक तँ ओकर चरबाह **गुलामी जट** अपमानित कऽ देलकैक। गुलामी जट वस्तुतः ताहिर मिञाक जादूगरनी बेटी फेकुनीक बल पर कुदैत छल । दीना-भद्री फोटरा गीदरक रूप धऽ गायक हेँजकेँ भड़काबऽ लागल । गुलामी जट एहि फोटरा रूपधारी दीना-भद्रीसँ युद्ध कयलक आ हारि गेल ।

एकर पश्चात् दीनाभद्री **कुनौली गामक जोरावरसिंहसँ** भिड़ल । जोरावरसिंह सात पट्ठाकेँ सरोँ खेलबैत छल । ओ बलशाली होयबाक संग अन्यायी सेहो बड़ पैघ छल । ओ नवविवाहिता स्त्रीक शीलहरण करब अपन अधिकार बुझैत छल जकर विरोधक साहस ककरो नहि छलैक । जोरावरसिंह राजपूत पुरुबक कनियाँ पश्चिम नहि जाय दैत अछि । पश्चिमक कनियाँ पुरुब नहि जाय दैत अछि, दक्षिणक कनियाँ उत्तर नहि जाय दैत अछि, उत्तरक कनियाँ दक्षिण नहि जाय दैत अछि । एहन अत्याचारी जोरावरसिंहकेँ मारि दीना-भद्री तत्कालीन समाजकेँ एकटा पैघ त्रासदीसँ मुक्त कऽ वस्तुतः देवकोटिमे चल गेल ।

साम्प्रतिक दीना-भद्रीक गाथाक जे कथ्य रूप अछि ताहिमे मूलकथाक औरो विस्तार ओ भिन्नता देखल जाइछ । दीना-भद्री जोगिया नगरवासी मुसहर **कालूदासक** बेटा छल। मायक नाम छलैक **निरसी** । मामा छलैक **मोतीपुरक बहुरन** । दीनाक पत्नी **बुधना**, भद्रीक पत्नी छलैक **रोदन** । जोगिया नगरक राजा छल दोनबार **कनकसिंह** । कनकसिंह ओतऽ सब काज करय मुदा दीनाभद्री नहि करय । राजा दुहूक पराक्रमक आगाँ विवश छल । राजाक बहिन **बचिया धामिन** छल जादूगरनी, छलैक ओकरा खोपाक लटे लटे जादूक सात सय पुड़िया खोँसल। ओकरा ई अपमान सहाज नहि । ओ अपन भाउजिक संग दीना-भद्रीकेँ मारबाक उपाय सोचि एकटा पोखरि खुनौलक । पुरैनिक नार रोपबौलक । पनियादराधक नर-मेदिनक एक जोड़ा पोखरिमे धऽ देलक । पोखरिमे जे जीव-जन्तु जाय, सबकेँ डँसि कऽ ओ मारने जाय । मौगी-पुरुष, बच्चा-बूढ़, जुआन-जहान, माल-जाल, चिड़ै-चुनमुन्नी मरऽ लागल । मुरदाक ढेरि लागि गेल । गिद्ध मड़राय लागल । दीना-भद्रीकेँ खबरि गेल । दुनू पनियादराधकेँ मारबाक विचार कयलक । माय-पत्नी मना कयलकैक तँ ओ अपन संकल्प बाजल-

> **कथी लय करुणा करैए निरसी माइ**
> **दह सए करुणा करैए हंस चकेबा**
> **दीनाभद्री लए करुणा करैए निरसी माय**
> **गामक पछिम कोड़ौलनि, एगो लव पोखरी**
> **ओही तऽ पोखरिया गे, धमियाइन रोपल पुरैनि**
> **ओहि जनि पैसिहऽ भदरी, धरतऽ तोरा पनियादराध**
> **घुरमी सहिते गे धमियाइन, तोहरो हम सधबौ**
> **कुसक डेफसँ नथबौ तोरा पनियादराध**

दीना-भद्री पोखरिक पानि उपछि पनियादराधकेँ नाथि कऽ साधि दैछ । बचिया ओ

रानी ई कृत्य देखि ओहि पोखरिक थालमे लेढ़ाय कनकसिंह लग कनैत पहुँचलि जे दीना-भद्री हमर दुहुक इज्जति लूटि लेलक । कनकसिंह बाजल–

जनानीबला बात, बातकेँ बाओग केने हसारति हएत
तेँ मोनक बात मोने राखू, ने तँ बहुबात भऽ जायत ।

कनकसिंह दीना-भद्रीक किछु नहि बिगाड़ि सकल । तखन बचिया **देवी बघेसरी** आ सलहेसकेँ अराधि दीना-भद्रीक मूड़ माङि लेलक । दीना-भद्री सेहो छल देवी बघेसरीक फुलढरिया सेवक । सलहेस छलैक ओकर मीत । मुदा बचियाक आगाँ देवी बघेसरी आ सलहेस झुकि गेल । बघेसरी दीना-भद्रीकेँ **कटैया खाप** जंगलमे शिकार खेलयबाक सपना देलकैक । दीना-भद्री मामा बहोरनकेँ बजाय कटैया खाप गेल । रस्तामे कतेको असगुन भेलैक तैयो नहि मानलक । ओतऽ कोनो शिकार नहि भेटलैक । भेटलैक खाली तीन टाङक **फोटरी हरीन** । ओ हरीन बाघ बनि कऽ दीना-भद्री पर फानल । दीना-भद्री बाघकेँ पकड़ि चारू रान चीरि-फाड़ि चारि चारि दिस फेकि देलक । सलहेस चारू रान एकट्ठा कऽ बाघकेँ जिया देलक । सात दिन सात राति लड़ाइ होइत रहल आ एहिना बेर बेर भेला पर दीनाभद्री बूझि गेल जे बाघ बनल देवी बघेसरी छी । ओ बाजल–

गे बघेसरी ! हम ने जनलियौ, खेत चढ़ा कऽ एना मारबेँ ।
अखनी जे केओ एक घोंट पानि पिया दितै, तँ साल पुरा दितियौ ।
आब पियासे मरबे करबौ, उतरे सिरमे सुतै छिऔ,
तोँ लहछुर भिरा दे गरदनि, चोला हम बदलि लेबौ,
मुदा हमर बोलता काल हेतौ ।

दीना-भद्री मारल गेल किन्तु तखन ओ प्रेत रूप धारण कऽ लेलक । अहीरक रूप धऽ कऽ अपन पार्थिव शरीरक संस्कार आ श्राद्धक व्यवस्था कयलक । तत्पश्चात् योगी रूप धऽ कऽ अपन माय-बाप ओ पत्नीसँ भेँट कयलक । ओकर पार्थिव शरीरक संस्कारमे जे गाम अनठा देलकै । ओतऽ मरकी उठि गेलैक । जे बनिया कफन लय कपड़ा देलकैक तकरा एकसँ एकैस भेलैक । मृत्युक बाद दीना-भद्री बचियाकेँ मारलक । कनकसिंहकेँ उजाड़लक । गुलामी जट आ **हंसराज-बंसराज** सन योद्धाकेँ पछाड़लक । अघोरीकेँ परास्त कयलक आ अन्तमे **जगन्नाथपुरी** जाय अपन पौरुष देखाय **भुइयाँ बाबाक** रूपमे तिरहुत आयल । यैह थिक दीना-भद्री लोकगाथाक संक्षिप्त कथा-सूत्र ।

यदि व्यवस्थित रूपमे दीना-भद्रीक गाथाक विविध रूपान्तरक संकलन कऽ ओकर तुलनात्मक पाठ एवं अध्ययन कयल जाय तँ ओ मिथिलाक लोकसाहित्यक क्षेत्रमे महत्वपूर्ण अवदान सिद्ध होयत ।

(मैथिली दैनिक स्वदेशक चारि अंक क्रमशः 25,27,30 एवं 31.8.1982 मे धारावाही प्रकाशित)

●

मिथिलाक लोकगाथा : लोरिक

मिथिला जनपदमे मैथिली भाषामे अनेकानेक लोकगाथा काव्य सम जनमानसमे प्रचलित अछि, जकर नायक काव्यशास्त्रीय नियमानुसार देवता वर्ग वा अभिजात कुल सम्भूत नहि भऽ कऽ सामान्य वा निम्नवर्गमे उत्पन्न भेल रहैछ। पौराणिक वा ऐतिहासिक दृष्टिएँ प्रख्यात व्यक्ति नहि रहैछ। तथापि लोकगाथाक धरातल पर नायकोचित गुणसँ सम्पन्न रहैत अछि। मिथिलाक जनसमाजमे कतोक शताब्दीसँ एहन लोकगाथा काव्य सभ श्रुति-परम्परामे चल आबि रहल अछि। जकर ने आविर्भाव कालक पता अछि, ने ओकर रचयिताक। एही कोटिक एक गोट प्रसिद्ध मैथिली लोकगाथा काव्य अछि- **लोरिक मनियार**। महत्त्व, प्रसिद्धि, प्रचार आ विशालताक दृष्टिएँ लोरिक गाथाकाव्यक सर्वोच्च स्थान मानल जाइत अछि।

लोरिकक एतिहासिक व्यक्तित्व की छल, स्थिति काल की छल, कार्यक्षेत्र की छल, एकर सभक तथ्यात्मक पुष्टि ऐतिहासिक आधार पर करब सम्भव नहि भऽ सकल अछि। भारतीय इतिहासक सम्बन्धमे गवेषणा कयनिहार लोरिकक गाथाकेँ गम्भीरतासँ देखबाक चेष्टा नहि कयलनि अछि, तेँ एहि दिशामे ने कोनो उल्लेखनीय अनुसन्धान भेल अछि, ने अनुसन्धानक आवश्यकता बूझल गेल अछि।

लोरिकक शौर्यगाथा ओ वीरगाथा राजस्थानसँ बंगाल आ दक्षिण आन्ध्रप्रदेश धरि पसरल अदि। बंगला, मैथिली, संताली, मगही, मिर्जापुरी, भोजपुरी, ब्रज, अवधी, छत्तीसगढ़ी, बुन्देली, राजस्थानी इत्यादि भाषामे कोनो ने कोनो रूपमे लोरिकंक लोकगाथा प्रचलित अछि। सभमे मुख्य कथा भागक साम्य छैक तँ बहुत किछु वैषम्यो देखल जाइत अछि आ श्रुति-परम्पराक गाथा काव्यमे एहि वैषम्यकेँ अस्वाभाविक नहि कहल जा सकैछ।

लोरिकक शौर्यक संग आबद्ध अछि, ओकर विवाहिता पतिव्रता पत्नी माँजरि ओ प्रेमिका अनिंद्य सुन्दरी चनैनक कथा। वैह माँजरि अनेक ठाम मैना वा मीना नामसँ सेहो अभिहित भेल अछि। चनैनक नाम चान, चन्द, चन्दा, चन्द्रा देखल जाइत अछि। माँजरिक पातिव्रत्य आ विरह एवं चनैन वा चन्दाक उद्दाम प्रेम साहित्यकार ओ सूफी कवि लोकनिकेँ सेहो आकृष्ट करैत रहल अछि आ ओहि आधार पर अनेकशः काव्यक सेहो रचना होइत रहल अछि। एही सूफी सभक माध्यमसँ ई गाथा दक्षिणमे सेहो गेल। मैथिलीमे लोरिकक शौर्यगाथा आ प्रेमगाथाक साहित्यिक अभिव्यक्ति नहि भऽ सकल तथापि लोक-जीवनमे ई अत्यन्त व्यापक स्थान ग्रहण कयने रहल अछि। एकर इतिहास यदि ताकल जाय तँ कमसँ कम हजार वर्ष पाछाँ जाय पड़त। चौदहम शताब्दीक प्रथम चरणमे रचित मैथिलीक प्रथम गद्य ग्रन्थ **वर्णरत्नाकरक नगर वर्णन**मे विभिन्न प्रकारक मनोरंजनक साधनक विवरणमे **लोरिक नाचोक** उल्लेख कयल गेल अछि। एकर अर्थ भेल जे चौदहम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे मिथिलाक गाथा-नाचक रूपमे ई खूब लोकप्रिय भऽ गेल छल। आवश्ये एहिसँ अढ़ाइ-तीन सय वर्ष पूर्व लोरिकक गाथाक घटना घटित भेल होयत।

ग्रियर्सन महोदय गया जिलामे लोरिक गाथाक लौकिक रूप देखने छलाह । बेरियर एलविन महोदय छत्तीसगढ़क लोकगीतमे लोरिक गीतक विचार कयने छथि । ग्रियर्सनक **बिहार पीजेन्ट लाइफ**मे कहल गेल अछि – **लोरकाइ चरबाह सभक विशिष्ट गीत अछि जे लोरिकसँ सम्बद्ध अछि । दक्षिण भागलपुरमे चरबाहक नाचकेँ लोड़ियारी कहल जाइत छैक । जे व्यक्ति नचैत छैक तकरा नटुआ वा नटुअ कहल जाइत छैक ।**

जेनरल कनिंघम एवं हुनक सहायक कारलायल मिथिला भ्रमणक क्रममे **हरबा-बरबाक** गाथा सुनने छलाह आ ओहिमे लोरिकक कथा सेहो सुनने छलाह । हरबा-बरबा दुनू भाइ न्यौरीगढ़क राजा छल आ लोरिक गाथाक एकटा महत्वपूर्ण खल पात्र सेहो । कनिंघम महोदय 1883क **आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया**मे हरबा-बरबा ओ लोरिक विषयक गाथाक रिपोर्ट प्रकाशित करौने छलाह ।

मिथिलामे लोरिक मनियारक गीत **लोरिकानि, लोरिकाइन, लोरिकायन** आदि नामसँ जानल जाइछ । गाथा गओनिहार एकरा **महराइ,** सेहो कहैत अछि । पूर्वमे महर लोकनि द्वारा गाओल जयबाक कारणे एकर नाम **महराइ** पड़ि गेल । लोरिकक गाथा अत्यन्त वृहत् अछि। अनेक दिवसमे गाथाक समस्त गान सम्पन्न होइत छैक । एहि सम्बन्धमे एकटा कहबी प्रचलित छैक– **सात काण्ड रामायण तँ सोड़ह काण्ड लोरिकायन** । गाथामे गान आ पाठ दुहूक सम्मिश्रण रहैत छैक । लोरिक गाथाक गान जखन चलैत रहैत अछि तँ कोन श्रोता एहन होयत जे लोरिकक शौर्य सूनि प्रभवित नहि होयत, माँजरिक विरह आ चनैनक रूप सौन्दर्यसँ विमुग्ध नहि होयत, चनैनक उद्दाम प्रेमसँ रससिक्त नहि होयत ।

मिथिलामे प्रचलित लोरिक गाथामे जे विस्तार अछि, इतिवृत्यात्मकता अछि से आन ठामक गाथामे नहि देखल जाइत अछि ! लोरिकक जन्मसँ लऽ कऽ जीवन-निवृत्ति पर्यन्तक घटना क्रमबद्ध रूपसँ कहल गेल अछि । आन ठामक कथामे **चन्दाकेँ** लोरिकक प्रेमिका कहल गेल अछि, जे मिथिलाक **चनैन** थिक । अन्यत्रक गाथामे लोरिकक पत्नी **मैना** कहल जाइत रहल अछि, मुदा मिथिलाक गाथामे लोरिकक धर्मपत्नी छथि **माँजरि** आ मैना छलि लोरिकक छोट भाइ साबरक धर्मपत्नी जे माँजरिक समान पतिव्रता छलि आ छलसँ मारल गेल अपन पतिक संग सती भऽ गेलि । निश्चये आन ठामक साहित्यिक वा लौकिक गाथामे मैनाक नाम ओ चरित्र माँजरिक संग मिश्रित भेलेँ माँजरिक नाम ओ मैनाक व्यक्तित्व अलोपित भऽ गेल अछि ।

अतः मिथिलाक लोरिकक गाथा मूल गाथाक सबसँ निकट अछि, से मानल जयबाक चाही । एक बात और विशेष रूपसँ ध्यान देबाक योग्य अछि । लोरिक गाथामे वर्णित स्थान, गाम, क्षेत्र, नदी, वातावरण इत्यादि मिथिलासँ मिलिते नहि अछि, मिथिलामे औखन विद्यमान अछि आ तत्तत्स्थानीय समाज ओकरा लोरिकसँ सम्बद्ध मानैत रहल अछि । **गौरा गाम, हावी, उघरा, हरदीया, श्रीनगर, न्यौरीगढ़, नरसरि, खढ़ोरि कोठराम, हथौड़ी, करियन, कोरहाँसगढ़, दुहबी-सुहबी पोखरि, सोन्हौली घाट, पतैली, पबड़ा, वनडिहुली** आदि गाम औखन मिथिलाक नक्शा पर देखल जा सकैछ । सुपौल जिलामे स्थित **हरदीथान**मे लोरिक द्वारा आराधिता भगवतीथान ओ लोरिकक अखाढ़ा विद्यमान अछि आ वर्षमे ओतऽ एक बेर लोरिकक मूर्त्ति बना कऽ ओकर पूजन कयल जाइत छैक । अतः ई मानबामे असौकर्य नहि होइछ जे लोरिक गाथाक अधिकांश घटना मिथिलेमे घटित भेल छल तथा एही ठामक लोककविक द्वारा सर्वप्रथम लोरिक गाथाक गान भेल छल ।

अगौरा/गौरा गामक **राज सहदेवक** हरवाह छल **बुढ़ कुब्बे** । ओकर बेटा छल **लोरिक** एवं **साबर**। मल्लविद्यामे निपुण । दुहूक मित्र छलैक राजल धोबी, **बारू** दुसाध, **बंठा** चमार । सभ एकसँ एक पहलवान ओ साहसी । लोरिकक मायक नाम छलैक **खुलैन** । ओ गाम भरिक गायक चरबाहि करैक । गौरा गामक छल महर । ओकर पत्नी **पदुमा** महरि। बेटी छलैक **माँजरि** । एकटा आर राजा छल **उघरा पमार**, अत्यन्त अत्याचारी आ परस्त्रीक हरण कयनिहार । तँ माँजरिक लेल एहन वर ताकल जाइत छल जे उघरा राजाकेँ हरा सकय । लोरिक उपयुक्त वर बुझल गेल, किन्तु उघरा राजाक सैनिक सभ अनेक प्रकारक वाधा आ आघात देलकैक । लोरिक सभकेँ निरस्त्र कऽ माँजरिकेँ बियाहि अनलक ।

राजा सहदेवक बेटी **चनैन** छलि । अनुपम सौंदर्यसँ युक्त । किन्तु ओकर विवाह भेल छलैक अभिशापक कारणे नपुंसक भेल पुरुषसँ । ओकर पतिए ओकरा सगाइ कऽ लेबाक अनुमति दऽ दैत छैक । ओहि बीचमे बंठा चमार ओकर शील हरण करऽ चाहैछ । परन्तु चनैन ओकरा धोखा दऽ कऽ अपन महलमे नुका जाइत अछि । बंठा चमार उत्तेजित भऽ गाममे उपद्रव करऽ लगैत छैक । पोखरिमे पानि भरनिहारि युवती सभक घैल फोड़ि-फाड़ि दैत छैक । लोरिक जखन मना करैत छैक तँ मित्र बंठा ओकरासँ लड़ऽ लगैछ आ लोरिकक हाथेँ मारल जाइत अछि । एहिसँ चनैन बड़ प्रभावित होइत अछि । ओकरा लोरिकसँ प्रेम भऽ जाइत छैक । लोरिक आ चनैन दुनू प्रगाढ़ प्रेममे आवद्ध भऽ जाइछ । किन्तु, ई चर्चाक विषय भऽ जाइत छैक । तखन दुनू ओहि ठामसँ पड़ा जाइत अछि ।

लोरिक ओ चनैन पड़ा कऽ **हरदीथान** पहुँचैत अछि । ओतऽ **सोमनसाहुक** ओतऽ आश्रय लैत अछि । ओहि ठामक राजा छल **मोचनि** । मोचनि सेहो दुश्चरित्र । ओकरा चनैनक सौन्दर्यक खबरि भेटलैक तँ ओकरा अपन पत्नी बनयबाक लेल आतुर भऽ गेल । ओ लोरिककेँ भार देलकैक अपन सेनापति **गजभीमलकेँ** चिट्ठी पहुँचयबाक, जाहिमे लोरिककेँ मारि देबाक संकेत छलैक । चनैनक चातुर्यसँ ई भेद फूजि गेलैक । चनैनक प्रयत्नसँ मोचनिक घोड़सारसँ **कटरा** नामक बदमास घोड़ा लोरिककेँ प्राप्त भेलैक जे लोरिकक अत्यन्त आज्ञाकारी सिद्ध भेलैक आ अन्त धरि संग रहलैक । लोरिक गजभीमल ओतऽ जा कऽ युद्ध कऽ ओकरा मारि देलकैक । तखन मोचनि लोरिककेँ **न्यौरी गढ़क** राजा **हरबाक** ओतऽ पठौलकैक । हरबाक भाइ **बरबा** छलैक । दुनू भाइ अत्यन्त दुश्चरित्र, परस्त्रीहरण कयनिहार। ओकर पत्नी रूसि कऽ **कोरहाँस गढ़मे** रहैत छलैक । ओ अपने **दुहबी-सुहबी** नामक दू बहीनिक अपहरण कऽ उपपत्नी बनौने छल । लोरिक ओहि ठाम जा कऽ ओकरा सभकेँ हरा कऽ सभकेँ मारि देलक ।

एम्हर मोचनि राजा एहि विश्वासमे जे लोरिक हरबाक हाथेँ मारल गेल होयत–चनैनकेँ जबर्दस्ती लऽ अनबाक लेल सोमनसाहु ओतऽ गेल । चनैन ओकरा बुधियारीसँ वध कऽ देलक । ओम्हरसँ हरबाक बंधनसँ मुक्त कऽ **गांगे छत्रीक** संग लोरिक सेहो पहुँचि गेल । लोरिक विजयी भेल, मुदा हरदीथानक भगवतीक पूजा नहि कयलक । भगवती रुष्ट भऽ गेलथिन तँ पराजयोक मुँह देखऽ पड़लैक । **करियन** गामक **करना कुम्हार** आबि कऽ लोरिककेँ बदान दऽ देलकैक । लोरिक अहंकारमे मल्लयुद्ध करऽ लागल तँ पछड़ि गेल। करना बान्हि कऽ लऽ गेलैक आ ओकर छाती पर नित्य चाक चलबऽ लगलैक ।

चनैन व्यथित भऽ गांगेक ओतऽ गेलि । गांगे करनाकेँ मारि कऽ लोरिककेँ मुक्त कयलक आ ओकरा दुर्गाक आराधना करऽ कहलकैक ।

ओम्हर **अगौरा** गाममे राजा सहदेव **राजा कोलमकड़ाक** संग लऽ सेनाक संग **महर** पर आक्रमण कऽ देलकैक । **सावर, राजल, माँजरि, मैना,** माँजरिक चेरिया **लुरकी** सभ मीलि कऽ आक्रमणक सामना कयलक । एहि लड़ाइमे साबर मारल गेल । मैना ओकरे संग सती भऽ गेलि । बारह वर्ष बीति गेल छलैक । माँजरिकेँ लोरिकक दर्शन नहि भेल छलैक । ओ अपन **बाझिल कौआकेँ** पत्र लीखि कऽ पठौलकैक ।

बाझिल कौआ उड़ैत गेल हरदीथान लग **सोन्हौली घाट**क लोरिक-चनैनक राजभवनमे। लोरिक बाझिल कौआकेँ चिन्हलक । पत्र पढ़लक आ माँजरिक विरह-व्यथाक अनुभव कऽ गह्वरित भऽ गेल । ओ माँजरि लग जयबाक तैयारी कयलक । चनैन रोकबाक कतेको बुद्धि रचलक मुदा सफल नहि भेलि । तखन दुनू सदल बल अगौरा गाम लग आबि **सझौती राजा** ओ **सझौती रानी**क नामसँ टिकल । ओहू ठाम चनैन लोरिकक मोन माँजरि दिससँ फेरबाक प्रयास कयलक । एहि क्रममे माँजरिक चरित्र पर लाँछन लगाओल गेलैक । माँजरि परीक्षामे उत्तीर्ण भेल तखन लोरिकक संग मिलन भेलैक । माँजरिक विरहक अन्त भेलैक ।

यैह लोरिक गाथाक संक्षिप्त कथा-वस्तु थिक । लोकगाथा होयबाक कारणे अतिशयोक्ति एवं अतिरंजना स्वभावत: अछिए । अनेक ठामक वर्णनमे असम्भाव्यता प्रचुर मात्रामे अछि। लोरिकक चरित्रकेँ महान् बनाबऽमे सभसँ पैघ तत्त्व अछि ओकरा द्वारा अत्याचारसँ संघर्ष । ओकरा जाहि राजा वा सामन्तसँ युद्ध करऽ पड़लैक से सभ विलासी एवं चरित्रहीन छल । स्त्रीलोकनिकेँ जबरदस्ती अपहरण करब सामान्य व्यापार बुझैत छल । ओकरा सभसँ सामान्य जनसमुदायकेँ त्राण दियौनिहार लोरिक अवश्ये सम्मान्य छल, श्रद्धाक पात्र छल । ओही श्रद्धाभिव्यक्ति लेल रचल गेल लोरिकायन जकर शत-शत वर्षसँ गान होइत रहल अछि ।

(मिथिला मिहिर 11.6.1978)

●

मैथिली लोककथा-नायक : धूर्त्तराज गोनूझा

यदि हमरा गामक बड़ाबाबू जीबैत रहितथि आ अहाँ हमरा गाम अबितहुँ तँ सुना दितहुँ हुनकासँ रमनगर खिस्सा सभ । मोन नहि लागल तँ जा कऽ बैसि रहलहुँ बड़ाबाबू लग आ घंटा आध-घंटाक बाद हुनका लगसँ उठलहुँ तँ मोन एकदम हल्लुक । सत्त-असत्त, सूनल-बनाओल खिस्सा सभक ओ खजाना छलाह । भोजघरा, धनकटनीक खेत, आमक गाछी, बरियाती आ कठियारी; जाहि कोनो ठाम समय काटब भारी लगैत छैक, ओहि ठाम बड़ाबाबू मृत-संजीवनीक काज करैत छलाह ।

–सुनैत जाह । गोनूझाकेँ एक बेर.....

बड़ाबाबू कहब आरम्भ करितथि आ लोक चारू कातसँ सहटि कऽ चल अबैत हुनका लग । मण्डलाकार बना कऽ घेरि लैत ।

एक दिस गोनू-पुराण आ दोसर दिस बड़ाबाबूक कहबाक मनोरंजक शैली । दुनू मीलि कऽ अपूर्व आनन्दक सृष्टि करैत छल । हमरा तँ कहियो-कहियो बूझि पड़ैत छल जे ने गोनू बाबूकेँ एहन वाचक भेटल होयथिन आ ने बड़ाबाबूकेँ गोनू बाबू सन आन विषय।

थोड़े कालक बाद, समय बितला पर बड़ाबाबू चुटकी बजबैत ऊठि जाइत छलाह–होअह, उठह, गोनू बाबू जीबैत रहताह, आ हम जीबैत रहब तँ फेर कतेक बेर ने सुनबह ।

बड़ाबाबू आब जीबैत नहि छथि । मृदा गोनूबाबू नहि मुइलाह । ओ एखनो लोकक कण्ठ चढ़ि बैसल छथिन । हमरो जखन एक बेर बच्चा क्लासमे पढ़यबाक अवसर भेटल छल तँ बड़ अबूह लागल ओकरा सबकेँ चुप करौनाइ । बगरा जकाँ चुनमुन-चुनमुन करैत विद्यार्थी सभक अपन दुनियाँ, अपन राजनीति, अपन समस्या रहैत छैक । से, जेँ कि क्लासमे गेलहुँ कि कानमे पड़ऽ लागल–'हमरा बिट्ठू कटैत अछि ।' 'हमर सिलेटिया पिलसिनक टुकड़ी लऽ लेलक ।' 'देखू माटसएब, ओ हमरा दिस ताकि कऽ हँसि दैत अछि ।'

एहिसँ रक्षाक एकेटा उपाय सूझल । कहलिऐक–अहाँ सभ गोनूझाक खिस्सा सूनब?

–जी माटसएब ! कहियौक ।' एके बेर सभ बाजल आ पुनः शान्ति भऽ गेलैक ।

हम गोनूबाबूकेँ गोहरौलहुँ, 'दोहाइ गोनू बाबू ! त्राहि माम् !' हम बजलहुँ–अहाँमे के कहि सकैत छी गोनूझाक कथा, हाथ उठाउ ।' आ एके बेर अनेक हाथ उठि गेल । सभक मुँहपर मुसकी ।

जाहि व्यक्तिक नाम सुनिते देरी ठोरपर एकटा बिहुँसीक रेखा आबि जाइत छैक, जकर कथा सभ सुनि कऽ पता नहि कहियासँ लोक लोट-पोट होइत रहल अछि–ओ अपना समयमे कतेक मनोरंजक तथा लोकप्रिय रहल होयत से अनुमानेक विषय अछि । कोन एहन व्यक्ति होयत जे मैथिली भाषी रहितो गोनूझाक नाम आ हुनक दू-एकटा खिस्सा तथा हुनक नाम परक दू-एक टा कहबी नहि जनैत होयत । अपन प्रसिद्धि ओ लोकप्रियतामे यदि सत्य कहल जाय तँ ओ एको रत्ती न्यून नहि छथि । जेहने प्रसिद्धि, तेहने लोकरंजनमे । कखनो-कखनो लोक

हुनक तुलना बिरबलसँ कऽ दैत छनि । किन्तु यथार्थमे बिरबल गोनूझाक महत्त्वकेँ नहि पाबि सकलाह । अकबर-बिरबलक कथा सभ मात्र विनोदक साधने बनि कऽ रहि गेल । ओकर स्थायी महत्त्व नहि भऽ सकलैक । किन्तु गोनूझा जाहि क्षेत्रक छलाह तकर भाषाक अभिव्यक्ति-शक्तिमे वृद्धि कयलनि । गोनूझाक नामपर प्रचलित विभिन्न कहबी सभ एकर प्रमाण अछि । गोनूझा अपने नहि रहलाह, किन्तु हुनक बुद्धिमत्ताक कथा सभ जीवित अछि। ईहो कथा सभ संभव थिक जे जीवित नहि रहय, तथापि हुनक नामपर स्थापित कहबी सभ प्रचलित रहबे करत ।

गोनूझाक जीवनक विभिन्न कथा सभक जे शीर्षक थिक सैह कहबीयोक रूप धारण कऽ लेलक आ बिनु सम्पूर्ण कथा कहनहुँ ई शीर्षक सम्पूर्ण परिस्थितिकेँ स्पष्ट कऽ दैत छैक। एहि प्रकारक अनेकशः कहबी जन-समाजमे प्रचलित अछि, जेना– **गोनूझाक परि, गोनूझाक बखारी, गोनूझाक छिट्टा, गोनूझाक सासुर, गोनूझाक भोज, गोनूझाक पुल्ली, गोनूझाक लाठी, गोनूझाक बिलाड़ि, गोनूझाक बखरा, गोनूझाक महींस, गोनूझाक नोसिदानी, गोनूझाक भेड़बा चानन, गोनूझाक नौड़ी, गोनूझाक इनाम, गोनूझाक शास्त्रार्थ, गोनूझाक कम्मल, गोनूझाक पहुनाइ, गोनूझाक बीए बताह, गोनूझा एक बेर मायोकेँ जँचलनि, एक बेर मरने मायोकेँ चीन्हल** आदि ।

एहि विचित्र व्यक्तिक संबंधमे लोक एतबे जनैत अछि जे हुनक एकटा भाइ छलथिन जनिक नाम **सोनू** (कखनो-कखनो **भोनू**) छलनि । लोककेँ काजसँ काज, कुड़कुटसँ कोन काज । आनन्द भेटलैक, एकटा कथा कहलक आ सौंसे गोष्ठी हुँकारी दऽ देलक । बात खतम, खिस्सा खतम, पैसा हजम । अतः एहि गोनूझाक संबंधमे यदि ककरो कोनो पता नहि छैक तँ से उचिते ।

प्रसिद्धि अछि जे गोनूझा भरौड़ा ग्रामक निवासी छलाह । एहि गामकेँ भरबाड़ा सेहो कहल जाइछ जे दरभंगा जिलामे दरभंगासँ पश्चिम सिंहबाड़ा प्रखण्डक निकट अछि । ग्रामवासीकेँ एहि बातक गौरव-बोध होइत छनि जे गोनूझा हुनकहि गामक वासी छलाह । सुनैत छी जे ओतऽ गोनूझाक एकटा मूर्त्तियो स्थापित कयल गेल छनि । किछु गोटा हिनका शिवसिंहक समकालीन मानैत छथि आ बहुत गोटा हिनका काल्पनिक पात्र मानैत छथि । वस्तुतः ने गोनूझा काल्पनिके पात्र छथि आ ने शिवसिंहक समकालीने प्रतीत होइत छथि ।

एम्हरुका अनुसंधानसँ ई बात प्रकाशमे आयल अछि जे ओ एक ऐतिहासिक व्यक्ति छथि आ शिवसिंहसँ प्रायः दू सय वर्ष पहिनहि उत्पन्न भेल छलाह । मिथिलाक पंजी-ग्रन्थमे हिनक वंशावली उपलब्ध भेल अछि जाहि आधार पर एकर सर्वप्रथम सूचना महामहोपाध्याय परमेश्वरझा अपन **मिथिला तत्त्व विमर्श (पृष्ठ 151)**मे देने छलाह– ***सोनकरियाम कर्महासं बीजी वंशधरः ए सुता महामहो० हरिब्रह्म महो० हरिकेश महोधूर्तराज गोनूकाः संकराढ़ी सं० चन्देयी दौहित्राः*** । बादमे एहि क्षेत्रमे आनो व्यक्ति सभ अनुसन्धान कऽ कऽ नवीन तथ्य सभ प्रकाशमे अनलनि अछि ।

गोनूझा अपन वंशक बीजी पुरुष वंशधरक पुत्र छलाह । अपना भैयारीमे सभसँ छोट छलाह । जेठ भाइक नाम म.म. हरिब्रह्म तथा माझिल म.म. हरिकेश । पंजीग्रंथमे हिनक विशेषण **महो धूर्त्तराज** देल गेल अछि । एहीसँ सिद्ध होइत अछि जे समकालीनो लोक ओ

युग हुनक अजेय प्रत्युत्पन्नमतित्व ओ ककरहु तुरन्त छका देबाक गुणक लोहा मानि लेने छल। गोनूझाक पुत्रक नाम कान्ह आ पौत्रक नाम भीखू छलनि । हरसिंहदेवक कालमे जखन पंजीक निर्माण होइत छलैक तखन हरिकेशक प्रपौत्र गंगेश्वर वर्त्तमान छलाह । अतः अनुमान कयल जा सकैत अछि जे गोनूझा 1200इ.क लगपास अर्थात् नरसिंहदेव ओ रामसिंहदेवक समकालीन रहल होयताह ।

गोनूझा हसक्कड़े मात्र नहि छलाह । ओ संस्कृतक विद्वान ओ सप्रतिभ कवि सेहो छलाह । ई बहुत कम गोटेकेँ ज्ञात होयतनि जे ओ संस्कृतमे बड़ मधुर काव्य रचना करैत छलाह । हुनक एक संस्कृत श्लोक वयःसन्धि-वर्णनक एखनो उपलब्ध अछि –

नास्ये हास्यलवः सुधामधुरिमा दोलायितोवर्त्तते
वक्षोनोच्छ्वसितंगतागत परिश्रान्ताः सुमेरोः प्रयः ।
को वा वेद बहिर्भविष्यति कदाऽपाङ्गादनङ्गांशु
विश्वन्तु स्मृति जन्मनाजितमिति व्यक्तः पुरो डिण्डिमः॥

पता नहि, अपन लोकभाषामे कोनो पद्य रचना कयलनि की नहि । यदि कयनहुँ होयताह तँ सम्भवतः कालक ढेहपर विलीन भऽ गेल होयत । तथापि मैथिलीक इतिहासमे अलिखित साहित्यक जे महत्त्व आँकल जाइत अछि ओहिमे गोनूझाक महत्त्व सेहो आँकल जयबाक चाही ।

आश्चर्यक विषय ई अछि जे सात-आठ सय वर्षसँ जे कथा सभ लोकानुरंजन करैत रहल तकरा मध्यकालमे क्यो संकलित करबाक प्रयास नहि कयलनि । यदि केओ कयने रहितथि तँ ओकर महत्त्व डाक, ज्योतिरीश्वर ओ विद्यापतिसँ किछु अधिके रहैत ।

क्षेत्र भिन्न रहितो गोनूझा विद्यापतिक समकक्ष राखल जा सकैत छथि-लोकानुरंजन ओ लोकप्रियतामे । यदि विद्यापति गौरवक विषय छथि तँ गोनूझा सेहो मैथिलीकेँ गौरवान्वित करैत छथि । हुनक विभिन्न कथा सभक संकलन ओ सुसम्पादित संस्करणक प्रकाशनक प्रयास होयबाक चाही ।

(मिथिला मिहिर 29.1.1961)

●



डा. रामदेवझा

समेकित परिचिति : 'लेखक छठम दशकसँ तँ साहित्य-मञ्च पर अवतीर्ण भेल छथि परञ्च उत्तीर्ण भेल छथि जीवनक नेपथ्यहिमे। जेना ई अनवरत साधना करैत रहला, स्कूल-वर्गमे एको दिन अनुपस्थित नहि भेला, कॉलेज-क्लासमे कखनहु दोसर पंक्तिमे नहि गेला, अध्यापक-जीवनमे कहिओ अप्रस्तुत भऽ कऽ नहि अयला, साहित्यिक क्षेत्रमे सव्यसाची जकाँ बाम-दहिन दूनू सन्धान करैत रहला, निबन्ध-कथा-कविता-एकांकी सभ विधामे कलमक कमाल देखबैत रहला- ताहि सबसँ बहुत पूर्वहिसँ चिन्हारे नहि, मैथिली क्षेत्रमे एक चमत्कारे सिद्ध छथि । रूचि-संस्कार ओ लेखन-भाषण, शोध-अनुसन्धान सब दिशामे भाषा-साहित्यक अनुपम उपहारे प्रसिद्ध छथि ।'

('धरतीमाता'क भूमिकासँ)

– आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'



डा. रामदेवझाक प्रकाशित कृति

प्रथम प्रकाशित कथा :

'मुदा आब की ?' (मिथिला मिहिर, दरभंगा, जुलाइ 1953) ।

कथाकृति :

एक खीरा : तीन फाँक 1965 / मनुक सन्तान 1966 / इजोतीरानी 1967 / धरती माता 1985 / अंगरेजी फूलक चिट्ठी 2002 (मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1960-61) / बहिनाक विरोग 2002 (मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1961-62)/ रामजोड़ी : कागतक पाँखि पर 2002 (मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1963) ।

नाट्यकृति :

पसिझैत पाथर 1989 (साहित्य अकादेमी पुरस्कार 1991, प्राप्त) ।

अनुसन्धान-आलोचना :

शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन 1959 / पार्वती परिणय नाटक : एक अध्ययन 1960 / मैथिली शैव साहित्य 1979 / उमापति 1980/ मैथिली शैव साहित्यक भूमिका 1982 / जगत्प्रकाशमल्ल 1990 / जगज्ज्योतिर्म्मल्ल 1995 / जनार्दनझा जनसीदन 1998 / मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य 2002 ।

अनुवाद :

पृथ्वी परिचय (भाग चारि) 1988 / जीव विज्ञान (प्रथम भाग) 1988/ वाणभट्ट (अंग्रेजी मोनोग्राफ) 1989 / सगाइ 1992 (उर्दूक 'इक चादर मैली सी', साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 1994, प्राप्त)।

सम्पादन :

नन्दीपति : गीतिमाला 1965 / रामविजय नाट ओ वर गीत 1967/ हरगौरी विवाह नाटक 1970 / नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत 1972 / कुञ्जविहार नाटक 1976/ मैथिली भाषा सरिता (भाग चारि) 1984 / दशावतार नृत्यम् ओ षोडश गीतम् 1988 / मैथिली प्राचीन गीतमञ्जरी 1991 / दुर्गाचरित नाटक 1996 / रमेश्वरचरित मिथिला रामायण 1999 ।

पत्र-पत्रिका सम्पादन :

वैदेही (मासिक) 1964 सँ 67 धरि / संकल्प (अंक 1 सँ 5 धरि)।

सम-सम्पादन :

मैथिली प्राचीन गीतावली 1977 / कविवर जीवनझा रचनावली 1980/ विद्यापति गीतसंचय 1999 ।